## रही अव।

# ভূতীয় ভাগ।

c.	ela	百种	77.7	M?	137	ŧ
• 1	10.3	M	- 71	Q 1	1 54	•

# পঞ্চদশ অধ্যায় ৷ মোগল রাজাদের রাজত ৷

বাৰর - তৈমুৱ ক্রেল বংশজ্ -

र्किक खाल्य वयरम शिङ्कीन	इहेग, रि	পড়খাগ	ণ্ড স্বি	<b>5.49</b>
খুৰে প্ৰায়ু ৬ চন -	-	_		ર
হাঁহার যুক্ত হার, বার্দ্ধ ও ন	ना थाका	व दक्कम	**	•
विक्रियाय शमन - कांश्रुल व्यक्ति		~		3,5
ভাৰতবৰ্ষ ক্ৰয়	-	-	-	4
মিবারে সঙ্গারাজার সহিত	ধুন্ধ, জ্ঞান	१२ युक	-	B158
শাব্দি বিষয়ে মংশালোগ	-	-	•	\ <del>Y</del>
চাজারী অধিকার, পাঠানিদি	দের 🎋	(दानाञ्	বেখার ব	ñ₹,
ष्यरगथा। भूनव्रधिकाव -	-	•	-	281294
বাৰয়ের পীড়া, মৃত্যু, ও চরিঃ	a. রা <b>জ</b> শ	(17न	ē	59120
বোডন	<b>अधा</b> श	ì		, ,
হোমাধ্নের রাজ্যঞান্তি	- ,	1 -	-	, \$>
হোমাযুদের রাজ্যপ্রাপ্তি ভাঁহার জ্যোডিঃশাব্দে অনুর	- ,	-	-	રવ
হোমাযুদের রাজ্যঞাঝি ভাঁহার জ্যোডিঃশাব্দে অনুর বিজোহ নিবারণ -	- ,	-	- - - -	۶ <b>٦</b>
হোমাযুদের রাজ্য প্রাপ্তি উচ্চার জ্যোতিঃ লাক্ষে অনুর বিজ্ঞোহ নিবারণ - প্রজ্ঞান্ত জয় - , , , ,	- ,	-		२ <b>२</b> क्षे २७१२ <b>८</b>
হোমাযুদের রাজ্যপ্রাপ্তি ভাষার জ্যোডিঃলাক্তে অনুর বিজ্ঞোহ দিবারণ - প্রজার জয় - ধ রাজ্য পুনর্কার হস্তান্তরিব	- <i>'</i> শেপ - -	-	- - - - -	22 4 2012 C 28
হোমাযুদের রাজ্যপ্রাপ্তি ভাঁছার জ্যোডিঃ লাজে জমুর বিজ্ঞোহ নিবারণ - শুজরাই জয় - ঐ রাজ্য পুনর্কার হন্তাভারিং দের শাঁ—ভাঁছার পুর্কবিবর	- াগ	- - - - - -	- ভোমায়ং	२२ क्षे २७ २ <b>०</b> २०
হোমাযুদের রাজ্যপ্রাপ্তি উাহার জ্যোডিঃ লাক্ষে জমুর বিজ্ঞোহ নিবারণ - শুজরাই জয় - ঐ রাজ্য পুনর্কার হন্তান্তরিং দের শাঁ—ভাবার পুর্কবিবর ব্যাহা ডিনি চন্তালগত জয় কবি	- - - - - - - - - - - - - -	- - - - - - - - - - - - - - - - - - -	करत्रन, '	२२ औ २५/२ <b>८</b> २ <b>१</b> (स.इ.
হোমাযুদের রাজ্য প্রাপ্তি ভাষার জ্যোতিঃ লাজে অনুর বিজ্ঞোহ নিবারণ - থকরাই জয় - ঐ রাজ্য পুনর্বার হভাভারি দের খাঁ—ভাষার পূর্ববিবর যুক্ষ। ডিনি চভালগড় জয় করি হইতে বিশ্বধ হইয়া আইনেন, প্	ত্ত্ব ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা	্ নু সংজ ড যাত্রা:	करत्रन, ' इ.मक्टि	२२ वे २७।२० २० स्व
হোমাযুদের রাজ্যপ্রাপ্তি উাহার জ্যোডিঃ লাক্ষে জমুর বিজ্ঞোহ নিবারণ - শুজরাই জয় - ঐ রাজ্য পুনর্কার হন্তান্তরিং দের শাঁ—ভাবার পুর্কবিবর ব্যাহা ডিনি চন্তালগত জয় কবি	াগ - - - - - - - - - - - - - - - - - - -	্ন নুন্দ ডু যাত্ৰা নুন্দু নুন্দু	করেন, ' ব সহিত	२५ २५।२६ २५ २६ सम्बद्धाः इक्

मखमम व्यक्षांत्र	ļ			
(হামায়নেত পল,মনেত প্র ধেত	या हार	i, 51	যা	
शंक्रक करवन, देव्ह त याक्रमामन, सुक, मु			5818	<b>b</b> '
স্পৌম সাজেব বংকাই	•	•	•	۸ 🍃
ম - আদ সাত্ত্র জী ৷ বস্তানতেশ বিজেটাই	,			? 6
ভোমায়ন পুনর্কাদ ভারতবর্ষ জং কলে		-		đ١
ভোমাংনার মৃত্যু ও আই চৰণ	-			4 4
मिसी वीट आहे अन्य	•	-		() ¥
किन्ह क धीन द्राटकात विवता	••	-	* <	ŧ
<b>অফ</b> াদশ অপায়	ì			
भाग्यस्य वाक्यांक्र				
' বঙ্গাম মখা কইয়া একাধিপত্য কার্ন			7 %	
कर्षाष्ट्राक करिया ज्यालनि वीका अहम करत		•		
क्षेत्रमाय ठोटका वक् शिल्टाश वि				
ভইতে শাগিল কা'ৰবৰ তাহ' <b>ক্ৰমে নি</b> ৰাব			25,	<b>p</b>
ত-পার বাদ্য বৃদ্ধি কবি <b>রে</b> শীলাগি				
চিত্তার, 'রস্তাস্থর, কালিঞ্চরের লুগাঁও ঘ	গান আর	<b>WIN</b>	क् र	
ক্রিলেন	-		49,5	<b>5</b> = 0
হিন্দু রাজাদিলের শতিও কুটুলি	গা করিয়া	<b>180</b> 7	17 長	

বাজাকে বর্গাভূত বরিচুলন

व्यक्तित्व मृष्ट्रा

खबाद है बन्न, भिहांके क्रिकांद

ब्राक्षश्च मनीरमत् ब्राक्षविद्धादिन्छ। ভাষার ভূতীয় পুত্র দানিয়ালের মৃদ্ধু

শাঠানদি ডগর রাজ্যাশা, **ইনরান্ত**্র

अञ्ज्ञतार्षे वाञ्चविरक्षांच निवादः, ज्याकवरतव मां कर बसरमन अप, बन्दर्यटम भाष्ट्रीमपिटलन महिए युक्त

के म्हण चारुवरवृद्ध दांक अपूज, वांका वीववर. -मिकु कर, बाकान ताका जेकात, प्रक्रिन द्वाका कर

28

कांबुल क्रम, कांभ्यीत क्रम, कांग्यीरमङ विवद्रव পেন ওয়ারে যুদ্ধ-রৌসনিয়া, জাতি -

# े छेनविश्म वशाम ।

আকবরের চরিত্র	•	•	•	24
রাজ্য কৃষ্ণি ধর্ম	-	**	411	34
रेकडी ७ सारतकडात. हि	वदी मक	व किष्ठ	₩	
ৱাজস্ব সংগ্রাহের নিযম,			-	7.2
(डाइक्नन, स्वा	*		•	7 <b>4</b> 4
विष्ठात्र, .	•	-		35*
टेमन् ः	-	••	<b>u</b> +	22.2
<b>অট্টালিক</b> 'নি	••	•	•	528
শিকার সক্ষ		•	- *	226
क्रनाडिचित्र घष्ठे -	<b>14</b>	•	•	À
नि <b>र भ</b>	व्यथा ।	<b>\$</b>		
आशंकीरदद शकादिक			_	1.,164
রাজপুত্র খদকর প্রতি নির	15	~	•	155
মুরুজাফানের লহিত রাজ	ার বিখাহ	,	-	12.3
উচ্চার বিবরণ ও একাবিপ		••	•	372
मिक्न व्हिना भावस्य क्र		•	-	গহ
क्षेत्र शूरहत गुरक हांकर		ार का विशेष	'ड डीशान	
সাহকাতাৰ খ্যাতি প্ৰাক্ষি	•	•	•	300
- বস্বর মৃত্যু	- *	**	-	3 98
<b>সাহজাহাৰ পিড়</b> ছেহে ব	<b>44.</b> 2	•	•	2 4 7
ভাঁহার সহিত যুক্ত	•	老	•	366
জাহাজীর মহকাত ঘঁকা	ৰ্ক আৰ'	<b>T</b>		745
নুরজায়ান ভাঁছাকে উব	तीत्र करि	বোর চেউ	क्रम,	
কিন্তুপারেন নাই - *	##	•		187
कारां भीत्रत्र मुक्ति । मुष्	Z.			) Z e
এক্রিং	न बाह्य	स्त्र ।	* ,	
माहक शिव्यव द्रीका खारि	ख इ	<b>50</b> 0	•	180
मूत्रं माहारमत्र जाधिशठार	নি ও সু	ត្ត	*	<b>Apple</b>
नोस्क्रोसीटमत् वेसुभटन्त्र			- ,	344

व्राक्तांकित्वक ७ बृद्धन वश्यंत छिल्लाहक धूमधान -	¢≢»,
विकासन स्व. काउर शहेंच	<b>₹</b> ₹85
क्षा श्रीक श्रीक श्री शि-श्रालीमक में बंद रेकिया अदि-	•
कार्ट्ड (रुप)	44
प्रकारकात करील	49'
र इति साम्हण्या स्मर्थ	4
अन्य का कार्य व श्रीत प्रवास हिता, अ इंग्लिश श्री श्री पूर्व	( A
कार्यक्र कार कर जिल्ला के उसी देश देश की का करने करने व	3 <b>%</b> D
সাহজাহানের মৃত্যু তাঁহার চরিত্র, রাজ্যের অবস্থা	31.
generalities de particular de	
व्यविश्यं अधार्य।	
व्या अतुर स्कृतवत् व्यालमशीत् नाम धात्रन, प्रिली करेएक	
দারার পলায়ন, দিলীরাজা অবিকার নিমিত্ত স্কুজার জাগনন	5 4 %
ज्याचात्र श्रामं ऋष ७ श्रामा व	1,40
प्राचात कार्डिकार कार्यमाना वादन <b>अश</b> क्षि. उरशात कार्ड	
गांकी १० छक्षा कहें एउ सामारिक भेमन	, a &
क्षा अवर एक रहे व्यापाद विश्व में अपने विश्व विष्य विश्व विष	
বিমান স্কুট্যা প্রীভাব প্রোণ্যধের আছিল	ું કે €
क्रांचाच (शर्मक वर्गमा एवं डांडांट श्रेडांक वर्षा करें), राजारी	
क्यां क्याबार करूरि कराना न-क के खीनपी व्यादिन किर्ने	
विदक्षि-मित्रकूमना वाजश्रहाक वन्त्री कावम, ७६शात खनाह	*
স্তিত ভাঁহার যুক্ত - 👚 🌋	7 W 78
मान बोटका जाजात मुद्धा बुद्धारमञ्जू क्यां वन ए " -	, 9 2
क्रीनगरत्त् वाकाकर्ष्ट्रक साताव श्रेष मनामानरक का उत्रः-	
्राह्मतत हार्ख ममर्थन, महीमानरक हिन्दनी कर्नन -	399
मित्रकाला कर्नक खालाम अप ७ हिन्दमन याजा- तर्व	
मांका क्षांजामन ७ (ब्राट्श मृद्धा, ७ का बद्धर करित गाए।	. • >
का अत रक्टवर का भोरत भवन-भश्रा है पिनिर भत्र र्व	
ेविदवन	>b.
यामूत्रा धरमत्र निवद्र १ — डाँशांत्र कर्गा क्रिकित विवास	2 M.S.
जिक्कित मखान निवकीत अवादबाक्टन बमन ७ मचावृष्डि	2 A. a
বিজয় পুরের রাজাকর্ত্ক শিবজীর পিভাকে রোধ, বাজা-	
कारनद स्थारमरन केशाद कृष्टि	366
का क्षराहरूर कर्ड्न पिन्न होटका सूक्	•

লিবজীয় ব্যথক লাজ লিবজী কর্মুক মোগল রাজে	8 m - 12 j
কুঠ-নায়েকা খা কর্তুক শিবজীব পরাজ্ঞ ও পুনা অধিকায়	366
े निवकी कर्षक नीरप्रका बाँव प्रकृत जिल्ला न नारप्रका	
भगार्यन, भिरक्षी कर्जुक भोद्राष्ट्री नश्रद्ध चाक्रमन 💎 🔑 🦠	36
শিৰজী কৰ্ত্বক নানা দেশ জুঠন-ভাছার দমনার জাওরং	•
	-35/4
আওরংক্তেবের নিকট শিবজীর অপমান ও মূর্চ্ছা	1754
निली क्टेंटण निवकीत शलायन	16.5
বিজয় পুনের রাজার সহিত শিবজীর যুক্ত -	>>>
শিবজীর নিজ রাজ্যে যুদ্ধ, ও রাজশাসন সম্পর্কীয় নিয়	
আত্রংজেবের সহিত শিবজীর যুক্ত, ও চৌধ এজণ পাঠানদের সহিত ও সাধু সভ্রদায়ের সহিত আত্রং	5#\$
ালেন্ডের নাহত ও লাবু নতন্ত্রালানের সাহত আভির্ ংক্তেবের যুক্ত, সাধুদিশের বিবরণ –	
्रिक्राच्यास्य चुनात्र वर्षे प्रस्ति वर्षे स्थापन वर्षे	322
Sentence to the sent of the se	
ৰয়ে।বিংশ অধ্যায়।	
আ ওরংচজাবের চরিত্র, তাঁহার বিস্মুখর্মে দেখ, জালিয়	j
कर भूनश्याभम, त्रकाशृष्ठक्रियात मसीचिक आंखदर क्राव	ş
সহিত তাহাদের যুক্ষ, সন্ধি	328
শিবজীর বৃদ্ধি, ঐ সৃদ্ধির কারণ, তৎকর্তৃক মোগল রাজ	7
ক্ষাক্রমণ, শিবজীর মৃত্যু, তাহার চরিত্র-	ンタタ
শক্ষীর রাজ্যঞান্তি, তাঁহার আচরণ	२७३
কাওিরংজেবের পুনর্বার দক্ষিণে গমন কণকান মুঠ, বিক্র	-

गुत्र केश्टमत एठके.. त्यांनकका खरम. विक्रयभूत विनाम मक्की मिसीटक कानीक इन. डीइन्द्र व्यानमक, उर्शद्त अहात भूत मोड तीका इन. तांकाताम क्रिक्क मूटर्म ताक्रयांनी करतन, क्यांकतर्यक उदितरक देमना त्थांत्रम करतम, अम्यवि महातांख्रीयुप्तियत् महिल युक्तातक इस

নহারাই মদিদের উপত্রেব, মোগলদিগের মৃত্তগ্রহনর গারা, মহারাই মিদিদের ঐ, ডাহাদিদের সভিত যুদ্ধ, আওরং-ফেবের মৃত্যু, উহির আচরণ - ২০৬/১৭

# **इ**जुर्सिंश्य व्यथात्र ।

বাহায়ুর সাহ, ভাঁহার আতাদিগের সহিত মুক্ত, মহারা-শ্রীয়দিশের আগু বিজ্ঞেদ। কলঃপুত দিশের সহিত সভি । ২১৩

,		CAN Be	ME,	मानटक	<b>4 4</b> 6	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	, de un Seloto e El	3
		पत्र नार्			*	5.	-	5
**	. स्ट्या	নাহ, ট	गग्रमनि	रवेद ध	কা বিপাত	5	•	₹ ;
1	平英程序	मांक, देम	प्रम निर	अम् क	<b>प्रम</b> ेश ज म	PROIS!	F .	11
<i>!</i> •						উনি 🗳	কর্ম পরি	• .
E)	1 <b>स</b> न्निस						•	?
, ·	दोनाङ	ी विश्वना	थ, नांड	नियां अ	दस्तान	व्रोका क	<b>अ</b> भग	₹.
į.		জার সহি			~	,	•	4
	कामक	জার কার্য	ান <b>ত</b> ) <sup>হ</sup>	य कि दि			-	₹1
			श्रे 🕸	বিংশ	<b>অধ</b> ্যয়	١		
	পার্সয	েবের বি	<b>दड़</b> व		~			Þ,
		সংহের বি		<sup>1</sup> 3 उदन	ৰ্ত্তক ভাগ	তেবৰ্ষ অ	3 4 d	<b>2</b> (
		१ इंटिकार			•	•		7
	মহারাষ	द्रीप्रमिट <b>ः</b>	্ব কাও	धार्मित,	বাজি রা	SCRX A	<b>T</b> i	2
							व्यक्तिम्	,
Wi.	नककात्र	মৃত্যু, ঠা	হার র	<b>汉新</b> ]、西	<u>ছে -</u>		-	7
	<u>রোহিল</u>	ॉनि <b>ट</b> शङ्	विदेश्न	, व्यानी	ेबङ्गाम,	ভাহার :	<u> হুলি</u>	ş
	কা হকান	थें। हुवा	नी, उ	. कर्क् क	ভারতবা	অংকাক ন	e,	1 1
,	मङ्ग्रह	শাহের য	কুr. <b>ও</b>	Q 4 2 3	আহ্ম	म मोह द	क इन	₹ ¥
1	(वाहिल	विराधन	দ্ভিত :	বুদ্ধ, ব্লে	<i>হি</i> লথত	क्ष्य, क	দ্বীকর্ত্বক	
715	গুরু হড়ৰ	न उठक	দু উৎগ	नो छैन	-		. 78	4/4
	কাল্যগ	ोब हि छी	ų.		-		•	> 1
	मधीत प	দাচরণ			-	/'	•	1
		मां ३ व्ह	क मि	मी खांउ	<b>দুম</b> গ	-		Ją
	ভাহার	প্ৰদেৱ	পর	मधी	মহারাষ	ीय निगर	क वीग	
ম্ব	रागु खार				-			3.4
		আদিয়া		নগর গ	হাক্রমণ,	তৎপত্রে	नकार	
							•	
ভাষি	कांत्र कर	પ્રભાજાકાજ≀*				*		
অ বি	कात कर काइग्राम	গুলহার। ভুরাণী	<b>उ</b> ठीग्र	বার ব	मनी का	क्रमन क	et Auf-	,
,	कोत्र करः खोडन्यम ीरः स्मिन	<b>मूत्रा</b> गी	<b>ञ्</b> ञीग्र	बाब र	ने की का	क्मन व	रः मश्री-	, 2#

# ভারতবর্ষের ইতিহাস।

# ভূতীয় ভাগ।

शक्षमां अधाय।

### মোগল রাজাদিগের রাজাারস্ত।

#### ववित्।

যে মোগল দিগের রাজত্ব কালে ভারতবর্ব অতি উয়ত দশা প্রাপ্ত হইয়াছিল, বাবর তাঁহাদিগের আদি সুক্রম। বাবর বাল্য কালাবিধি কেবল মুদ্ধবিগ্রহেই কাল বাশন করিয়াছিলেন, এক দিনের নিমিত্তেও সুস্থির থাকিতে পারেন
নাই। পরস্থ, তাঁহার সকল সময় একপ্রকার বায় নাই।
তিনি কথন রাজসিংহাসনে বিরাজ করিয়াছিলেন, কথন
বা অতি দীনের ন্যায় পর্যতেও কান্তে কাল বাপন করিয়াছিলেন। ভাহার বিষয়েল পশ্চাৎ লেখা বাইভেছে।
পাঠকেরা পুর্বে অবপত হইয়াছেন বাবর বিখ্যাত
তৈমুরলজের বংশোদ্ভব। তৈমুরলজের মৃত্যুর পর
ভাহার পুত্র সাহরোধ ভত্পান্তিত রহৎ রাজ্যের অধিপতি হইয়াছিলেন। কিছু তিনি ও ভাহার উত্রাধি-

# ভারতবর্ষের ইতিহাস।

কারিগণ তাদুক্ বীর্ঘাবান্ ছিলেন না, ইহাতে ঐ রাজ্য জানে জানে হ্রাস দশা প্রাপ্ত হইয়া আসিতেছিল। পরে ঐ তৈয়র লঙ্গের বংশান্তব আৰু সৈয়দ রাজা হইয়া ঐ রাজ্য আপেন পুত্রনিগকে বিজ্ঞাগ করিয়া দেন, বিজ্ঞাগান্ত্রারে উহার গ্রেষ্ঠ পুত্র আহম্মদ মিজা সমরকদ ও বোখারা রাজ্য, ছিতীয় পুত্র মহম্মদ মিজা নাথ রাজ্য, তৃতীয় পুত্র জলকবেগ কাবুল রাজ্য, এবং ততুর্থ পুত্র প্রার সেখা নিজা ফরগণা রাজ্য প্রাপ্তর কার সেখা নিজা ফরগণা রাজ্য প্রাপ্তর পর জোঠ ছাত্রে সহিত্র প্রার সেখার জাতা প্রাপ্তর কার জোঠ ছাত্রে সহিত্র প্রার সেখার জাতান্তর হাইছা বোরহের যুদ্ধারম্ভ হইল। এই যুদ্ধা কোন না হাত্রে ছিল ২০০ হইতে ওমার সেথা পরলোক গ্রমণ কারি কারণ করে। জেলা জাতান করি কারণ করে। জেলা জাতান করি কারণ করে। জেলা জাতান করি কারণ করে মাজা

বাবর এই নতীন বয়নে পিতৃরাজ্য প্রাপ্ত হইয়।
জ্যেষ্ঠতাতের সহিত যুক্তে প্রবৃত্ত হইলেন। কিছু দিন
পরে ভাঁহার জ্যেষ্ঠতাতের মৃত্যু হইল, ভাহাতে তাঁহার
ক্রিটায় জ্যেষ্ঠতাত মহম্মদ মিজা, সমরকন্দ অধিকার করিয়া
সেই যুদ্ধ চালাইতে লাগিলেন। কিন্তু ভিনিও কিছু দিন
পরে কালগ্রাসে পভিত হইলেন, ভাহাতে সমরকন্দ
রাজ্য একেবারে প্রভূষীন ও বিশৃষ্কাল হইল। বাবর তাহা
দেখিয়া এ রাজ্য অধিকারের বাসনা করিলেন, এবং যদিও
ভিনি কুই ভিনাবার যুদ্ধে প্রাপ্ত হইলেন, কিন্তু অবশেষে

তি ২০০ সংখ্যানে তয় লাভ করিয়া এয়রকলের
য় ২৮০০ রাজা ইইলেন। তথকালে উহোর ব্যবহার
পঞ্চান বংসর মার। ইহাতেই উহি য় বীরত্তের পবিচল
প্রদান করিতেতে, কিন্তু ভাঁহার মাল্ল সাহস ও আকালেক।
ভালুল বল ও উপাম ছিলনা। এফ দিক রক্ষা করিতে
জনা দিক হস্তান্তরিভ হইত। সুস্রাথ সমরকান প্রম ক্রিয়া এক লাভ দিবল লাক্ষ্ম করিয়াছেন কিলা, এমন
সময়ে ভঙ্গল নামে ভাঁহার এক সেনাপতি ভাঁহার নিজ
রাজা ফরগণা অধিকার করিলেন।

এই সংবাদে তিনি সমন্তবেদ কাল বিলম্ব না করিয়া ফরগণাতে হাতা করিলেন। পাথিমাথে উথার এমন উথকট পীড়া হইল যে, তাহা হইতে রক্ষা পাইবার সন্ত্রান্তবনা ছিল না। যদিও এই পীড়া হইতে কোল প্রকারে উতীর্গ হইলেন, কিন্তু ভাষার পরেই ভাঁহার সর্ব্যান্তবন্ধনাশ উপস্থিত। তিনি ভানিলেন সমন্তকল-বাদীরা ভাঁহার আগমনের পর থী রাজা শক্রহন্তে অর্পণ করিয়াছে! এবন্পুকারে বাবর, করগণা ও সমরকল উভয় রাজ্য হারা-ইয়া মহা বিপদগ্রস্ত হইলেন, কিন্তু ইহাতেও একেবারে ভগোদাম না হইয়া ভিতুকাল মাতুলাল্যে থাকিলেন। পরে থী মাতুলের সাহাযো করগণা রাজ্য প্রির্থকার করিলেন।

তদনস্তর সমরকন্দ বাসীরা বাবরকে এই বলিয়া এক প্র

 লিখিল আপনি এইখানে আসিবেন, আমরা আপনাকে

এই রাজ্য দেওয়াইব। বাবর এই পঞ্জ পাইয়া সমরকদ যাত্রা করিলেন, কিন্তু তথায় উপস্থিত না হইতে হইতে শুনিলেন যে উদ্লবক জাতীয়ের। সমরকদ ও বে:খারা উত্তয় রাজ্য হরণ করিয়াছে। ইতিমধ্যে উচ্চার পূর্ব দেনপেতি তথল পুন্ধার ফ্রগণা অধিকার করিলেন। বাবর কি করেন, গুই কুল হারাইয়া স্বীয় রাজ্যের দক্ষি-শৃৎকো শৈলনিখনের প্রক্রভাবে সিতি করিতে লাগিলেন।

কিছদিন পরে উজ্বক্দিগের সেনাপতি মিবানী শা বাদ্ধার্থ স্থানান্তর গ্রমন কবিলে। এই সংবাদে বাবর ২৪০ জন লোক সমভিব্যাহারে সমহকুদ্ যাতা করিবেন। ঐ স্থানে উপস্থিত হইনা রজনীযোগে আচীর উল্লেখন পুশাক নগর প্রদেশ করিব! প্রহতীদিগকে অবিশ্রান্ত সংহার कतिएक नाणियन। अने कांच प्रियो नगत्तुकाक छ ন্পার্ভ প্রজাগণের বেপে হইল ভাঁহার সজে অনেক লোক আসিয়তে, অভএব ভাহারা যুদ্ধদিনা করিয়া উাহারই পক্ষ হইল। বাবর ভাহতৈ জনায়ানে এ নগর অধিকার করিলেন। দুতরাং উল্লবকেরা নগর ভাগি করিয়। স্থানান্তরে থাকিল। বাবর ঐ স্থান হইতেও ভাহাদিগকে पृत कतिरदन এই मानतम युष्क मक्का कतिया याजा कति-লেন। কিন্তু সংগ্রাম সময়ে ভাঁহার সেনাগণ রণক্ষেত্র ত্যাগ করিয়া প্রতিপক্ষ্দিগের রণ-ভাণ্ডার লুঠনে প্রান্ত रहेल। তাহাতে সমরে অসমর্থ হইয়া তিনি প্রাণ রক্ষার্থ সমরকদে আদিলেন। বিপক্ষেরা ভাঁহার পশ্চাৎ ২

### ভারতবর্ষের ইতিহাস !

আসিয়া ঐ স্থান বেইন করিয়া থাকিল। বাবর শজ-জালে বেটিত হইয়াও চারি মাস পর্যান্ত হুর্গমথ্যে থাকি-লেন। তাহার পর আহারাভাবে তথা হইতে স্থানান্তরে প্রস্তান করিলেন।

ভদবনি তিনি ছুই বংশর পর্যায় অভি ক্লেন্স কাল যাপন করিলেন। এই ক্লেশ জনশং অলহা চইল, কাল্ডান তিনি গনে মনে জির করিলেন দীন রাজ্যে যাইয়া কোন প্রকালে দীনবেশে জীয়ন মারা নির্দ্ধাহ করিব। কিছু হঠাং ভাষা না চরিয়া অল্ডার দান হইয়া আর কিছু কাল প্রক্ষে কানে পানিলেন । ইভিন্নো কর্পনা লাজ্যে মহা বিরোধ উপত্তি হাইল, তেমন ভিনি মানুলের সহায়ভার শীর্জা প্নর্ধার অলিকার করিনেন।

কিয়ৎ কাল পারে ভাঁহার প্রাচীন শার্চ ভাগল টাজনকনিগের সহিত্য যোগে করিয়া ফর্মণা রাজ্য রেইন করিলেন। বাবর রাজ্যানীতে থাকিয়া প্রথমক্য অভি বাহার
মুদ্ধ করিলেন, অবশেলে পরাভূত হর্মা প্রাণ রক্ষার
তথা ক্রতে পলামন করিলেন। হুরদ্ধী প্রযুক্ত ভাঁহার
অধ রাত্ত হইয়া চলিতে পারিল না, মুভরাং ভিনি পলা
মনে অসমর্থ হ্র্যা শক্তরতে পভিত হ্ইলেন।

কিছু কাল পরে জিনি কৌশলক্রমে শক্রহন্ত হউতে মুক্ত ইউলেন, কিন্ত তৎকালে উজবরুদিলের প্রচণ্ড দোর্জণ্ড প্রভাপ, এবং ভাহারা অলক্যন্দার ভীরন্ত ভারদ্দেশ অধিকার করিয়াছিল। বাবর ভাহাদের হন্ত ইউভে ঐ দেশ উদ্ধার করিবেন এমন কোন উপায় দেখিলেন না, অতএব ফরগণা রাজ্মের মায়া অগতাং পরিত্যাগ করিয়া বজ্মিতে যাত্রা করিবেন। এ সময় তাঁহার সমভিবাদহারে কেবল তিন শত লোক ছিল, এবং দুইটী মাজ বজ্রাবাস ছিল, তাহার একটাতে আপনি আর কটীতে ভাঁহার গর্ম্ত্রণারিণী থাকিতেন।

বাবর এই জাবে বজিয়া দেশে উপস্থিত হইলে তদ্ধে-শস্থ লোকেরা টাহার মৌজনো বদীক্ত চইল, এবং অনেকে ভাঁহার সহিত যুদ্ধগমনে প্রস্তুত ইইল। বাবর এই সকল লোক সমভিব্যাহাঁত্রে কাবুলে ঘাতা করিলেন। ঐ সময়ে কারুলে মহা উপদ্রব উপস্থিত হইয়াছিল। তাঁহার জ্যেষ্ঠতাত ইভিপুর্বে তথাকার রাজা ছিলেন। ভাঁহার মৃত্যুর পর তৎসভাসদগণ ভাঁহার প্তকে 🖛 হা-ক্ৰচ্যুক্ত করিয়া আপনার।রাজ্যাশায় নান্য প্রকার বিরোধ ধারস্করিয়াছিলেন। এই বিরোধ বাবারের পক্ষে অতি একলকর হইল। তিনি বিদ্রোহী সভাসদ্গণকে অনা-ক্তি 🚉 🕽 সামে পরাভূত করিয়া আপনি তথাকার र्थ अवन **ब्राङ्ग इहेटलन्।** अहे सम्द्रश्च वानदहत्त्व दश्च--ক্রম ২৩ বৎসরের অধিক নহে! ভদবধি তিনি ক্রমাগত ছাতিংশ বৎসর, এবং ভাঁছার বংশীয়েরা ছুই শভ বংসর পর্যান্ত, তথায় রাজত্ব করিয়াছিলেন।

কার্ল অধিকারের পর বাবর, তাঁহার প্রাচীন শক্র উলবক কাভি ও আফগানস্থানের পর্যন্তবাদী, একং তৈমুর বংশীদ শীম কুট্র গণের সহিত অনেক দিন
বুদ্ধ করিলেন। মধ্যে তিনি বোধার। ও সমরকন্দ রাজ্য প্রার্থিকার করিয়া, পারসন্ধানের রাজার সহায়ভায়,
তুই বংমর পর্যন্ত, ঐ ছুই রাজ্য আপান অধিকারে রাথিকান, কিন্তু পরে উজ্জরকেরা ভাঁহাকে তথা হইতে
দুরীকৃত করিল। তদবধি তিনি পশ্চিম রাজ্যের আশা
একেবারে পরিভাগে করিয়া ভারতবর্ধ প্রের অভিলাম
করিতে লাগিলেন। ঐ অভিলাম যে প্রকারে সিদ্ধ হইল
ভাহা পুর্বে বেথা গিয়াছে। তিনি হিজ্বী ১০২ অক্সে,
গু ১০২৪, এরপ্রেল
করিয়া দিল্লীর স্মাট হইলেন।

বাবর দিলীর সিংহাসন আবোহণ করিয়াই যে সমস্ত ক্রিরার সালের অধীহার হইলেন এনন বলা যায় না, তিনি কেবল দিলীর পশ্চিম উত্তর আঞা পর্যন্ত যেমুনার তীরস্থ বে ভূথও দিলীর অধীন দিল তাহাই পাইলেন। গলার পূর্মপারস্থ যে সকল দেশ দিলীরা লাভুক্ত ছিল, তাহা পাইলেন না। এরাহেম সাহের রাজত্ব-কালে দরিয়া থাঁ লোহাই নামে এক বাজি ঐ সকল দেশ অধিকার করিয়াছিলেন। পরে তাঁহার পুল, মহম্মদ সাহ লোহানী উপাধি গ্রহণ পূর্মক, ঐ প্রদেশের রাজা হযেন। তিনি বেহার রাজ্যও অধিকার করিয়াছিলেন। তিদির যুমার পশ্চিমে অনেক প্রদেশ হস্তান্তরিত, হইয়াছিল, পাঠানেরা এই সকল দেশ অধিকার করিয়াছিল।

# ভারতবর্ষের ইতিহাস

এই সকল স্থান অপরের হস্তে থাকিলে রাজ্যের বছক হয় সা ইহা বিবেচনা করিয়া বাবর প্রতিজ্ঞা করিলেন ভাহাও অধিকার করিবেন। কিন্তু ভাঁহার সেনাগণ শীতপ্রধান দেশে বাস করিত, ভারতবর্ষের প্রশার রৌদ্র তাহাদিগের অসহা হইল ৷ অতএব গ্রীষা ঋতুর আগণনে ভাহারা সকলে খদেশে যাইবার বাঞ্ছ। করিল, কোনরূপে এ मिटम शिक्टि । हिन ना । देनरागन अভिगमन করিলে বাবরের সকল আশা ব্যর্থ হয়, বেচেক্তু এতদেশীয় হিন্দু ও মুসলমান সেনাগণ তথন পর্যান্ত জীহার বাগ্য হয় নাই। "অতএৰ সকল সেনাগাক্ষকে আহ্বান করিয়া তিনি ৰলিলেন, দেখ ভারত্বর্ষ জয় করিবার জন্য আমর কত দুর হইতে আসিয়াছি, এখন পর্যান্ত ভাহার কিছুই হয় নাই, কেবল স্থাপাত মাত্র হুইয়াছে, যদি এখন আম্বা এখান হইতে প্রস্থান করি তাহা হইলে আমাদের সকল পরিশ্রম রখা হয়, এবং লক্ষা রাখিতে স্থান পাইন না। অতএর এক্ষণে এখান হইতে গ্রন্থান করা কোন প্রকারে বুক্তিসিদ্ধ নহে। যদি ভোমরা স্বদেশ গমনে নিভান্ত ব্যগ্র হইয়া থাক, যাও, আমি নিবেধ ক্রিলা। কিন্তু আমি যাইব না, আমি যে সম্ভূপে করিয়াছি: ভাহার অনাথা इहेटव ना।

বাবরকে এই প্রকার চ্চ্প্রতিজ্ঞ দেখির। ভাঁছার অণি-কাংশ সেনাগণ ভাঁছার সঙ্গে রহিল, অণ্পাংশ স্থদেশ গমন করিল। বাবর এই সকল দৈনা হানে স্থানে পাঠা-

ইলেন, এবং ভাহার জ্যেষ্ঠপুত্র হোমাযুন ভাহাদিশের अधांक श्रेटलन । धवन्त्रकाटत वातत्र हाति माटमत सट्धाः, अञ्चारश्य बाधांत ताकव्कारक य मकल साम मिहीत অধীন ছিল ভাষা পুন,পিকার করিলেন। তান্তির জুয়ান-খুঁর প্রভৃতি লোদী গোড়ীর রাজাদগের রাজকালে যে সকল বৈকো হস্তান্তরিত হইয়াছিল ডাছ।ও হস্তগত হইল। অবলেয়ে বায়েনা, প্রাপুর, ও গোয়ালিয়র দেখা উহিত্ত অপিকার্ড হইল।

এই প্রকার মুসল্মান রাজার! ব্লীভ্ত হইলে পর বাবর হিন্দু ্রাজাদিশ্যর প্রতিকৃলে অস্ত্র ধারণ করিলেন।

पूर्व्य व्यथः शियाद्य थिलकी नश्मीय जालाउनीन রাজার রাজ্যকালে হাঁমর মিংহ চিচেরে রাজা পুনর্জ্বন করেন। এই রজঃপুত ভূপতি জনে সকল মিবরে দৈশ আপনার অর্থান করিগাছিলেন। তৎপরে জাঁহার পুত আজমির প্রদেশ নি রাজাভুক্ত করেন। এই দেশে স্লুক্তি যিনি রাজা ছিলেন উঁহোর নাম সঙ্গা। তিনি মালব প্রদে-শের পূর্বাংশে ভিলমাও চন্দ্রী পর্যান্ত আপন এভত্ত বিস্তার করিয়াছিলেন। এবং মারওয়ার অযপুর প্রভৃতির ভাবৎ রজঃপুত রাজারা উাহাকে আপনাদের প্রধান বলিয়া মান্য করিতেন। দিলী রাজ্যের প্রতি সঙ্কার ভ-তাম ছেম ছিল, তিনি সর্বাদা ঐ রাজ্যের বিনাশ বাঞ্জা করিতেন। বাবর ঐ রাজ্য আক্রমণ করিলে ভিনি ডাঁহার महिल देमका हत्। कतियां दिला । किन्न यथन वादत धे রাজ্য জয় করিলেন, তথন উাহার সহিত য়দ্ধ আরগ্ধ করিলেন।

এই যুক্তে অনেক হিন্দু রাজা সলার সাহায্যকারী হই-লেন। এবং মহম্মদ নামে লোদী রাজবংশীয়া এক রাজ-পুত্র, রাজ্যবিহীন হইয়াও, রাজা উপাধি গ্রহণ পুর্বক, দশ সহস্র দৈন্য সম্ভিব্যাহারে তাঁহার সঙ্গে গ্যন করিলেন। তদ্ধির লোদী বংশীয় প্রধানেরা ও মেওয়াতের রাজা হাসন খাঁ তাঁহার সলী হইলেন।

এই সকল দলবল লইয়া সঞ্চা মহা সমারোহ পুর্বক বাবরের সঙ্গে যুদ্ধার্থ সিকরী পর্যন্ত গমন করিলেন। বাবর তথায় উপস্থিত হইবা মাজ, হিন্দু দেনাকণ জাঁহার অপ্রগামী রক্ষক সেনাদিগকে কাটিয়া লও তও করিল। বদি ঐ সময় তাহারা আরো কিঞ্ছিং বল প্রকাশ করিত, তাহা হইলে তথনি অনায়াসে রণজনী হইতে পারিত, কিন্তু তাহা না করিয়া তথন যুদ্ধে বিশ্রাম দিল। তাহাতে বাবর সময় পাইয়া বীয় সৈন্যগণকে এক উচ্চ স্থানে রাখিলেন, এবং ঐ স্থানের চতুর্দ্ধিক গড়বন্দী করিলেন।

বাবরের দেনাগণ প্রথম উদ্যমে পরাজিত হইয়া এক প্রকার হতোদাম হইল। তৎপরে কাবুল হইতে এক বিখ্যাত ভবিষ্যম্বকা বাবরের সভাতে উপস্থিত হইয়া প্রকাশ করিল এ যাত্রায় তিনি কোন প্রকারে জয় লাভ করিতে পারিবেন না, নিশ্চয় হারিবেন, কেন্না তাঁহার প্রতি শনির মৃতি হইয়াছে। এই কথায় সকল সেনার হৃৎকশপ হইল, সেনাগ্যক্ষণ অতিশয় ভ্রিয়মাণ হইলেন, বাবর সেনাগণকে সাহস দিয়া কোন কথা কহিবেন জমন সাংগ্য রহিল না, অধিকন্ত জাহার সঙ্গে বে সকল হিন্দু সেনা ছিল ভাহারা অনেকে বিপক্ষদলে গিয়া মিশিল।

বাবের ভবিষয়ন্ত রি বাজ্যে দুক্ণতি করিলেন না, কিন্তু
সংগ্রামের বল ইসনা, যদি ভাষারাই হ তবল হইল ভবে
কাহাকে লইয়া যুদ্ধ করিবেন। অত্যব ভাষাদের সাহস
বন্ধির জনা তিনি আপান প্রায়াশ্যুত করিয়া শক্তা ধারণ ব করিলেন, এবং মদা পান ভাগে পুর্ধক হণ্ ও রৌপান্য পানগাত সকল দীন দরিত অনাথ দিগকে দান করিলেন। অধিকদ্ব তিনি অজীকার করিলেন যদি প্রমেশবের ইচ্ছাঃ এ গাত্রা করিব প্রহার পারি ভবে যুসলগান নিগের স্থানে আর কর্মন শুরুক প্রহান করিয়ে না।

সনস্তর বাবর সেনাগ্যক সকলকে আছ্মান করিল।
বলিলেন, পৃথিবীতে মনুবোর কীর্ভিই সজীব ও অক্ষয়
পদার্থ, জীবন কিছুকালের নিমিড যাত্র। মনুবোর জীবনাম্ভ হইলে ভাহার জীবনের কোন চিক্ষ পাকে না, কিছ কীর্ভি চিরকাল জাজ্বামান থাকে। অভএব অক্ষয় কীর্ভির জনা মৃত্যুকে ভয় করা মনুবোর উচিত নহে। ইহা বলিয়া তিনি শাহানামার এক কবিতা পাঠ করিলেন।
ভাহা তিনিয়া সকল সেনার বল ও সাহস হুদ্ধি হইল,
ভাহাতে ভাহারা কোরাণ প্রশ্বক শপ্রথ করিয়া বলিল এ যুদ্ধে প্রাণ্ণণ করিলাম হয় সংগ্রাম জয় করিব, নতুবা खान भारत कतिय ना ।

হৈননাগণ এই প্রকার প্রতিজ্ঞা করিলে পর, বাবর যুচ্ছের আয়োজন করিতে লাগিলেন। ছিন্দু রাজাদিগের সহিত অসন্ধ্য অস্থারোহী সেনা ছিল, ইছারা যদিও উত্তম শিক্ষিত ন। হউক কিন্তু অভান্ত সাহসিক। বাবহের যে সকল অশারোহী সেনা ছিল তাহারা লগু অন্ত্রণারী, কেবল পলায়-मान टेम्टानाइ लक्षांट शावमान स्ट्राइ त्यांना, इन्टक्स थांकिए छेडम कर्ण गुष्क कदिवात व्योगा मटर। किय ভাঁহার কামান ও বন্তৃক প্রধান বল চিল। অত্থব কামান নকল শৃন্ধন-যুক্ত করিয়া সম্মুখে প্রাচীরবৎ সারী দিয়া त्राधाहरलन, ভाहाव भरत अश्रास्त्राही रेमरनाता मनदफ হইয়া এবং সর্কপশ্চাৎ পদাতিক সেনাগন তেনীবদ্ধ হটয়। मश्रायमान बहेल।

বাবর এই প্রকার ব্যহরচনাপুর্কক রণসজ্জা করিলে প্র হিন্দু সেনাগণ অদ্বিচন্দ্রাকারে উহার সৈন্যগণকে বেইন করিবার চেইটা করিল। কিন্তু বাবরের সৈমাগণ বস্তুক ও কামান ছারা অবিশ্রান্ত অগ্নি বর্বণ করিতে লাগিল, তাহা-তে হিস্তু সেনাগণ একপদ অগ্রসর হইতে পারিল না मस्या मस्या इतिया याहित्व लाभिल। এই श्राकांत चात्र उत মুদ্ধে প্রায় অর্দ্ধেক দিবা অতীত হইল, হিন্দু সেনাগণ ক্ষেক্লান্ত হইয়া পড়িল। বাবর ভাষা বুঝিয়া হুই ৰল অশ্বারোহী দেনা লইয়া তাহাদিগকে অকন্মাৎ আক্র-

মণ করিলেন। হিন্দু সেনাগণ ঐ আক্রমণ বহু করিতে না পারিয়া ছিন্ন তিন ইইয়া পলায়ন করিতে লাগিল। ভাষা-তে হাসন থা প্রকৃতি অনেকানেক প্রধান ২ সৈন্যাধ্যক সমরশ্যায় শ্যন ক্রিলেন, নজা के १४२१ मार्थ १४ वह कटके अलाग्नन कविदलन ।

বাবর যুদ্ধ ভয় করিলে পর ভবিষাদক্তা সামিয়া ভাঁহার স্তুতিবাদ আরম্ম কবিল। বাবের ভাষাতে কর্ণপাত না করিয়া ভাহাকে অনেক ভৰ্মনা কৰিলেন, অৰশেষ কিছু অৰ্থ দিয়া একেবারে রাজ্য হইতে নিকাশন কবিয়া দিলেন :

ভেদনস্তর বাবর মেওয়াত দেশে যাত্র। করিবেন। হা-সেন শাঁ নামে এক পাঠান এই দেশের রাজা ছিলেন। তিনি কোন প্রকাব উৎপাত না করেন এজনা বাবে ভাঁহার পুলকে প্রতিভূ ধকণ রাখিয়াছিলেন - সঙ্গাব সঙ্গে শংগ্রাম উপস্থিত হুইলে বাবর হাসেন খাঁয়ের পু**ত্র**কে প্রত্যপূর্ণ করিষা তাঁহার সহায়তা গ্রের্থিমা করিলেন। কিন্তু হাসেন थ। তাহ। না করিয়া সন্ধার সঙ্গে মিলিলেন। এই আজোশে বাবর ভাঁহার রাজ্য লইয়া আপন অধি-कांत्र खुक्त कदिरहान।

অন্তর যে সকল মোগল সৈনা স্বদেশ গমনে অভান্ত ৰাএটিভ হইয়াছিল বাবৰ ভাহাদিগকে দলবদ্ধ করিয়া কারুলে পুন: প্রেরণ করিলেন, এবং ভাঁচার জ্যেষ্ঠ পুত্র ংশীমার নকে ভাহাদের সজে দিলেন, তিনি তাহাদের मधाक हरेश शगन कतितन।

তৎপরে বাবর দেশের শান্তি বিষয়ে মনোযোগী হইয়া রাজা ও প্রজা পালনের সুনিয়ম করিতে লাগিলেন। এই কর্মে তিনি বিলক্ষণ ক্রতকার্যা হইলেন, এবং দকল দেশ সুন্দররূপ শাসিত হইল। কিন্তু অযোগ্যা রাজ্যে কতক-শুলিন পাঠান বাদ করিত, ভাহারা কোন প্রকারে রাজ-প্রান্তুত্ব মানিল না। বাবর তাহাদিগের দমনার্থ এক দল ইন্না পাঠাইলেন।

পর বৎসর তিনি চন্দ্রীতে যাতা করি-<sup>১৫২৮</sup> লিন। চন্দ্ররী বুদলখণ্ড ও মালনের बिधावर्को । त्मांमभी तात्र मोरम थक बज्रः श्रेष्ठ धरे छात्मद কর্ত্ত। ছিলেন। মালবাপিপতি ছিতীয় মহম্মদের রাজ্ত্ব कारन धरे त्रामिनी ताम अठाख প्रताकमणानी करेगा বলপুর্বাক ঘালর রাজ্য অধিকার করিয়াভিলেন। পারে বিহম্মন, গুজুরটিরাজের সহায়তায় উদ্লাকে যুদ্ধে পরাস্ত कंद्रित्न छिनि नकांत्र महत्यात्म हस्त्रीत्त बाक्यांनी করেন। এই মেদিনী রায় সঙ্গার সঙ্গে সিকরির যুক্তে গমন कविशाहित्सन, त्मरे क्लार्प वादत छारात तांच्या मरेमत्ना উপস্থিত ইইলে, তিনি প্রাণপণে যুদ্ধের আয়োজন করি-লেন। কিন্তু রক্তপুতিদিগের যেমন সাহস তাদুক্ শিকা 📹 হৈছ্যাবলয়ন নাই। অতএৰ মোগল সৈনোৱা যে भिवम नगर विकेन करिन छोटाउ शर मिन्मरे रुक्र श्वर छत। करेशका छाटत, जालन २ की शुक्रमिश्टक मण्डात कतियी, উন্নত্ত বেশে বাহির হইয়া পক্তহন্তে একে একে তাবতে নিধন প্রাপ্ত হইল। মেদিনী রায়ের গৃহ রক্ষার্থ যে হাই ভিন শত হৈল। ছিল ভাহারাও আপনা আপনি কাটা-কাটি করিয়া মরিল। ভাহাতে বাবর এ রাজা অনায়াদে প্রাপ্ত ইইলেন।

চন্দ্ররী আক্রমণ কালে বাবর সংবাদ পাইলেন অযোগ্যা রাজ্য শাসন জনা তিনি বে সৈন্য প্রেরণ করিয়াছিলেন বাবন নামে এক পাঠান ভাহাদিগতে পরাভূত করিয়াছে। এই সংবাদ পাইয়া তিনি স্বাং ঐ ভানে বাতা করিলেন। উাহার আগ্রমনে পাঠানের। তথা হইতে বন্ধ দেশে প্রদান যন করিল। বাবর আ্যোগ্যা রাজ্য অপিকার করিয়া বিজ্ঞোহীদিগের পশ্চাদ্ধাবমান হইলেন, এবং কোথ হয় ঐ সময়ে তিনি বেহার প্রদেশ জয় করিয়া থাকিবেন।

সন্ধা রাজার বিয়েখিতেও তাঁহার জ্যেন্ত গ্রহ কাজা স্থানন। বাবর জাঁহার হিতীয় পুত্রের নিকট স্থানত রিস্তাম্বের মুর্গ লইলেন। ঐ মুর্গ অভি প্রধান।

এই সময়ে বেহার প্রদেশে পুনর্কার মহা গোলঘোগ উপস্থিত হইল, ভাহার কারণ লোদী বংশীয় যে মহম্মদ-শাহ সঙ্গা রাজার সঙ্গে খুদ্দার্থ গমন করিয়াছিলেন, তিনি এ রাজ্য বলপূর্বক অধিকার করিলেন। বোগ হয় বল-দেশের রাজাও ভাঁহার পৃঠপুরক চিলেন।

যাহ। হউক নহমাদ লোদী বেহার অধিকার করিলে পর ঐ প্রদেশীয় ভাবৎ পাঠানেরা ভাঁহার দলে মিলিল, ভাহাতে ভিনি প্রায় লক্ষ্য দেনার অধিপতি হইযা বারাণস পর্যান্ত গমন করিলেন। কিন্তু ক্রমে ভাঁহার সেনার মধ্যে বিবাদ উপস্থিত হইল, সুভরাং যথন বাবর রণসভা করিয়া গলা মনুনার সঙ্গমে অর্থাং আলাফা-বাদে উপস্থিত ইইলেন, তথন ঐ সকল সৈনা চিন্ন ভিন্ন হইয়া পড়িল। মহম্মদের পলায়ন ভিন্ন আর জান উপার রহিল না। মহম্মদ পলায়ন করিলে পর বাবর গলার দক্ষিণ ভাবং বেহারের কর্তা ইইলেন। উত্তর বেহার তথন পর্যান্ত বল্পদোপিপতির হস্তে চিল। তিনি ঐ প্রদেশ আগনি বাখিবেন, এই মনন করিয়া নাবরকে সংগ্রাম হইতে নির্ভ করিবার নানা প্রকার চেন্টা পাই-জেন। শক্ষিত্ব বাবর তাঁহার কথায় না ভুলিয়া একেবারে উত্তর বেহারে উপস্থিত হইলেন। তথন বঙ্গদেশীয় রাজা অগভা ভাঁহার নিকট নম্রভা স্বীকার পূর্মক সন্ধি বন্ধন করিলেন।

এই দক্ষির পর বাবর আগ্রাতে গদন করিলেন।
প্রথিমধ্যে শুনিলেন কতকগুলা পাঠান বাবনের সহযোগে
পুনর্কার অযোগ্যা অধিকার করিয়াছে। ঐ সংবাদ পাইয়া
ভিনি অযোগ্যা যাত্রা করিলেন। প্রাঠানেরা ভাঁহার
আগ্রমনে তথা হইতে পলায়ন করিল। তদনন্তর বর্ষাব্য় হওয়াতে বাবর মুদ্ধে কান্ত দিয়া আগ্রাতে প্রভাাগ্রমন করিলেন।

ভদনন্তর বাবর পোনের মাস পর্যান্ত অভি পীড়িত স্বব-ছার ছিলেন, সুতরাৎ আর কোন যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইতে পারেন मारे। धरे शीड़ाकाटन डाँहाद ट्यांश पूर्व ट्राँमायून বাদকস্থান হইতে আসিয়া অন্তান্ত পীড়িত ছইলেন। 🎉 পীড়াতে তাঁহরে প্রাণ সংশয় হইল, চিকিৎসকেরা অসাধ্য রোগ বলিখা চিকিৎসাতে কান্ত দিলেন। বাহর হোমায়-नत्क अठा छ जान वानिएडन, अड वत, उर कानीय दीछा-কুমারে, আপনার প্রাণ নিয়া তাঁহার প্রোণ রক্ষার প্রতি-জ্ঞ। করিলেন। বাবরের আগ্রীয়গ্রণ এই প্রতিজ্ঞা হইতে তাঁহাকে নির্ভ কর্ণার্থে অনেক যতু পাইলেন, কিন্তু ভিনি তাঁহাদিগের বাকা অবছেলন কবিয়া শান্ত্রদিক কিয়াছি করিলেন, তাহার পর তিন বার রাজপুরের শব্যা প্রদক্ষিণ করিয়া জপারম্ভ করিলেন। জপ সমাপন হইলে তিনি चि अक्ष नम्द्रन दक्षित्त्रन आगात मनकामना निक् হইয়াছে। বস্তুতঃ ভাঁহার মনে দৃঢ় প্রভীতি ছইল, এবং রাজপুত্রও নিশ্চিত জানিলেন ভাঁহার পীড়া শেষ হইবে। মত এব সকল ইতিহাসলেখকেরা লিখিয়াছেন এই ফ্রিয়ার পর অবণি হোমায়ন আরোগা প্রাপ্ত হইলেন, এবং বার-রের পীড়া রুদ্ধি হইয়া তিনি দিন ২ ক্ষীণ-কলেবর হইতে वाशिद्यम् ।

শনন্তর যথন ভাঁহার অন্তিন কাল নিকটবর্তী হইল, তথন
তিনি আপন পুত্র ও মক্ত্রিগণকে নিকটে ডাকিয়া রাজকর্মশহরে জাপনার যে নকল অভিপ্রায় ছিল ভাহা ব্যক্ত করিকেন। তথপরে নকলকে নির্কিরোধেও পুত্রদিগকে পরস্পর
সম্প্রীতে থাকিতে জালা করিয়া, সর্কত্তক ও৮ বংসর

রাজ্বরে পর, ৫০ বংসর বয়ঃক্রমে, হিজরী ৯৩৭ অব্দে,
ক্র্ডেড, দিজস্বর্থ আগোডে প্রাণ ভ্যাণ করিক্রেড্ডে পৌষ লিন। তাঁহার ইচ্ছান্ত্র্লারে
ভাহার মৃত দেহ কাবুলে প্রোথিত হইন।

বাব্যের চরিত্র অতি মুন্দর। ভারতকর্ষে যত মুগলমান
রাজা হ্রাভিলেন, বাবর যদিও ভাঁহাদের সর্বাপেকা
উৎরেই না হউন, কিন্তু তিনি সর্বজ্ঞণান্থিত ভিলেন ভাগার
কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। তাঁহার তুলা সাহস মনুষোর প্রায়
হয়না। তিনি অনেক যুদ্ধ জয় করিয়াছিলেন, এবং এক কে
যুদ্ধে এমন বীরত্ব প্রকাশ করিয়াছিলেন যে উাহার গোডীপ্রতি তৈমুরলম্ভ তেজপ বীরত্ব প্রকাশ করিতে পারেন
নাই। ভাঁহার শরীরে এমন বল ছিল থে ভাহাকে দৈববল
বলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কথন
কল্মান আরোহণ করিতেন না, প্রায়ই সন্তর্গ দ্বারা পার
হইতেন, এবং শরীরকে এমন অনায়ানে চালাইতেন যে
ভাহা দেখিয়া লোকের বিশায় বোধ হইত।

বাবর কেবল সংগ্রামে পণ্ডিত ছিলেন এমন নংহ,
সংগীত শান্ত্রেও সুপণ্ডিত চিলেন, এবং উত্তম ২ কবিতা
রচনা করিছে পারিতেন। পারসী ভাষাতে যে কবিতা
রচনা করিছা গিয়াছেন তাহা অতি প্রসিদ্ধ। ইবা ভিদ
তিনি অতি সুলেখক ছিলেন, তাঁহার রাজ্যকালারম্ভ অবধি
স্কৃত্যুর কিঞ্চিৎ পূর্ম পর্যাম্ভ যে দিবস যে ঘটনা হইয়াছিল,
বধন ধে ভাবে কাল যাপন করিয়াছিলেন, বে দেশে

শেরপেরীতি নীতি দেখিয়াছিলেন, তিনি খ্যুৎ তাহ।
সমস্ত বিস্তারিত রূপে লিখিয়াছিলেন, ইহাতে রাজা
বলিয়া কোন কথা গোপন রাখেন নাই, মুখ ছঃখ য়খন
যাহা হইয়াছিল সকলই প্রকাশ করিয়া লিখিয়াছেন। এই
পুস্তকে অনেক স্থানের বিষরণ আছে। তাঁহার রাজ্যদ্দ শহদ্ধে যে সকল বিষরণ লেখা গেল ভাহার অগিকাংশই
ভাহার এ পুস্তক হইতে উদ্ধৃত হইয়াছে।

তাঁহার সদ্প্রণেরও অনেক প্রশংসা করিতে হয়। তিনি অতি সরলস্বভাব, দানশীল এবং সদালাপী ছিলেন, এবং বদিও সুদ্ধের সময়ে কথনং জাতীয় নিষ্ঠুরতা প্রকাশ করিতেন, কিন্তু জনা সময় নিতান্তগক্তর প্রভিত্ত অভ্যন্ত দয়া করিতেন। প্রকালে এমত রীতি ছিল সংগ্রাম সময়ে পথিক বা যাত্রী দেখিলে উসন্যেবা ঘাহার যাহা পাইত ভাহা অপহরণ করিত, কিন্তু বাবর সৈন্যাগণকে ভাষা করিতে দিতেননা, ইহাতে উন্থার স্করেজ বিজ্ঞাণ প্রকাশ হইয়াছে।

কিন্তু বাবরের রাজ্যশাসনে এই এক মহৎ দোষ দৃষ্ট হইতেছে যে দেশহিতজনক বা প্রজার হিতকর কোন কার্য্যে তিনি বিশেষ মনোযোগ করেন নাই। কেবল কতকগুলিন রাজপথ পাছ্শালা ও জলাশায় নির্দ্রাণ করাইয়াছিলেন। বাবর অতি চঞ্চল স্বভাব ছিলেন, সর্বানা যুদ্ধ বিগ্রহে ব্যস্ত থাকিতেন, একস্থানে কিছুকাল স্থির থাকিতে পারিভেননাই। অনুমান হয় এই জনা তিনি দেশহিতকর কর্মো বিশেষ মনোধোপ করিতে পারেন নাই। যাহাইউক সেই একটা ভাঁহার চরিজের কলক। আর এক দোস এই তিনি অতাস্ত মদা পান করিতেন। এই কর্মা তিনি পরে ত্যাগ করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু অতি পানেই ভাঁহার শরীর একএকার নটা হইয়া গিয়াছিল।

<sup>ি</sup> তিনি আগিনি লিখিয়াছেন জাঁচার জানোদ্য চইয়, অবি ভিনি এক ছানে কথন ব্নজানের রোজ পুইবার কারন নাই। জাজি বংসর নুতনং ছানে থাকিতেন এবং শেষে যখন পাঁড়িছ ভূইয়াছিলেন তথনও একং বিবদ অবারোজনে চলিশ প্রাশ্

#### যোড়শ অপার।

#### হোমাযুৰ।

বাবরের চারি গুম ছিলেন হোগালুন, কামরান, হিলাল, ' ও মির্জা আক্ষরী'।

হোমাযুন পিতৃসিংহাসন প্রাপ্ত হইবেন বাবর জীবিজ্ঞ পাকিতেই ইহা থাগা হইয়াছিল। কিন্তু ভাহা হইলে মন্ত্রীর বছ অবিপতা থাকে না. এইজনা মন্ত্রী, মেহেদীখাজা নামে রাজ-জামাভাকে র'জা দেওঘাইবেন এবং আপনি কর্তৃত্ব করিবেন ইহার ঘড়যন্ত্র করিয়া রাখিয়াছিলেন, কেবল বাবেরের প্রাণতা।গ হইবার অপেকা ছিল। কিন্তু মন্ত্রীর প্রতি মেহেদীখাজার অতাস্ত দেব ছিল, কোন কথাছারা হঠাৎ তাহা প্রকাশ হওয়াতে মন্ত্রী তাঁহাকে রাজা দেওয়াইবার কম্পনা ত্যাগ করিলেন, মুতরাং হোমাযুন নির্কিন্ধে রাজসিংহাসন প্রাপ্ত হইলেন।

বাবরের আর তিন পুসকে অন্য কোন রাজত্ব দিবার প্রস্তাব হয় নাই, তাহার কারণ রাজ্যবিভাগে অনেক
উৎপাতের সম্ভাবনা। কিন্ত দিভীয় পুত্র কামরান কাবুল ও
কান্ধারের কর্মাধাক ছিলেন। তিনি কোনপ্রকারে জ্যেতের,
প্রস্তুত্ব বীকার করিলেন না, অতএব সংবভাব হোমায়ন
ভাষাক্রের প্রাল্য ও পঞ্চাব প্রদেশ একেবারে সমর্পন

করিলেন। এবং হিন্দালকে সম্বল ও মির্জা জাকরীকে মেওয়াত রাজা প্রদান করিলেন। পিতার স্থতন স্বোপা-জিত হিন্দুস্থান মাত ভাঁহার নিজের রহিল।

হোনাযুন সক্ষণান্তিত ছিলেন। জ্যোতিষ শাল্পে তাঁহার।
বিশেষ অনুরাগ ছিল, এজন্য নপ্ত গ্রহের সম্মানার্থ তিনি
সাতটি গুল সুসক্ষিত করিয়া প্রত্যেক গৃহে এক এক গ্রহের
নাম দিয়াছিলেন, এবং যথন যেপ্রকার লাকের সহিত
সালাং করিতেন ভখন তাহার কর্ম নিবেচনা করিয়া তত্তপযুক্ত স্থানে, অর্থাং মুক্ত সম্বন্ধীয় লোকদিগকে মঙ্গলের
ছুহে, বিছান লোকদিগকে বুখের গৃহে, রাজভুত, বা ক্রমণকারি দিগকে চন্দ্রের গৃহে, এবং আর ২ লোক দিগকে
ব্রোপাপ্যক্ত গৃহে আফ্রান করিতেন।

এই প্রকার রাজ্যারন্ত করিলা কিল্লবস পরে হোলালুন কালিঞ্জরের দুর্গ অপিকার করণার্থ বুণদলথতে গালা করি-লেন। তথায় উপস্থিত ইইলা দুর্গ বেটন করিলে পর শুনিলেন বাবন পুনর্বার জুয়ানপুরে রাজ্বিজোই আরম্ভ করিয়াছে। এই সংবাদ পাইয়া হোলালুন অনিলম্বে ভথায় ঘাইয়া বিজোহ নিবারণ করিলেন। তথপরে তিনি হিং ১০০ বারাণস সামিধ্যে চঞালগড় আক্রমণ প্রত্তিন। তাঁহুার ভবিষাৎ বৈরী সের বা তথকালে এই দুর্গের কর্তা ছিলেন। তিনি হোমালুনের নিকট নত হইলেন বটে, কিন্তু দুর্গ তাঁহার হস্তে থাকিল। তদন্তর হোমালুন আ্লাতে প্রত্যাগমন করিলেন।

शृद्ध लिथानियारे हामागुरनं उपीशिव्यक होका मि-वात कुमखा इहेगांदिल । जे कुमखा अकाम इहेटल स्मरह-দীখাজা গুজরাটে পলাশন করেন। এবং ভত্ততা রাজা বাহাছুর থাঁ ভাঁহাকে আপন আগ্রয়ে বাখেন। হোমা-য়ন এই সংবাদ পাইয়া বাহাছের থাঁকে পত্র লিখিলেন ভিনি মেহেদীকে পাঠাইয়াদেন। কিন্তু ৰাহাত্মর থা ভং-কালে অভি পরাক্রমশালী হইডাছিলেন, বিশেষতঃ খনেন্ত বেরার ও আহম্মনগরের রাজাল তাঁহার আক্রাফারী এবং সমুদ্য সালব রাজা তাঁহার কর্প্ত ছিল। এই আছ-স্কাৰে তিনি হোমাণ্টনর কথা অবহেলন করিয়া তাঁহার ভ্রীপতিকে পাঠাইলেন না। ভাষাতে উভয়ে পরক্ষার বাদারবাদ হইতে লাগিল। পারে বাহাছর থাঁ মতগর্ক হইয়া দিলীর জা লইবার মানসে অনেক সেনা সংগ্রাহ করিয়া স্বীয় পুত্র ভাতার থাঁকে জাগ্রাতে পাঠাইলেন। ভাভার খাঁ মহা সমারোহ পূর্বক আগ্রাতে গাতা করিয়া : ঐ রাজধানী আক্রমণ করিলেন। কিন্তু যুদ্ধে হত হইলেন, এবং ভাঁছার দৈনাগণ ছিন্ন ভিন্ন হইয়া পলায়ন করিল।

এই জয়োলাদে কিয়াপুর্ঝ কল্পনানুসারেই হউক, হো-মাগুন বাহাছর থার গর্কধ্র জন্য গুজরাটে সংস্থান যালা केतिरलम्। बै ममरम बाष्ट्राञ्च वी भिवाद्यत तालात गरिक युष्क अञ्चल स्टेश हिट्छाटत्र पूर्व आक्रमन क्रियाछिटन । मिनाद्भव ब्रोका विष्ठु। गूजनमानभाटक विष्ठुनिशटक काकत यर्थार नाष्ट्रिक स्विद्यार्थात्क। अञ्चय यमि त्कान गुनग-

মান কাফরকে নির্যাত্তন করিতে উদাত হয়, মুসলমান-শাস্তাত্ত্বসারে তাহাকে কোন প্রকার বাখা দেওয়া অবিধি, এই বিবেচনার হোখাযুন গ্রহণ্যত করিয়া ঘাইতে লাগি-লেন। অনন্তর বাহাছর খাঁ চিত্তোরের চুর্গ জয় করিলে দিল্লীশ্বর তাঁহার সহিত্ত যুদ্ধারম্ভ করিলেন।

বাছাছর খাঁ কনন্তান্তিনোপল দেশীয় এক জন তুকী ও ভুতকভালন পোর্গী চাকর রাখিয়াহিলেন, তাহারা - আর্থের মুদ্দে অর্থাৎ গোলাগুলির কর্ম্মে অভি পারণ, ্পত্ত এব ভাষাদের বলে নির্ভর করিয়া তিনি মান্দেশরে ছোমাশুনের অপেক্ষা করিয়া থাকিলেন। হোমাগুন তথা े डेशिंहरू इहेश है। होहादक रिमनायादन विकेन कतिरलन। ভাহাতে দৈনাগণের আহারীয় প্রবাদি আন্মনের প্র क्ष हरेल। सुउतार एडिंटकत अभिकास तोहाइत उपास ্তিষ্ঠিতে না পাবিয়া, স্নাতিকালে কামান সকলের মুখে বারুদ लिक्के कि दिशा, जालिन अकाकी मां स्टूटिक लिलाग्रन करिटलन। ইসনাগণ পশ্চাতে রহিল। হোমায় ন বাহাল্ডরের পশ্চাৎ ই मा धुट्ड भग्नन क्रिटनन । ভाহাতে वाराष्ट्रत उथा स्ट्रेट इंग्लानरत, उर्लाहत कार्य, अवटनरव मगूरस्त्र गर्ह अवाहि-লেন। হোনাযুন তাছাকে বনী করিতে না পারিয়া চাল্পা-नत्त्र व्यानिया हुर्ग व्याक्रमण क्रिटलम । हान्योनद्वत्र हर्ग প্রতিশিখনে, তাহার দার ক্ষু ক্রিলে তাহা উল্লেখন कदा किन। त्यामागुन त्यक्रल माइटम ও क्योमटन এই রূপ অধিকার করিবেন ভাহা অভি আকর্ষা। তিনি রাজিষাকো কভকণার দৈন্তে প্রথার আক্রণন নিযুত্ত করিবেন। কার আক্রান্ত হইলে প্রথান আক্রণন করিল। কার আক্রান্ত হইলে প্রথানক কেনালপ করি কারণ করিল। কান করিল। অন্য দির প্রায় রক্ষণানা হইল। কেনালার প্রায় করিব। করে এক প্রায় করিব। করে এক প্রায় উল্লেখ্য করিবেল। করে এক প্রায় করিবেল। করিবেলন করিবেলন করিবেলন বাহাকের করিবেলন বাহাকের করেবেলন বিহতে লাগিলেন। যে কৈনাগণ দার আক্রমণ করিবাজিল ভাহার।ও ই নম্বার চাপিব। প্রভিল। এই প্রকারে জনাল্যাকে দ্বি জন্ম হইল। এই ক্রকারে জনাল্যাকে ও কিছা। এই ক্রকারে জনাল্যাকে ও কিছা। করিবেলন বিহত করিবাজিল করিবাজিল করিবাজিল। এই ক্রকারে জনাল্যাকে ও কিছা। বেলিনাল স্বায় বিহার প্রায় ও ওপ্রকার বিহার প্রকার করিবাজিল বিহার ওপ্রকার বিহার বিহার ওপ্রকার বিহার প্রকার করিবাজিল করিবাজিল বিহার বিহার প্রকার বিহার প্রকার করিবাজ প্রধান নাই।

গুজুরাট জানের পর ছোগাগুন স্থায় জ তা নিজা আক্ররীকে তথার রাখিয়া জাঞা প্রভান করিলেন । কিন্তু
চিনিও গুজুরাট ত্যাগ করিয়াছেন উল্লাহার কর্মক্রিকিরের
মধ্যে মহা বিসংবাদ উপস্থিত হল । উল্লাহার। নানাপ্রকার
মুখুরাণা করিতে লাগিলেন। কেন্ন কেন্তু স্থির করিলেন
নির্জা আন্তরীকে রাজসিংহাসন নেওয়াইবেন। কিন্তু এই
নকল মুক্তি নিজ্ব হইয়া লাভে হইছে আপ্রবিচ্ছেদ ও
বলক্ষর হইতে লাগিল। ভালাতে বাহাছ্র খা বিনাযুদ্ধে
অনায়ানে গুজুরাট রাজা পুনর্ধিকার করিলেন। এবং
ভ্রুন মালবদ্বেশে যদিও কোন উপদ্রেব বা বিদ্যোহ ছিলনা
তথানি মোগলদিগকৈ ভালা পরিভাগে করিতে হইল।

ইভিনধো নেব্ৰী ক্ৰমণঃ অভান্ত প্ৰবল হইয়া উঠি-লৈন। নেরখা পাঠানজাতীয়। তাঁহার পিতামহের নাম अद्वारहम । अद्वारहम आश्रनात्क श्रातताकवश्मीय विवर्श পরিচয় দিতেন। এব্রাহেনের পুত্র হাসন কোন সম্ভান্ত লৈ।কের কন্যা বিষাই করিয়াছিলেন, তাছার গরে সেরখাঁ। ও নিজাম খাঁ ছুই পুত্র জনো। কিন্তু হাসনের এক উপপত্নী ্রিল, ভাষার যশতাপদ হইয়া তিনি পুরদিগকে তাজ্লা ক্রিডেন, এজন্য সের্ধী পিতালয় ভ্যাগ করিয়া স্থান-ুপুরে এক সিপাহির কর্মে গ্রন্ত হয়েন। তথায় বিদার-भीमान माना पान कहिए। नाना कावा ७ इंडिइ।म शुक्रक ंशार्ट क्रिटिक कांशिटलन। अवर स्मर्थ भागीत श्रुक्तकथानि ্রিবন অভাগে করিলেন যে তাহা অনাযাগে মুখন্থ বলিতে পোরিতেন ৷ এইরূপ কিছু কাল অতীত হইলে ভাঁছার পিতা ঠাছার প্রতি অমুকুল ছইলেন, এবং বেছারের অন্তঃপাতী সমত্রামে ভাঁহার যে জায়গীর ছিল ভাঁহাকে ভাহার করিছের ভার দিলেন। সেরখা বেহারে থাকিয়<sup>া</sup> পিতৃদক্ত জায়গীরের কর্তৃত্ব করিতে লাগিলেন।

কিছুকাল পরে শলিমান নামে তাঁহার পিতার জারজপুত্র বরঃপ্রাপ্ত হইয়া জায়গীর-সম্পর্কে তাঁহার সঙ্গে বিবাদ
উপস্থিত করিবেলন। ভাহাতে সেরশা ও তাঁহার সংহাদর,
নিজাস ঘাঁ, সেকাদর মাহের কর্মো নিযুক্ত হইয়া দিলীতে
বাদ করিতে লাগিলেন। কিংকোল পরে তাঁহাদের
পিতার মৃত্যু বইল, ভাহাতে সেরখাঁ সমরামের জায়গীর

শুন আ প্রতিষ্ঠ । পরে মহম্মদ সাহ লোহানী জুরান-পুর ও বেহারের রাজা হইলে, তিনি তাঁহার সঙ্গে মিলিয়া কিছুদ্নি সম্মানে থাকিলেন। তদনন্তর তাঁহার ইন্যাত্মের কাতা শলিমান রাজসভায় উপস্থিত হইয়া পাকচক্র করিয়া তাঁহাকে জায়গীর হইতে বক্ষিত করিলেন। তপন সের্থা মহম্মদ লোহানীর সভা ভ্যাগ করিয়া জুয়ানপুরে ঘাইয়া বাবরের পক্ষীয় ইসন্যাধ্যক্ষের সহিত মিলিলেন। এবং ক ইসন্যাধ্যক্ষের সাহাধ্যে বেহারের পর্কতের কতকগুলি লোকের সহিত যোগ করিয়া আপনার জায়গীর পুনর্কার উদ্ধার করিলেন। তৎপরে আপনাকে বাবরের প্রজাবলিয়া মহম্মদ লোহানীর রাজ্যে উপদ্রব করিতে লাগিলেন।

কিছুকাল পরে চক্ররীর যুদ্ধ উপস্থিত ছইলে সের খাঁ।
বাবরের সমন্তিবাহারে ঐ যুদ্ধে গমন করিলেন, ভাহাতে
বাবর তাঁহার প্রতি সদত্য হইলা ভাঁহাকে বেহারের সেনাধাক্ষ করিলেন। ভদনস্তর হিং ৯০৬ অলে মহম্মদ লোদী
বেহার অধিকার করিলে, তিনি বাবরের পক্ষ ভাগে করিয়া
মহম্মদের সহিত মিলিলেন। পরে যখন ঐ মহম্মদের
সৈনাগণ ছিল ভিল হইল, তখন তিনি পুনর্কার বাবরের
শরণাগত হইদেন।

নের বী এই প্রকার অনেক গোলমাল করিলেন। কিছু-নিল নারে বছবাদ লোহানী, জলাল নামে এক শিশু সন্তান রাবিমা পর্যোক কমন করিলেন। জলালের মাতা ভাঁহার কর্মকর্মী হইরা বাবরের অধীন্তা খীকার করিলেন। তা- হাতে বাবর উচ্চার প্রতি অনুকুল হইয়া উহিতিক বেহার প্রদেশ অপন করিলেন। সেরখা ঐ সময়ে কলালের মাতার অনুগত হইয়া ভাঁহার সকল বিষয়ের অধ্যক্ষ হই-লেন। এবং ভাঁহার মাতার মৃত্যুর পর ভাঁহার সক্ষময় কর্তা হইয়া ভানহ সেহার ও চণ্ডালগড় ও রোটন অধি-কার করিলেন। এই প্রকারে সেরখা ক্রমশঃ প্রভান্ত প্রবল হইয়া উটিলেন।

ইতিপুর্নে হোমায়ুন যথন চপ্রাঞ্জন নাজ্যণ করেন, তথন সের্থা তাঁচার অধীনতা স্থীনার করিল। এই অলীন কার করিলাছিলেন ইলার প্রক কতকগুলি অপানোহী লাইলা তাঁচার কর্মে নিয়োজিত থাকিবেন। কিন্তু মখন হোমায়ুন ভ্রুলাটে গালা করেন, তথন সের খাঁর পুর টোহার দক্ষে হান নাই। হোমায়ুন ভ্রুলাই প্রকাটের সুজে যান্ত হিলোম, এজনা তাহার প্রভীকার করিতে পারেন নাই। হোমায়ুন গুজরাটে প্রমান করিলে সের্থা স্থানেন নাই। হোমায়ুন গুজরাটে প্রমান করিলে সের্থা স্থানেন নাই। হোমায়ুন গুজরাটে প্রমান করিলে সের্থা স্থানেন নাই। হোমায়ুন গুজরাটে প্রমান করিলে সের্থা স্থানার বেহার অধিকার করিলা বল্পেন পরিস্তালন।

বল্লেশ আত্রণের আর এক স্ক ইইয়াছিল। সেরখা ললাল লোহানীর কর্মাপাক ইইয়া আপনিই সকল কর্ত্ত্ত্ত্বি, জলালকে কিছু করিছে দিজেন না, ভিনি কেবল প্রতিম্বির নায় থাকিতেন। এই নলোহতার্থ ভিনি বল কেনীয় রাজাকে পর লিখিলেন, জামাকে ঐ ব্যক্তির বর্ত্ত ক্রতে পরিজাণ কর্মন। বলাগিকারী জনালের সাহায়েত প্রায়ত হইকোন, কিন্তু কৃতিকার্যা হইচেত পারিলেন না। বের- । । বার পারিলেন । । । কেন্তু পারিলেন । ।

যথন দেৱখা সহতে লাভ কেনতে প্রস্তুতখন হেমায়ুন্ত ভক্তরাট হইতে রাজধানী প্রভাগেত হইল দেখিলেন, দেরখা অতান্ত প্রাক্ষশালী হইলছেন, উল্লেখন না করিলে রাজ্যের কুশল নাই। অভত্তর তিনি স্ট্যন্ত আগ্রা হইতে যাতা করিলেন।

रमज्ञेषाँ विद्युष्टम्। कतिदलन् यमि दशासास्य न शाक्यादत् यक्ष ारम थारेटमन छोश रहेटन छै।राइ बे दम्म कप्न करा रूप না, অতএৰ চণ্ডালগড়ে কতকণ্ডলি নেনা রাখিয়া তাহা-भिगाक आखा मिरदान मोगन रेमना उवांश छेलनी छ स्टेटन ভारापिकाक धेथारम आहेक कविशा येख निमय কারতে পারে করিবে, শীঘ্র আসিতে দিবে না। কেনাগণ এই আজ্ঞাক্রে হোমায়নের পথাকরোধ করিল ৷ ১হামা-युन निक्रभाग्न इहेगा छूर्ग लाग्नेन कार्रक्षा शाकिटनन। াজন দ্বারা দ্বর্গ ভেদ করিবার চেষ্টা পাইলেন, কিন্তু डोहा शाहिरलन भा। करग्रक भाग शद्य वर्षहरूक रेमला-গণের আহার ত্রিয়া শেষ হইলে ভাহারা আপনারাই शहां उर मानिया इंटर्गंड मद्रशा जिन मं उ जन शोनामाज ছিল, হোদায়ু ন'রাগ্যশতই হউক, বা ভবিষাতে ভাছারা यात भागनाची क्या क्रिएं नाभारत अरे बिल्लारवरे · २ उँके, छोराटम्ब मकत्त्र मनिन रख छमन करिया निटलन । **एकानगढ बटबर नह त्हानागृन नवे नाहे**ण गजाः নার দিয়া দকিণতিমুখে আসিতে লাগিলেন। পাটনার
দানিয়া আসিয়া দেখিলেন বলদেশের রাজা মহম্মদ
দ্বাজাছাত হইয়া তথার রহিয়াছেন, গের খাঁ তাঁহার রাজা
লইয়াছেন। পরে ভাগলপুর উতীর্ণ হইয়া শুনিলেন
জলাল নামে দের খাঁর এক পুত্র সঠসনো সকরীগলির
পাহাডে আছেন। অতএব পাহাডের ঘোনা অপিকার
জনা তিনি অতে কতকগুলি সেনা প্রেরণ করিলেন, কিন্ত
ভিহার। ঐ হানে উপস্তিত হইবা মাত্র জলাল পর্কত
হিত নামিয়া তাহাদিগকে সংহার করিলেন। হোমায়ুন এই সংবাদে সমুহ ভাঁহার সহিত মুদ্ধার্থ গম্ম করিলেন। কিন্তু গহিয়া দেখেন জলাল তথা হইতে প্রায়ম
করিয়াডেন। অতথিব তিনি নির্কিল্পে গলা পার হইয়া
করিয়াডেন। অতথিব তিনি নির্কিল্পে গলা পার হইয়া
ক্রিয়াডেন। অতথিব তিনি নির্কিল্পে গলা পার হইয়া
করিয়াডেন। অতথিব তিনি নির্কিল্পে গলা পার হইয়া
করিয়াডেন। অতথিব তিনি নির্কিল্পে গলা পার হইয়া
করিয়াডেন।

হোনাগুন গোড় রাজ্যে উপনীত হট্যা দেখিলেন সের খাঁ বা রাজ্য জয় করিল তথা হট্ডে প্রস্থান করি-লাছেন। অতএর অবাপান বা রাজপানী অধিকার করি-লেন। কিন্তু তৎপরেই বর্ধারত্ত হইয়া তার্দ্দেশ জলপ্লাবিত হইল, ভালতে মুন্জের কন্পনা হথা হইল, তিনি গতি রহিত হইয়া থাকিলেন। তাহার সেনাগণ বল্দেশের, জনীয় বালুদোহে পীড়িত হইতে লাগিল, এবং অনেকে ভালাকে পরিভাগে করিয়া প্লায়ন করিল। হোনায়ন শি করেন তথ্য প্রভাগেয়ন করিতে না পারিল। বর্ধার ইতিমধ্যে দের যাঁ আপন ধন ও পরিজনারি রোচ-দের ছবে রাখিয়া রাজা উপাপি এহণ পূর্মক ভাবং বেহার ওচঙালগাড় ও বারাণ্য অধিকার করিলেন, তৎপরে জো-চানপুর আক্রমণ করিলা কানারুকে পর্যান্ত দৈন্য প্রেরণ করিলেন, ভাহার। গঙ্গাভীরস্থ ভাবং দেশ অধিকার করিতে লাগিল।

ব্যানামুন বর্গান্তে বঙ্গদেশ হইনেত ঘনেশ যাত্রা ব বিয়া গলার দলিল ধার নিয়া গালন করিতে লাগিলেন। বক্বর উদ্ধীব হুইয়া দেখিলেন সের থাঁ উংহার পণাবরোধ জনা জ্যোনপুর হুইতে সচননো তথায় উপস্থিত হুইয়াহেন। ছোমাদুন তাঁহার চননা উল্লেখন করিয়া ঘাইকে না পারি-হা, গলার পর পার দিয়া ঘাইকেন এই মান্সে নৌকার সেড় প্রস্তুত করাইতে লাগিলেন। এই কর্ম ছুই নাস পর্যন্ত ইইতে লাগিল, ইহার মধ্যে সের খাঁ কোন প্রকার বিশ্ব দিলেন না। কিন্তু মখন সেতু প্রস্তুত্র য় হুইল ভখন তিনি এক দিবস রাজিযোগে কভকওলি সেনা কইয়া ছোমাদুনের চসনামপ্রকীর পশ্চাদ্রাগে গোপন ভাষে পাকিলেন। রাজি প্রভাত না হুইতেই এফবারে তিন দিক হুইতে তাইরি ক্রন্যাগ্রিক আক্রমণ করিলেন।

হোমায়ুন কিছুই জানিতেন না, তথাপি শক্ত অংগত মাত্র অখপতে আবোহণ করিয়া যুদ্ধে প্রস্তুত হইলেন। কিওঁ তথ্ন যুদ্ধ হয়। বিফল, সমরসজ্ঞা করিতে সৈন্যাণণ শব্দারার গ্রাম করে। এজনা ভাহার সৈন্যাণ্যকের। নিষ্ণে

कतिया रिकटलेक के नमता पूर्व कतिया किछू के उटाए शाहि-त्वन ना, अकृत्भ प्रार्थमात्र आग तकात (एक) (मथून। हेट) বলিয়া উভার অধ্যক্তি নদীমুখে ফিরাইয়া দিলেন। स्थामामून नहीं करते याहेगा अदक्तारत ज़्त्रम भरण उत्पास सील फिटलन। करक पूत्र याहेगा जुतल जनगण परेन। হোমায়ুলেরও তেই দখা খুটিত, ইদ্যায়ত তংকালে এক জন ভিত্তী বাযুপুৰিত নসক অৱলম্ম করিয়া মদীপার হইতেছিল, লে হোনাযুনকে দলে গটন। নদী পার করিয়া দিলা। কোমাগুৰ ভাষার গার আরাহতে এতনগমন ক্রিলেন। এদিকে তাঁহার মেনাগ্র শক্তরাণ অভিক্রন ক্ষিতে না পারিল কতক স্থলে কাটা পড়িল, কতক ব। ्क्रजभन्ने हहेशा मितिल, आह्र ८ इट्डे वीहिल ना । इहासा-মুনের রাণীও শক্রহতে পতিত হইয়াছিলেন, কিন্তু সের খাঁ ভাঁহার এতি কোন অভ্যাচার করিলেন না। ভাঁছার যথোচিত শব্দান করিয়া দৌজনা প্রকাশ পূর্বক ভীছাকে রণক্ষেত্র হইতে নিরাপদ স্থানে পাঠাইয়া দিলেন, द्वानी किया क्टेटक यदमस्य भगन कतिस्वन ।

এই ঘটনার পর সের খাঁ বলদেশ পুনর্গিকার করিছে প্রায়ত ইউলেন। হিন্দাল হোমাগুনের ছনিশার সংবাদ পাইছা ভাঁহার প্রভূত অধীকার পূর্বক দিলা অপিকারের ইপ্রভূম করিলেন। কামরান এই বিজেভি নিবারণচ্ছলে কালুলে সমাগত হুইপেন। ভাঁহার মনে মনে ইচ্ছা ছিল আদি সুযোগ ইয় আপুনি রাজাধিকার ক্রিবেন। কিন্তু হোমায়ুন ঐ সময়ে রাজধানীতে প্রত্যাগত হইলেন, তাহাতে তাঁহাদিগের মন্যোতিলাগ পূর্ণ হইল না।

পরে হোগায়ুন পুনর্বার হ্রদন্য সংগ্রহ করিয়া, সের भारत क्रिकांत काना, क'नाकूटरक गावा कतिहलन। किन গঙ্গা পার না হইতে হইতে নের খঁ৷ প্রপারে উপস্থিত হইলেন। ভাষতে ছোমায়্ন পার হইতে পারিলেন না। এই সময়ে ভাঁহার এক জন প্রবান দেন্পিতি ভাঁহারক প্রিক্তাণ করিয়া আগন অধীন সৈনা মন্তিয়াহারে श्रद्धांन कदिरवन। दिलम् कतिरत शास्त्र चात्र रमगात्रा জে**ই প্রকার** প্রায়ন করে এই আশিস্কায় হোমাম্য হিং ৯৪৭ ১০ মহরুর ি অশিলামেই সৈনা গার করিলেন ৷ বং ১৫১০ ১৬ মে তিৎপরেই যুদ্ধারস্ত হাইল ৷ এই ৷ াম্বেও হোমায়ন পরাস্ত হইলেন, এবং ভাঁহার সেনাগ্র শক্তকর্তি আক্রান্ত হইয়া নদীর গরের পড়িতে লাগিল। धरे विश्वपकारम रहामामुर्भेत क्षेत्र जाहरू हरेल, जिनि धेर गाउम्पुर्छ चारताइन कतिया कान खेकारत नमी भार হইপেন। কিন্তু হন্তী এমন প্রানে বাইয়া উঠিল দে সেস্থান। হয়তে ভট়ারোহণের ফোন উপায় ছিলনা, ভাহাতে সেই-थारने हैं होते बुड़ात महादन। इहेल। देमवायु छ इहे जन শোগল শেনা ভটহইতে আপনাদের গ্রহটা পাণড়ি একত क्तिया सूनाहेका मिन, त्हाभागून छाहा अवस्थन कविस Sea Shier Control of the season of the seaso

भी कर्मात्वत पत्र दशमात्रम तालपानीत्छ उलनी उ

হইলে, তাঁহার ভাতা হিদান ও মিজা আক্ষ্মী তাঁহার माहादार्भि छन्। इ. त्रामित्सम । किन्न खरू देगमा भर धन ना कविएल बोजा तथा कहा कहिन, धेर विष्यम्माश रहानाशून, আগ্রাও দিলী হইতে, পরিবারগর্ণ লইয়া পঞ্জাবে পলায়ন क्रिलिन। भार भी कार्व दाका वाकन्य ना कर्दर এই অভিপ্রায়ে কামরান উচ্চিকে পঞ্জার অনেশ সমর্পন করিয়া তাঁহার সহিত সম্পীতি করিলেন। কিন্ত কি জানি পাছে কামরান ভাঁচাকে শক্তহত্তে অর্পণ করেন এই আৰ্শ-ক্ষায় হোমানুন পঞাৰে সুদ্ির হইতে না পারিয়া শিক্ষু ब्रांटका भगन कतिरलन । मिकु ताका शटर्स मिलीकुङ किन, ভাহাতে তিনি মনে ২ করিলেন ঐ স্থানে তাঁহার প্রস্তুত্ব চলিবে, ভাতএব অকীদশ गांग প্রান্ত ওখায় বাস করিয়া ভাহার নানা প্রকার চেটা করিছে লাগিলেন। সিন্ধুরাজ ভাঁহার সহিত দৈতাচরণ না করিয়া স্ববশেষে विशेष इहेश डिहिलन।

ভথন হোমাণুন সিন্ধু রাজা পরিতাগ করিয়া গারোয়ারের রাজা নালনেবের শরণাগত হইবার মানুষে বালুকারুণাদিয়া গারা করিলেন। কিন্তু ঘোপপুরে ঘাইয়া শুনিলেন
মালদেবের নিকট পমন করা নিক্ষল, ভিনি ভাঁহার পরম
শক্ত, অভএব সিন্ধুতটে অমরকোঠে গমন করা প্রেয়ঃকম্প বিবেচনা করিয়া পুনর্ধার বালুকারণে পড়িলেন। বালুকারুণা পার হইতে তিনি এবং ভাঁহার সম্ভিব্যাহারী লোকেরা বি ক্রী পাইলেন ভাইা নতুতো ম ভবিষাতি। একে বালি ভালিয়াপথ চলা কঠিন, তাহাতে ব্রেদ্রের উত্তাপে এ সকল বালুকা প্রারিৎ হইয়াছিল, ঐ বালুকাতে পদ প্রকেশ করা হংশায়। মধ্যে হ বহিনবৎ বাতাদে শরীরকে একবারে দক্ষা করিছে লাগিল। কিন্তু সর্কাপেকা প্রলক্ষতি প্রধান। এই পরের মধ্যে জল প্রোয়ই পাওয়া যায় না, যে স্থানে বংশ কিন্তিৎ পাওয়া বাল এথাকার লোকেরাভাহা স্থ্যিপেকাও প্রার্থিৎ পাওয়া বাল এথাকার লোকেরাভাহা স্থ্যিপেকাও দেল না। জলের জন্য প্রানন্থ লোকদিলের সঙ্গে লাঠালাটি কাটাকাটি পর্যান্ধ ইতি লাগিল, তথালি জলের ছংখ ভূর হইল না। এক দিন একটা ক্রেপ জলপাত্র নামাইয়া কর উদ্যোলন কালে জলের জন্য সকলে এমন হাতিরাপ্ত হইল যে ভাহাতে বজ্জু ছিল হইলা কলপাত্র সম্যেত জলপাত্র হার্যান্ধ ভারতে ভূপের মধ্যে প্রভিল। মহিলা

এই প্রকার পথরেশ ও জল কটের সম্যে মাল্টের রাজার পুত্র সইসনাে তাঁহার পশ্চাদালমান হইলেন। তাঁহার কভকওলা সেনা অগ্রে আসিয়া কুপ সকল আটক করিল। জীবনাভাবে কাছারও জীবন রকার উপায় রহিল না। কিন্তু মাল্টের রাজার পুত্র হোনায়নের নিকানের হিছা শ্বেড পভাকা ভুলিয়া দিলেন, ভাহাতে বােধ হইল ভাহার শক্রভাব নহে। ভলনজ্বর ভিনি হোমান্ত্রের নিকটে আশিয়া ভাহাকে কিঞ্চিৎ ভংগনা পুর্বক বিলিনে হিচ্ছালো প্রতিট হইল গোহতা করা আপ্রন্দার উচিত ছিল না। ইকা বলিয়া জীবনদান প্রক তিনি

ৰদায় হইয়া গোলেন। ছোগালুন বেমন ছাইতেছিলেন ভ্ৰমনি ছলিলেন। কিছু জলকট ঘুচিল না, জন্ধাভাবে ভাছার সম্ভিব্যভারী সকলেই ক্রাহি আহি ক্রিডে লাগিল।

द्रोक्षत्रानीय" स्टब्ह्यांमान्य द्रम्य शाहित्यन । डिम उद्कारण प्रतिवाडी, धरः ब्राह्मत धक कर्मकावीत लाज्य कार्ट्सार्थ कतिया याहराङ्कालम् । देवतास्य वे कर्णकारीव নিজের অসা চল্ড্মানিজরভিত হুইল, ভালাভে তিনি গ্রা बंडी तांनीत्व अधक त्याप्रकालेत्व व्यवत्त्रांचन करांडेगा আপনি ভাছাতে আব্রোহণ করিয়া চলিবেনন। তথন ছে(ন)-मून कि करतन, कांशन करने द्रोशिक कारदोहन करावेगा व्याशित श्रमत्यक केश्वित मटल ६ छोन्। यह अकति মহাজ্পেট হোৱাতুন প্ৰন কৰিচত কাগিলেন। কৰে ২ ভীছার সকল সম্ভিকাছারী লোক মারা পাচিল, কেবল সাত জন নাত্ৰ জীবিত রহিল। এই সাত জন লোক সঙ্গে করিয়া তিনি অমরতোঠে উপনীত হইলেন। ভাষার পর ভাঁহার আর্থ লোক আসিয়া মিলিল। অমরকে ঠেও রাজা প্ৰসাদ অভি ভল্লোক, ইোনায়ন উপনীত ইটলে তিনি क्षीबादक सरथके ममामब कहिए। आश्रम शृहक द्वारिश्यम ।

ইে হোষাৰ ন বংকালে নিস্তু জ্ঞানে অব্যিতি কৰেন, তথাৰ
কিলালের আক্রেম এক দিলে মতোহনৰ ক্ইমানিল। তাহাতে
কিলালের আক্রেম এক দিলেন মতাত লোকের এক ক্রা
কানিয়া বাব বাবে পাবনা বেনীয় কোন মতাত লোকের এক ক্রা
কানিয়াছিকেন। কোনায়ন কালাই জ্লাধারণ কল লাবনা নেবিয়া
কালাকে বিবাহ করিয়াছিকেন। তিনি এই রাজ্যানী :
ক

हिर केरे विश्व विश्व दर्शगात्रुन अन्यदकार्य वाम करत्न ১৫ আজনর ি তথ্ন তৎপুত্র বিধ্যা 5 আকবর তথায় জন্ম গ্রাইণ করেন ৷ আকবরের ভূষিষ্ঠ হওন কালে হোমায়ুৰ স্থাৰান্তরে ছিলেন। এ দেশে এমত রীভি আছে পুত্র কন্যা হইলে পিতা আহীয় পারিষদ দকলকে কিছু হ'শন দান ক্রিয়াপাকেন। কিন্তু বর্থন আকর্ত্ত জন্ম-এহণ করিবেন তথন হোমানুনের কিছু নার সঙ্গতি ছিল না, কেবল একটী মুগনাভি ছিল। তিনি তাহা ভগ্ন করিয়া উপস্থিত সৰুলকে এক এক কণা দিয়া বলিলেন মুখনাভিয় যেমন সৌয়ভ পৃথিবীতে আমার প্রজের যেন দেই প্রকা পৌরভ হয়।

त्थामाधून अमत्रकाटी थाकिया निकुद्रोका छेकारतत বাসনা ৰবিলেন। কিন্তু তাঁহার সজে এক শত মোগল সে-নর অধিক ছিল না, তাহাতে রাজা প্রমান প্রভৃতি আরং करमक खन हिन्सू बाजा उक्ष छ। शूर्कक श्राम २००० रेमना গ্রতিবাহারে সিন্ধরালা উলারার তাঁহার গলে গমন তরিলেন। কিন্তু ভাঁচার কেমন ছুর্ভাগা, একটা সাধানী कार्यत केना मकते उत्माश एव हरेल। छारात कार्यन, ংহামাণুনের সঞ্চী কোন মোগণ, রাজা প্রসাদকে অপ্রধান कतिन । अमान जनमानिक श्रेश दशमागूनत्क कानाह-प्तन, किछ दशमाग्रन छोटात किरात कतिराम मा। देशाए वागाए व है। इस मही इस्माहा टीहात मन भदिलाय Paul atachi foliani chen i i

दशमायुम अगारमंत्र भगरमंत्र शत निम्नद्रीटका डिफिटड ना भारिया कामाद्र बाजात मन्द्रन अञ्चान कतित्वन, अरेर मध्यर याष्ट्रीर पाकुक, भैयन कतिए छह कथा हा के कित-लिन य डीहाड श्रृंब के बीडार्ड मिक्टें दाथिया डिनि महः जीदर्भ शमने कांनदबन। किन्ह काञ्चादनत किंग्रम्हत छेश-नीज रहेता हरे द कान वा जि उँ। हाटक नर गांप मिल भिक्रा ত্মাক্ত্রী আগতপ্রার, তিনি জাসিয়া ভাঁহাকে বলী করি द्वती। शरी कथा आयेश माज दिशागुल मंभनास रहेश রাণীকে খীস অধ্যে আরোহণ করাইয়া উর্দ্ধানে প্রায়ন করিলেন, শিও আফবর তথায় পড়িয়া র্হিলেন, উচ্চে क करेशा काहेर र शाहिरतन मा। अमिडिनिवरण, भिकी आकरी उथा उथाने उथाने इर्टन्स, जन कालाक मा क-খিলা থেদ করিয়া ধলিলেন তিনি কেন পলাইলেন আমি উहित अनिके बाङ्गाग्र आणि माहे, हेके बाङ्गाग आणिया-ভিলান। ইহা বলিয়া ভিনি শিশু আকবরকে লইয়া কাতুলে याजा कविद्याम ।

হোনায়ন কান্ধারের অধিকার ত্যাগ করিয়া পার্থ-ভানের অভঃপাতি সিন্ধানে উপনীত হইলে, তত্তক গৈলা-বক্ষক তাঁছাকে হিরাটে প্রেরণ করিয়া পারসম্বানের রাজা-কে স্বিশেব সংবাদ লিখিলেন। সাহত্যাপ তংকালে পারস্থানের রাজা ছিলেন। তিনি হোমাল্নের আগা-মন রাজা গাইয়া তাঁহাকে আপন আল্বেয় আন্যান পুর্ধক ক্ষতি সম্মানে রাখিলেন। হোমাল্য সঞ্জে পাক্তিল্ন। সাহ তথাপথ দিয়া মতাবলনী ছিলেন, সভত এ মতের ইন্ধি নাগনা করিতেন। অতএব হোমায়ুন তাঁহার সভায় উপন্তিত হউলে তিনি তাঁহাকে খীয় মতাবলনী করিবার যাল করিতে লাগিলেন। হোনায়ুন প্রথমতঃ নিয়া মত গ্রহণে সম্মত হয়েন নাই, পরে তাহা গ্রহণ করিয়া মন্ত্রী-কারপত্র লিখিয়া দিলেন বে, ভারতবর্ষে ঐ মত প্রচার করিবেন। ঐ অজীকারপতে ইহাও লেখা রহিল পারস-হানের রাজা তাঁহাকে কারার বাজা উদ্ধারার্থে ১২০০০ বেনা দিবেন, যদি হোমায়ুন ঐ দৈনা স্বারা ক্রয় করিতে পারেন ভাহা হইলে ঐ রাজ্য পারসন্থানের রাজা-কে অর্থা করিবেন।

এই প্রকার অঞ্জীকারের পর হোনায় ন পারসন্থান হই-তে সিন্থানে থাকা করিলেন। তৎকালে ভাঁহার নিজ ইসন্য ৭০০ থাল ছিল। সিন্থানে উপনীত হইলে পারস-হানের রাজাব পুত্র, মুরাদ মির্জা, ১৪০০০ অশ্বারোহী দৈন্য লইয়া ভাঁহার সজে নিলিলেন। হোমায় ন তৎ-সম্ভিব্যাহারে হেল্মন্দ ন্দীর তীরে বোক্তনগর জন্ম করি-য়া কান্ধারে থাকা করিলেন। কান্ধারে ভাঁহার ভাতা

<sup>े</sup> सूनमान मिर्गित मार्ग्य मूचे मठावल घो लाक जाहह. यूवि छ निया। ख्रितित करे कथा नरलन मरमारणत मृज्य श्व रा जिन कर विभागारणत वाजा इरेगाहित्सन डीवाता उपश्मीय, धनर डाउम ध्वक् जे खताधिकांती। नियाता वरणन के जिन क्षान ध्वजातक, मरुष्य-रमृत वर्षीय नरह, ठठूर्थ वाजा आणि मरुष्याणत ध्वक् छे छवाधिकाती हिर्मे के क्षान्य स्टार्ग करें मरुष्य क्षाणि मरुष्याणत ध्वक् छे छवाधिकाती हिर्मे के क्षान्य स्टार्ग के मरुष्य क्षाण

তিনি পাঁচ মাস পর্যন্ত তাঁহার সঙ্গে হুমনাধ্যক ছিলেন।
তিনি পাঁচ মাস পর্যন্ত তাঁহার সঙ্গে যুদ্ধ করিলেন। হোমাধুন ছুর্গ অধিকার করিতে পারিলেন না, অতএব নৈরাশ
ইয়া তথা হইতে উচিয়া যাইবেন এই মত কপানা করিতে
ছিলেন এমন সময় তত্তেলীয় অনেক লোক আসিয়া ডাঁহার
সঙ্গে মিলিল, কিছুকাল পরে ছুর্গের মধ্যে ছুর্ভিক উপস্থিত
ইইল, তাহাতে ছুর্গরক্ষক কতক সৈন্য নগরে প্রস্থান করিল,
অবশিষ্ট সৈন্যগণ হোমায়ুনের সঙ্গে মিলিল। মির্জা
আক্রমী সূত্রাৎ ছুর্গ রক্ষায় অমন হইয়া হোমায়ুনের
শরণাগত হইলেন। হোমায়ুন কান্ধার অধিকার করিয়া
আজ্ঞানিলেন মির্জা আক্রমী গলদেশে অসি বন্ধন করিয়া
তাহার সম্মুখে আসিবেন। মির্জা আক্রমী তাহাই করিলেন, তদনস্তব তিনি তাহার অভজ ব্যবহার জন্য তাহাকে
শুখ্যালবন্ধ কারিয়া রাখিলেন।

কান্ধার অব্যের পর এ রাজ্য পারসস্থানের রাজ্যভুক্ত হইল, ভাহাতে অনেক ইরাণী সেনা সদেশে প্রত্যাগনন করিল। কেবল রাজপুত্র মুরাদ নির্জা প্লর্গ রক্ষার উপযুক্ত কতকগুলিন সেনা লইয়া তথায় থাকিলেন। কিয়ৎকাল পরে হঠাৎ এ রাজপুত্রের মৃত্যু সংবাদ রাষ্ট্র হইল। তদ্-নন্তর হোমাযুন নগর প্রবেশ পূর্বাক বছ সৈন্য সংহার করিলেন, এবং অবশিষ্ট সেনাগণকে সদেশে প্রতিগমন করিতে অনুমতি দিয়া আপনি কান্ধার অধিকার করিলেন। এই কর্মা অতি গহিত বলিতে হইবে, ইহাতে হোমাযুনের বিশ্বাসখাতকতা প্রকাশ হইয়াছে। অনেকে ইহাও বলিয়া থাকেন তিনি রাজপুত্রকে নন্ট করান।

কান্ধার অধিকারের পরে হোমায়ন কারুলে যাত্রা করি-ब्लम। असे ममत्य हिन्ताल ও আहर ज्यान अधान ब्लाक আদিয়া তাঁহার সঙ্গে নিলিলেন। কামগ্রান হুছে নিরুৎ-শাহ হইয়া হোনাযুদ্দর আগমনে কাবুল পরিত্যাগ করিয়া निकु अंदिया भन्दिलन। हायागुन अन्धारम अध्यन অধিকার করিলেন, এবং সীয় পুত্র আক্ররকে পুনঃ প্রাপ্ত ছইলেন, তৎকালে আক্রেবরের ব্যঃক্রম ছুই তিন বৎসর। হোসায়ন কিছুকাল কাবুলে অবস্থিতি করিয়া उनक्षान छेष्ठीत जना भगन कतित्वन । ये भगति কাষরান সইসন্যে আলিছা করিল পুনরধিকরে ফরিছেন, এবং আকবর পুনর্কার ভাঁহার হত্তে পড়িলেন। কোমা-ঘুন বদকজান হইতে প্রভাগিত হইমা পুনর্কার কারুক আক্রমণ কবিলেন। তথন প্রবেণির যে স্থান দিয়া ভীহার তোপ চলিবে, কামরান ছুশ্ধণোধ্য আক্রারকে সেইখানে ताथिशा नित्तन, मन्नि २ कतित्तन हेश कतित्व होगायन যুদ্ধ করিবেন না। কিন্তু হোমাযুদ্ধ তাহাতেও ক্ষান্ত হই-লেন না। কামবান সংগ্রামে অসমর্থ হইয়া পলাধন 'করিলেন। তাহাতে হোমাধ্ন নীয় পুত্র ও কাবুল রাজ্য श्रुनः প্রाপ্ত रहेतन ।

হোগায়ুন নগর প্রনর্ধিকার করিলে কামরান তাঁহার গদনে আসিয়া ক্যা প্রার্থনা করিলেন। হোযায়ুন তাঁ-

হার অণরাধ মার্ক্তনা করিয়া তাঁহাকে নিকটে রাখিলেন। হিন্দান ও নির্জা আন্ধরী ঐ সময়ে তথায় ছিলেন। অত-এব ক্রিষ্ঠ জাতা যিজা আস্বরীর শৃষ্ট্রল মোচন করাইয়া চারি ভাতায় একত আহার আহ্লাদ করিতে লাগিলেন। জ্বত্ ঐ তিন জ্রাভা ভবিষাতে হোমাগুনের অপকার করি-বেন না এই প্রতিজ্ঞা করিয়া ভাঁহার লবণ ভক্ষণ করিলেন ৷ কিন্ত ভাষার কিছুকাল গরেই কামরান প্রতিজ। উল-জ্বন প্রবৃক হোমালুনকে কার্ল হইতে তাড়াইলেন। ্তিং ১৬১ 🚶 হোনাগুন পুনধার ঐ রাজ্য অধিকরে ূ<sup>ক্ষু ২০০</sup> ি করিলেন\*। তথ্য কাম্রান প্লায়ন চিল অনা উপায় না দেখিয়া গোরকা রাজ্যে গোপন ভাবে থালিলেন। কিন্ত গোরকারা জাঁহার পরম শক্ত, উহিত্তে গ্রিমা হোমায়নের হজ্তে সমর্পণ করিল ৷ হোমায়ন তাঁ-হাকে তিন দারি দিবস উত্তম রূপে রাখিলেন, তাহার পর অসৎ আচরণের প্রতিফল জন্য তাঁহার চক্ষ্ণ উৎপাট-নের আজে। দিলেন। চক্ষু উৎপাটন কালে কান্রান কিছুমাত্র যন্ত্রণা নোগ করিলেন না; কিন্তু যখন তাসাতে লব্ণ ও নেষ্র রস অকণ করিতে লাগিল, তথ্য সত্যন্ত যাতনা বোধ করিয়া বলিলেন হে প্রমেশ্ব! আমি যে পাগ

করিয়াছি এই পৃথিনীতেই তাহার দণ্ড হইল, ভবিষ্যতে ধ্বন জার এমন যন্ত্রণা ভোগ করিতে নাহয়। এই ব্যাপা-

ইহার মধ্যে হোনায়ুন আরি আর অনেক যুক্তে প্রবৃত কইয়া ছিলেন, তাহা এছলে লেখাগেল ন। ।:

রের পর কোম্যুন ভাঁহাকে মহাতে প্রেরণ করিলেন, কামরান কিছু দিন পরে হপা্য মানবলীল। সম্বরণ করিলেন।

খোষামূন এবনিধ বিনিধ বিপাদ ও মুদ্ধের পার কান্তল ম বংসর রাজাও কবিলেন। তাদন ন্তর তিনি পাঞ্জার আদিকার করিয়া, মঙ্গ মকে, দিলীয় রাজাধিং হাসন পুনঃ প্রাপ্ত হইলেন। ইহার ব্রছান্ত পারে লেখা যাইবে, লিখ হিজারী মন্ত্রণ ভারে হলা হইলেন লিখার পলায়ন অব্যবি মঙ্গ অকে দিলী পুনরবিকায় পার্যক্ত, ১৬ ধংসর দিলীর রাজ্যকর্ম কিরুপে চলিয়াহিস ভাহা গাঠকেরা জানিতে পার্মেন নাই, তাদ্বিরণ অব্যে লেখা যাইবিভ্রে

### मस्प्रमा अशासा

## স্থ্যবংশীয় রাজাদিগের রাজত্ব। শের সাহ।

হিং ৯০৭ বিশ্বন মুদ্দে গরাজিত হুইয়া পলায়ন মুদ্দ হলত করিলে পার, সেরসাহ তাঁহার মুদ্দ রাজ্য অধিকার করিলেন। সেরসাহ যে প্রকারে এ রাজ্য লই-ক্রেনিতাছাতে সনেকে তাঁহাকে রাজ্যাপহারী বলিলা বর্ণন করিলাভান করি এ করা নিতান্ত সকত বোধ হল নাক্রেনা ভারতবর্গ হৈত্যর বংশীয়দিগের ইপভ্রুক রাজ্যা নতে, তাঁহালা স্থানান্তর হুইতে আদিয়া কেবল ১৪ বংশত মাত্র এই দেশে রাজ্য করিয়াছিলেন। সেরসাহ এই দেশে জালা এই দেশে রাজ্য করিয়াছিলেন। সেরসাহ এই দেশে জালা এই দেশে তাঁহার এক প্রকার অধিকার চিল, বিশেষতঃ যথন অনাহ মুদলমান রাজ্যারা এই দেশ বলপুর্কাক লইতে পারিয়াছেন, তথন জিনিও আধুনিক রাজ্যাদিগের হন্ত হুইতে রাজ্য লইবেন ভাহার বাধা কি। অতএব এই রাজ্য লওয়াডে তাঁহার আধিক দোষ দৃট্টি হয় না।

সেরসাহ সন্তাট হইয়া প্রথমতঃ পঞ্জাব রাজ্যের পোল-বোগ নিহ্নতি করিলেন। তৎপরে রোটসের বিপ্যাত তুর্গ নির্মাণ করিয়া, বলদেশে গমন করিলেন। তথায় বিজোহ শান্তির পর তিনি ঐ দেশ এমন করিয়। বিতাগ করিলেন যে তাহাতে ভবিহাতে আর কোন গোলখোগের সম্ভাবনা রহিল না।

হিং ৭৪৯ । পর বংসর তিনি মালব দেশ পুনরদিশৃ ১৫২২
নং ৪৬৪৪ । করি কবিলেন। তৎপার ঐ রজ্যোগ্র-র্ণত রায়সিংহের ছুগ আক্রমণে নিযুক্ত হউলেন। এই কেলা এক হিন্দু রাজার, তিনি বাহাছুর মাহ রাজার রাজার কালে অতান্ত পরাজ্যশালী জিলেন। সের সাহ দুর্গ বেষ্টান করিলে সেনাগণ যুদ্ধে ক্ষান্ত নিয়া তুর্গ হইতে প্রস্থান করিবার প্রস্থাব করিল, ভাষাতে সের সাক ভাষা-দিগকে অভয় দান পূর্বক বলিলেন তোমরা প্রস্তান কর্রী, ভোমাদের প্রতি কোন অত্যাচার করিব ন।। এই কথায় বিশাস করিয়া চারি সহস্র রজঃপুত সেনা ছুর্গ ইইডে বহির্গত হইয়া কতকল্পরে শিবির সলিবেশ করিল। তথন সের সাহ বিশ্বাসপাতকতা পূর্মক তাহাদিপের শিবির বেষ্টন করিয়া একেবারে সকলকে সংহার এবং ভাহাদিশের যথাসবাস হরণ করিলেন। तुझ्क्ष्ट সেনা-গণ সকলে মরিল বটে, কিন্তু এক এক জন গুই তিন জনকে মারিয়া মরিল। রগকেত্র শতে পারিপূর্ণ হইল। হাহা হউক এই কর্মো মেরসাহের নিতাম্ভ বিশ্বাস্থাতকতা প্রকাশ হইয়াছে। তৈমূর ভিন্ন আর কোন মুসলমান রাজা এমন বিশ্বাসঘাতকতা ন্থন করেন নাই :

প্র বংসর সের সাহ ৮০০০০ সৈন্য লইয়া সারওয়ার

र्टींभ जाक्रमण कविदलन । जे मनत्म मानत्मर जालामर রাজা ছিলেন। তাঁহার অত্যন্ত প্রতাপ ছিল। তিনি ए०००० रेमना वर्षेष्ठ कें। हात अटअ युटक मनक रहेटना । এই অপে দৈনা লইয়া তিনি সংগ্রাম জয়ী ইইবেন এগন সম্ভাবনা চিল না, কিন্তু ঐ দেখো জল কট প্রযুক্ত তিনি সাহস করিলেন মেরসাহ জাঁহার সলে যুদ্ধ করিতে পারি-ধ্বন না। কিন্তু সেরসাছ কোঁশলে গ্রী হইলেন। তিনি वृष्क अमरक भानरमध्यत भागार्थां छ भाग अभाव तास अपर्यंत श्रुद्धक शक जिथिए नागिरजन, जार धाशांदक करे मकन शक मानदात्त्व इस्छ शदफ छारा করিতে লাগিলেন ৷ এই সক্র প্র মালদেবের হস্তগত ছইলে ভাঁছার মনে সম্পর্ণ সন্দেহ জিমল, মুভরাং তিনি ধুদ্ধনা কবিয়া প্রস্থান করিলেন। কিন্তু ভাঁহার এক সেনা-পতি দের সাংহর আচরণে কুপিত হইয়া ভাঁহাব সঙ্গে গোরতর যুদ্ধ করিলেন, সেরসাহ ঐ যুদ্ধে একপ্রকাব পরাজিত হইয়। আসিলেন।

পার বৎসর সেরসাহ মিবারের অন্তর্গন্ত কালিপ্লবের চর্গ আক্রমণ করিলেন। মনেহ ভাবিলেন তদ্দেশীয় রাজাকে কোন কৌশলে বশীভূত করিবেন। কিন্ত ইতিপূর্বের রায়সিং-হৈ তিনি যে অবিশ্বাসের কর্মা করিয়াছিলেন তাহাতে মিবা-রাধিপতি ভাঁহার কোন কথায় বিশ্বাস করিলেন না, সুত-রাং দুর্গ মারিয়া লইবেন ই্ছা দ্বির করিয়া তিনি তৌপ চালাইবার উদ্যোগে থাকিলেন। ঐ সময়ে হঠাৎ দুর্গ- হইতে একটা গোলা আদিয়া তাঁহার বারদ্ধনিয় পজিল,
নাক্ষদ অলিয়া তাঁহার সর্ম শরীর দল্প হইল। তাঁহার
পূর্ব বিশ্বাস্থাতকতার এই এক প্রকার শাস্তি, কিন্তু মৃত্যু
শ্ব্যাতে শ্রুন করিয়াও তিনি ছুর্গ লইবার সন্ধান বলিয়া

ছি ২০২ নিতে লাগিলেন। অবশেষে সেই
খ ২০২০। নে। দিবলৈ ছুর্গ অধিকার হইল। এই
সংবাদ শুনিয়া তিনি গেডি আহ্লাদে, প্রমেশ্র ধ্না, এই
কণা বলিয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন।

সের সাহ অতি কমতাবান পুরুষ ছিলেন, দামানা মনুষ্য হইষা তিনি স্বনীয় বুদ্ধিবলে দিলীর রাজ্য অধিকার করিলেন ইহা সামান্য ক্ষমভার কর্মান্তে। ভানেক রাজ্য এম্বর্যা করিব ইচাই ভাঁহার আকাজ্লা ছিল, কিন্তু কার্য্য-শিদ্ধি পক্ষে শদশৎ বিবেচনা কিছুই করিভেন না, যে প্রকারে হউক কর্মা মিদ্ধি হইলেই হইল। এইজন্য তিনি বিশ্বাস্থাতকতা পর্যান্তও করিয়াছিলেন। কিন্তু রাজ্য-ब्रिक्ति करेंग ब्रांका पिट शह मटक त्य नावशांत्र कतिये श्रांकत, অজার প্রতি তিনি অতান্ত সদয় ছিলেন। প্রজার রুথ ও সক্ষতার জন্য ভিনি যাহা যাহা করিয়াছেন সকলই उद्भा अदमक अदमक ब्रांका अदमक काल ब्रांक्च कविया किछूरै कतिएक शास्त्रन नारे। स्मत्रमार शांव दरमत মাত রাজদও পারণ করিয়া সকল রাজ্ঞা শাসিত এবং विषाद्रामित अदनक सुनियम कतियाष्ट्रियन। देश जिल्ल ित्ति वक्रामा हरेएछ निक् नमी शर्यास এक ताजशय

ত্রস্তুত করেন, তাহাতে দেশের অনেক মন্ত্র হইয়াছে। এই রাজপথের গুইপারে রক্তশ্রী রোপিত হইয়াছিল, ভাষার ছায়াতে পথিকের। সুখে গমনাগমন করিতেন, এবং তানে ২ প্ৰিক্পান্ত ও প্ৰশালা নিৰ্দ্মিত ছিল, তাহাতে নানা প্রকার থাদা দ্রব্য প্রস্তুত পাকিত, দীন হীন ব্যক্তিরা বিনা সলো আহার পাইও। তদ্ভিন এই রাজপথের এক এক কোশা অস্তার এক এক কৃপ এবং স্থানে ২ মদজিদ নিন্দাণ করিয়া দিয়াছিলেন, ভাহাতে মুসলনান দিগের পর্যা কর্ণা হইত। সের সাহের আর এক প্রধান কর্ম্ম এই তিনি মর্কত অধ্যের ডাক্ বসাইয়া ছিলেন, তদারা শংবাদাদি শীত্র ২ পাইতেন। অধিকন্ত जिनि मसार्वाङ अञ्च सुमन कारी निरंख कतिशाहितन, ভাছাতে পথিক বা মহাজনেরা রাজপথে অকুতোভয়ে क्षवामि निक्किंश क्रिया निका घाउँ छ, क्र्इ थे सकन प्रदा ম্পার্ণ র করিত না।

সের সাহের মৃত দেহ বেহারের অস্কঃপাতি সসরাচন নিখাত হইয়াছিল। ঐ স্থানে তাঁহার পোরস্থান অদ্যাপি বর্ত্তমান আছে, ভাহা অতি অপুর্বা, ভাহার চারিদিকে একটী প্রম রমণীয় বিল আছে, ঐ বিল চতুর্দিকে প্রায় এক কোশ, গোরস্থানের শোভার জন্য খনিত হইয়াছিল।

# मनीय मोह खूड़ी

সের সাহের জোন্ঠ পুত্র আদিল থাঁ নিতান্ত হীনবীর্যা ছিলেন। এজনা তিনি আপনাকে রাজকর্মে অক্ষম। কিং ২৫২ জান করিয়া ছিতীয় জ্রাতা জলাল থাঁকে পুত্র করেল বায়না প্রকেশ আপনি রাখিলেন। জলাল থাঁ রাজ্য পাইয়া অদীকার করিলেন জ্রাতার প্রতি কোন অত্যাচার করিবনে না, ডজনা রাজ্যের চারি জন প্রধান লোক তাঁহার প্রতিভূ হইলেন। কিন্তু জলাল থাঁ রাজ্য প্রান্ত সলীম নাম ধারণ পূর্বক মহা ধুম ধাম আরম্ভ করিলেন। ভাহাতে এনন অনুমান ইইল তিনি অস্থীকার পালন করিবেন না, অত্রব জ্ব প্রধানেরা তাঁহার বিরুদ্ধে অস্ত্র ধ্যারণ করিলেন, কিন্তু কিছু করিতে পারিলেন না। জলাল থাঁ তাঁহাদিগকে পরাস্ত করিলেন।

এই ব্যাপারের পর সলীদের রাজত্ব কালে আর কোন সংগ্রামাদি উপস্থিত হয় নাই, তাহাতে তিনি নয় বংসর নির্মিল্লে রাজত্ব করিয়াছিলেন। মধ্যে একবার জনরব হই-য়াছিল হোগায়ুন ভারতবর্ষ লইবার জন্য সংসদ্যে যাত্রা করিপ্লাছেন। সলীম এই সময়ে রণসজ্জা করিয়া বাহির ইইয়াছিলেন, কিন্তু কাহাকে দেখিতে না পাইয়া সদেশে প্রস্তাগমন করিলেন।

রাজ্যের শোভা বর্জনে পিজার ন্যায় সলীসের যথেষ্ট

অনুরাগ ছিল। দিলীর রাজালয়ের যে অংশ দলীমগড়। নামে খ্যাত ভাহা ভিনি নির্মাণ করেন।

## महत्रान नांद सुत्र आपिनी।

সঙ্গীমের মৃত্যুর পর তাঁহার তৃতীয় জাতা মহম্মদ খাঁ,
হিং ২০০ ছাদশ-নৎসর-বয়স্ক তাঁহার এক পুত্রকে
স্থ ২০০০ বধ করিয়া আপনি রাজ্যেশ্বর হইলেন।
মহম্মদ নীচসহবাসী, মূর্য, এবং অতি লম্পট ছিলেন।
স্থায়ে হাদে এক হিন্দু দোকানদারী করিয়া দিনপাত করিতেম, তিনি তাঁহার প্রধান মন্ত্রী হইলেন। ঐ ব্যক্তির
বেমন ব্যবসায় আকারও তদ্ধপ, কিন্তু তাঁহার বিদ্যা ও বুদ্ধি
ভাল ছিল, ভাহাতে তিনি যে পর্যন্ত জীবিত ছিলেন
সকল কর্মন্তি উত্তম রূপে সম্পাদন করিয়া ছিলেন।

নহম্মদ রাজ্য প্রাপ্ত ইইয়া অত্যন্ত অপবায় আরম্ভ করিলেন, তাহাতে রাজভাণ্ডার শীল্প শুনা হইয়া পড়িল। তথন অপবায় ও কুসহবাসী দিগকে ধনবান্ করিবার কার কোন উপায় না দেখিয়া তিনি রাজ্যের প্রধান ২ লোকদিগের রভিছেদ ও ভূমাদি হরণ করিতে লাগিলেন, ইহাতে সকলেই অসন্তুট ইলেন। এবাহেন সুর নামে ভীহার পরিবারম্ এক ব্যক্তি দিল্লী ও আগ্রা ক্ষিকার করিলেন। সেকদার সুর নামে আর এক জ্বাতি পঞ্জাব রাজ্য লইলেন। বন্ধ দেশের রাজাও রাজপ্রশুদ্ধ জন্ মান্য করিলেন, এবং মালবাধিকারী অাধীন হইনা বদি-লেন। এই প্রকার টারি দিকে বিজ্ঞোহানল প্রস্থালিত হইল। হেমু বন্ধদেশের উপজ্ঞব শান্তির জন্য তল্পেশে ধারা করিলেন, কিন্তু তথা হইতে প্রত্যাগ্মন না ক্রিতে করিতেই শুনিলেন হোমায়ুন সেকদারকে পরাজয় করিয়া আগ্রাও দিলী পুনর্ধিকার করিয়াছেন।

## হোমাযুদের দ্বিভীরবার রাজস।

হোমায় ন ঘণকালে কাবুলে রাজত্ব করেন তথন একবার কাশ্মীর আসিবার উদ্যোগ করিয়াছিলেন। কিন্তু
সলীম যাহ অগ্রসর হইয়াদেন শুনিয়া কান্ত হয়েন।
তদনস্তর সলীম সাহের মৃত্যুর পর, মহম্মদ সাহের রাজত্ব
কালে, এবাহেম দিল্লী রাজ্য অধিকার করিলে, পঞ্জাবেশ্বর
সেকশ্বর, ভাঁহার সহিত যুজারম্ভ করিলেন। মহম্মদও
বীয় রাজ্য উদ্ধারের জন্য সেকদ্বর ও এবাহেম উভয়ের
সহিত সংগ্রামে গ্রন্থত হইলেন। এই মুযোগে হোমারুব ২৫০০ অশ্বারোহী সৈন্য লইয়া পঞ্জাবদেশ আজমণ পূর্মক সেকদ্বের সেনাগভিকে পরান্ত করিয়া ঐ
রাজ্য অধিকার করিলেন। সেকদ্বর এই সংবাদ পাইয়া

বছ সৈনা সমতিব্যাহারে সরহদে তাঁহার সহিত মুদ্ধার্থ
প্রমন করিলেন। কিন্তু পরাস্ত হইয়া হিমালয় শিশরে
প্রায়ন করিলেন। তাহাতে হোমায়ুন দিলী ও আগ্রা
হিং ১৬০ রাজ্য অধিকার করিলেন। সেকদ্রর
কং ৯৬৫০ পুনর্কার সমর সন্দায় আদিয়াছিলেন,
কিন্তু হোমায়ুনের সেনাপতি বহরাম তাঁহাকে প্রাভব
করিলেন। এই সংগ্রামে মুবরাজ আক্ররও উপস্থিত
ছিলেন, তিনি তখন চতুর্দশ-বর্ষীয় বালক, তথাপি এমন
বীরত্ব প্রকাশ করিলেন ধে তাহা দেখিয়া সকলে চমৎক্রত
হইল।

হোমাগুন দিলী রাজ্য পুনঃপ্রাপ্ত হইলেন বটে, কিন্তু তথন এ রাজ্য জ্রাজ্য হইয়াছিল। ঘাহাহউক ভাষ্ট পাইয়াও তিনি বহুকাল ভোগ করিতে পারিলেন না। তাহার কারণ, এক দিবস অপরাক্ষে পুস্তকালয়ের ছাতের উপর পাদ বিহার করিতেছিলেন, সন্ধ্যাকালে যেমন নামিয়া আসিবেন অক্যাৎ পৈঠাতে পা পিছলিয়া একেনারে ভূমিতে পড়িলেন, ইহাতে তাঁহার মন্তক ও শরীরে অভান্ত আঘাত লাগিল, তাহা কিছুতেই সারিল না, পত্তনের ছারি দিবস পরে তিনি প্রাণক্যাগ করিলেন।

হোমায়ুন অতি সংখতাব ছিলেন। তিনি দিলী রাজ্যের অধিপতি হইয়া যে একার ক্লেশ সহু করিয়াছিলেন ভাহা প্রায় অন্য কোন রাজা কলেন নাই। কিন্তু প্রথমতঃ তাঁ-হার শরীরে যেমন দয়াছিল পরে তক্তপ ছিলনা। তাহার কারণ, সর্বানা শক্রজালে বেন্টিড, শক্রর সহিড সদ্ব্যবহার করিলে রাজ্যরকা কঠিন। অতএব দেশ কাল পাক্র বিবেচনা করিয়া দয়া বজির্ত হইতে হইয়াছিল। কিন্তু সকল বিষয় বিবেচনা করিয়া দেখিলে তাঁহাকে সভের মধ্যেই গণ্য করিছে হয়। হোমায়ুন ৪৯ বৎসর ব্যঃক্রমে পরলোক গমন করেন। ইহার মধ্যে ১৬ বংসর দেশভাগী, এবং ১০ বংসর রাজত্ব করিয়াছিলেন। হোমায়ুনের মৃত্যুকালে যুবরাজ আক্রর পঞ্জাবে ছিলেন। হেথু বস্তদেশ পুনজ্য করিয়া হখন শুনিলেন হোমায়ুন পরলোক গমন করিয়াছেন, তথন মহা আক্ষালন পুর্বক আগ্রাভে বাত্রা করিছেন। বাত্রাকালে অসন্ধা লোক তাঁহার সঙ্গে নিলিল। তাহাতে তিনি ক্রমায়াশে আগ্রা রাজপানী পুনর্বিকার করিয়ালন। তৎপরে নিলী হইতে নোগলকুল নির্বাসন করিয়া দিলেন।

তই সকল কাও দেখিয়া আক্বরের মন্ত্রিগণের মনে
নহাত্রাস জন্মিল। তাঁহারা দিল্লী বাজ্যের আশা পরিত্যাগ করিয়া কাবুলে প্রত্যাগমনের পরামর্শ দিলেন।
কিন্তু হোমাগুনের বিশ্বাসী সেনাপতি আক্বরের কর্মকর্ত্তা
বহরাদ্ধ্র পরামর্শ অগ্রাহ্য করিয়া হেমুর সহিত পানিপত্তে যুদ্ধ করিলেন। হেমু যুদ্ধে অসাধারণ বীরত্ব প্রকাশ
করিলেন, কিন্তু অবশেষে সাজ্যাতিক আঘাত প্রাপ্ত হউনা মাতৃকপুঠে অচেতন হইয়া পড়িলেন। তথন বহরাস ভাঁহাকে রণ্যানী করিয়া আক্বরের সন্মুখ্য দিয়া

বিলিলেন এই তোমার পরস শক্ত, ইহাকে বিনাশ কর।
নড়ার উপর পড়্নাঘাত করা কাপুরুষের কর্ম এই বিবেচনা করিয়া যুবা আক্ষর তাহা করিলেন না। বহরাম
হিং ৯৬৯ আপনি তাহার শিরশ্চেদন করিলেন।
মু ২৫৫৬ তাহাতে মছম্মদ সাহ চিরকালের জন্য
রাজ্য আশায় বঞ্চিত এবং ভুবনবিখ্যাত আক্ষর দিলীর
সম্রাট হইলেন।

## হিন্দু স্বাধীন রাজ্যের বিবরণ।

এই ভারতবর্ষে পাঠানেরা যে সকল দেশ অধিকার করিয়াচিলেন মহম্মদ তোগলকের রাজত্ব কাল অবধি তাহা ক্রমে২ অনেক স্বাধীন হইয়াছিল। তৈমুর গোষ্ঠীয় রাজারা তাহা পুনরধিকার করিয়াছিলেন, কিন্তু তাহা একে-নারে হয় নাই, বছকালে হইয়াছিল। অতএব আকবরের সিংহাসনায়োহণ কালে এই রাজ্যের কি অবস্থা ছিল ভদ্বিয়ে কোন জ্বম না জল্মে এজনা তাহা স্পাষ্ট করিয়া লেখা ঘাইতেছে।

যথন মহম্মদ তোগলক রাজা হইলেন তথন উভরে হিমালয় অবধি পূর্ব্ব পশ্চিমে সমুদ্র পর্যান্ত ভাবং দক্ষিণ দেশ পাঠান দিগের অধিকার ভুক্ত হইয়াছিল। কেবল রক্ষঃপুত্ত রাজাদিগের রাজা ও উৎকল প্রদেশ আয়ুত্ত হয় নাই, এই সকল দ্বেশ তদ্বেশীর রাজারা রাজ্য করিতেন। তদনস্কর বঙ্গদেশের রাজা প্রথমতঃ দিল্লীশরের অধীন নভা পরিভাগে কবিষা সাধীন হইলে, ক্রমে অন্যান্য স্থান নেও ঐ বাভাগ উচিল। তৈলঙ্গ ও কর্ণাটের হিন্দু রাজার। ঐ ত্বই রাজ্য উদ্ধার করিয়া, হায়প্রবাদে রুক্ষা নদী পর্যন্ত মুশলমানদিগের যে ২ রাজ্য চিল ভাষা অধিকার করি-লেন, এবং উত্তরে অরঙ্গল ও দক্ষিণে বিজয় নগর স্থাপন করিলেন। ভাষার পর দক্ষিণ দেশে যে সকল মুদলমানের। হিলেন ভাষারা রাজ্যপ্রাহী হইয়া নন্মদা পর্যন্ত সকল রাজ্য অধিকার করিলেন। নন্মদার দক্ষিণে দিল্লীশ্রের কোন প্রভুত্ব রহিল না।

মহম্মদ তোগল্লকের মৃত্যুর সময় পাঠানদিগের রাজ্যের আবস্থা এই প্রকার ছিল। যথন তৈমুরলঙ্গ ভারতবর্য আক্রনণ করেন তথনও তাঁহাদিগের রাজ্য তদবস্থায় ছিল। তৎপরে মালহ ও গুজরাটের রাজারা স্বাধীন হইয়া বজিলেন। তদ্বিদ্ধ জোয়ানপুর নামে আর এক হতন রাজ্য স্থাপিত হইল, গঙ্গার উত্তর অযোধা পর্যান্ত তাহার সীমা। তৈমুরলঙ্গ স্থাদেশে প্রস্থান করিলে আরহ সকল রাজ্য একে একে রাজপ্রস্থুত্ব আমানা করিতে লাগিল, সুতরাং দিলী রাজ্যের সীমা কেবল এ নগরের ক্ষেক ক্রোশ ব্যাপিয়া রহিল। তিন্তির অন্য স্থানে দিলীশ্বের কোন ক্ষতা রহিল না।

দ্দিশ দেখে হোসন গজু নামে এক ত্রাহ্মণ যে রাজ্য স্থাপন করেন ভাহা ভাঁহার স্কানের ১৭০ বৎসর পর্যান্ত

उजान करतन। এই त्रांकाता जतकन ও निकायमनरहत हिन्छ রাজাদিপের দহিত অবিশ্রান্ত যদ্ধ করিয়াছিলেন, ভাষা-च्यात्रम्मनभातः अवक्वारतः । भारमः, अवर निकासमभारत्ते । অন্তঃপাতি ক্লকা ও ভৰ্জা নদীর মধ্যবর্তী ঘার্ঘতীয় দেশ তাঁহাদিংগর অধিকার জ্বাহয়। অবশেষে এই রাজো ধর্মাবিরোগ উপস্থিত হইন। তাহার কারণ, ঐ দেশে দো-भन, পाठान, कुकी, পाइमी ও अन्याना काठीय अपनक युग्नमादनहा बाग कहिन्छ, देशिमिटगढ मत्पा मिछ। अ सूनि ष्ट्रे मछादलश्री लाक छिन। পात्रन एम्मीग्र लाह्यका প্রায় সকলে সিয়া, আরু জাতীয়ের। অধিকাংশ সুদি। ঐ সকল লোকের ঔরসজাত তদ্দেশীয় যে সকল মনুষ্য ঐ দেশে সৈন্যের কর্মা করিত ভাছারা সকলে সুলি মতা-वल्धी, निया भडावल्धी मिटलंब महिल लाहाटमंब मन्द्रमा বিবাদ বিসম্বাদ হইত। যে পর্যান্ত রাজার। সবল ছিলেন সেপর্যান্ত এই সকল বিহাদে রাজ্যের কোন বিদ্ধ হয় নাই। কিন্তু যথন ব্রাক্রাদিগের বল্ড্রাস হইতে লাগিল, তথন इडिमक् जामिन या नारम मिसा मुखाननही धक जन कुकी विशक मन्दर क्षावन मिथिया, श्रीय मनवन महेया आश्रीन विकासभूदत याहेगा अक सांधीन जाका शांभन करितना ঐ রাজ্যে তাঁহার বংশীয়েরা রাজত্ব করিছে লাগিলেন।

ইহার কিছু দিন পরে কাণীম বারীদ নামে এক জন ভুকী অপর দলাধিপতি নিগোমউলমূলককে হত্যা করিল, ভাহাতে ঐ দলপত্তির বুজ আহম্মদ রাজভোহী হইয়া আপনি আর এক রাজ্য স্থাপন করিলেন, ভাহার রাজ-ধানীর নাম আহমদ নগর হইল :

নিজামউলমুলকের মৃত্যুর পর কাশীম বারীদের অভুল পরাক্রম হইল, তাহাতে তিনি রাজাদিগকে প্রতিমৃত্তি খ-রূপ রাখিয়া আপনি রাজ্যের দর্ক্ষয় কর্তা হইলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর তদীয় পুত্র আনীর বারীদ পিতার কর্মে নিযুক্ত হইলেন। কিন্তু পরকীয় কার্যো সম্ভোধ বোধ না করিয়া খ্যুং রাজ্যেশর হইব এই বাসনায় তিনি বামন রাজ্য দাংস করিয়া আপনি বিদরে আর এক রাজ্য স্থাপন করিলেন। ঐ স্থানে ভদংশীয় বারীদেরা রাজত্ব করিতে লাগিলেন।

हैश जिम कथकनी नारम जात এक जन जूर्की शानक-नार्ट जात এक ताजधानी क तिर्म् त्वतारत प्रधान हैनिक-नारम मुगलमानभर्मायनशी এक हिन्दू त्वतारत प्रधा हैनिक-श्रुद्ध जात এक ताजा जाशन कति जन।

এই প্রকার অনেক মূতন রাজ্য হইল। নব্য রাজারা পরস্পর এবং নিকটন্থ হিন্দু রাজাদের সজে সর্বাদা মূদ্ধ করিতে লাগিলেন। অনন্তর সকলে মিলিত হইরা বিজয়-নগরের রাজার বিরুদ্ধে অন্ত্র ধারণ করিলেন। তাহাতে কথানদীর ভীরে ভালিকোটের নিকট এক খোরতর মুদ্ধ হিং ১০০ হইল। এ মুদ্ধে বিজয়নগরের রাজার শুন্দি বিজয়নগরের রাজার শুন্দি ভিন্ন ভালি আপনি রশবদী ও হত এবং তাঁহার রাজ্য একেবারে ধ্বংস হইল। কিন্তু ৰে সকল রাজারা পাকচক্র করিয়া তাঁহার ঝাজা নই করিজেন তাঁহাদের বিশেষ উপকার হইল না। বিজয়নগর ভল্ল হইলা অনেকগুলি ক্ষুর রাজা হইল। এবং পোলকদার রাজারা অর্জন ও কণ্টি ক্ষয় করিয়া পানার নদী পর্যান্ত আপনাদের রাজা বিস্তার করিলেন।

ক্ষান্ত্ৰী হাজা বড় বিস্তৃত ছিল না। কিন্তু এ দেশৰ বাজারা মালব রাজ্য জয় করিয়া ঐ দেশ আপনাদের অধিকার জ্বুত করিয়াছিলেন। এবং রজ্ঞপুতিদিগকে সর্বদা মুদ্ধে পরাভব করিতেন। তদ্রির খান্দেশে তাঁহাদিগের আদিপতা চলিয়াছিল, এবং বেরার ও আহম্মদ নগরের রাজারা তাঁহাদিগের আজাকারী চিলেন। অধিক র এই রাজারা পৌর্ভূ গিষ লোকদিগের সজে সর্বদা সমুদ্ধ্যুত্ত নিমুক্ত থাকিতেন। এই সকল কারণ প্রায়ুক্ত দক্ষিণ প্রদেশে মুসলমানদিগের যত রাজ্য ছিল তর্মান্য গজরাটকে আধান বলাযাইতে পারে। বঙ্গদেশ গুজরাটকে আবান বলাযাইতে পারে। বঙ্গদেশ গুজরাট হইতে আরো বিস্তৃত ও ধনাত্য বটে, কিন্তু এতদেশীয় লোকেরা নিভান্ত বীর্যাহীন, ভাহাতে এই দেশ গুজরাটের ন্যায় খ্যাভ্যাপর হইতে পারে নাই।

দক্ষিণ দেশ ভিন্ন আর ২ যে সকল হিচ্ছুরাজ্য তৎকালে ছিল এবং জদ্যাপি বর্ত্তমান আছে, রজঃপৃত জাতীয়ের। ভাহার রাজা। এই রজঃপুতেরা কল্রিয়-বংশোদ্ধর এবং অতাক বীর্যাবান। মুসলমান রাজারা যে সকল রজঃপৃত-রাজ্য পরাক্তম করিয়াছিলেন তল্প রজঃপৃত্তরা অন্যান্য

লোকের ন্যায় রুধি কর্মা করিয়া দিনপাত করিত। কিন্ত সিষ্ক্র ও বমুনাব নথাস্থা বিশ্বা গিরির উত্তরে দিলীর রেখা। পর্যান্ত রক্ষঃগুতদিগের যে সকল রাজ্ঞা ছিল ভাহাতে মুসলমানেরা দক্তফুট করিতে পারে নাই। তক্তর রাজারা স্বাধীন ভাবে ছিলেন। এই চতুঃদীমাবদ্ধ স্থানের মধ্যে মরুত্ব ও আরাবলী পর্বতে আছে। এ পর্বতের পূর্বে উত্তরে **मिड्यांड, अग्र**ीत, बाक्रमीत, हारक्षाडी, विवाह, दुरमल-খণ্ড, মালব, এই কয়েক প্রদেশ আছে। ভ্রাধ্যে ফিবার প্র-मध्य क्याप्तत, आजमीत, जेमश्यूत, ५ हि:छाद्रत धूर्ग; शानत्व छेक्कसिनी, ७ जुलात्नव छूर्वः अवर बूटनन्यत्छ কালিঞ্চরের তুর্গ। ইহ। ভিন্ন রিস্তাদর গোয়ালিয়র ও আরহ অনেক হুৰ্গ আছে তাহা অতি চমৎকার ও দুট। আর্;-বলীর পশ্চিম যে রজঃপুতরাজ্য ভাষার নাম মারওয়াড়, তরাধ্যে যোধপুর যশলমীর ভিকানির প্রভৃতি কয়েক স্থান আছে। এই সকল স্থান বাল্কারণ্যের মধ্যে। বালকাতে **এই मकल दिनारक उका करत, अर्थाय वालकात उराम के** অঞ্চলে প্রায় লোকের গতিবিধি হয় না, তাহাতে ঐ স্থানবাসী লোকদিগের শক্রশক্ষা প্রায় ছিল না। মুতরাং মুসলমানেরা ঐ সকল দেশ জয় করিতে পারেন নাই आंद्रोतकीत शुद्धं ते मकल तम् डिल डाइटिड सूमलमान-দিলের গমনাগমন হইত তত্ত্ব রাজারা কখন প্রাজিত কখন করাধীন হইতেন, কিঃ আক্রবের রাজ্য কালে रेराता नकता याधीन हित्तत/।

ें आकरततत तांकातिश्व काटन यूगनमान तांद्वात अहे অবস্থা ছিল। আক্রের রাজা হইয়া রাজ্যশাসন ও প্রজা পালনের যে সকল সুনিয়ম করিয়াছিলেন তাহা পরে প্রকাশ হইবে। উাহার রাজত্বকালে যে সকল ঘটন। হইয়াছিল তাহাই সম্পতি লেখা যাইতেছে।

## यकीषम अधार

#### আক্রর।

যথন আকরর সিংহাসনারেছণ করিলেন তথন জাঁ
হার চতুর্দশ বৎসর ব্যঃক্রম। এই নবীন

গুলিলেল
বয়নে তাঁহার সাহস ও বিচক্ষণতার কিছু
মাজ ক্রটি ছিল না, তথাপি হোমাধুনের আজ্ঞা ছিল তিনি

বেপর্যান্ত বয়ঃ প্রাপ্ত না হইবেন সেপ্র্যান্ত বছরাম থাঁ
রাজকর্ম্ম সম্পাদন করিবেন। সুত্রাং ঐ ব্যক্তিই রাজ্যের
কর্মকর্ডা ইইলেন।

বছরামের জন্মতান তুকতান। তিনি যৌবন কালাবণি হেংসাখুনের সঙ্গেই জ্লমণ করিয়াছিলেন, এবং আকররেরও গুড়ানুধাায়ী ছিলেন। কিন্তু তিনি অত্যন্ত দান্তিক ও কর্মশুড়ায়ী, এবং সকলকে তুচ্ছ তাচ্ছলা করিছেন, ইহাতে প্রথান পক্ষ তাবং লোক তাঁহার প্রতি বির্ফাইনলেন। অধিকন্ত, তাদীবেগ নামে হোলাগুনের অতি বিশ্বাসী এক দৈন্যাধ্যক্ষ দিল্লীনগরের কর্মক্তা হইয়াছিলেন, হেনু মুদ্ধার্থ উপস্থিত হইলে তিনি নগর পরিত্যাগ করিয়া প্রায়ন ক্রেন। এই অপ্রাথ তিনি ভাঁহার প্রাণদণ্ড করিলেন, আকবরকে একটি কথাও জিজ্ঞাস। করিলেন না আর এক জন প্রধান লোক তাঁহার অভিপ্রায়ের বিপরীত কর্মা করিয়াছিলেন তাঁহাকেও তিনি খড়ামুখে অপণ করি-লেন। ইহাতিক রাজগুরু পীর মহম্মদেরও প্রাণদও করি-তে উদাত হইয়াছিলেন, তিনি মক্কা গদন করিয়া কোন প্রকারে রক্ষা পাইলেন।

বহরানের এই শকল কর্ম দেখিয়া প্রধানপক্ষ সকলের
ক্রিনে অতান্ত জাস জামিল। আকবরও দেখিলেন বহরান
ভাঁহাকে প্রতিমৃত্তির ন্যায় বাখিয়া আপনি সকল কর্ত্র
করিতেচাহেন। অতথ্য কতকগুলিন আত্মীয় লোকের
সহিত প্রামর্শ করিয়া এক দিন মুগয়াছলে বহির্গত হইয়া,
গর্মারিণীর পীড়া হইয়াহে ভাঁহাকে দেখিতে ঘাইতেছি,
এই কথা বলিয়া তিনি দিল্লীতে যাজা করিলেন। তদনস্তর
এক ঘোষণা দিলেন তিনি স্বয়ৎ রাজকর্ম সম্পাদন
করিবেন, অতথ্য হাহার যে প্রার্থনা পাকে ভাঁহাকে
জানাইবে, আর কাহাকে জানাইবে না।

এই আজে প্রকাশ হইলে বহরামের চক্ষু বিকসিত হইল। তিনি দেখিলেন আকবর তাঁহাকে অবিশ্বাস করি-য়াছেন। বহরাম পুনর্কার রাজানুগ্রাহে প্রতিষ্ঠিত হইবার চেন্টা করিতে লাগিলেন। কিন্তু সে চেন্টা বিফল হইল, আক-বর তাঁহাকে বিশ্বাস করিলেন না। বহরাম প্রথমতঃ মনে করিলেন আকবর যেমন অবাধা হইলেন আমি বলপ্রের্ক মালবঞ্জাদেশ অধিকার করিয়া স্বাধীন হই। কিন্তু পরে বিবেচনা করিয়া দেখিলেন সে কর্ম উচিত নহে। অতএব সে অভিপ্রায় ত্যাগ করিয়া নগরে যাত্রা করিলেন। তথা হইতে গুজরাট দিয়া সন্তায় যাত্রা করিবেন এই চিন্তা করিতেছেন এমন সময় আকদর উল্লেকে কর্মচ্যুত করিয়া পত্র লিখিলেন ভাম মন্ত্রা গমন কর। বহুরাম এই আজ্ঞা পাইয়া, নিসান ডক্ষা প্রভৃতি মর্যাদার যে যে জ্ব্রাদি উল্লেক্তিয়া করিলেন।

গুজরাটে উপস্থিত হইষা বহুরামের কেলন কুম্ভি হইল তিনি হৈম্য সংগ্রহ করিয়া বলপুর্বাক পঞ্জাব রাজা व्यक्तिहादत्र (इ.स.) कतिरम्भ । शांकर्य अवर्गाः । उथार गमन কয়িয়। ভাঁহাকে মৃচ্ছে পরাস্ত করিলেন। বহরাম তথন ভাঁহার পদানত হইয়া নানা প্রকার আর্ত্রনাদ করিছে লাগিলেন। আকবর যথোচিত সন্মানপূর্বক ভাঁহাকে আপনার দক্ষিণ ভাগে বসাইলেন। ভাগার পর সম্ভ্রম স্থুটক পরিচ্ছদ পরিধান করাইখা জিল্ডামা করিলেন, একলে তোমার কি অভিলান, যদি রাজাসুখের বাঞ্ছা হয় বল ভোমাকে কোন বহুৎ রাজ্য শাসনের ভারাপণ করি-তেছি, যদি তাহা মনোগত না হয়, তবে আমার সভায় क्तीन महास कमा धार्म कत । अभवा छीर्यभगटनत অভিনাষ হইয়াপাকে ভাহাতে আমার আপতি নাই, डुमि महा भगन करा। अश्कात वा मिह्रदिष्टन। श्रेषुक्र है ইউক বছরাম রাজ্যাতিলার বা করিয়া মন্ত্রাগমনের বাসন্

कानाहरणन । छाहारछ आकरतं छाँहात शर्मन छ छत्रभ भाषामात्र निभिन्न घरथानिछ त्रिष्ठ निरम्भाविष्ठ करिया भिरमान। छमनछत यहत्राम छक्रतीरने घर्षा करिरमान, किन्न भी ज्ञान हहेरछ भागन जोहाक्रारताह्म करिरमन भी मन्द्रम भक्कम भागिन छाँहारक वध करिम। यहताम भी गास्त्रित भिराहक गुरुक वध करिमाहिरमन स्मेह मारक्रारम भी गास्त्रित भी कर्म करिम।

उम्मख्य अधीमन रदम्य देशः कृत्म, आकर्त मन्छ রাজ্যের ভার গ্রহণ করিলেন। তৎকালে রাজ্যে কেসন গোলাঘোগ ছিল ভাষা বলিতে পারাযায় না, বিচার ও রাজকর্মের কিছুমাত শৃখ্না ছিল না। ভিনহ ভানে যে যকল চৈন্যাগাক্ষ নিযুক্ত ছিলেন ভাহারা নিভাত অবাধ্য এবং নিয়ত যুদ্ধ ছলে নভ থাকিতেন, তাহাদি-शटक भी मत्त तीथिय। श्राकाशायन अ तात्रकामि गर-শোধন, ও অপহতে রাজা উদ্ধার করা বড় সহজ কর্ম নহে: বিশেষতঃ ভাঁহার আয় অধিক চিল না, কেবল পঞাব দিল্লী ও আগ্রার রাজস্বের উপর নির্ভর। অধিকল ভাঁহার महा एक कन रेमना जामिताहिन छोडाती धक्छारमत लाक मटर, जिन्न २ साम स्टेटज लोजीनुद्रादि आमियादिन, ब्राक्कात निजास असाजूपाती किन ना। देशांट जकन দিক ছকা করিয়া কর্দা করা কেমন কঠিন তাহা বলিবার अर्थका करत ना किन्छ जीकरत नामाना भन्ने किर्दान ना, डारांब रिमा दृषि पञ्चरा ও অভি অসাধারণ कर्मण

ছিল, ভাহাততই তিনি সকল বিষয়ে ক্রতকার্য্য হইয়েন। অন্য কোন ব্যক্তি হইলে সে ক্রপ কদাচ হইত না।

रा तरमद कोकरद जाराम इस्ट दोकाचाद वहरनम. নেই বংসর সুলভান মহন্মদের এক পুত্র বহু সন্ধাক উসন্য একর করিয়া अग्राम श्रुद्ध हाजवित्नार आहम कहित्वम । आकरह धे বিজ্ঞোহ দমন জনা এক সেনাপতি প্রেরণ করিলেন. ঐ সেনাপতি মহম্মদকে পরাজয় করিলেন। কিন্তু অনেক লঠিত ধন প্রাপ্ত হইয়া রাজ্ঞার প্রাপ্তা অংশে ভাঁছাকে ৰঞ্চিত করিলেন। আকবর এ সংবাদ পাইয়া স্বয়ৎ मरेमत्ना याहेशा छै। होत गर्य थर्य क्रिटनन । ज्यनस्त বাজবাহাত্তব নামে মালবের কর্দাক্তী রাজভোগী হইলেন। आम्ब थे। नाटम आंकरदवव एक देवनाश्वाक ख्यात याहेगा বিজ্ঞোন্ত দমন করিকেন। কিন্তু তাহার প্র আপ্রনি অস্ত্রধারী হইবার উপক্রম করিলেন, আকবর তাহা শুনিয়া সমূৎ তথায় উপস্থিত ইইলেন, তাহাতে এ সেনাপতি আর কোন উপদ্রু করিতে পারিলেন না।

আকবর সকল কর্ম্যের নিয়ম নির্দারিত করিয়াছিলেন, এবং নিয়ম পালনের প্রতি বিশেষ কটাক্ষ রাখিতেন, হিং ১৭২ নিয়ম উল্লেখন করিলে কাহাকেও ক্ষমা শু ১৫৯৬ করিতেন না। ইহাতে উজবক জাতীয় সেনাপ্রভিগ্ন অভ্যন্ত বিরক্ত হইলেন। বিশেষতঃ ভাহা-দিশের প্রক্রি তাঁহার পিতা। ই ও পিতার নিভান্ত ছেয ডিল, কি জানি সেই ছেম প্রায়ক্ত তিনি যদি ভাহাদিগের প্রতি বেষ করেন এই আশক্ষায় তাহারা সকলে অস্ত্র খার্থ করিল। স্মার ২ অনেক প্রাপান লোকও ভাহাদের शहिल मिनिल। के समस्य मुगामात लीटत भवा मोटम कक खाटन এक हिन्छ, भवाक्रभभाजिनी वागी किल्लन। प्यांक-রর উহিরে দমন জনা আসফ গানামে একজন সেনা-পতিকে ভারণ করিয়াছিলেন। আসফ খাঁ উপস্থিত इटेटन के तारी अपर देशना मामस अवेश जैलाद महिल शुक्त कहित्या, किन्द्र अनुदर्भाष छैलिदि सम्मोमकम श्रक्षास्य করিল, এনং তিনি আপনি আঘাত প্রাপ্ত ইইলেন। ভাহাতে নিৰূপায় হউহা অপমানের ভয়ে সমৎ বক্ষেদেশে থজ্ঞাঘাতপর্যক প্রাণভাগে করিলেন। রাণীর মৃত্যুর পর তাঁহার সমস্থ সম্পত্তি আমদের হত্তে পড়িল। আস্ফ ভাছার লোভ সমরণে অক্ষম হায়া উজ্লবক্দিগের সহিত चितिहास ।

এই প্রকার চতুনিনে বিজোহ উপত্তিত হইল। আকবর

ছই বংশব গতিপ্র করিয়া ভাষার শান্তি কবিলেন। তদ
নন্তর, হাকিন নামে তাঁহার যে আতা কাবুলে রাজা হইয়া
ছিলেন ভিনি পঞাব রাজা সাক্রমণ করিলেন, ভাষাতে

আকরর সমং তথায় গনন করিলেন। ঐ সমন এতদেশীয়

শুক্রমের সামঃ প্রবান হইয়া রাজা ক্রবার মন্ত্রণা করিতে

নাবিল্ল আকবর পঞাব হইতে আসিয়া ভাষাদিগকে

শুক্রমের শুক্রমের বে তাহাতে তাহারা একেবারে

গঙ্গাপার পলায়ন করিল। আকবর তাহাদের পশ্চাৎহ
গঙ্গাপর্যস্ত অনিলেন। বিদ্রোহীরা মনে করিল বর্ষারস্ত 
ইইনা নদী করি বিধানতী হইয়াছে, বর্ষা শেষ না হইলে আকবর নদী পার হইতে পারিবেনা। কিন্তু তিনি ভাহার অপেকানা করিছা এক দিবন সন্ধার পর ছই সহজ্ঞ সেনা সমভিব্যাহারে, গভারে প্রস্কৃতিক নদী পার হইয়া, গোপন ভাবে থাকিলেন। রাজি প্রভাত হইবামাত অকন্মাৎ বিজ্ঞাহীদিগকে আকমণ করিলেন। ঐ আকমণে শত্তুগণ ভিল্ল ভিদ্ন হইয়া যে ঘেদিগে পাইল সেই দিগে পলায়ন করিলে।

এইপ্রকার আক্রর মকল আলাগা প্রধান দিগকে বলীভূত করিলেন । তথন জাঁহার বয়ঃক্রম ২৫ সংসর

ছি ১৭৫ মাত্র। তৎপরে তিনি বাজা রুদির

থু ২৫১৭৮ বিটা আর্ম্ম করিয়া, প্রথমতঃ মারওযার অস্তর্গত মিতার ছুর্গ জয় করিলেন। পরে চিতোরের
রাজা উদয়সিংহের ছুর্গ আক্রমণ করিলেন। উদয়সিংহ

নজার পুত্র, তিনি শাস্তস্থভাব জিলেন, অভতব যুদ্দে
প্রস্তুর না হইলা জয়মল নামে এক মহাবল সেনাপতির

হল্তে ছুর্ম সমর্পণ করিয়া আপেনি গুজরাটে পলায়ন করিলেন। আক্রর স্থির করিলেন বারুদ দ্বারা প্রাচীর ভেদ

করিয়া ছুর্ম প্রবেশ করিবেন, এনিমিত্ত প্রাচীরের নীচে ছুই

ভানের ভূতিকা খনন করাইয়া তল্পগো বারুদ প্রিয়া

একেবারে ছুইন্থানে অগ্নি দেশ্যাইলেন। কিন্তু একন্থানের

ন বারুদ পরিয়া কডকটা প্রাচীর তথ্য হইল, দ্বিতীয় স্থানে অগ্নি ধরিল না, ইহা দেখিয়া সেনাগণ তথ্যস্থান দিয়া প্রাচীর আরোহণ করিতেলাগিল। ইতি মধ্যে দিউন্ব স্থানের বারুদ হঠাৎ প্রজ্বলিত হইয়া তাঁহার অনুনক সেনা হত ও আহত হইল। যাহাইউক সেই ঘটনার পর হর্প বেইন করিয়া থাকাই সংক্ষে বিবেচনা করিয়া, দুর্গের চতুর্দিগে প্রহরী নিযুক্ত করিলেন।

তদনম্ব আফবর এক দিবস বাতিকালে উটিয়া দেখি-लन अर्नक दाङ्मञ्चद मनान जानाहेश उध आहीत् পুনঃ সৌষ্ঠব করিতেছে, এবং জয়মল তাহাদিপের মধ্যে পাকিয়া কোখায় কি করিতে হইবে তাহা দেখাইয়া দিতে-ছেন। এতদ্বলোকনে আকবর লক্ষ্য শুদ্ধ করিয়া ভাঁছাকে এমত গুলি মারিলেন যে তাহাতে তিনি দেইখানেই শয়ন করিয়া মহানিক্রাপ্র হইলেন। এই ঘটনাতে তুর্গ-রক্ষক সেনাগণ ভূগোদাম হইয়া স্কুর্ণের থাবভীয় নারীগণকে জয়মল্লের অলম্ভ চিতাতে নিক্ষেপ করিল, পরে আপ-নারা দেবমন্দির আশ্রয় করিয়া থাকিল, ভুর্গরকার কোন यद्भ कतिलमा। আक्युब्र छूर्ग अत्यन कतिया अध्यक्तः দুর হইতে আগ্নেয়াক্স বর্ষণ করিতে আজ্ঞা দিলেন, তাহার পর তিন শত রণমাতজ ছুর্গের মধ্যে ছাড়িয়া দিলেন, 🔌 সকল সাতজ পতজের ন্যায় কাহাকে চরণে মর্দ্দন কাহাকে श्रद्ध छेट्डानन कतिया मध्यात कतिरू नामिन। এই

খিং ৯৭৫ ) প্রকার ৮০০০ লোক একবারে হত খু ১৫৯৮ মার্চ হইল। আকরর ভাষার পরে সচ্চদে তুর্গ অধিকার করিলেন।

উদয়াসংহ বহু দিবস পলাইয়। পাকিলেন। পরে তাঁহার পুত্র প্রভাপনিংহ অনেক যুদ্ধাদি করিয়া পৈতৃক রাজ্যের কিয়দংশ উদ্ধার করিয়াছিলেন। অনন্তর ভিনি উদয়পুর নালে এক কতন রাজগানী শাপন করেন। ঐ ভানে ভাঁহার উত্তরাধিকারীপণ অদ্যাপি রাজন্ব করিতে-চেন।

পর বংশর আকবর বিস্তায়র ও কালিজবের মূর্ণ তার করিলেন। তৃংপরে আরহ অনেক রজঃপুত রাজাদিগের সঙ্গে যুদ্ধে প্রব্রন্থ করিলেন, কিন্তু গৃদ্ধ না করিয়াও তিনি কোশলে জনেক রাজাকে বলীজুত করিলেন। তাহার কারণ, তিনি জয়পুরের রাজা বহরমদের কন্যার পাণিগ্রহণ করিলেন, তদনস্তর মারওয়ার রাজার কন্যার পাণিগ্রহণ করিয়া, জয়পুরের রাজপরিয়ারশ এক কন্যার সহিত আপানার জ্যেষ্ঠ পুত্রের বিবাহ দিলেন। ইহাতে অনেক হিন্দু রাজার মঙ্কে কুটুছিতা আরম্ভ হইল, এবং হিন্দুভার্যানিদেশর গার্জাভ সন্তানেরা, মুমলমান জীর গর্জাভ সন্তানেরা, মুমলমান জীর গর্জাভ সন্তানেরা, মুমলমান জীর গর্জাভ সন্তানের ন্যায়, পিতার বিষয়ের অপিকারী হইতে লাগিলেন। রাজাও তাঁহাদিগকে রাজ্যের প্রধান ২ কর্মে নিযুক্ত করিতে লাগিলেন। মুতরাৎ অনেক রজঃপ্রভ

তার আকাজ্জার ভাঁহার অনুগত ইইতে লাগিলেন। আক্রর অনেক রাজাকে এই প্রকার বশীভূত করিলেন, অধিক যুদ্ধ করিতে হইল না।

আকিবরের পরেও আর ক্ষেক জন রাজা এই পারাতে চলিয়াছিলেন, এবং হিন্দুরাজারা মুসলমান্দিগকে চ্ছিতা দান করিতেন। কেবল উদয়পুরের রাজা জাতাভিমান প্রযুক্ত একপ কুট্রিতা ক্রেন নাই, বরং যে সকল রজঃ-প্ত রাজারা আকবরের পরিবাবে ক্নাাদান ক্রিয়াছিলেন জীহাদিগের সহিত আহার ব্যবহার রহিত ক্রিয়া-ছিলেন।

অবসিপ উপায় দ্বারা অনেক রাজাকে করন্ত করিয়া আকবর গুজরাট জন্মের চেন্টা করিতে লাগিলেন। পাঠকেরা অবগত হইয়াচেন, গুজরাট রাজা ইভিপুর্মের স্থানীন ইইয়াচিল। গুজরাটাপিপতি বাহাছর সাহের মৃত্যুর পর ভাঁহার প্রাত্তপুত্র মহম্মদ রাজ্যেশর ইইয়া-ছিলেন। তিনি পরলোক গন্ম করিলে এতনাদ খানামে ভাঁহার এক হিম্ফু ক্রীত দাস ভাঁহার পুত্র বলিয়া মজাকর নামধারী এক বালককে সিংহাসনে উপবেশন করাইয়া আপনি রাজকর্ম করিতে লাগিলেন। ইহাতে অনেকে ভাঁহার প্রতিবাদী ইইল, বিশেষতঃ জলিশ খানামে এক প্রধান লোক ভাঁহার সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত হুইলেন। এ এই সংগ্রাম ১৫৭২ থুটাক পর্যান্ত চলিল)। এতমাদ মুন্তে অক্ষম ইইয়া আকবরের সহায়তা প্রার্থনা

করিলেন, আকবর অতি আগ্রহ পূর্ব্বক গুজরাটে যাত্র! করিলেন। তিনি গৈতানে উপনীত হইলে, মজাকর ভাঁহার, নিকট উপত্তিত হইয়া সমুদায় রাজা ভাঁহার হস্তে সম্পূণ্করিলেন।

व्याकरत् वी वादकात व्यक्षुद व्याश्च हरेगा व्यवसार দিগকে অস্ত্রনে বাধ্য করিলেন। তৎপরে মম্প্রভটে त्मोत् छि नगर आक्रमण कतिरल्ना धर्नेनभरत अरन्क বিদ্যোহী একত হইয়াছিল, ভাঁহার আগমনে ভাইরো ভথা इंडेटड अक्षान कहिला। अहे मकल विद्यारी अनार निद्या-হীর সঙ্গে মিলিয়া দলবেদ্ধ নাহয় এজনা আকরর অগ্রহর হইলেন, কিন্তু ভাহা নিধারণ করিতে পারিলেন না। এক দিবৰ কেবল ১৫৬ জন টেন্না লইয়া তিনি এক সহস্ৰ লোকের সন্ধাথে পড়িলেন, ইহাতে লীভ না হট্ছ। তিনি তাহাদিগকে আজনণ করিলেন। একর্ম অতি ছঃসাহ্দ বলিতে হইবে, যেহেতু ইহাতে প্রাণ ধাইবার আটক ছিলনা। তথাপি সংগ্রামে প্রাজমুখ ন। ইইয়া তিনি একটা মুডি পথ আগ্রেয় করিয়া অকুতে:ভব্যে ভাহাদিগের মজে শুদ্ধ করিতে লাগিলেন। বিভোহীগণ ভাঁহাকে প্রাজ্ব ক্রিতে না পারিয়া অপেনারা প্রাক্ত হুইয়া अञ्चान कविन । अनस्त्र आकरत भोताचे नगत अधिकात করিকেন। তাহাতে তাবৎ গুজুরাট এদেশ তাঁহার अख्याधीन इहेत।

এই ঘটনার পার আকবর গাগ্রাতে প্রত্যাগমন করি-

লেন। কিন্তু একমাস অভীত না হইতেহ শুনিলেন হোসন মিৰ্জা নামে এক অবাধ্যপ্ৰধান ওছৱাটে আদিয়া আহ-ন্মাদৰাদে তৎপক্ষ সৈন্যাধ্যক্ষকে আক্রমণ করিবার উদ্যোগ করিভেছে। যথন আকরর এই সংবাদ প্রাপ্ত হইলেন তথন ঘোর বর্ধা, অতএব, অনেক সৈনা প্রেরণ করিভে না পারিয়া, কেবল ছাই সহতা রণদক্ষ অশ্বাহাহী ত্রেরণ করিলেন। ইছারা এসানে উপস্থিত নাছইতে হইতে তিনি সয়ং ভিন শত ভত্রলোক সমভিব্যাহারে উট্টা-বোহ্যেন, এক এক দিবস চল্লিশ চল্লিশ কোন পথ গমন করি-या. अधिताथ उथाय छेशनी छ दश्यम। शाद खेखारन आद এক সহস্র অস্বাবোহী সৈনা সংগ্রহ করিয়া, সর্বসাকলো ৩০০০ সৈনা লইয়া, আহমদাবাদে যাত্রা করিলেন। শক্ত-গণ ভাঁছাকে হঠাৎ লা স্থানে উপনীত দেখিয়া অভিশয় চমৎক্রত ও ভীত হইল। নানন্তর হোসন, ভুর্গরকার্থ ৫০০০ প্রহরী রাখিয়া, ৭০০০ অমারোহী লইয়। যুত্তে অগ্রসর হইলেন। আকররের বিশাস ছিল ছুর্গের প্রছরী সকলে উটোর পক হটবে, কিন্তু ঐ সেনাগণ ভাঁহার বিপক হইল, তথাত তিনি নির্ভয়ে যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন এবং শক্রমেনা চিন্ন ভিন্ন করিয়া সংগ্রাম জয় করিলেন। होमन बाह्ड उक्ती इन्टिन ।

্রেশাকবর এত অপে দেন। লইয়া যুদ্ধ করিতে গিয়াছি-লেন, ইহা অপে নাহদের কর্ম নহে। আরো আশ্চর্য এই শক্তবেনা পলায়ন করিলে যখন উহার দেনাগণ ভাহা- দের পশ্চাৎ খাবমান হইল, তথন তিনি কেবলং ০০ আখারোহী সইলা এক উচ্চ স্থানে দণ্ডায়মান ছিলেন। এসমল
বিপক্ষণণ তাঁহাকে বেইন করিবার চেইটা করিল। কিন্তু
তিনি চুত্রতাপুর্মক রণবাদ্য বাজনের আজ্ঞা দিলেন।
এবাদ্য শুনিয়া শুজনবের মনে হইল বুঝি অনেক রাজনদন। পশ্চাং আচে, এই ভাবিয়া সকলে পলায়ন করিল।
আকবর তথন ঐ দেশ অবাধায় গুনর্ধিকাব করিলেন।

শুক্তবাট ক্ষয়ের পার আক্ষরে বেহার ও বজাদেশের রগ-इरक माछ इडेरन । इे जिश्लर्स विद्यादित किंग्रमश्रम पिती রাছা জ্বন্ত হইয়াছিল, কিন্তু আদীল সাচের ব্রাজ্ব কাল অবধি বল্পদেশ পাঠানদিলের হস্তগত হয়। ভূদবর্গি তাঁহারাই তথায় রাজত্ব করিতেভিবেন। সম্পৃতি দাউদ খাঁ ঐ দেশের রাজ। হইযা ছিলেন। তিনি গতান্ত চুকল ध लम्भावे दिल्लान अजना डीहात घन्नी हे मकल वर्षा निर्माह করিতেন। ক্রমে এ মন্ত্রী অতান্ত প্রবল হইয়া উচিলেন। ভাষ্তে দাউদ খা উত্তরকালে রাজ্য নাশের আশস্কায় তাঁহার প্রাণদত করেম, এই কারণে মন্ত্রীর আলীয় গণ সকলে রাজ বিরুদ্ধে অস্ত্রধারণ করিল। স্থাতরাং রাজ্যের मत्था नाना लान छेशिख् इहेन। अहे सूत्याल आक-বর দাউদ ধার স্থানে এক অজীকারপত্র লেখাইয়া লই-লেন তিনি তাঁহাকে কর দান করিবেন। কিছুদিন পরে माजेन थे। वे अज़ीकांत अज कतिरवन । जाशास्य निर्वा-प्तत्र स्वभा उ रहेशा, आंकरत विश्वतर । अन्नभाव রোহ পূর্বক বন্ধদেশে বাত্রা করিলেন। দাউদ কাঁ তাঁহার আগমনে রাজধানী পরিত্যাগ করিয়া দক্ষিণ প্রদেশে পলায়ন করিলেন। তাহাতে আফবর রাজা ভোড়ল্-নল্কে বন্ধদেশ জয়ের ভারার্পণ করিয়া আপনি আগ্রাতে প্রত্যাগমন করিলেন।

রাজা ভোড়াল্লল আকবরের রাজস্ব সম্পর্কীর কর্মাকর্জা ছিলেন। তিনি অতি বিচল্লণ এবং গুলকর্মেও মুপাওিত, কিন্তু বঙ্গুদেশ ঘেমন সহজে জয় করিবেন মানস করিয়া-ছিলেন ভাহা পারিলেন না। ভাহার কারণ, দাউদ্ধা পলায়ন করিয়াও বাজসেনাদিগকে চুইবার পরাজিত ও ছিন্নভিন্ন করিয়াও বাজসেনাদিগকে চুইবার পরাজিত ও ছিন্নভিন্ন তথ্যত ভিনি আপনার পরাজ্ম পরাজিত হইলেন তথ্যত ভিনি আপনার পরাজ্ম ভি: ১৮০ চাভিলেন না, উড়িয়া অধিকার করিয়া গুলিতে না পারিয়া কেবল বঙ্গুদেশ অধিকার করিলেন। এই ব্যাপাত্রের পর রাজা ভোড্লোল ও আরহ সিন্না-এই ব্যাপাত্রের পর রাজা ভোড্লোল ও আরহ সিন্না-

এই ব্যাপারের পর রাজা তোড়লাল ও আর্থ মসন্যাথাকেরা লাগ্রাতে প্রত্যাগদন করিলেন, বলদেশে কেবল
কর্মকর্তা রহিলেন। এই ব্যক্তি গৌড়রাজগান
নিতে যাইয়া অভিরে পঞ্চ প্রাপ্ত হইলেন। আকবর
ভাঙার মৃত্যু সংবাদ পাইয়া আর একজন কর্মকর্তা নিযুক্ত
ক্ষিয়া পাঠাইলেন। কিন্তু তিনি কর্মক্তল পদার্পন না
ক্ষিয়াতেই দাউদ খা সুনর্মার বস্তদেশ অধিকার করিলেন।
ভাজাতিই দাউদ খা সুনর্মার বস্তদেশ অধিকার করিলেন।
ভাজাতিই দাউদ খা সুনর্মার বস্তদেশ অধিকার করিলেন।

হত হইজেন। তাহাতে বেহার ও বজদেশ দিলী রাজ্য-ভুক্ত হইল, এবং এই ছই প্রদেশে পাঠানদিগের আধি-পত্য একবারে ঘৃতিন।

কিন্তু বঁলনেশে অনেক রজের মনুষ্য একত হইয়াছিল ।
তাহাতে ঐ দেশ একেবারে শীতল হইবে ভাহার বিষয়
কি। এই দেশে পুর্যে মোগলদিণের গতিবিধি বা বসতি
কিছুই ছিল না, কেবল পাঠানেরা আসিয়া বসবাস করিয়াছিল। পরে নোগলেরা যথম উত্তর কিন্তুশান ক্ষয়
করিল তথম পাঠানজাতীয় অনেকে যোগল রাজার কর্মা
ক্ষয়ীকার করিয়া স্থানেশ প্রস্তান করিছে লাগিল। ঐ
সময়ে মোগল কর্মার্কারা অনেকের অনেক জায়গীব ও
আরহ ক্লতি হরণ করিলেন, এবং রাজার রাজার পথান্ত
উদরম্ভ করিতে লাগিলেন। হিসাব ছাহিলে নলিতেন
যুদ্ধে সকল টাকা ব্যায় হইয়া গিয়াছে।

রাজা তোড়লাল রাজ্যের কর্মকর্তা ইইলে রাজক বি
বমে বড পুঞ্জালুপুঞ্চ ইইতে লাগিল। তিনি বস্তুদেশের

কর্মকর্তাদিগকে লিখিলেন সমুদ্য রাজ্যের জনা ধর্চ

এবং ব্যয়াবশিষ্ট রাজক রাজভাতারে প্রেরণ করিবে,
আর জালগীরভোগী বাজিরা দৈন্য সামস্ত রাখিয়া

হিং ২৮০ রাজকার্যা নির্বাহ করে কি না, তাহাব

শ ২০০ অনুসন্ধান আরম্ভ করিয়া, আজ্ঞা দিলেনু

কোন্বান্তি ক্তেটসনারাথে তাহার তালিকা পাটাইবে।

এই আজ্ঞায় অভিনব কর্মকার্দিগের একেবারে চক্ষুঃমির

হইল। উহারা দৈনা সামস্ত কিছুই রাখিতেন মা, বাহা পাইতেন সকলই আপনাদিগের উদরে দিতেন, হিসাব দিতে মা পারিয়া রাজবিক্তকে অস্ত্র ধারণ করিলেন।

ष्याकरत (मधित्वन वज्रतमण अह करा मिथा। इटेन, कर्मकर्डामिनाटक वनीएंड कतिएड ना भातिएन मर्टेक्टर वि-कन, व्यञ्जय भूनस्रात रेमना त्थात्व कतित्वन । ইशाय्य কোন ফল দৰ্শিল না। অভএব তিনি ভোডলালকে পুন-র্বার পাঠাইলেন। ভোড়লাল ভয় দৈত্তা প্রদর্শন পূর্বক হিম্মুভূমাধিকারিদিগের সহিত এক প্রকার বন্দোবস্ত করি-बाव উদ্যোগ कवित्तन। किस बासमञ्जी तह आकारका করিয়া অধিক কর স্থাপনের আজ্ঞা দিলেন। এই আজ্ঞাতে विद्यारी वाजीउउ व्यत्तरक शमाउक रहेन। राज्यान তিন বৎসর পর্যান্ত থাকিয়া কিছুই করিতে পারিলেন না। অনম্ভর আঞ্জিজ থাঁ নামে আর এক ব্যক্তি ভাঁছার কর্মে नियुक्त इहेश जानित्नन । তিনি काशांक अर्थ मिश्रा, ্কাহার রুত্তি সুস্থির রাখিয়া, বিরোধ ভঞ্জন করিলেন। জদনস্তর রাজকর বীতিমত সংগ্রহ হইতে লাগিল। त्यां अरबता विष्णारह काल तहिन।

এই বিরোধের সময়ে দাউদ থাঁএর পারিষদ লোকের।
শ্বর হইয়া ছিল এমত নছে। মোগলেরা বঙ্গদেশে
বিজ্ঞাহ আরম্ভ করিলে, ভাহারা কড়ু নামে এক প্রধানেম্ন আক্রম কইয়া উৎকল প্রদেশে অক্রধারী হইল।

তিং ১৯৮ \ এবং উড়িধা ও তত্ত্তর বর্দ্ধনানের সালিপা প ২০২০ সানোদর পর্যাস্ত সকল স্থান অপিকার ৰবিল। এই বিজেছ শাস্তি জন্য আক্ৰয় মানসিংককে eश्रवन कविन । भारतिएक श्राकतत्वत् रेवनार्थिक, श्रव्ह कायुरमात कर्याक छ। छिटन न, स्टिनि नक्षरम्हम छेशछि उ হউলে পর বর্ষ। আরম্ভ হল। তাহাতে যুদ্ধের বালেত প্রযুক্ত, সম্পতি যে স্থানে কলিকাত। ইউয়াছে তিনি তপান অবস্থান কবিলেন। ইভিপুকে ভাঁছার পুত্র অনেক গুলিন देमना लहेश विटक्ताशीफिश्यत मध्य गुक्तार्थ भगत कित्ता-**फिल्मन,** हिन्छ रथवनी इहेटनग । देशहेट गुम्ह ज्याय বিষয়ে আরও বা। ঘাত হটল। কিছুনিন পরেই করু পর-लाक भगन कहिरलम, धवर हेल भारम धक कामवीन ব্যক্তি তাঁছার পুত্রবিগের অভিভাবক হইলেন। সাল-সিংহ ভাঁহার সহিত এই ধার্য করিবেন উড়িল্যা এদেশ শতুর পুত্রদিবোর থাকিবে, ভাঁছার। চিল্লীখরকে কিছুৎ क्रक्षमान क्रिट्वम ।

এই প্রকার সন্ধিবলন হুইয়া সকল বিবাদ শেষ হুইল।
কিন্তু ভাহার ছুই বংসর পরে ইজা পরলোক গমন করিলে,
তংশরিবর্ডে যে ব্যক্তি কড়ুর পুত্রগণের রক্ষক হুইলেন
ভিনি গজনাথ দেবের মন্দিরের রাজ্য গ্রহণ করিছে লাগিলেন। ইহাতে তাঁহার অভ্যন্ত অয়শ হুইল, এবং
আক্রর পুনর্কার মান্দিংহকে পাঠাইলেন। মান্দিংহ আবিষা ঘোরতর যুদ্ধ আরম্ভ দুরিলেন, ভাহাতে পাঠা- নেরা পরাস্ত ইইয়া কটকে পলায়ন করিল, এবং নিভান্ত ব্রিয়মাণ হইয়া থাকিল। কিয়ৎকাল পরে (১৬০০ খুটাকে) শুনমান নাজে কতুর এক পুত্র মন্তকোভোলন করিবার চেটা করিয়াছিলেন কিন্তু করিতে পারিলেন না। ভাষাধি পাঠানদিগের রাজ্যাশা একবারে নির্ভ ছইল।

यथम तक प्राम धाँडे भकत क्षेत्र इष्ट्रांफ बारक, खबम আক্ররের জাতা মির্জা হামিক পুনর্বার পঞ্জাব রাজ্য षोक्रमन करवन । मान्तिश्र धे द्वारकात कर्माकर्डा हिस्सन, হিং ৯৮৯ তিনি স্থানজন্ত হইয়া লাহোরে পলাইয়া শ্ ১৫৮১ আসিলেন। আক্রম ভাছা দেখিয়া স্বয়ং পঞ্চাবে যাত্র। করিলেন। তৎকালে আকবরের অতিশয় एमिंद्रेश्वकाल, काहांत्र जाशंभरन मिक्की हाकिम लगायन করিলেন। আকবর তাঁহার পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া সিন্ধু-পারে কাবুল অণিকার করিলেন। হাকিম তৎকালে পর্বত্রিখরে প্রায়ন করিয়া থাকিলেন। পরে ভাতার নিকটে আদিয়া ভাঁহার শরণাগত হইলে, তিনি ভাঁহাকে कांजुन ताका প্রভার্পণ করিলেন। ভদনন্তর আকবর সীয भागिक ताजा जगवान मामत्क शक्कात्वत कर्षाकर्छा कत्रिया, क्षजात्रमम कांट्र निकु शाहावाद्वत चार्ट क्र इर्न् निर्माण कत्रित्मन । बे हुर्ग धर्मन शर्याङ वर्डमान । छाष्ट्रांत्र नाम प्राचक राजानम ।

্ইছার পর গুজরাটে 'আর একবার বিজোহ উপস্থিত। ছইড়াছিল। তাহার কারণ এই, সজাকর আক্রান্তের হিং ৯৮৯ হত্তে রাজা সমর্পণ করিলে, আকবর

ধৃ ১৫৮১ তাহার ভরণ পোষণার্থ উপযুক্ত জারপীর দিয়া তাঁহাকে আগ্রাতে রাখিলেন। মজাফর এক
প্রকার সক্ষণে থাকিলেন। কিন্তু গুজরাটের লোকেরা
তাঁহাকে কুনজনা দিল ভুমি এথানে আইস, তাহা হইলে
আমরা ভোগাকে পুনর্মার গুজরাটের রাজা করিব।
এই মন্ত্রণা পাইয়া তিনি আগ্রা হইতে গুজরাটে গমন
করিলেন, এবং বিজোহীদিগের সঙ্গে মিলিয়া রাজ্যের
অধিকাংশ অধিকার করিলেন। তদক্ষি ১০ বংসর প্রয়ন্ত্র
স্থানক যুজাদি হইতে লাগিল, তাহার পরে মজাফর রববন্দী হইলেন। কিন্তু যখন ভাঁহাকে আগ্রাতে জইয়া ধায়
তথন তিনি একখান স্কুরলারা আপন ক্রপ্রেম্বন
করিয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন। সেই অবধি গুজরাটে আর
করিয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন। সেই অবধি গুজরাটে আর
করিয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন। সেই অবধি গুজরাটে আর
করিয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন।

১৫৮৫ খুটালে মির্জা হাকিম প্রলোক গমন করিলে,
আকবর কাবুল রাজ্য অপিকার জন্য গুনর্বার যাতা করিলেন। তত্ত্পলক্ষে উত্তরের চুর্দান্ত পর্বভিবাসীদিগের
কৃতিত ভাঁহার খোরতের বিবাদ আরম্ভ হইল। এই স্থতে
ভিনি কাশ্মীর রাজ্য জয় করেন, তাহার বিবরণ পশ্চাৎ
কেশা ঘাইতেছে।

কাশ্মীর রাজ্য হিমালহাস্তর্গত পর্বতের উপরে, চারি-দিলে ইশলে বেটিত। মধ্যস্থলে কাশ্মীর রাজ্য। ইহার চতুর্কিকস্থ ইশল হইতে বৃহত্তর নির্মার নির্মত হইয়া मधाक्रम हुई है बुद्द शिल इहेगाएक थे शिलाइ सन अक भणीत क्रांट्मांत निया विदर्गल इहेटल्राफ, लाइंटल शिलाम क्रिन खेटलिस इहेगाएक। सिलाइ मध्या अरमक लाय-मान अस्ताइमा लेगान लाइ, अब्द एक्सिंग्य शिक्ष-भारत नाना श्रकाद इस्क सूर्टमालिल। धोमकन इस्क भील शीया बर्या मर्सकारण नाना लालीय कृत अस्म क्रिमा थारक। अधिकन्न एक्सिंग लेक्स देमला असे बाकारल कान निय इहेरल लेका वा अल्बीलन वासुद अमनायमन इस ना, सुलदार रमहे थारन वाद माम वम्ब-कान, अहे कना अरमरक कान्यीत दालाक अर्थ विवास वर्मन कदियाइम।

কাশ্মীর রাজ্যে প্রবেশ করিবার যে সকল পথ আছে ভাষা অভি চুর্গম ও ভয়ানক, অধিকাংশ পর্বভশ্ন বাহিয়া উর্দ্ধে আরোহণ ও স্থানে ২ অধোমুখে অবরোহণ করিতে হয়। কোন স্থানে চুই দিকে উচ্চ গিরি, ভাষার মধ্যদিরা ঘাইতে হয়। কোন স্থানে বেগবৎ প্রোতের উপর বহির্গতি পর্বভশ্ন উলজ্যন করিয়া গমন করিছে হয়। ইয়া ভিম পাকচক অনেক, এবং সকল পথই অগ্রন্থ ও বক্র, ভাষাতে অনায়াসে বা অপ্প ক্লেশে রাজ্য প্রবেশ করা চুর্ঘট। যদি কেই এমন মনে করেন পর্বাক্ত বিশ্বন করিয়া ভিতরে ঘাইবেন, ভাষাও অসাধ্য, ক্লেন্না

পর্মন্ত সকল অতি উচ্চ, এবং প্রায় সর্মকাল নীহারাহৃত থাকে, ভাহাতে মনুষা গমনাগমন করিতে পারে না। সুতরাং এই স্থানে শক্ত শক্ষা প্রায় নাই। অশ্প সৈন্যে চারিদিক্ উত্তমরূপে রক্ষা হইতে পারে।

এই রাজ্যে প্রথমতঃ পাও বংশীয় রাজারা রাজত্ব করি-তেন। তাঁহারা খুফাব্দের চতুর্দ্দশভ বংগর পর্যায় রাজত্ব করিলে পর, এক জন মুসলমান তথাকার রাজা হঙ্গেন, ভদৰধি মুসলমানেরা তথায় রাক্ষত্ম করিয়া আ-দিতে ছিলেন। ক্রমে তাঁহাদিনের গুহবিচ্ছেদ আরম্ভ হইল, তাহাতে আকবর ঐ রাজ্য লইবার কম্পনা করিয়া चाउक रहेटल चीय नामिक द्रांका जनवानमान ও माहरद्रांच मारम चात्र धक ध्रधानत्क छवाग मरेमरमा ब्लाइन क्रि-লেন। ইহার। পথাভাবে প্রথমতঃ কাশীর প্রবেশ করি-তে পারেন নাই, পারে রক্ষকপুন্য এক দার দিয়া অতি-करके काम अकारत द्वारकात मर्पा अरवर्ग कतिरमम। কিছু আহারীয় দ্রব্যাভাবে এ স্থানে অধিক কাল ভিস্তিতে না পারিয়া, কাশীররাজের সহিত আপাততঃ এই প্রকার वटन्सविन्द्र क्रिट्रंगन, তिनि आक्रंद्रतत अजूष माज बीकात করিবেন, কিন্তু আকবর তাঁহার রাজ্যে কোন প্রকার कर्डंड करिएछ शाहिरवन ना।

व्यक्तित कर बर्णावल कथास कतिया शत वरमत प्रकार कना देवना दक्षत्र कतिरमन । देववार के नमस्त्र कालीत्रतारकत्र स्वनिमिट्यत्र मध्या दिवाम आहर स्टेम- ভিল্প ভাছাতে ভাছাদের অবেকে আসিয়া আক্রের প্রেক্ত নালিত হইল, আর ২ সেনা সকল ছার রক্ষা নাকরিয়া রাজধানীতে প্রভাগমন করিল। ইহাতে মোর্থক সৈনাগণ বিনাবাপায় রাজধানী প্রবেশ করিল। কান্দ্রীরহিং ২০০ রাজ সংগ্রামে অক্ষম হইয়া আকর্বরকে
২০০৬ কাশ্মীর রাজ্য সমর্পণ করিলেন। এবং
আপনি দিল্লীনগরে ঘাইয়া রভিভোগী হইয়া থাকিলেন।
আকরর কাশ্মীর জয়ের পর ঐ রাজ্যের সূথ সস্তোগ ক্ষমা ভ্রথায় গমন করিলেন। ভাহার পরেও আর একহার ঐ হানে গমন করিয়াছিলেন। তদনস্তর আর হাইতে পারেন নাই। কিন্তু উত্তরকালে যাহারা রাজ্য হইয়াছিলেন ভাহার। সর্বাদ্য ঐ হানে হাইয়া উল্লাস করিতেন, বেহেতু ততুলা আয়াসের স্থান প্রিবীতে

কাশ্মীর জয়ের পর আকবর পেশওয়ারের প্রাপ্তরের উত্তরদিণের পর্বত্রাসী ও তদক্ষিণে সলিমান ও থাই-বর পর্বতন্ত লোকদিণের বিরুদ্ধে অস্ত্রখারণ করিলেন। পেশওয়ারের উত্তরে হিল্ফুকুল পর্যান্ত বে কবল পর্বত আছে তাহা অতি উর্বার, এবং তথাকার জল বায় প্রান্ত কাশ্মীরের তুল্য। ঐ স্থানে পূর্বে হিল্ফুদিণের বাস ভিল্প শারে ইসক্তা নামে এক জাতি কাল্যারের নিক্ট হুইতে জানিয়া এই জানে বাস করে, এবং ত্রাহ প্রাচীন ক্ষা-

অকলে বাহায়া বাস করিত তাহাদিগের নাম রুপ্নিয়া অর্থাং উজ্জলকারী, তাহারা কেবল এক পরমেম্বর নানিত, শার কোন ধর্ম বা কোরাণ কিছুই মানিত না। ঐ লাতী-কোরা জাপনাদের ধর্মা প্রচার জান্য অন্তথারণ করিয়া कटम अमंख मोत्राचा आवस कटत य डाहाटक निक्रेस লোকেরা অন্ধির হয়। কুলাধিপতি হাকিন মাহ তাহা-निरंशत ममन कना रेमना त्यत्र करत्न, किन्तु किछ्डे করিতে পারেন না। পরে হাকিন সাহের মৃত্যুর পর বখন কাবুল রাজ্য আক্ষররের হত্তে পড়িল তথন তিনি রাজা মামসিংহকে কাবুল রাজ্যের অধিপতি করিলেন। हेशाटक तमनियानिशदक प्रमम् कतितात धक छैलाग् इहेन। কিন্তু ভিনিও ইতকার্য্য হইতে পারিলেন না। অবশেষে আক্রের প্রথমতঃ রাজা বীরবর ও ওঁহোর শালিপতি ভাত। ইন্ধন খাঁকে দেন।পতি করিয়। ইসফ্ জীদিগের বিরুদ্ধে প্রেরণ করিলেন। রাজা বীরবর ও জৈন খাঁ পর্যত व्यादबाईन भूक्तक अध्यक पृत् अध्यम क्रिस्तान । किन्न ভাষার পরে পর্বতখ্যাও মুড়গ্রহ পথে এমত আরদ্ধ र्रेट्डिंग (क खर्था रहेटल कान खकारत गहित रहेटल शिकित्न मा। धे गंभरत्र शर्वा छवांत्री शाहारमद्रा छवत रहेट डाहामिशदक चाक्रमण कविल। देमदमाता डाहा-भिर्वत महिल बुरक्ष अकम हहेश। भना हेटल कात्र कृतिन। কিন্তু বৰ্তীৰ পৰা দিয়া বাহিল হইতে না পারিণা অৰ गर्म गाउम गरन अफिल देहें। अफिल, किंदूमांक

नीमात्र कविष

শৃথানা রহিল না। পাঠানেরা উপর হইছে ভাহারিগকে জনিবার সংহার করিতে লাগিল। ইহাতে ভাবং সেনা মারা পড়িল, এবং বীরবরও রণশারী হইলেন। ইজন বাঁ কোন প্রকারে প্রাণ কইয়া পলাইয়া আসিলেন, কিছু ভাহার ভাবং ইসনা হত হইল।

রাজা বীরবর রাজসভায় থাকিতেন, এবং সর্কাশান্তের সুপতিত ও অতি সম্বজা ভিলেন, তত্না সদালাপী ও উপস্থিতবজা রাজসভাতে আর কেইই ছিল না, ইহা ভিল্ল উন্থার আর আর অনেক গুণ ছিল । এই জনা গুণ-গ্রাহী আকরর ভাঁছাকে মেছ করিতেন, অভএর ভাঁছার মৃত্যু সংবাদ গুনিঘা তিনি অভান্ত শোকাকুনিত হইলেন। বীরবরের মৃত্যুর পর আকরর ভোড়আল ও মানসিংহ-কে সেনাপতি করিয়া পুনর্কার এ দেশে পাঠাইকেন। ইইরা একেবারে পর্কতে আরোহণ না করিয়া পর্কতের নিয় স্থানে ইসফ শীদিগের যে সকল চাসবাস ছিল ভালা বন্ধ করিয়াদিলেন। ইসফ শীদিগের যে সকল চাসবাস ছিল ভালা বন্ধ করিয়াদিলেন। ইসফ শীদিগের এমন সাধ্য হইল না, পর্কতের নীচে আসিয়া মোগল সেনাহিল্ল ১৯৫

দিপের কলে মুক্ত করে, অভএব ছার্ডকের আলকায় তাহারা নতিশিল হইয়া আকররের রাজগ্রাক্ত্র

<sup>े</sup> बीहरदरत चारनक कारनक कथा काशांति स्वनिष्ठ नां करा बीत; काशा अकि मध्यावद ।

ভদনস্তর মানসিংহ ও ভোড়ন্মল থাইবার পর্বভ্রাণী রসনিয়া পাঠানদিগের সহিত যুদ্ধারম্ভ করিয়া একজন উত্তর জার-একজন দক্ষিণ হইতে ভাহাদিগকে আক্রমণ করিলেন। পাঠানেরা একেবারে ছইদিক রক্ষা করিতে না পারিয়া অপার্য্যমাণে পরাজয় স্বীকার করিল। কিন্তু পাঠানজাতি অতি ছর্দ্ধান্ত, এগর্যান্ত কোন রাজা ভাহাদিগকে একবারে বলীভূত করিতে পারেন নাই। বিশেষ্তঃ জলাল নানে ভাহাদের রাজা ঘেপর্যান্ত জীবদ্দশায় ছিলেন সেপর্যান্ত তিনি মধ্যেহ অন্তর্পারণ করিতেন। পরে ১৬০০ থ্টাক্ষে ভাঁহার মৃত্যুর পর এই সকল যুদ্ধ এক প্রকার নির্ত্ত হইল।

এই সকল যুদ্ধ উপলক্ষে আকবর ১৫ বংসর সিন্ধুতটে বাস করিয়া ছিলেন। ইতাবসরে তিনি সিন্ধু রাজ্য জয় করেন। এই যুদ্ধে সিন্ধুরাজের পক্ষে ছইশত গোরা দৈনা যুদ্ধ করিয়াছিল, ইহারা পর্তুগীস। তিন্ধি এও-দেশীয় অনেক সৈনা গোরাদিগের ন্যায় বস্তাদি পরিপান করিয়াছিল, তদবধি সেপাহীর সৃষ্টি।

এই সময়ে কান্ধার রাজ্যও উদ্ধৃত হয়। পাঠকের।
অবগত হইয়াছেন হোমায়ুন এই রাজ্য বিশ্বাস্থাতকতাপূর্বক অধিকার করিয়াছিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর আকবকের রাজ্যারম্ভ কালে অভ্যন্ত গোলবোগ উপস্থিত হইলে,
পারসরাজ্য সাহ তথাতে প্রাজ্য পুনর্ধিকার করিয়াহিলেন। আকবর জী সময়ে ভাছা রক্ষা করিতে পারেন

নাই। পরে সাহ তমাস্পের মৃত্যুর পর তাঁহার হিং ২০০৬ বিজ রাজ্যে সেই প্রকার গোলযোগ বৃ ২৫২৪ উপস্থিত হইলে তিনিও তাহা উদ্ভ করিলেন।

এই রূপে পশ্চিমে পারস্থানের সীমা অবধি, পূর্ব্ধে বঙ্গদেশের পূর্ব্ধ, উদ্ভরে হিমালয়, এবং দিছিলে বিদ্ধালিরি ও সমুদ্র পর্যান্ত ভাবং রাজ্যা আকবরের দণ্ডাধীন হইল। মুসলমানদিগের রাজ্যারন্ত অবপি এপর্যান্ত কোন রাজ্যা এতাদৃক্রাজ্যা বিস্তার করিতে পারেন নাই। আকবর এই সকল বাজ্যা জয় করিয়া মহারাজ্যকবর্তী হইয়া বিদিলেন, তাঁহার দোর্দ্ধগুণ্ডভাপে সকল প্রদেশ মুশাসিত হইল। হিন্দু ও মুসলমানরাজারা তাঁহার আজ্ঞাকারী হইলেন, এবং অনেক রাজ্যা তাঁহাকে করদান করিতে লাগিলেন। কেবল উদয়পুরের রাজ্যা ও আফগানস্থানের পাঠানেরা অবাধ্য রহিলেন, তাঁহারা রাজপ্রভুদ্ধ বীকার করেন নাই।

## मक्तिर्वत युक्त।

এই প্রকার তাবৎ উত্তর রাজ্য করন্ত হইলে, তথন কেবল দক্ষিণ রাজ্য জয় করিবার অপেকা রহিল। ইহা-তেওঁ আকবরকে অধিক ক্লেশ পাইতে হইল না, ভাহার কারণ দক্ষিণ রাজ্যে তৎকালে মহা গোলযোগ উপদ্থিত

হইয়াছিল। ভাষবরণ এই, ১৫৮৬ থ্টাকে মন্ত্রাজা-নিজাম আহম্মদ নগরের রাজা ছিলেন। ভদতুজ বরবান ভাতাকে রাজাড়াত করিয়া আপনি রাজ্যেশ্র হইবেন এই অভিলামে রাজরাজেশ্র আক্বরের সহায়তা প্রার্থনা कतिरलन । आकरत रेमनामाशया कतिरलन, किन्नु छाश्-তে তাঁহার অভীউ সিদ্ধ হইল না। বরবান ভদবধি আক্ররের অনুগত হইয়া ছিলেন। পরে সংহাদরের মৃত্য हहेल जिनि, ১৫৯২ थ्योद्म, आकरदत्त विना माहारमा ঐ রাজ্য অধিকার করিয়া বিজ্ঞপুরের রাজার শহিত যুদ্ধার্ভ্র করেন।

किश्मित्र भारत नत्नान भत्रालांक भगन कतिरल, স্বতন্ত্র ২ চারিবাজি রাজ্যাকাজ্ফী হইয়া পরস্পার সংগ্রাম আরম্ভ করিলেন। ইহার মধ্যে যিনি রাজধানী অধিকার করিয়াছিলেন তিনি মোগলেশ্বরের সহায়তা প্রার্থনা করি-লেন। আকবর ভাঁহার মনোরথ পূরণার্থ গুজরাট হইতে খীয় পুত্র মুরাদ, ও মালব হইতে আর ছুই সেনাপভিকে প্রেরণ করিলেন। কিন্ত ইহারা তথায় উপনীত না হইতে হইতে চাঁদ-বিবি নান্নী এক কামিনী, বাহাছুর-নামা স্বীয় শিশু জাতুষ্পুতের প্রতিনিধি স্বরূপ, ঐ রাজ্য অধিকার করিলেন। রাজ্যাকাজ্ফী আর তিন ব্যক্তি তাঁহার সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন।

. अरे नमदम त्यांशन मन चाहत्यम नगरतत निक्रवर्डी **ब्हेल। उथन हाकाह्यकाम आश्रनाटक अक्स द्**विया

চাঁদৰিবি দৈন্যমাহায্যজন্য বিজয়পুরের রাজাকে পঞা লিখিলেন, এবং রাজ্যাকাজ্জী আর তিন ব্যক্তিকে বলিয়া পাঠাইলেন, মোগলেরা রাজ্য লইতে উদ্যন্ত, যদি এই-কণে আমরা পরস্পার যুদ্ধ করি তাহা হইলে মোগলেরা আনায়ামে রাজ্যাধিকার করিবে, আমরা সকলে দৈরাশ হইব, অতএব সম্পৃতি পরস্পার বিবাদে বলক্ষয় না করিয়া প্রথমতঃ শক্রক্ষয়ের চেন্টা দেখা তাহার পর আপনাদের মধ্যে যাহা কর্ত্তরা তাহা করা যাইবে। এই কথায় সকলে সম্মত হইয়া রাজ্যবজায় অগ্রসত হইতে লাগিলেন।

রাজপুত্র মুরাদ নগরাধিকারের আর কোন উপায় না দেখিয়া প্রাচীর ভঙ্গ করিয়া নগর প্রবেশ করিবেন এই ছির করিয়া প্রাচীরের নিমন্থ তিন স্থানে থারুদ প্রোধিত করাইলেন। চাঁদবিবি ভাষা জানিতে পারিয়া ভিতর দিয়া বারুদ উঠাইয়া ফেলাইলেন। কিন্তু এক স্থানের সকল বারুদ উচিল না, ভাষাতে যখন বিপক্ষ পক্ষীয় লোকেরা ঐ বারুদে অগ্নিদান করিল, তখন প্রাচীর ফাঁক হইয়া পড়িল, এবং শক্রাক্রনা ঐ স্থান দিয়া নগর প্রবেশ করিবার উদ্যোগ করিল।

় চাঁদবিবি এ সময়ে চামুগুর ন্যায় নিকোষিত অ্বি হয়ে সম্বাবোহণে সেই স্থানে দাঁড়াইলেন "। ভাঁছার

<sup>্</sup> কৃথিত আছে চাঁদবিবি রূপার শুলি পুরিয়া বস্তুক ছাড়িতেব।। এক জন মূলইভিহাসবেতা লিখিয়াছের, যখন মোগলদিগের

সেনা ও সেনাপতিগধ ক্রমে তাঁচার নিকট আসিয়া জেগী-বন্ধ হইল. এবং তাঁহার উৎসাহে অতিসাহসে বিপক্ষপক লক্ষ্য করিয়া নিরস্তর অনল ও শর ব্লটি করিতে লাগিল। ভাহাতে মোগল দল এক পদ অগ্রসর হইতে পারিল না, ज्यानरक व्रमां छन शाना। पुरवाक मन्ना भर्यास मर्थाम कतिया निভास क्लांस स्टेशा निविद्ध भगन कतिदलन। মনে করিলেন রজনী প্রভাত হইলে নগর এবেশ করিয়া রাজ্য অধিকার করিবেন। কিন্দু প্রাতঃকালে উচিয়া দেখিলেন প্রাচীরের যে স্থান দিবসে তঙ্গ করা গিয়াছিল তাহা রাত্রির মধ্যে পুনগ্র থিত হইয়াছে, অতএব পুনর্ঝার बाक्रम बाबा श्राहीय एक्टमय आर्याक्रम क्रिक्ट नागि-লেন। ইতিমধ্যে বিজয়পুরের রাজা ও আর্থ বন্ধ দৈনোৱা আসিয়া উপস্থিত হইলেন। তাহাতে বুবরাজ हिং ১০০३ े यूराम अटनक वल मरञ्जू पूष्क ज्ञरात आ-খু <sup>১৫৯৬</sup> শাতে নিরাশ হইয়া চাঁদবিবির সহিত সন্ধি বন্ধন করিলেন। সন্ধির মর্মা এই, আহম্মদ নগরের রাজা সংপ্রতি যে থেরার রাজ্য লইয়াছিলেন, ভাহা साधक्रमिश्रक मित्रम, स्माश्रक्तत्रा आह युच्च क्रिट्नम मा। ী এই প্রকার সন্ধি বন্ধনের পর যুদ্ধাদির বির্তি হইল। किन्न अक देवगत ना बाहरण वाहरण श्रनकात शहतिवाम

महिष् कृष इस, ज्यम जिमि वर्ग के त्रश्रामि श्रुतिया स्माननामिशतक वर्षक विक्रोक्तिमना

আরম্ভ হইল, ভাহাতে চাঁদ বিবিত্ত কর্মাধাক ভাঁহার সহিত বহিরস্তা করিয়া রাজপুত্র মুরাদকে আহ্রান করি-त्वन । ताकश्व उथन शर्यास प्रकिष प्रति हित्नन, कड-এব তাঁহার পক হইয়া চাঁদ বিবির সহিত মুদ্ধে প্রবন্ধ रहेटनन, এवर थरणात्मंत्र ताब्वां डिंशात मटक मिनित्नन । विकाश पूर्वत ताका श्रवताविध हाम विवित्र शक हिटलन, ভাষ্মে গোলকনার রাজাও তাঁহার পক্ষ হইলেন। প্রকার সমরসক্ষা হইয়া গোদাবরীতীরে মহা যুদ্ধ আরম্ভ হইল। এই যুদ্ধ তুই দিবস পর্যান্ত চলিল, কিন্তু জয়াজয় কিছুই নিশ্চয় হইল না, তাহাতে আকবর বয়ং मक्किन प्राप्त श्रमसीत योखा कतित्वम । इंडिमस्या त्याशन **মেনাগণ দৌলতাবাদ প্রস্তৃতি আর ২ স্থান সকল অধি-**কার করিল। আক্রর নর্মনাতে উপস্থিত হইয়া ভাঁহার অভীয় পুত্র দানিয়ালকে ষেনাপতি করিয়া ভাপ্তি নদীর তট দিয়া আহমদ নগর আক্রমণার্থ প্রেরণ করিলেন। ঐ नमदश नहीं क नादम ही प दिवित अक भेक थी नशत दाकेन করিয়াছিলেন। মোগল দৈনা উপস্থিত হইতেই তিনি তথা হইতে প্রস্থান করিলেন।

চাঁদ বিবি নোগলদিপের সহিত পুর্বের যে প্রকার যুদ্ধ করিয়াছিলেন এখনও গেই প্রকার যুদ্ধ করিতে নাপারি-তেন এনন নতে, কিন্তু গুহের শক্রকে মহাশক্ত জ্ঞান করিয়া তিনি মোগলদিগের সহিত সন্ধি করণের চেটা করিতে লাগিলেন। ইতিমধ্যে তাঁহার জীয় লৈনেক। তাঁহার প্রতিপক্ষের পরামশাসুসারে একেবারে অন্তঃপুর প্রবেশ করিয়া তাঁহাকে বপ করিল। কিন্তু ইহার কল ভাহারা হাতেহাতে প্রাপ্ত হইল। যেহেডু মোগল সেনারা ভৎপরে ঐ নগর স্থিকার করিয়া ভাহাদিগকে একবারে ম্মালয়ে প্রেরণ করিল, এক প্রাণিকেও রাখিল না:

এই ব্যাপারের পর মোগলের। আহম্মদ নগরের শিশু রাজাকে বন্দি করিয়া গোয়ালিয়রের ছুর্গে পাঠাইয়া দিল। কিন্তু ইহাতে মুদ্ধ শেষ হইল না, বিপক্ষেরা আর এক জনকে রাজা করিয়া দিংহাদনে বসাইল। ইহাতে ঐ মুদ্ধ জারো কয়েক বংসর চলিল। আকরর যুদ্ধের শেষ পর্যান্ত পাকিতে পারিলেন না, তাহার কারণ, তাহার জ্যেষ্ঠপুত্র সলীম নিতান্ত অবাধ্য হইয়া উঠিলেন। অতএব জিং ২০০১ আবলকজলকে সেনাপতি করিয়া আপনি শ্ ২৯০১ রাজপানীতে প্রত্যাগ্যনন করিলেন। দানিয়াল বিজয়পুরের রাজার কন্যাকে বিবাহ করিয়া-ছিলেন, তিনিও বেরার ও থান্দেশের কন্মাধ্যক্ষ হইয়া ঐ প্রদেশে থাকিলেন।

ললীম শিশু বা অজ্ঞান ছিলেন না, তাঁহার বয়ঃক্রম ৩০ বংশর হইয়াছিল, এবং তিনি বিদ্বান ও জ্ঞানবান ছিলেন। পরস্ত আকবর তাঁহাকে আজনীরের সুবাদারী দিয়া ইহাও ব্যক্ত করিয়াছিলেন তাঁহার অবর্ত্তমানে তিনি রাজ্যেশর হইবেন। কিন্ত তাঁহার অত্যন্ত পান দোব ছিল, তিনি স্কৃহিকেন ও মদাপানে দিবারাক বিহুল থাকাতে

ভাঁহার বুদ্ধির স্থিরতা ছিল না, তাহাতে, পিতা কতকালে
মরিবেন তাহার পর রাজ্য পাইব, এই ভাবিয়া, আকবর
দক্ষিণ রাজ্য গমন করিলে, তিনি সৈন্য সংগ্রহ করিয়া
ভাগ্রা অধিকারের চেন্টা করিলেন। কিন্তু তাহা পণরিলেন
না, কেবল বেহার ও অঘোধ্যা অধিকার করিয়া আপনাকে
রাজা বলিয়া ঘোষণা দিলেন, এবং আলাহাবাদে রাজধানী করিলেন।

আৰুৰর আগ্রাতে প্রত্যাগত হইয়া পুত্রকে পত্র লিথি-লেন, যেকর্ম করিয়াছ তাহা অতি গর্ছিত, এমন কর্ম আর করিও না, এবং এখনও আপনার কর্ত্ব্য কর্ম্মে প্রবৃত্ত হও, তাহা হইলে ভোমার মঙ্গল, নতুবা অমঙ্গল ঘটিবে। এই পত্ৰ পাইয়া সলীম মধোচিত খেদ প্ৰকাশ পূৰ্বক পিতার সহিত দাকাৎ জন্য আগ্রাতে গমন কবিলেন। কিন্তু ভাঁহার সহিত অনেক সৈন্য দামন্ত চলিল, আকবর তাহা কানিয়া তাঁহাকে লিখিয়া পাঠাইলেন বদি তোমার দাকাৎ করিবার মানদে আদা হয় ভাহা হইলে ভুমি স্বন্ধ লোক সমভিব্যাহারে আসিবে, নতুবা আসিবার প্রয়োজন নাই। এই লিখন পাইয়া সলীম বক্ততাবে আলাহাবাদে ফিরিয়া আদিলেন। আকবর কি করেন शूरकत मास्ता कना डीहारक वाकना ও উড़ियात सूर्वा-नांत्री नित्रा, ताक्रमजी व्यावनककत्त्व नित्रन ताका रहेएछ किया कांत्रिएक कांका मिएनन ।

आविशक्तज वह जाका शहिमा श्रीमानियत निया स्टब्स

আসিতেছিলেন, পথিমধ্যে বুদলেখণ্ডের অন্তর্গত আর্চরের রাজা নরসিংহ দেব তাঁহাকে বপ করিয়া তাঁহার ছিল মুগু সলীমের নিকট প্রেরণ করিলেন। আবলফজল আকররের অতি প্রিয়পাত ছিলেন, অভএব তাঁহার মৃত্যু সংবাদ শুনিয়া তিনি অভ্যন্ত ছংখিত হইলেন, এবং ছই দিবস আহার নিজা বজিতে হইয়া পাকিলেন। আকরর জানিতে পারিলেন সলীম হইতে এই কর্মা হইয়াছে,\* কিন্তু সে কথা প্রকাশ না করিয়া হত্যাকারীর দণ্ডের চেন্টা করিলেন, ইহাতেও পুতের সহিত পুনর্কার মনান্তর হইল।

কিয়ৎকাল পরে পিত। পুত্রের বিরোধ ভঞ্জন হইল। তাহার পর আকবর আলাহাবাদ হইতে তাঁহাকে আনাইয়া রাজবেশ ধারণের অনুগতি দিলেন। সলীম থেপ্যান্ত পিতার নিকট থাকিলেন সে প্যান্ত অতি বিশিষ্ট ধারায় চলিলেন, কিন্তু আলাহাবাদে পুন্গমন করিয়া পুর্বমত মদা পান ও ইন্দ্রিয়পুথে মউ হইলেন এবং নানা প্রকার ছন্দ্রিয়া আরম্ভ করিলেন। পরস্ত খসক নামে তাঁহার এক পুত্র ছিল, পাছে পিতা তাঁহাকে দিলীরাজ্যের অধীশ্বর ক্রেন এই আশহায় তাঁহার প্রতি নানা প্রকার অত্যা-

<sup>•</sup> সদীর খীছ জীরনচরিতে লিখিয়াছেন জাবলকজল কোরাণ মানিজেন না, এজন্য তিনি তাঁহাকে বধ করেন এবং তাঁহার পরা-মর্লে আক্রর মুনল্মানবর্ম ত্যাগের বাজা করিয়াছিলেন এইজন্য তিনি তাঁহাকে রাজ্যচ্যুত করিবার চেকী করেন।

চার \* করিতে লাগিলেন। এই সকল অভ্যাচার উপলক্ষে ভাঁহার সহধর্মিণী খসরুর গর্ম্পারিণী বিষ পান
করিয়া প্রাণভাগি করিলেন ।। এই সকল কথা শুনিয়া
আকবর তাঁহার প্রতি অভ্যন্ত বিরক্ত ইইলেন, অভ্যন
যখন ভিনি রাজ্পানীতে আসিলেন তখন ভাঁহাকে কারাবন্ধ করিয়া রাখিলেন।

কিন্নৎ দিবস পরে আকবরের তৃতীয় পুত্র দানিয়ালের মৃত্যু হইল। দানিয়াল জাতার নাায় অত্যন্ত পানাসক্ত ছিলেন, আকবর তরিবারণের অনেক যত্ন করিয়াছিলেন এবং তাঁহার নিকট আপন বিশ্বাসী লোক রাখিয়া দিয়াছিলেন তাহারা তাঁহাকে সদ্যপান করিতে দিত না। কিন্তু তিনি তাহাদের চক্ষে ধুলা দিয়া বস্তুকের নলের তিতর করিয়া মদ্য আনাইয়াপান করিতেন। এই প্রকার প্রবঞ্চনা করিয়া অতি হরায় তিনি আপনি আপনার মৃত্যুকে আজ্রান করিলেন।

আকবর, দানিয়ালের মৃত্যুতে অত্যস্ত কাতর হইলেন, বিশেষ ইহার পূর্বে ভাঁহার দিতীয় পুক্রের মৃত্যু হইয়াছিল, নৈই শোকের উপর আবার এই শোক পাইলেন। শোকেং

<sup>্</sup> শংব্য তিনি একজন জিয়ত মনুষ্যের চর্ম ভেল করাইয়া-ছিলেন। আকবর এই সংবাদ শুনিয়া থেদ করিতেং বজিলেন, যে ব্যক্তির শিক্ষা মূল জন্তর চর্মান্ডেন ধেখিয়া মনেই ব্যবিত হয় ভাহার সম্ভান জিয়ত মূলুযোর চর্মান্ডেন করে এ কি আশ্চর্যা।

र हैनि माननिरद्दत उद्यो।

ভাঁহার শরীর একবারে জীর্ণ হইল, এবং ক্রমেথ নানা বোগ উপস্থিত হইল। তাহাতে জীবন আশায় নিরাশ হইয়া তিনি জোষ্ঠপুত্রকে উত্তরাধিকারী করিবেন ইহা স্থির কবিয়া ভীহাকে কারামুক্ত করিলেন। অনেকের এমন আশকা ছিল স্নীম রাজা হইলে ভাঁহাদের প্রভুত্ত থাকিবেনা, অতএব তাঁহাকে বাজ্য না দিয়া তাঁহার পুত্র ধসক্রকে রাজ্য দিবার পরামর্শ দিলেন। কিন্তু আকবর সে পরামর্শ অগ্রাফ্র করিয়া সলীমকে রাজসিংহাসন দিবার প্রতিজ্ঞা জানাইলেন। তথন উত্তরাধিকারিতের আরু কোন গোল রহিল না। পরে তাঁহার অন্তিম সময়ে সলীন ও সভাসদগণ তাঁহার নিকটে উপস্থিত হইলেন। তিনি তাঁহাদিগকে বলিলেন আমি হাহাই করিয়া থাকি যদি আমাকর্ত্তক কাহার অনিষ্ট হইয়া থাকে তবে ভোমরা আমাকে মার্ক্তনা করিবে। সলীম পিতার এই কথা শুনিয়া ভাঁহার চরণ ধারণ পুর্বক উচ্চঃস্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। অনম্ভর আকবর যে করবাল-থানি সর্মদা ব্যবহার করিতেন অজ্লী দারা তাহা প্রদর্শন করিয়া সলীমকে ভাহা কটিদেশে ধারণ পূর্বক রাজবেশে ভাঁছার সম্মুখে দাণ্ডাইতে বলিলেন। সলীম রাজবেশে দণ্ডায়মান হইলে আকবর অন্তঃপুরস্থ যাব-তীয় নারী ও ভাঁহার বন্ধু বান্ধব ও কর্মকারী-দিগকে **डाँशात इटल्ड ममर्लग क**ित्रत्वन । विनातन इशानिशतक হিং ২০২৮ পালন করিবে। তদনন্তর পুরোহিত
খু ২৬০৫
২০ ৮৮০৭ . ডাকাইয়া তাঁহার সম্পুথে ঈশ্বরভক্তি
জাপন পূর্ব্বক, আক্টবর মাসের ক্রয়োদশ দিবসে, রাজরাজেশ্ব দিলীশ্ব ঈশ্বরলোক গমন করিলেন।

## खेबविर्ण अधाव ।

## व्याक्तरत्त्रत्र हित्त्व।

আকবর অতি সুপুরুষ ছিলেন, এবং তাঁছার ৰুধা বার্ডা ও বাবহার অতি নোহিতকর ছিল। যৌবনাবস্থাতে আৰ-বর আহার পানে অতাত্ত আনোদ করিতেন, কিন্তু বয়ো-রুদ্ধি হইলে সে আমোদ কিছুই ছিল না, তিনি অতি পরিমিতাহারী হইয়াছিলেন। বৎসরের মধ্যে তিন মান আমিষ ভোজন করিতেন না। তিনি অতান্ত পরিপ্রম-পরায়ণ ছিলেন, দিবসে একবার বিশ্রাম করিতেন না, এবং অনেক রাত্রি পর্যন্ত শাস্তালাপ করিতেন, অভ্যত্প-কাল নিজা শাইতেন ৷ বস্ততঃ তিনি কার্যা কর্মের এমন পুৰিয়ৰ করিয়াছিলেন বে যুখ বিগ্ৰহে নিয়ত আৰশ্ वाक्ति। अवक्यार्थ, धर्मात्मारमा, अ मृत्रवार्थ, जात्मक व्यवस्थान शहिएकम्। कांक्वरदद् माञ्चानारशः स्वमन कार्-त्राथ भीकादत् कार्यकात्र आत्मान हिन, विटमंव वार्ष-नम स बना करी हुं छ कहरन अधिक आंधर हिन, आंव गरित बीनम निकृमात मना कतिर उन ना। उँ।शाह

শরীরেও অত্যন্ত বন্ধ ছিল, তিনি এক এক দিবস এক শন্ত দেড় শত কোশ পথ অখারোহণে অবলীলাক্রমে গমন করিতেন, এবং বিশ পঁচিশ কোশ পথ জনায়াসে পদত্রকে গমন করিতে পারিতেন। তিনি সংগ্রাম-সময়ে স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া যুদ্ধ চালাইতেন, যুদ্ধ শেষ না হইলে সমরস্থল ত্যাগ করিয়া আসিতেন না। তিনি সকল কর্ম আপন চক্ষে দেখিতেন, যে কর্ম্মে প্রস্তুত হইতেন ভাহা সম্পূর্ণ না হইলে নিব্লন্ত হইতেন না। এই নিমিড্রু ভাঁহার রাজ্যকালে সকল দেশ উত্তসরূপে শাসিত হইয়াছিল।

রাজ্যরুদ্ধি।—আকবরের রাজ্যলোভ ছিল না এ কথা
বলা বাইতে পারে না, তিনি রাজ্য অনেক রুদ্ধি করিয়াছিলেন, কিন্তু ইহা নিভান্ত লোভের কর্ম নহে। তিনি বে
সকল রাজ্য জয় করেন ভাহা পূর্বে দিলীর রাজাদিগের
অধিকার ভুক্ত থাকিয়া ক্রমে ২ হস্তান্তরিত হয়। এ সকল
রাজ্য উদ্ধার না করিলে ভাঁহার যশঃশাশগরে কলস্ক থাকে,
এই জন্য ভাহা জয় করিতে হইয়াছিল। বাহাহউক,
ভক্ত্যা রহৎ রাজ্য আর কোন মুসলমান রাজার ছিল না,
কিন্তু প্রেজাই ভারা হয় নাই, ধর্ম-সম্বন্ধীয় বিচার প্রক্র
রাজ্য ও প্রজাপাননের স্থানিয়ন ছারাই হইরাছে, ভারার
রাজ্য ও প্রজাপাননের স্থানিয়ন ছারাই হইরাছে, ভারার
বিচ্নিক্তি নিবরণ পশ্চাৎ লেখা ঘাইতেহে

प्रमिनोर्वायम (नांद्रकत महिन्छ मानाद कवियाहिद्रमान । समन

ভাছার বর্ষক্ষম একবিংশতি বংগর তথনও মন্ত্র গম-নের ঐকান্তিক বাসনা করিয়াছিলেন। ভাছার পর মুসল-मान भर्मात नकाका विश्वत्य क्षात्रांत महमार महामा ভাহাতে তিনি সভা ধর্মের অনুসন্ধানে প্রবন্ধ হইয়া সকল ধর্মাবলয়ী লোক একত করিয়া শাস্তালাগ ও ধর্ম-বিচার কবিতেন ! হৈফলী ও আবলফজল এই মহৎ অনু-छोटनह नश्कारी हिटलन। आखोटङ मावादक नारम अक বিখ্যাত পণ্ডিত চতুম্পাঠী করিয়াছিলেন, এই ছই যাজি डीहात पूछ । रैककी आकरत्त्र आरम्भ करम इमरास्म সর্মশান্তক এক ব্রাহ্মণের স্থানে সংস্কৃত ভাষা শিকা করিয়া ন্যায়দর্শন প্রাকৃতি অনেক সংস্কৃতপুত্তক পারদী ভাষাতে অনুবাদ করেন, এবং হিব্ৰু ভাষা হইতে বীজ-গণিত ও লীলাবতী নামক ভাস্কুৱাচাৰ্য্যের রচিত এছ ভাৰান্তর করেন। ভাষিত্র বেদ রামায়ণ ও মহাভারত এব পারসী ভাষাতে অনুবাদ হয়, ভাষা ভিনি সংশোধন क्रवन । आवनककल्ल नर्सनाट्य सुर्गांख्ड हासनी-ডিজ ও সমর্মক ছিলেন। তিনি ক্রমে রাজ্যত্তী হয়েন वर जाकरत्रनामा जबाद आहेन जाकरती अब त्रवना क्टबन ।

<sup>•</sup> আকবর সংস্কৃত ভাষা উত্তমরূপ জানিতেন, এবং আর আর অনেক ভাষা শিক্ষিয়াছিলেন। গংগু পোরা হইতে করাবাতন নামে এক পণ্ডিত জানিয়া কতক্ঞালিন মুখা লোককে একি ভাষা শিখা-ইয়াছিলেন। ভাষারা একি ভাষা শিধিয়া ঐ ভাষার অনেক শুক্তক গার্কী ভাষাতে সন্থান করেন।

् धाक्तत धरे हरे खोड़ात्क नरेग्ना मसना धर्मा विवयक প্রামর্শ করিডেন, এবং প্রতি শুক্রবারে এক সভা ক্রিয়া ধর্মব্যবস্থী সকল লোকের সহিত শাস্তালাপ ও ধর্মবিচার করিভেন, এক এক দিবস এই বিচারে রাজি প্রভাত হইয়া মাইত, তথাপি বিচার শেষ হইত না শুক্রবার ভিন্ন অন্য দিবদেও ব্রাহ্মণ ও সুসল্মান পশুত पिशत्क आंगारिया डींशांटमंत्र महा गांखांमां भ क्रिएडन ! মধ্যে ২ ঈশু খৃষ্ট উপাসক দিগকে আন্মন করিয়া তাছা-দের সহিত বিচার করিতেন। এক সময়ে কএক জন হিন্তু পণ্ডিত রাজসভাতে আসিয়াছিলেন, মুসলমান পঞ্জিরা ওাঁহাদের সহিত বিচারে প্রবৃত হইয়া বলি-লেন আমরা কোরান হত্তে অগ্নিকুগু প্রবেশ করিতেছি, ৰদি মুসলমান ধৰ্ম মিথ্যা হয় তবে কোৱান ভক্ষ হইয়া ধাইবে, যদি ভাহা না হয় তবে ভোমরা অঞ্চীকার করিয়া ৰল মুসলমান ধৰ্ম মান্য করিবে ৷ নতুবা ভোমরা ৰাইৰল হত্তে অগ্নি কুও প্রবেশ কর, যদি তোমাদের धर्म शुस्तक ज्या ना दर, जामता धृष्ठे धर्म मानित । धृष्ठे ধর্মাবলম্বী পণ্ডিভের। এই পরীক্ষাতে স্বীক্লন্ত হইলেন না। व्यक्तित्र व्यक्तिशाहित्वन मनूषा त्यमनहे विद्यान वा दुष्टि-

सान इडेन उथानि शर्म शर्म स्था त्यमन र निष्कान वा द्वाकृत्मान इडेन उथानि शर्म शर्म सार्क, अड वन जिनि किंद्र किंद्रशाहित्यन मन्त्रा अभी उथम कथन है सम चूना हरेंद्र शाद्र ना। प्रख्यार प्रजमान प्रस्ति मृत्र छह नार, त्या छ छ । जिनि विनिष्ठन सानन्त्य

शब्दमध्यदक क्रांनिया डीहोत खात्राधना करा, अवर व्य कर्प করিলে পরমেশ্বরের সম্ভোষ, জগতের মঙ্গল, ও ভবিষাতে: সুখের সম্ভাবনা সেই উত্তম ধর্মা, ভাহাই অবলঘন করা कर्डदा, भन्द्रदात कथा अनुमादत कान कियांकनाशक भर्मी জ্ঞান করা উচিত নহে ৷ এক প্রমেশর ভিন্ন যদি আনা কোন দুখামান বস্তুর উপাসনা কর্ত্তব্য হয় তাহা হইলে स्था बुक्कामि वा खांश खांताधन। कता याहेत्छ शाहत, কিন্তু ইহাতেও বাহ্য আড়মরের প্রয়োজন করে না। অৰ্থাৎ লোক দেখাইয়া বা পুৰেছিত আনাইয়া কিয়া উপ-वांत्र कविया छोड़ा कर्ता कर्छवा नहह । कोइहिन अक्टर्स विभिन्ने मुनलमारनता मूल्या थाइन अ चक् छ्न कतिता। भारतम थात्रम ७ एक एडम कथन धर्माक नरह। क्यांत्र আরো লেখে সকল মুনলমান উপনাস, তীর্থগমন ও व्यत्नदक अकल इरेश केश्वतातायना कहित्व। अरे नकल পর্বাভয়রমাত্র, ইহাতে প্রকৃত পুণা সক্ষ হয় এমত ষলাঘাইতে পারে না। ইত্যাদি বিবেচনা করিয়া আকরের षाक्षा नियोष्टितन धरे नकन कर्मा कर कारात अछि वन ध्वकाभ वा धर्मालय अमर्भन कहिएक शाहिरव नां, शहात है का हम कतित्व, योशांत देव्हा ना इस कतित्व ना। ইश जिन मेमाशान प्राउकी छ। कांत्रांटन निटमध हिल, পাঞ্চার ভাহার বিধি করিলেন, এবং কোন২ পশু স্পর্শ . निरंबध किन एक निरंबध । इहिए क्रियोगिएलन ।

व्यक्तिक रेका करतन नाहे व गुननगान धर्मात

क्रकारत उत्कार कतिरकन, किन्छ महत्त्रप्रमात्र शनायम अविधि ৰে হিজার অব চলিয়া আসিতেছিল ডিনি তাহা রহিত করিয়া আপনি যে বৎসর রাজ্যভার গ্রহণ করেন সেই वरमद्वत উख्राग्रद्धत वियुव व्यवधि व्यक्तश्रामात व्याञ्जा (मन এবং আরবীয় মানের পরিবর্ত্তে দৌর মান ব্যবহার করিয়া মাসের পারসী নাম \* দেন। তদ্তির প্রচলিত আর্বী 🕆 ভাষা উঠাইবার চেন্টা করিয়াছিলেন, এবং কোরান-হৈবেষয় শাঞ্চধারী লোকমাতকে নিকটে আসিতে দিতেল ना, ইহাতে धर्माशदायन वा धर्माक मूमनामादनदा अलाख বিৰক্তে হইয়াহিলেন। তিনি আর এক আজা প্রকাশ করেন সময়বিশেষে পারসন্থানের প্রাচীন রীতারসারে লোকেরা তাঁহার সম্বেধ অফান্ত প্রণিপাত করিবে ৮ ইহাতেও মুসলমানেরা অত্যন্ত কুপিত হইয়াছিলেন। ভাঁহারা বলিভেন কেবল দেবতাকে এরূপ ভূমিষ্ঠ হইয়া প্রণাম করা যাইতে পারে, মনুষাকে করা ঘাইতে পারে না। ্হিল্ফখর্মে পর্থনৈর ছেব করে না এজন্য ভাহাতে হস্ত ক্ষেপের প্রয়োজন হয় নাই; ভবে আনলকুতে

<sup>•</sup> এই সকল মাদ পূর্ক্কালৈ পার দহানে ব্যবহার ছিল।

† পূর্ব্বে কারার সহিত কাহার দাকাৎ হইলে লোকেরা
সেলাম আলেকম (তোমার সফদ হউক) বলিয়া সন্তাহণ করিত।
আক্রব্র ডাহা উঠাইয়া আজ্ঞা দিলেন আলা আকবর, অর্থাৎ পরমেবর স্ক্রিপ্রেট এই বলিয়া সম্ভাহণ করিবে। ভাহার উত্তর করিতে হইলে জিলীজলালছ বলিবে অর্থাৎ প্রদেশবের জ্যোডি

হিলিলান ইউক।

\*

अटबर्ग कतिया कलक शिवहांत, अटबांगा वंतरम कना मान ख रक कना विनिध्न किया मनन कर्या गर्हिं विद्या प्रमा खित्र का क्या विनिध्न करियं किया हिएलन, अवर्ष मजी आकर्त जांश निर्ध्य करिया हिएलन, अवर्ष मजी आकर्त आकर्त करिए महिएलन ना। अहे विवर्ध जांशित शीकाशीकि हिल। व्याप्य पूरत्व ताका ते यूक्त मृज्य हरेटल ताका जांशित यूक्त वृद्ध महंगमरन मणा हिएलन ना, अक्रमा बीका जांशिक वल्ल्यक महंगमन कर्ताहेवात क्रिया करिएलन। आकर्त अहे महंगमन कर्ताहेवात क्रिया करिएलन। आकर्त अहे महंगमन किरात्व करिएलन। अवर्थ महंगमन निर्वात्व करिएलन। अवर्थ कर्म करिया महंगमन निर्वात्व करिएलन। अवर्थ हिल्लन। विभवात करिया कर्म हिल्लन। विभवात करिया क्रिया करिया करि

হিন্দুদিগের সম্পর্কে আকবর আর যাহা যাহা করিয়া-ছিলেন সকলি উত্তম। তিনি হিন্দু মুসলমান প্রভৃতি সক-লকে সমভাবে দৃষ্টি করিতেন, এবং উভর জাভিকে উচ্চ২ ও সম্মানের কর্ম প্রদান করিয়া ছিলেন। জাইজা নামে কাফর জাভির উপর এক কর ছিল, ইহাতে রাজধর্মাবলমী লোক দিগের সজে অন্যান্য পর্মাবলমী দিগের সর্বাদা বিজ্ঞাব ও ক্ষাবেষ হুইত। আকবর এ কর রহিত করি-

<sup>्</sup>रे विकास साम्यकारम विकास मनगरमात्री, साम्रामानि, स्पर्क गानि, (लेकाडि, कामूनरभाषी, काम्रक्ती ও श्रीकाकी शरम नियुक्त विकास रक्ष कर स्वामाही शर्मक शरिमाहिरानन ।

ঁলেন, ভাছাতে ঐবিরোধ ও দ্বেধাদ্বেষ নিবারণ হইল। অপর তীর্থযাত্রিদিগের উপর আর এক কর ছিল, ভাহার ভাৎ-পর্যা এই, কর দিতে হইলে পৌতলিকেরা তীর্ষ গমনে কান্ত হইবে, সুভরাং পৌত্তলিক ধর্ম ক্রমন ক্রাস হইবে। কিন্তু সকল মনুষ্য প্রমেশ্বরকে এক পারায় উপাসনা করেনা, ভিন্ন জাভীয় লোকেরা ভিন্ন ধারায় উপাসনা कतिहा थाक । यिनि य थातां छेशानता करून, भकत्नत मृत অভিপ্রায় এক, অতএব কাহার ধর্মপর্টে কন্টক ক্ষেপ্ণ উচিত নহে এই বিবেচনা করিয়া আক্ষর যাতীর কর উঠাইয়া দিয়াছিলেন। পুর্কে আর এক রীতি ছিল কুর্ব আক্রমণ কালে তুর্গরক্ষক দেনারা অত্যন্ত পীড়াদান করিলে "আক্রমণকারী ছুর্ণজয়ের পর দেনা ও তাহাদিপের স্ত্রীপুত্র সকলকে লইয়া দাস করিতেন। এই কুৎসিত রীডি ক্রমে আরো পীড়াকর হইয়াছিল। জয়কর্তা নিরীহ প্রাম-বাসী দিগকে বন্দীবেশে আনিয়া বিক্রয় করিতেন। আৰ-ৰর এই কুরীতি একবারে রহিত করিয়া দেন। এই কর্ম সকল জাতির পলে মললকর হইল, কিন্তু ইহাতে হিচ্ছ-দিপের বিশেষ উপকার দর্শিল।

আকবর যে ধর্ম চালাইবার যত্ন করিলেন তাহার নাম
"দীন এলাছি" ব্রহ্ম ধর্ম। আকবরের এমন অভিজ্ঞায়
ছিলনা আপনার মত বলপুর্মক চালান। তিনি মনে
করিয়াছিলেন সকলকে সম্মত করিয়া ক্রমে ক্রমে তাহা
ক্রচলিত করিবেন। কিছ ভাঁহার পারিষদ ও ভূতাশণ

কেবল ঐ মতানুসারে চলিতেন, ধর্মানুরক্ত তক্ত মুন্তামানেরা তাহা মানিতেন না। বিশেষ আকবরের ভূসধদ্বীয় কার্যো যে সকল মলা দিগের রুতিচ্ছেদ হইয়াছিল
ভাহারা. তাঁহার পরম শাক্র হইয়াছিলেন। বোপ হয়
ইহাদিগের ফাহার২ প্রতি তিনি বলপ্রকাশ করিয়া পাকিবেন। কিন্তু কাহার প্রতি দৌরায়া করেন নাই, যে বেমন
মনুষা তাহার সহিত সেই প্রকার ব্যবহার করিতেন,
দ্বাধি ঘাঁহারা তাঁহার মত গ্রহণ করিয়াছিলেন তাঁহাদিগকে উত্তম ২ কর্মাদিতেন, যাঁহারা তাহা করেন নাই
তাঁহাদিগের প্রতি সে রূপ অনুগ্রহ করিতেন না।

এই প্রকারে তিনি ক্রমেং অনেককে দীয় মতাবলদী করিয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহার যে মত ভাহা অভিস্কান্ধ কেবল জানবান লোকেই তাহার মর্ম্ম বুঝিতে পারিতেন, আপামর সাধারণ সকলে ভাহার ভাব বুঝিতেন না, মুতরাং তাঁহার মৃত্যুর পর সে মত প্রচলিত রহিল না। আহালীর রাজা হইয়া ভাহার অনেক অনাথা করিলেন। পরে মুসলমানদিগের পূর্ব্ব রীতি ও ক্রিয়া কাণ্ডাদি ক্রমেন্ক প্রনাথ চলিয়াছিল, কিন্তু ভাহাও ক্রমে লোপ পাইল। জাবে আক্ররের ধর্মান্দোলনে এই এক মহোপকার হইয়াছে, পূর্ব্বে মুসলমানেরা মুসলমান ধর্মের সভ্যাসভ্য বিষয়ে কিছুমান্তাবিবেচনা করিতেন না, কেবল একাজিক ভাজি পূর্বক এ ধর্ম মানিতেন। আক্ররের সময়াবধি

সকলের চক্ষু বিক্সিত হইয়াছে, এইকণে ধর্মের সভা।» পতা বিষয়ে সকলে তর্কবিতর্ক করিয়া থাকেন।

যাহাহউক আকবরের মতকে সূতন বলা বাইতে পারেনা, কবীরপত্মি নামে আকবরের রাজত্মের একশত বংসর পূর্বে এক হিচ্ছু সম্পুদায় ছিল, তাঁহারা একেশর বাদী ছিলেন, ইহারা আর আর দেবতা অমান্য করিতেন না। আকবরেরও সেই মত ছিল, তিনি বে সকল নিমুম করিয়াছিলেন বোধ হয় তাঁহাদের দেখিয়াই করিয়া থাকিববেন। বাহা হউক আর কোন মুসলমান রাজা ধর্মনিয়ে এমত বিচক্ষণ ছিলেন না, আকবর সকল রাজার ক্রেষ্ঠ।

রাক্ষণ সংগ্রহের নিয়ম।—আকবরের কর গ্রহণের
প্রথা অতি উত্তম বলিয়া গণনীয় হইয়াছে। সের সাহ
রাজা হইয়া এই ধারালুসারে কর গ্রহণ করেন। কিন্তু
তিনি অপ্পকাল রাজত্ব করিয়াছিলেন ইহাতে তাহা সমাক
রূপে চলন করিতে পায়েন নাই। আকবর ঐ ধারা
সংশোধন পূর্বক তদনুসারে জরিপ জমাবন্দী ও কর
গ্রহণ করিতে লাগিলেন। পূর্বে ভূমি মাপের নানাপ্রকার যন্ত্র ছিল, সে সকল রহিত করিয়া তিনি এক প্রাকার গল্প অর্থাৎ হাতকাসী হাপন করিলেন। এই হাতকাসিতে রাজ্যের যাবতীয় ভূমি মাপ করাইলেন। পরের
ভূমির শলা উৎপাদন শক্তি বিবেচনা করিয়া তাহা তিন
প্রকারে বিভক্ত ইল। অর্থাৎ উৎকৃত্ব মধ্যম ও নিক্ষী।

এই ডিন প্রকার ভূমিতে যে শাসা উৎপন্ন হইজ, তাহার গড় পড়তা করিয়া কর স্বরূপ তিন ভাগের এক ভাগ <sup>\*</sup> আপনি গ্রহণ করিতেন, অপর ছই ভাগ প্রজাকে দিতেন।

বে ভূমিতে সকল সময়ে শন্য জন্মিত কৰ্মন পতিজ রাধিতে হইত না, তাহার রাজকের দ্যুনাতিরেক হইত, না। যে ভূমি মধ্যে ২ পতিত রাধিতে হইত তাহার শুস্য উৎপাদন হইলে রাজস দিতে হইত, নতুবা রাজস্ব দিতে হইত না। যে ভূমি বন্যাতে তুবিয়া যাইত অথবা তিন বংসর পতিত থাকিত, কিয়া আবাদে বায়বাহলা

• মধাএক খণ্ড ভূমিতে গম জনেয়						
द्वेदक्षे कृतित प	ৎগন		প্রতি	विचार	<u>তে</u>	:৮ মোন <b>:</b>
मधाम पृत्रित	•	-	÷	ωģ	-	১২ মোনা
निकृषे पूमित	•	æ	*	À	•	৮ % মেন।
नर्का खर	-	-	-	<del>*</del>	•	७४०० छैरलब इस्
উহার গড়	-	-	•	-	•	১২ <b>১৮</b> মের ।
ज्ञांकां इ धां शर	-		-	-	•	82 10/01
আর এক ভূমিতে তুল জন্মে						
প্ৰেথম জাত ভূমি	ার উৎ	পন্ন	-	•	4	३० (मांस! **
<b>चिकी</b> य	7	á	-	÷	*	१४० ६मॉन । 🔭
ভুতীয়	-	do	-	-	•	e মোৰ।
	্নাট	•	-		-	২২।০ মোন।
with a little of	<b>N</b> \$	+	•	<i>→</i> ′	` <b>'</b>	१४० ट्यांस ।
v <sub>e</sub>	क्रोक	র প্র	1913	. 3	=	২॥० মোন।
दमद्रमाइ छेरशरमञ् ठेषुधीश्टामंत्र এक घरम अठ्ने क्रिएंन						
স্থা ভিন্ন জন্য জন্য বাব আৰওবাৰ ছিল, তাহাতে প্ৰায় তৃতীয়						
भ्रारमात्रे जूना रहेप ।						

ছইত, তাহার রসদ জমা থার্য হইত, অর্থাৎ প্রথম বং-গরে পঞ্চমাৎশের গ্রন্থ অংশ, দ্বিতীয় বংসরে পঞ্চমাৎশের ভিন অংশ, এই প্রকার পাঁচ বংসরে প্ররা জ্বসা দিতে স্থির হইত। যে ভূমি পাঁচ বংশরের অধি**র পাঁতিত** থাকিত তাহার রুসদ আরো কম হইত। আমলা থবচা ও আর কোন বাব আবওবাব ছিল না। প্রকারা শুভ রান্ধার প্রাপ্য অংশ দিতেন। যে তালে শস্যের পরিবর্ছে মুদ্রা লওয়া হইড সে স্থলে গত উনিশ বৎসরের মূলা গড় করিয়া যে পড়তা হইত সেই হারে মালগুলারি করিতে হইত। এই সকল বন্দোবন্ত প্রথমতঃ এক বৎ-শরের জন্য হইয়াছিল, পরে দশ দশ বৎসরের জন্য হইত। ভদর্গারে প্রজারা দশ বংসর মালগুজারী করিতেন। ভাহার পরে পুনর্কার বন্দোবস্ত হইত। ইজারা বন্দো-ৰজ্বের রীতি ছিল না, যে হেতু তাহাতে অধিক প্রহ্মা-পীড়ন হয় ।

মালগুজারী আদায়ের জন্য অনেক গুলিন লোক নিযুক্ত হইয়াছিলেন। ইহারা এক এক জন এক কোর ক্রম,
আর্থাৎ স্থই লক্ষ পঞ্চাশ সহস্র মুদ্রা, সংগ্রহ করিতেন,
তক্ষনা ইহাদিগের ফোরী উপাধি হইয়াছিল। প্রজারা
ভিহাদিগের স্থানে আপন ২ মালগুজারী প্রশান করি-

कार्क्स प्रकृति भेज देशाँवी राज्यायाखन नीजि वरेगाहिल। स्वानी काजान अस्त भीजन कनिएकन। जाराज नामा क्रांस विकेष क्रा

ভেন, ইহাতে অধিক বায় হইত না, এবং কোষতঙ্গ বা প্রতারণার তাতৃক আশস্কা ছিল না। কিন্তু এ নিয়ম বছ-কাল ছিল না, কিছুদিনের পর তাহা রহিত হইয়া হিম্ফ্-দিগের প্রাচীন ধারাতে কর সংগ্রহ হইত।

যাহাহউক আকবর যে নিয়নে কর সংগ্রহ করিডেন ভাহা অতি উত্তম। ভোডলাল ইহার সুলাধার, তিনি যুদ্ধ কর্মে যেমন মুপণ্ডিত ছিলেন, কর স্থাপন বিষয়েও তদ্ধপ বিচক্ষণ। আবলফজল লিখিয়াছেন তিনি জনিদারী কর্মে অদিতীয় ছিলেন, ভাঁহার আদর্শাকুসারে রাজ্যের সকল खारन कतील ७ कमावनी अवर वरगत २ कभी ७ कमाव কাগজ প্রস্তুত হইত, তাহাতে দর্পণের ন্যায় সকল বিষয় উভ্ন রূপ বুঝা ঘাইত। ইহা দেখিয়া আর ২ রাজার। ঐ ধারাতে আপনাপন রাজ্যের জগী জ্বার কর্ম নির্বাহ করিতেন, এবং এখন পর্যান্তও সেই পারাক্রমে ভ্রমন্ত্রীয় ভাবং কর্ম হইয়া আসিতেছে। তোড়ন্সল অভিশয় হিম্মুধর্মপরায়ণ ছিলেন, কিন্তু তাঁহার অভ্যন্ত কৃব স্বভাব ছিল, ভজ্জন্য আক্ষরও কথন ২ তাঁহাকে অসু-ষোগ করিতেন। তোড়লালের মৃত্যু হইলে আকবর অভান্ত তুঃথিত হইয়াছিলেন।

े सूर्वा - व्याकवटत्र ते ताख्य कारन मिली ताका ५६ सूर्वाटल \*

বিভক্ত হইয়াছিল, পরে বিজয়পুর ও গোলকদা অধি-क्रफ रहेरेल ब्यात ७ मूजन मुता हरेगा मर्सक्षा ১৮ है। भुवा इहेमाछिल । हेहांत अरू अरू भुवाटल अरू अरू ताल-প্রতিনিধি থাকিতেন, ইহারা মুবার সর্বময় কর্ত্তা ছিলেন, কিন্ত রাজার উপদেশ মত কর্ম করিতে হইত। আক-वर्यय बाजकारण देशिएशव नाम मिलामानाव हिन। পরে ভাহাদিগের স্থবাদার সংজ্ঞা হইয়াছিল, এবং উচ্চা-पत अधीरन এक এक अन रम अशान नियुक्त दहेगां किता. উহিবা বাজস্ব সম্পর্কীর সকল কর্ম করিতেন। করসং-গ্রহকারী ও সেনাপতিরাও সুবাদারের অধীন থাকিতেন, করসংগ্রহকারেরা প্রবাদারের আজ্ঞাবর্তী হইয়া কব সংগ্রহ করিতেন। সেনাপতির। সেনার অধ্যক্ষতা করিতেন, বিজোহাদি উপস্থিত হইলে তাহা নিবারণ क्रिएडन এवर गुष्क कर्म्यत जना य मकल कांग्रगीत फिल ভাহার তদাবক করিতেন।

বিচার ।—বিচার সম্বন্ধীয় কর্ম নির্মাহ জনা মির আদিল ও কাজী নামে ছই ব্যক্তি নিযুক্ত ছিলেন। কাজী অভিযোগ শুনিয়া ব্যবস্থা দিতেন, মির আদিল ভাষা বিবেচনা করিয়া চূড়ান্ত আজ্ঞা প্রদান করিতেন। শান্তি রক্ষার কর্ম কোতয়াল উপাধিক এক ব্যক্তির নারা নির্মাহ হইত। সামান্য২ স্থানে কোতয়াল নিযুক্ত হইত না, রাজ্য সম্পর্কীয় কর্মকারকেরা এ কর্ম সম্পাদন করিতেন। গ্রাম্যে শান্তিরক্ষার কর্ম গ্রামন্ত কর্মকারক

## BRANK PERMI



দিপের দারা নির্মাষ্ট্র । এই সকল কর্মকারকের কিলারের কর্ম করিতেন ভাহা বিশেষ বর্গন পাওয়া যায় না, কিন্তু আকৃবর গুজরাটের সুবাদারকে যে কয়েক পত্র লিখেন ভাহাতে দেখাযায় শৃখ্যলদারা পদ বন্ধন, কশাঘাত, ও প্রাণদণ্ড একেবারে নিষিদ্ধ ইইয়াছিল। কেবল রাজ-জোহী ইইলে প্রাণদণ্ড হইত, তদ্তির অন্য কোন অপ্রাণে প্রাণদণ্ড কর্ত্তরা ইইলে রাজার নিকটে সংবাদ যাইও, রাজা বিবেচনা করিয়া যেমন আক্ষা দিতেন সেই প্রকার দণ্ড বিধান ইইত। কোন সুবাদার আপ্রাণ

দৈনা।—পূর্বে দৈনাগণকে রাজকোষ হইতে বেতন দেওনের রীতি ছিলনা, দৈন্যাধাক্ষদিগকে জায়গীর দেওয়া যাইত, তাহার উপস্বত্ব হইতে ওঁছোরা আপন আপন দৈনাগণকে বেতন দিতেন। আবশাক্ষত খাজনাতেও দৈনাদিগের বেতনের বরাত দেওয়া যাইত, দৈনোরা প্রজাদিগের স্থানে টাকা আদায় করিয়া লইত। কিন্তু উতয় মতে জনেক প্রতারণা ও অত্যাচার হইত। জায়গীরদারেরা বরাদ মত দৈনা রাধিতেন না, দৈনা প্রদর্শন কালে আপনাদিগের ভূতা ও মুটিয়া মজুর ধরিয়া কোন প্রকারে সংখ্যা পূর্ণ করিয়া দিতেন। খাজনাতে বেতনের বরাত হইলে, দৈনোরা যথেজাক্রমে টাকা সংগ্রহ করিত, ইহাতে প্রজাপীড়নের একশেষ হইতে।

্ আকবর খাজনাতে বেতনের বরাত না দিয়া রাজ-কোষ হইতে সৈনাগণের বেতন দিবার নিয়ম করিলেন এবং জায়গীরদার দিগের ছল প্রভারণা না চলে, অর্থাৎ धक ज्ञानत दिल्म आहे धक जन मा नह, धकना रेमना-গণের অবয়বের তালিকা করাইলেন, বেতন দান কালে ভালিকার সহিত অবয়ব একা করিয়া বেতন দেওয়া-ইতেন। আর অশ্বারোহীরা প্রতারণা করিতে না পারে এজনা প্রভাক অধের গাতে ছাপ মারিয়া দেওয়া-ইলেন, সেই ছাপ দেখিয়া অশ্বারোহী দিগের বেতন দেওয়া যাইত। তদ্তির উচ্চু বল্দ গাড়িও অনাং যে সকল দ্রুত দৈন্যমন্তিবাহারে গমন করিত তাহার ফর্দ্দ করাইলেন, সেই ফর্দ্দ দেখিয়া নির্দ্ধারিত হার অন্ত-সারে ভাড়া দেওয়া যাইত, কেহ প্রতারণা করিতে পারিত ना। এই সকল নিয়ম অতি উৎকৃষ্ট, কিন্তু পূৰ্বে খীতি পরিবর্তন করিয়া তাহা প্রচলিত করাতে সম্পূর্ণ বিপদের ি আশক্ষা ছিল, সৈনোৱা ভাছাতে অসমত হইয়া অস্ত্রধারণ করিলে রাজ্য রক্ষা কঠিন হইত, কিন্তু আকবরের কৌশল ক্রমে ভাহা ঘটিতে পারে নাই।

ভংকালে দৈনাগণকে দলবন্ধ করিবার রীতি ছিল না, এক এক জন প্রধান দশ অবধি দশ সহজ্ঞ সৈনা লইয়া সরকারি কর্মো নিযুক্ত হইতেন। ইহাদিগের নান মন্-সবদার। ইহারা যিনি বভাসেনার অধাক্ষ হইতেন ভদকুসারে উপাধি পাইতেন, যিনি এক শত ইসনের

অধাক ভাঁচাকে শতপতি, যিনি সহত্র সৈনোর কর্তা তাঁহাকে মহত্রপতি বলাযাইত। দশ সহত্র দৈনোর মন্সবদারী রাজপুত্র ভিন্ন প্রায় অন্য লোকে প্রাপ্ত হইতেন না ! রাজকুট্র ও রজঃপুত রাজারা পঞ্সহজী সেনা-পতি হইতেন: আর ২ মন্সবদারী অন্য লোককে দেওয়া যাইত। প্রত্যেক মন্সবদারকে অর্চ্ছেক অম্বারোহী ও অর্থেক পদাতিক সেনা রাখিতে ইইড। পদাতিকের मर्सा हर्सुश्य तन्त्रकराती, जदिलिक धनुष्कत । धरे मक्ल (मना भय्मवमात्रियत्र व्यथीन श्रीकिश बर्गा कविछ. এবং ভাহানিগের বেতন মক্ষরদারদিগকে দেওয়া হাইত। मजनमात्रिम्द्रभाव अम् जासादाशी जिन्न आमि नाद्य আবো এক প্রকার অখারোহী সেনা ছিল, ইহারা অভি ৰীর, গুণ বিবেচনার ইহাদের বেভন ধার্যা করা যাইত। বিশেষ ঘাহারা সিন্ধা পার হইতে আসিত তাহারা এক এক জন ২৫ মুদ্রা করিয়া পাইত, ভারতবর্ষীয়েরা ২০ করিয়া পাইত। যাহারা বন্দুক চালাইতে পারিত তাহারা ৬ টাকা, এবং তীরন্দাক্তেরা ২া ০ টাকা করিয়া পাইত। সংগ্রাম উপন্থিত হইলে রাজা সেনাপতি \* নিযুক্ত করিতেন, মক্ষবদারেরা \* তাঁহার আজ্ঞাকারী

<sup>•</sup> মুলুবদারেরা অতি উচ্চ ২ বেতন পাইতেন, এবং উত্তম রূপে कर्म कदिएल डाँडाएनव मखाएनवा के थां डि उ ममान काल ্ইইডেন। কাঁহার কাহার বৃত্তি বরাদ হইড।

হইয়া কৰ্ম করিছেন, এক এক মুদ্ধে ৩।৪ শত মভাৰদার নিমুক্ত বাকিছেন।

শ্রমানবরের রাজহুকালে কড দৈন্য নিয়ত নিযুক্ত থাকিত তাহা কোন গ্রন্থে বেখে না। আওরজ্ঞেবের রাজহু কালে ছই লক্ষ অখারোহী দেনা, তারিন অনেক অশিক্ষিত পদাতিক ও পোলদাজ নিযুক্ত ছিল। আক-ববের সময় এত অধিক দেনা ছিল এমত বোধা হয় না।

অন্তর্গা ছিল। নিজুকুলে তিনি যে প্র্প নির্দ্ধাণ করেন ভাহার কথা পূর্বে উলিথিত হইয়াছে। তদ্কি তিনি আরো কয়েক প্র্ণ নির্দ্ধাণ করেন, তমধ্যে আপ্রাও এলাহাবাদের প্র্রেক প্র্ণ নির্দ্ধাণ করেন, তমধ্যে আপ্রাও এলাহাবাদের প্র্রেক প্রতি উত্তম। এই কৃই স্থানের প্রাভীর প্রস্তরময় এবং ভাহার চতুর্দ্ধিণে গভীর পরিধা, আর এই কৃই স্থানে কেকক আছে তাহা অতি অপূর্ব্ধ রাজালয়ের বারের উপযুক্ত। আকরর কতেপুর ও নিকরীতে সর্বাদা থাকিতেন, এজন্য এ স্থানও কিলাবলী করিয়া অতি স্থাকিতেন, এজন্য এ স্থানও কিলাবলী করিয়া অতি স্থাকিত করিয়াছিকেন। এ স্থান একণে প্রায় লোক-ক্ষাত্রির ক্ষাত্রি, তথাপি প্রথম পর্যান্ত ভাহার পূর্ব্ধ সৌদ্ধান ক্ষাত্র ভাহার প্রব্ধ সৌদ্ধান ক্ষাত্র ভাহার প্রব্য সৌদ্ধান ক্ষাত্র ভাহার প্রব্য সৌদ্ধান ক্ষাত্র ভাহার প্রব্য সৌদ্ধান ক্ষাত্র ভাহার প্রব্য সৌদ্ধান ক্ষাত্র ভাহার ভাহার ভাহার প্রব্য সৌদ্ধান ক্ষাত্র ভাহার ভাহার

আইন আক্ররী প্রন্থে আক্ররের সারহ তাবৎ কীর্তির বিস্তারিত বিবরণ আছে। এই প্রন্থে রাজভাগুরি অবধি ব্রহ্মশালার বিবরণ পর্যন্ত লেখা আছে, ইবরি এব এক ভানেকত দ্রব্য সাক্ষী ও লোক জন থাকিত ও কতই

জাঁকজমক ছিল তাহার বর্ণন করা বাহলা। টাকা জলের नगाय थत्र हरेल, अथह मकल दिस्त्यत अमन वैश्वावाधि ছিল ভাহাতে এক কপৰ্দকও অপবায় হইত না।

লিকার সজ্ঞা ।—কোন ইংরাজ আকবরের সভাতে গিয়াছিলেন। তিনি লিখিয়াছেন আকবর যখন যুদ্ধে বা শিকারে \* ঘাইতেন, ভখন প্রায় ২া০ কোশ ভূমি কানাত দিয়া বেষ্টন করা ঘাইত, তাহার মধ্যে রাজা ও সভাসন্গণের ভাষু সারি২ পড়িত, এবং বাটীতে ধে প্রকার প্রান্তরে সেই প্রকার রাজসভা, ভোজনালয়, নৃত্যালয়, শামনালয় প্রস্তুত হইত। তামুর ভিতর শাল বনাত মধমল কিংখাপ প্রভৃতি নানাপ্রকার উত্তমং বজ্রে মণ্ডিত ছইত। বহিভাগ লাল বসনে মোড়া যাইত। তাযুর চূড়াতে রূপার কলশ থাকিত। উচ্চ স্থানে দীড়াইয়া দেখিলে বোধ ছইত নগর বসিয়া গিয়াছে, এবং সহরে বেমন রাস্তা ও গলি থাকে ভাহার মধ্যে मकलि छाएछ।

अमा ि बिंद घरे। -- वरमद्वत थार्थम मिवदम ও तामांत জন্মতিথির দিবসে বৎসর্থ যে মহাসভা হইত, সেই সময়ে र्दश्यानां स्थित मगाद्रांट ट्रेंड। वे मगद्र क्टब्रक मित्रम পর্যান্ত ভারি মেলা বসিত, এবং রঙ্গ সল তামাশা নানা-

<sup>•</sup> चाकस्टत्त्र प्राथानदा ১२००० जय এवर इस्तिगादन ८००० इसी मर्खन बाका बाकिए, देश छित्र निकाद्यत प्रशासि कर दिन छाना विशेष कविया जाया ना ।

প্রকার হইত। রাজার তারু মধান্থলে পড়িত, তাহার চতুর্দ্ধিকে পাঁচ ছয় বিঘা ভূমি ঘেরিয়া সভা সাজান যাইত, তাহার চতুর্দিক স্বর্ণ ও বছমূল্য রত্ব বিভূষিত মথমলে মঞ্জি হইত। চন্দ্রাতপ নক্ষতের ন্যার মণিতে মুশো-ভিত হইত, তাহার ঝালরে মুক্তাশ্রেণী ঝুলিত। ভূমিতে গালিচা ছলিচা ও কিংখাপ পাতা যাইত। তাহার উ-প্র মছলন্ পড়িত। রাজসভাসদ্গণের স্তস্ত্র ২ তায়ু পড়িত। সভারত্তে রাজার তুলা হইত, সর্ণের,দাঁড়ি পালা খাটাইয়া তিনি এক দিকে বসিতেন, অন্য দিকে হেম রক্সত রত্ন সুবাস ও আরহ বছমূল্য দ্ব্য চেরি করিয়া দিত, তুলার পর এই সকল দ্রব্য বিতরণ হইত। उৎপরে রাজা বর্ণ ও রূপার বাদাম ও অন্য ২ ফল মুটি ২ -করিয়া ছড়াইয়া দিতেন, সভাসদ্গণ তাহা কুড়াইয়া লই-তেন। ইহার পরে রাজা সভাসদ্গণকে সম্মানস্থাক পরিচ্ছদ, হয়, হস্তি ও বহুমূল্য রত্নাদি দান করিতেন। পর্বের দিবদ রাজা সিংহাসনে উপবেশন করিতেন, চতুর্দ্ধিকে সভাসদ্গণ মণি মুক্তায় ভূষিত ও কৌঞ্চপুষ্ট দারা শিরঃ শোভা করিয়া সভাতে বসিতেন, সভার অনু-পম শোভা হইত। এই সভার সন্মুথ দিয়া শত ২ হস্তী যুধ্বন্ধ হইয়া গমন করিত, হস্তিসজ্জা অতি আশ্চর্যা, প্রতি সম্পুদায়ের প্রথম হস্তির মুগু ও বক্ষোদেশ মণি মুক্তা বুজ অৰ্পতে মণ্ডিত হইত। এক ২ হস্তির সজা এক ২ सम मनूद्यात अथवा। द्खियावात भन्न भक भक सम-

জ্ঞীভৃত তুরঙ্গ সেই প্রকার গমন করিত। তৎপরে গণ্ডার সিংহ, ব্যান্ত, চিতা, শিকারী কুক্কুর, ও বাজপক্ষী সারি ২ লইয়া যাইত। অবশেষে অশারোহী সেনাগণ সভার সন্মুখ দিয়া গমন করিত, এই দেনা কত মাইত তাহার সংখ্যা চিলনা। এবং তাহাদের অন্তশন্ত ও সাজ সভ্যা কেমন উভ্য ভাহা বর্ণনাভীত।

এই ঘটার সভাতে আকরবের কিছুমাত বেশের ছটা ছিল না ভিনি সহজ বেশে সিংহাসনে বসিতেন, কতক গুলা মণি মুক্তা পরিয়া অঞ্চ শোভা করিতেন না। তুই জন ইংরাজ ভাঁহাকে ফচকে দর্শন করিয়াছিলেন ভাঁহারা লিখিয়াছেন তিনি বিচারকালে সিংহাসনে উপবেশন না করিয়া ভলিমভাগে উপবেশন করিতেন, কখন কাহাকেও উচ্চ বাক্য কহিতেন না, সকলের সঙ্গে সদালাপ করিতেন। তিনি ছটের দুমন ও শিষ্টের পালন করিতেন। ভাঁহার রাজ্যে সকল প্রজা মুখী रहेशाछिन।

### বিংশ অধ্যায়

#### जाहां भीत।

ननीम, जाराजीत अर्थार शृशीकरी नाम पातन श्रवंक হিং ১০১৪

থু ১৩০৫ অক্টবর১৩
কং ৪৭০৭ আধিন

সিংহাসন আবেহাহণ করিয়া, পিতার নিয়োজিত কর্মকারী দিগকে শ্ব শ্ব কর্মো স্থিত র রাখিলেন। তিনি আরো কয়েক কর্ম করিলেন তাহাও উত্তম। বিশেষতঃ পথিক ওমহাজন দিগকে নানা প্রকার শুলক দান করিতে হইত, আকবর ভাছার অনেক রহিত করিয়াছিলেন, যাহা অবশিষ্ট ছিল তিনি তাহাও উঠাইয়া দিলেন। রাজসম্পর্কীয় লোকের। বণিকদিগের বাণিজ্য জব্যাদি খলিয়া দেখিত, এবং রাজ-দৈন্য ও রাজকিম্বরেরা যাহার ভাহার বাটীতে যাইয়া বলপ্রর্থক বাদা করিত, গৃহত্বেরা স্থানাভাবে ক্লেশ পাইত। জাহালীর এই সকল দৌরাস্থা একেবারে নিবারণ করিয়া मिटलन। नामिका ७ कर्व ट्रमन क्रिया मर्छ विधारनद ৰে কুরীতি ছিল তাহা রহিত করিলেন, মদাপান \* একেবারে নিষেপ, এবং অহিফেন ভক্ষের নিয়ম নিষ্কারিত

<sup>े</sup> काशाचीत करे चांचा कतियां पिततं वरते, किन्न चांगित महा-सान चांग करतन नहिं।

कत्रिश मिल्लम । अधिकछ नकन अला बालाव निकटमें याहेश जालन २ वृश्य जानाहेट लाद्य अजना जिन् আপনার বুসিবার গুহে কতক গুলা স্বর্ণময় ঘটা টাঙ্গাইয়া তাহাতে এক গাছা শৃত্যল বন্ধন করিয়া বাহিরে यनारेया (मध्यारेटनन, यारात ताज्याकाद आवभाक হইত শুম্বল ধরিয়া লাভিত, ঘনী বাজিয়া উচিলে তাহা-কে ডাকাইয়া ভাহার কথা শুনিভেন।

রাজগুত্র খদর পূর্বাবধি পিতার অপ্রিয় হইয়াছিলেন, জাহাজীর তাঁহাকে দেখিতে পারিতেন না, রাজনন্দন হিং ১১৪ বন্দীর ন্যায় থাকিতেন। এক দিব্দ পু ১৯০৬। মার্চ। বিজাহাজীর নিদ্রা বাইতেছেন, কিস্করণণ সংবাদ দিল, রাজপুত্র কতকগুলি বয়স্য সমভি-নাছারে পশ্চিমাভিমুখে পলায়ন করিতেছেন। জাহাস্কীর এই সংবাদ পাইবামাত্র তৎক্ষণাৎ কতক্ণুলা অশারোহ रमना छाँदांत अध्यव्दन शाहीहरनन, शद्त आङक्तात्न যত দৈন্য একত করিতে পারিলেন তাহা লইয়া আপনি তাঁহার পশ্চাভাবমান হইলেন।

রাজপুত্র রাজালয় পরিত্যাগ করিয়া চৈদন্য সংগ্রহ ও मिथु नुक्रेन कतिरक कतिरक शक्कावां किमूर्थ क्रिलिन। এই ভাবে ৰখন লাহোরে উপস্থিত হইলেন ভখন ভাঁহার महन मन महत्व लाक मिलिशाहिल। जाहाभीदर् अध-গামী মেনাগণ ভাঁহার পশ্চাব ২ লাহোরে উপস্থিত হইলে तालकुमात्र छाहारमत् गरिंछ मुख कतिरलन। किन्छ यूटक

### বিংশ অগ্যায়

### जाशकीत।

मनीम, जाराजीत अर्थार शृशीकरी नाम थातन श्रवंक ছিং ১০১৪ খু ১৬০৫ অক্টবর১৬ কং ৪৭০৭ আধিন

সিংহাগন আবেহণ করিয়া, পিভার নিয়োজিত কর্মকারী দিগকে স্ব কর্মে স্থিরতর রাখিলেন। তিনি আরো কয়েক কর্ম করিলেন ভাহাও উত্তম। বিশেষতঃ পথিক ওমহাজন দিগকে নানা প্রকার শুলক দান করিতে হইত, আকবর ভাষার অনেক রহিত করিয়াছিলেন, যাহা অবশিষ্ট ছিল তিনি তাহাও উঠাইয়া দিলেন। রাজসম্পর্কীয় লোকের। विकिमित्रात वानिका खवामि च्लिया मिचिल, अवर बाक-হৈন্য ও রাজকিল্পরেরা যাহার তাহার বাটাতে যাইয়া বলপুর্মক বাসা করিত, গৃহত্তেরা স্থানাভাবে ক্লেশ পাইত। জাহালীর এই সকল দৌরাক্ষা একেবারে নিবারণ করিয়া मिटलन। नामिका ७ कर्ग इष्टमन क्रिया मे ७ विधारन द বে কুরীতি ছিল তাহা রহিত করিলেন, মদাপান \* একেবারে নিষেপ, এবং অহিফেন ভক্ষণের নিয়ম নির্দারিত

क्षांशाचीत करें जांका कतियाँ पिटलेश वटहे, किन्त जांशनि मधा-शास छांश कट्टम नारें।

করিয়া দিলেন। অধিকন্ত সকল প্রজা রাজার নিকটে যাইয়া আপন ২ ছংখ জানাইতে পারে এজন্য তিনি আপনার বসিবার গৃহে কতক ওলা বর্ণময় ঘনী। টাঙ্গাইয়া তাহাতে এক গাছা শৃঞ্জল বন্ধন করিয়া বাহিরে ঝুলাইয়া দেওয়াইলেন, ঘাহার রাজসাকাৎ আবশ্যক হইত শৃঞ্জল ধরিয়া লাভিত, ঘনী বাজিয়া উচিলে তাহাতকে ডাকাইয়া তাহার কথা শুনিতেন।

রাজ্ঞ শ্বনর পূর্বাবিদি পিতার অপ্রিয় হইয়াছিলেন,
জাহালীর তাঁহাকে দেখিতে পারিতেন না, রাজনন্দন
হিং ১১৪
বন্দীর ন্যায় থাকিতেন। এক দিবস
শৃ ১৯০৬। মার্চ।
জাহালীর নিজা বাইতেছেন,
কিন্ধরগণ সংবাদ দিল, রাজগুত্র কতকগুলি বয়য়য় সমতিন
ব্যাহারে পশ্চিমাতিমুখে পলায়ন করিতেছেন। জাহালীর
এই সংবাদ পাইবামাত্র তৎক্ষণাৎ কতকগুলা অশারোহ
সেনা তাঁহার অন্বেষণে পাঠাইলেন, পরে প্রাতঃকালে
যত সৈন্য একত করিতে পারিলেন তাহা লইয়া আপনি
তাঁহার পশ্চাদ্ধাব্যান হইলেন।

রাজপুত রাজালয় পরিত্যাপ করিয়া ইসনা সংগ্রহ ও দেশু লুঠন করিতে করিতে পঞ্চাবাভিমুখে চলিলেন। এই ভাবে বখন লাহোরে উপস্থিত হইলেন ওখন ওাঁহার লক্ষে দুশ সহজ্ঞ লোক মিলিয়াছিল। জাহানীরের জ্ঞান গানী সেনাগণ ডাঁহার পশ্চাৎ ২ লাহোরে উপস্থিত হইলে রাজকুমার ভাহাদের সহিত বুদ্ধ করিলেন। কিন্তু মুদ্ধে

# 240

## जारकारि रेकिस्स

পরাস্ত হইয়া কাবুলে পলায়নের বাঞ্ছায় সিন্ধ পার इहेट नानितन, श्री त्नोका इफाए विश्वा शिव. তাছাতে পার হইতে পারিলেন না। জাহাঞীরের দেনা-গণ ভাঁহাকে गृह्यनवह कविया आर्मिन। धनकृत श्रान्ति জাহালীরের যে ভাব ছিল তাহা অবিদিত নাই, তথাচ পুত্র বলিয়া তিনি ভাহার প্রাণ বধ করিলেন না। কিন্তু তাঁহার সলে যে সকল কুসলী মিলিয়াছিল ভাহাদিগের সাত শত জনকে লাহোর ও কাবুলের দ্বাংরর ছুই পাংস माति २ माँ फ कतारेया श्वाकी देवत मटझ পে देवक मातिया দিলেন, ভাহারা বার খাডার ন্যায় ছারে দাঁড়াইল। প্রসক্তক গজপুঠে আরোহণ করাইয়া তাহার মধ্যদিয়া লইয়া গেলেন, তাঁহার অগ্রে২ এক পদাতিক এই কথা বলিভে২ চলিল, মহারাজ এই সকল লোকেরা ভোমার শুভার্ধাাথী, ইহারা ভোমার অভার্ধন জনা দ্রায়মান হইয়াছে ইহাদিগের অভার্থনা গ্রহণ কর।

ধসর অপমানে মৃতপ্রায় হইলেন, তিন দিবস জলস্পর্শ করিলেন না। জাহানীর তাঁহাকে পৃথালবদ্ধ করিয়া রাখিলেন, এবং এই অবস্থাতে তাঁহাকে কাবুলে লইয়া সোলেন। কাবুলে যাইয়া তাঁহার পৃথাল মোচন করাইয়া ভাঁহাকে ছর্গের উদ্যানে ভ্রমণ করিতে অনুসতি দিয়া-ছিলেন, তবিষ্যতে আরো অনুপ্রহের সম্ভাবনা ছিল। কিন্ত ভাঁহার কয়েক জন পারিষদ মন্ত্রণ করিল জাহানীরকে क्रानिट्ड शाहिया श्वनकात **डाहाटक म्येनयक तित्र**ा वाथिटलन, उपनित्र आत वाशित हरेट्ड पिट्डन ना ।

आहासीरतत ताकातिरखत किছ मिनम भरत উদয়পুरतत রাজার সহিত সংগ্রাম আরম্ভ হইয়াছিল। পরবেজ নামে জাহালীরের দিতীয় পুত্র ঐ যুদ্ধে ঘাইয়া উদয়পুরের दाक्कांत्र महिन्छ এकहे। मदमस्ति कतिरात উদ্যোগে छिटलम. ইতিমধ্যে খনক পলায়ন করিলে জাহাঙ্গীর উাহাকে व्याशमात्र मिकटि व्यामारेलम, सुख्दार मिरे मिक्त रहेल ना। পর বংমর জাহালীর কাবল হইতে প্রত্যাগমন হিং ১০১৬ বিরয়া মহলত খাঁ নামে এক প্রধান সেনা-প্<sup>১৯০৭</sup> পিতিকে উদয়পুরে প্রেরণ করিলেন। किशंक्तियम शदत मिक्किन तारका अन्तर शानरयोग जेश-স্থিত হইল। তলিবারণ জন্য জাহানীর, খা খানানকে তথায় প্রেরণ করিলেন। তিনি দক্ষিণ রাজ্যে যাইয়া যুদ্ধা-রম্ভ করিলেন, কিন্তু যুদ্ধ জয় করিতে পারিলেন না। মালক আমর নামে তত্ত্ব রাজমন্ত্রী আহম্মদ নগর অধি-কার করিয়া মোগলদেনাপতিকে এ রাজ্য হইতে একে-বারে দুরীভূত করিয়া দিলেন।

্ হিং ১০২০ অন্দে জাহানীর ভুবনবিখ্যাত সুরজাহানের পাণিগ্রহণ করেন। শুরুজাহান অতি রূপবতী ছিলেন।

<sup>ু</sup> ইহাঁর পূর্ক নাম আমীক্রদ্বিশা, জাহাজীর উহাতে বিবাহ করিয়া মুরজাহান অধাৎ জগজ্যোতি নাম দিয়াছিলেন, ডিনি এই নামে খ্যাত, সময়এব অন্য নাম লেখা গেল না ১

তত্তুলা সুন্দরী তৎকালে এতদেশে আর ছিল না। জাহা-লীর অনেক দিবসাবধি তাঁহার প্রেমাসক্ত হইয়াছিলেন। এবং তাঁহার জনা যে সকল কুকাও করিয়াছিলেন, তাহা রাজার অনুচিত কর্ম। তাছিবরণ পশ্চাং বেখা ঘাঁইতেছে,

सूत्रकाहान थाका आहेत्रात्मत कनगा। थाका आहेत्राम পারসস্থানের অন্তঃপাতি ভেহরাণে বাস করিতেন। তিনি प्रद्वास लास्कित मस्तान अवर नानांश्वन विभिष्ठे हिल्लन, কিন্তু তাদৃক্ ধন বা সম্পত্তি ছিল না। অভএব স্বৰ্ণুমি ভারতভ্নিতে আদিয়া ঐশ্রাশালী হইবেন এই বাস-নায় খদেশ পরিত্যাগ করিয়া জী ও ছইটী পুত লইয়া अछल्लाम याजा कतिरमम । अ ममरश छाहात जी शर्छ-वजी। जन्मजित मध्या करत्रकती सूखा ও এकती मामाना (चांचेक किस । ये चांचेटक डांगांटक आदाह्य कहाईया অলপনি ছুইটী পুত্ৰ লইয়া ভাঁহার সঙ্গে নজে আসিতে ছিলেন। কতক দুর আসিয়া তাঁহার পথসম্বল ফ্রাইল, তখন অনন্যোপায় হইয়া তিক্ষায় নির্ভন্ন করিয়া আসিতে কান্ধার পরিত্যাগ করিয়া রখন প্রান্তরে পড়িলেন তথন সে আশাও দুর হইল, এ ছানে মনুষ্যের ্পস্থাগ্যন প্রায় হয় না এবং চতুর্দিশে সমভূমি, কোনু कादम जन करा हिल मा त्य जमात्रा आनशाहन करतन ।

এই ছংলময়ে উহার পত্নীর প্রানবেদনা উপস্থিত ইইয়া একটা কন্যা কমিল। এই কন্যার নাম প্রজা-হান, ভাহার রূপে মলভূমি উচ্চুল করিল, কিছু আপ্নারা ক্ষা তৃষ্ণাতে কাতর, চলৎ শক্তি রহিত প্রায়, কন্যাকে কি প্রকারে কইয়া যান এই ভাবিয়া কন্যার্টাকে প্রকাঞ্ছা-मन कतिया अक इक्स्मादन ताथिया, जालनाता व्ययम शमन কবিতে ছিলেন দেই প্রকার চলিলেন।

কতক দুর আসিয়া ভাঁহার ভার্য্যা কন্যার শোকে अध्यमा रहेग्रा द्वानन कविष्ठ नागितनन। थाका आहे-য়াস ভাঁহাকে কোন প্রকারে সাস্ত্রনা করিতে না পারিয়া कनारंगीटक आनयन कतिएक श्रीतन । शिया प्रतिथन अक কাল ভুজন্ন কণা বিস্তার করিয়া তাহাকে গ্রাস করিতে উদাত। থাজা আইয়াস তাহা দেখিয়া দুর হইতে চীৎকার ও প্রস্তরাদি নিঃকেপ করিতে লাগিলেন, তা-হাতে সর্প কন্যাকে পরিত্যাগ করিয়া এক গর্ভে প্রবেশ করিল। খাজা আইয়াস তথন কন্যাকে লইয়া ভাগ্যার ক্রোভে দিলেন। ভাঁহার ভার্যা কন্যাকে পাইয়া ইপর্যা श्रांश श्रेरणन ।

প্রদিন ক্তক্ণলিন যাত্রী ঐ পথ দিয়া যাইতেছিলেন, তথ্যখ্যে একজন বণিক ছিলেন। তিনি তাহাদিগের দুর্গতি मिर्चित्रा छोडामिश्रांक महत्र कतिया नाट्टाट्स आनिट्सन। তৎকালে আক্ষর ঐ স্থানে ছিলেন। তাঁহার মন্ত্রী থাজা আইয়ানের কেমন কুটুৰ ছিলেন, তাহাতে তিনি তাঁহাকে जाशन जानरत्र द्वांबिटनन, शद्द द्वांबाद मटन डीहात व्यक्तिश मिरमन वाक्यत छै। हार छत्र छ। ७ कर्या-মক্ষতা দেখিয়া প্রথমতঃ ভাঁহাকে সহস্র অখাধিপতি, তৎ-

পরে রাজকোরাধ্যক, করিলেন। খাজা আইয়াস যেনন সন্ত্রাস্ত লোকের সন্তান তহুপযুক্ত কর্ম্ম পাইলেন।

খাজা আইয়াস বাল্যকালাবধি কন্যাকে নানাপ্রধার বিদ্যাভ্যাস করাইতে লাগিলেন, সুরঞ্জাহান সেই সকল বিদ্যা উভ্য রূপে শিখিলেন, সুভরাং তিনি ঘেমন রূপ-বভী সেইপ্রকার গুণবভীও হইলেন। তাঁহার ভুল্য নারী তৎকালে আর রহিল না, তিনি রূপে গুণে অদ্বিভীয়া হইলেন।

বুরজাহানের গর্ভধারিণী রাজার অন্তঃপুরে গমনাগমন করিতেন, নথ্যেই নুরজাহানও তাঁহার সজে যাইতেন। তাহাতে রাজপুর সলীম তাঁহার অপরূপ রূপ
দর্শনে নিতান্ত বিচলিত্চিত ইইয়া তাঁহাকে বিবাহ করিবার মানস করিলেন। এই কথা ক্রমে আকবরের কর্ণগোচর
হইল। কিন্তু সের আফগান নামে পারসন্থানবাসী এক
বুবার সহিত সুরজাহানের বিবাহের সম্বন্ধ ইইয়াছিল,
তাহা রহিত করিয়া পুরের সহিত বিবাহ দিলে অধশের
তাগী ইইতে হয়, এজন্য আকবর তাহা না করিয়া সের
আফগানের সহিত তাহার বিবাহ দেওয়াইলেন, এবং
তাহার তরণ পোষণ জন্য বলদেশে বৃদ্ধি নিয়োজিত
করিয়া দিলেন। সের আকগান সুরজাহানকে লইয়া
বিকানে বাস করিতে লাগিলেন।

জাহানীর পিতার ভয়ে তখন কিছু ছরিতে পারিলেন না, মনের মান্স মনেতেই রাখিলেন। পিতার মৃত্যুর পর রাজ্যের হইয়া তিনি সের আফগানকে নানাপ্রকার লোভ প্রদর্শন করিতে লাগিলেন। কিন্তু ভদ্রলোকে
ক্রীদান করিয়া কে কোথায় লোভ সম্পূর্ণ করিয়া থাকে।
দের আফগান ভাহাতে ভুলিলেন না। অভএব সে
আশায় নিরাশ হইয়া জাহালীর তাঁহার বিনাশ বাসনায়
ভাঁহাকে বর্দ্ধান হইতে দিলীতে আনয়ন করিয়া যথেক
সমাদর পূর্বক রাখিলেন। সরলস্বভাব সের আফগান
ভাঁহার মনের ভাব কিছু ব্রিতে পারিলেন না।

व्यमस्त काराभीत अरु भिवन उँशिक वरेश भीकारत গম্ন করিলেন, এবং একটা ব্লহৎ ব্যাত্তকে খেরিয়া সলী-গণকে বলিলেন এই ব্যান্ডের সজে একাকী যুদ্ধ করিতে পারে ভোমাদের মধ্যে এমত বীর পুরুষ কেই আছে কিনাঃ এই কথায় তিন বাজি মুসক্ষিত হইয়া দাঙাইলেন ! সের বীরাগ্রগণ্য এবং সতত যশঃপ্রয়াণী ছিলেন, অপরে ব্যান্ত্র বধ করিলে তাঁহার যশ লাভ হয় না, এই ভাবিয়া তিনি ब्राकाटक विनिद्यान महाताक हेराता अञ्चानि महेगा वा-ন্ত্রের সজে যুদ্ধ করিতে উদ্যত হইয়াছেন, কি আশ্চর্য্য, भवदभक्षत्र अश्वामितक यमन श्ख श्रम ଓ मखीमि मियारहरू " सकूराटक रमर्थकात रख भगामि मित्राट्स, अधिकछ मञ्-ষাকে বুদ্ধিবল দিয়াছেন, পশুগণ ভাষাতে বঞ্চিত, অতএব অঞাদি नहेशा युक्त करा शीक्रत्यत नटर। यमि नितं क रहेशा কৈছ ব্যান্তের সভ্নে যুদ্ধ করিতে পারে করুক, নতুবা আমি नितं हहेश युष कतिव। जाहां कीत अहे कथात्र मदनर

সন্তুট্ট ইইয়া তথানি অনুমতি দিলেন। ইই একবার বারশ করিলেন কিন্তু সে মৌধিক। সের নিরক্ত ইইয়া ব্যান্তের সঙ্গে যুক্তে প্রস্তুত ইইয়া তাহার যুখের মধ্যে ছই হস্ত দিয়া তাহার জিহ্লা টানিয়া ধরিলেন, ব্যান্তের বিক্রম রহিলনা, তাহার পর সের আফগান তাহাকে অনায়াসে বধ করিলেন \*।

এই সাহস দেখিয়া সকলে সেরের প্রশংসা করিতে লাগিলেন, কিন্তু জাহানীরের গানোভিলাধ পূর্ণ হইল না, অভএব ভিনি ভাঁছাকে বিনাশ করিবার আর এক উপায় করিলেন। সে উপায় এই, ভাঁছার একটা মন্ত মাডক ছিল, ভাছার মাছতকৈ ডাকিয়া আজা দিলেন ধখন সের আফাগান রাজপুরী হইতে বাসাতে ঘাইবেন তখন হাতিকে লইয়া ভাছার উপরে চাপাইয়া দিবে। হল্পিপ এই আজাপাইয়া হন্তীকে প্রস্তুত করিয়া রাখিল। পরে ধখন সের আকগান পালনী আরোহণে রাজালয় হইতে বাহির হইয়া একটা গলিতে প্রবেশ করিলেন, তখন হন্তিপ মন্ত হন্তীকে ভাঁহার পালনীয় উপর চাপাইয়া দিল। কাহাবেরা পালনী কেলিয়া পলায়ন করিল। সের ভাঁহা দেখিয়া পালনী হইতে নামিয়া হন্তীর শুন্তে এমত খন্তা-গাত করিলেন বে ভাঁহাতে হন্তীর শুন্তে এমত খন্তা-গাত করিলেন বে ভাঁহাতে হন্তীর শুন্ত একেবারে ছুই

<sup>•</sup> ডিমি পুর্বে একটা ব্যার বধ করিয়াছিলেন এই স্থান্য ওাঁছার লের সাব হইরাছিল। নের শক্ষের অর্থ ব্যার

থাও হইয়া পড়িল। হস্তীর পো চীৎকার করিতে ২ বেলে পলার্যন করিল।

আহাদীরের এই সকল কুমন্ত্রণা ক্রমে প্রকাশ হইয়া পড়িল। সের আফগান তাহা জানিতে পারিয়া দিল্লী পরিত্যাগ করিয়া রাজমহলে আদিয়া বাস করিলেন। ভাঁহার মাতার এক পালক পুত্রকে বলদেশের সুবাদারী দিয়া আজা করিলেন বেপ্রকারে হয় সের আফগানকে বধ করিবে। কুতব এই আজ্ঞা পাইয়া চল্লিশ জন দস্থা নি-যুক্তকরিলেন, ইহারা অনীকার করিল সের আফগানকে বধ করিবে। সের আফগান অতি বলবান ছিলেন, রাজে কাহাকে বাতীর মধ্যে থাকিতে দিতেন না, কেবল একজন প্রাচীন ছারবান ছারে থাকিত। এক দিবস সন্মাকালে এ ছারবান স্থানান্তরে গমন করিলে দ্যুগণ চুপে২ বাটি প্রবেশ করিয়া গোপন ভাবে থাকিল। সের আফগান নিঞ্জিত হইলে, দম্মগণ ভাঁহার শয়নমন্দিরে প্রবেশ করিয়া তাঁহাকে অক্সাঘাত করিতে উদাত হইল, এ সময়ে ভাষাদের नरधा একজন প্রাচীন বলিল অরে ভাই শুন-**নেখি. একজন নিজিত ব্যক্তির উপরে আমরা চলিশ জন** একেবারে পড়িব ইহাকি ধর্মের কর্ম। নিক্রিত মনুষ্যকে मात्रा अकर्डना, निक्षिक मनूना मृटकत जुला। अहे कथात्र त्रत्र सामगादनत निज्ञा छक इहेन, जिनि उरक्गार गोरकाशीन कतिका निरक्षाविक व्यति हरळ भग्रनानरशत এক কোণে দাপ্তাইলেন। দমুগণ তাঁহাকে বেইন করিয়া অক্রাঘাত করিবার চেন্টা করিল, কিন্তু কোন ব্যক্তি তাঁহার নিকটে যাইতে পারিল না। সের আকগান কণেক কালের মধ্যে অনেককে ক্ষৃত বিক্ষত ও শোণিতাক করিয়া দিলেন। দমুগণ লক্ষিত হইয়া পলায়ন করিল।

এই ব্যাপারের পর সের আফগান বিবেচনা করিলেন রাজমহলে বাস করা আর কর্ত্তবা নহে। অভএব তিনি বৰ্দ্ধদানে আসিয়া বাস করিতে লাগিলেন। কুতবুদ্দিন ইহাতেও काछ ना इहेशा वर्षामात्म कर्म्य कार्यग्र छञ्जाब-ধান ছলে ভাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ তথায় আসিলেন। সের আফগান তাঁহার অভিপ্রায় কতক বুঝিতে পারি-লেন, কিন্তু ভাহা প্রকাশ করিলেন না! অনন্তর যখন কুত্ব বৰ্দ্ধনানে উপস্থিত হইলেন তথন সের আফগান অশ্বাহেণে ভাঁহাকে অভ্যর্থনা করিতে গেলেন। ভাঁহার महम (कर्तन क्रेजन अभारतारी कृष्ण भगन करिता। भित উপত্তিত হইলে কুত্ব তাঁহার সভে সদালাপ করিতে ২ हिल्लान । कंटक पूत्र आमियां मध्य प्रमेटन योहेटवन धहे इत्न कूछन रखी जानिए आका मित्नम । रखी जानवन করিলে ইখন তিনি তাহাতে আরোহণ করেন তখন সের आक्शान अश्राद्वाहर्ण डाहात मन्यूर्थ प्रक्षांत्रमान शाक-ताम । वे नगरत कूछत्वत अकलन एम्ड्डक्क रमना श्रेष ছাড় ধলিয়া ভাঁছাকে এনত বৰ্ষাখাত করিল বে ভাঁহাতে जिति अप रहेटक कृषिटक शिक्तिन। से नगरेम कूक्टरन

আরু ২ লোকেরা বর্ষা বন্দুক লইয়া প্রস্তুত হইল। সের ব্যিতে পারিলেন গতিক ভাল নহে, অতএব অবিলয়ে অখে আরোহণ পূর্বক কুতবের হস্তিপাখে যাইয়া একা-খাতে তাঁহার শিরশেষ্ট্রদন করিলেন। কুতবের লোকেরা শব্রপাণি হইয়া ওাঁহার চারিদিগ বেইন করিল। চারি-দিগ হইতে বল্লম বৰ্ষা তীর ও গুলি বৰ্ষণ হইতে লাগিল । শের শক্রজালে বেটিত **হইয়া এমন ভাবে অশ্ব ও অ**প্ত চালুন করিতে লাগিলেন কোন ব্যক্তি ভাঁহার অসম্পর্শ করিতে প্রারিল না। বে ব্যক্তি নিকট আসিবার চেটা করিল সে তথনি সেই খানে শয়ন করিল। সেরের চতুর্দিগে শরের ঢেরি হইল। তিনি বাড্রের ন্যায় আকা-লন করিতে লাগিলেন। অভংপর একটা গুলি আসিয়া তাঁহার অধের সম্ভক ভেদ করিল, এ গুলি খাইয়া অশ ধরাবল্ঠিত হইল। তখন সের জীবনাশা পরিত্যাগ করিয়া অন্ত্র নিপেক পূর্বক মন্ত্রাস্য হইয়া দাঁড়াইলেন, এবং বারি অভাবে একমুটি মৃত্তিকা মস্তকে অর্পণ করিয়া ঈশর সারণ করিতে লাগিলেন। তখনও কেহ **তাঁ**হার নিকটবর্জী হইতে পারিল না। একে একে তাঁহার শরীরে ছয়টা বস্তুকের গুলি প্রবেশ করিল, তাহাতে তিনি ক্রমে शैनवन हरेया बीद्रभंगांत्र भंग्रन कतिरमन। उर्पाद ভাঁহার প্রাণত্যাণ হইল। সের আফগান এই প্রকার महारीत हित्तन । जरून देखिशासनथक छाशात नीत-वित्र अभिर्मा क्त्रिजार्ट्स । १००० वर्ग १००० वर्ग

সের আফগানের মৃত্যুর পর কুতবের পারিষদ লোকের।
তাঁহাকে রাজন্তোহী বলিয়া তাঁহার যথাসর্কথ হরণ
করিল, এবং লুরজাহানকে বন্দী করিয়া দিলীতে পাঠাইয়াদিল। লুরজাহান দিলীতে আনীত হইলে জাঁহালীর
তাঁহার পাণিগ্রহণের অভিলাষ করিলেন, কিন্তু লুরজাহান
তাঁহাকে বামিহস্তা বলিয়া পাণিদানে সম্মত হইলেন না।
জাহালীর বল প্রকাশ করিলে করিতে পারিতেন, কিন্তু
তাহা না করিয়া লুরজাহানকে স্বীয় গর্ভধারিণীর নিষ্টে
বন্দিনী করিয়া অন্তঃপুরে রাখিয়াদিলেন। এই বিপরীত
ভাবের প্রকৃত কারণ এপর্যন্ত কেহ অনুভব করিতে পারেন
নাই; বোধ হয় পর্জী হয়ণ জন্য যে সকল জখন্য কাঞ্
করিয়া ছিলেন ভাহাতে মনে হ লক্ষা হইয়া থাকিবে,
ভাহাতেই ক্ষান্ত হইলেন।

মুরজাহান প্রায় চারি বৎসর সামান্য বন্দিনীর ন্যার রাজান্তঃপুরে থানিলেন। তাঁহার ব্যয় নির্ন্ধাহের কোন উপায় ছিল না, এজনা তিনি চিত্র লিখিয়া বিক্রয় করাই-তেন, তাহাতে ব্যয় বিধান হইত। ক্রমে তাঁহার চিত্র ও নিম্পকর্দের অভিশয় গৌরব হইল, রাজা তাহাতে প্রনর্দার তাঁহার প্রণয়াভিলাবী হইলেন। সুরজাহান তথ্ন রাজরাণী হইবার অভিলাবে পাণিদান করিলেন। বিবাহে অভান্ত সমারোহ এবং ঘটা হইল। তৎপরে সুরজাহান রাজ্যের সর্ব্বমন্ত্রী কর্মী হইয়া উঠিলেন, তাঁহার পিতা রাজনত্রী, এবং তাঁহার জাতা রাজ্যের অভি উচ্চ কর্মে নিযুক্ত হইলেন। তাঁহার নাম পর্যান্ত স্বর্ণমুদ্ধাতে কান্ধিত হইতে জাগিল। তাঁহার আধিপত্যের নীমা পরি-নীমা থাকিল না। জাহাঙ্গীর তাঁহার পরামর্শ ভিন্ন কোন কর্মা করিতেন না, তিনি যাহা বলিতেন তাহা বেদবাক্যের ন্যায় মানিতেন।

এই প্রকার নারীভক্তি নিন্দনীয় বটে, কিন্তু সুরজাহান প্রথম ২ যে ২ কর্ম করিয়াহিলেন ভাহাতে রাজ্যের হিত ভিন্ন কিছুই অহিত হয় নাই। তাঁহার পিতা বিনিরাক্ষমন্ত্রী হইয়াহিলেন ভিনি অতি জ্ঞানবান্ ও নিরাকাক্ষ্যী, তাঁহার জাতাও অতি পণ্ডিত ও থার্মিক ছিলেন, তাঁহানের ছারা রাজ্যের অনেক মঙ্গল ইইয়াছিল। জাহান্দ্রীরেরও অনেক তুর্নীতি ছিল, তিনি মদ্যপান করিয়া সামান্য মদ্যপের ন্যায় যথাতথা পড়িয়া থাকিতেন, এবং লোকের প্রতি নানা প্রকার দৌরাত্মা ও অত্যাতার করিতেন। নুরজাহান এই সকল তুর্নীতি দূর করিলেন। জাহান্দ্রীর অপুরিমিত পান ত্যাগ করিয়া শয়নাগার ভিন্ন জালানীর অপুরিমিত বাবহার করিতে লাগিলেন।

• সুরজাহানের যেমন রূপ ও ৩৭, বুদ্ধি ও ক্ষমতা সেই প্রকার ছিল, তদ্বারা তিনি রাজকর্ম উভমরূপে চালা-ইতে লাগিলেন। বিশেষ, গুহুসজ্জার তাঁহার অত্যন্ত যত্ন ছিল, তিনি পুরাতন গঠনের প্রব্যাদির পরিবর্তে স্তুন গঠনির অব্যাদি প্রস্কৃত করাইলেন, ইহাতে রাজসভার অমন নৌকর্ব্য র্ছি হইল যে ততুলা শোভা প্রর্কে কথন ধ্রথা
যার নাই, অবচ পূর্বাপেকা ব্যয় অনেক স্থান হইল। অপর
তৎকালে জ্রী জাতিরা যেপ্রকার বসনাদি পরিধান করিতেন তাহা উত্তম ছিল না, তৎপরিবর্জে তিনি বাইআনা
পোশাকের সৃষ্টি করিলেন, সেই পোশাক অদ্যাপি ব্যবহার হইতেছে। ভদ্তির এইকণে যে গোলাপি আতর \*
ব্যবহার করা যায় তাহাও সুরক্ষাহান কর্ত্ব সৃষ্ট হয়।
সুরক্ষাহানের বিদ্যাও যৎসামান্য ছিলনা, তিনি মুক্ষেৎ
কবিতা রচনা করিতে পারিতেন। ক্থিত আছে এই
গুণে জাহাঙীর তাহার অত্যন্ত বশীভূত হইয়াছিলেন।

दाकांत विवाह्त किछूकांन পরে রাজবিলোহা ওসমান

यूट्फ পরাজিত হইয়া মরিলেন, তাহাতে বঙ্গদেশের উপ
তিং ১০২১ লবে শান্তিজল পড়িল। কিন্তু দক্ষিণ

বাজ্য বোরতের গোলযোগ রুদ্ধি হইল,

থ রাজ্য পুনর্জন্মের কম্পনায় এইরপ থার্য হইল, ওজরাট

হইতে একদল এবং বেরার হইতে আর একদল সেনা

একেরারে থ দেশ আক্রমণ করিবে। তাহা হইলে

মলকারর রাজ্য রক্ষা করিতে পারিবে না। কিন্তু মলকারর

চতুরতা পুর্বক উত্তরে কতগলন অখারোহি সেনা

রাশিয়া দিলেন, গুলুরাট হইতে রাজদেশা বেমন আসিতে

<sup>্</sup> এই আড়ারর ভরি পূর্মে ৮০ টাকা ছিল। এইকংশ ভারা প্রস্তুত করার ধারা আরো ভাল হইরাছে, অডএব ডাইার মূল্যও কমিয়া আনিয়াছে।

লাগিল, ভাহারা ভাহাদিগকে আক্রমণ করিতে লাগিল, এবং ভাহাদের বাট ঘাট বন্ধ করিল। গুজরাটী সেনা দিগের আহারাদির মহা কই হইতে লাগিল, ভাহাতে ভাহারা ভিন্তিতে না পারিয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিল। বেরার হইতে বে সকল সেনা আসিরাছিল ভাহারা গুজ-রাটী সেনাদিগের ঐ ছর্মশা দেখিয়া রণে ক্ষান্ত দিয়া বদেশে প্রভিগমন করিল। সুভরাং দক্ষিণ রাজ্যা পুনজ-যের কপোনা রুগা হইল। ভাহা মলকায়রের হস্তে রহিল।

উদয়পুরের যুদ্ধ পূর্বাবিধি চলিতেছিল। মহনতে থাঁ
ও আবলুলা এই যুদ্ধে সেনাপতি হইয়া যুদ্ধ জয় করিয়াছিলন। কিন্ত তথাকার রাণা ছর্গম তানে পলায়ন করাতে
মুতরাং যুদ্ধের প্রকৃত ফল দর্শে নাই, অতএব জাহাঙ্গীর
করম নামে তাঁহার পরম প্রিয় তৃতীয় পুত্রক বিংশতি
সহত্র সেনা সমতিবাহারে তথায় পাঠাইলেন। রাজপুত্র
আপনি কফ শ্বীকার করিয়া রাণাকে নানাপ্রকার কফ
দিতে লাগিলেন্। রাণা বিত্রত হইয়া দিল্লীশ্বরের অধীন
মতা শ্বীকার করিলেন, এবং সন্ধির প্রার্থনায় নানালাতীয় উপটোকন লইয়া রাজপুত্রের সভাতে উপস্থিত
হইলেন। রাজপুত্র, পিতামহ আকবরের রীত্যনুসারে,
তাঁহাকে লালিজনাদি করিয়া আপন পার্থে উপবেশন করাইলেন। অনস্তর তাঁহার যে সকল
শ্বাক্তা জয় করিয়াছিলেন সমুদয় প্রত্যর্পণ

পূর্মক তাঁহার পুত্রকে দিলীতে লইয়া গিয়া উচ্চ কর্মে নিযুক্ত করাইলেন।

এই কর্মে করমের অত্যন্ত প্রতিষ্ঠা হইল। বিশেষ তিনি ষেমন পিতার প্রিয়, বুরজাহানের ভাতৃক্ষন্যাকে বিবাছ করিয়া তাঁহারও সৈইরূপ প্রিয়পাত হইয়াছিলেন, রাজ-রাণী সর্ম্বদা তাঁহার ইফ ইচ্ছা করিতেন। প্রত্রেব জাহা-জীর তাঁহাকে সাহজাহান, অর্থাৎ পৃথীরাজ, উপাধি দিয়া मिक्किन रमरभेत युष्क रखेदन कतिरलन । इंशांट किनि ভবিষ্যতে রাজা হইবেন ইহা এক প্রকার স্থিরীক্ত হইল, সুতরাং তাঁহার জ্যেষ্ঠ জাতা খসকর \* রাজ্যাশা একে-বারে শেষ হইল এবং ভাঁহার দিতীয় জাতা পরবেজের ষে ঘৎকিঞিৎ আখা ভ্রমা হইয়াছিল ভাহাও রহিল না। माहकादात्वत क्यान खलावरे, मिक्न त्रांटका भगन নাজেই, মলকাষ্টরের সেনাপতি ও মুহাদ সকলে তাঁহাকে ভাগে করিয়া পলাইতে লাগিল। মলকাম্বর হতবল হইরা দিলীখনের প্রভূত সীকার পূর্বক আহম্মদুনগর প্রভৃতি যে যে স্থান জয় করিয়াছিলেন তাবৎ প্রতার্পণ করিলেন। ভদব্যি ঐ রাজ্যে শান্তিস্থাপন হইল। চারি বৎসর পর্যান্ত আরু কোন গোলযোগ রহিল না। পঞ্চম বৎসরে মল-কায়র পুনর্কার অন্ত ধারণ পূর্বক মোগলদিগকে ভ্রথা हरेट हुत्री छूठ कतिया थे रमम जाशनि युनतिधकात कति-

তিনি তখন পৰ্য্যন্তও কারাক্স ছিলেন।

লেন। তথন সাহজাহানকে এ রাজ্যে পুনঃ প্রেরণ করা ্ ১০৬০ বিভাস্ক আবশ্যক হইল। কিন্তু সাহজাহা১৯২১ বনর অন্তঃকরণে কেমন সন্দেহ জন্মিয়াছিল তিনি বক্র ইইয়া বসিলেন, বলিলেন খসরু ভাঁহার হস্তে থাকিবে, ইছা হউলে তিনি যুদ্ধে গমন করিবেন, নতুবা করিবেন না। জাহাঞ্চীর কি করেন তাহাই খীকার করিয় খসরুকে ভাঁহার হল্ডে অর্পণ করিলেন। সাহস্বাহান ভাহাকে लहेश पिकार्श योजा कतित्वत । जरशात मल-কাষরের সলে যুদ্ধারম্ভ হইল। অনেক মুদ্ধের পর সাহ-काहान डीहाटक भवास्त्र कविटलन।

ইতিমধ্যে জাহানীরের শাস কাশ অতি প্রবল হইয়া व्यान विद्यारभव नक्षन इहेन। श्रवतक धरे मध्यारम রাজ্যাশায় রাজধানীতে আসিলেন, কিন্তু আগমন মাত জাহানীর তাঁহাকে সহানে প্রস্থান করিতে আজা मिटलन । खे ममस्य धमक्रत मृज्यमः वाम व्यामिल । व्हर २ অনুমান করেন তিনি সাহজাহানের রাজাপ্রাপ্তির পথে कलेकच्छल हिटलन, अजना नाहजोहान छाहातक वध করিয়া থাকিবেন। একথা নিতান্ত অসমত নহে। কিন্ত মাহজাহান এপর্যান্ত কোন অংশ্য কর্ম করেন নাই, এজনা সে কথায় সম্পূর্ণ বিশ্বাস করা যাইতে পারে না। 💛

ষাহাহউক সাহজাহান তৎকালে সুরজাহানের স্লেহে একবারেই বজিত হইয়াছিলেন। তাহার কারণ, সুরজা-राम्बर श्रुक श्रामित खेतमजां अक्री कमा हिन, ताजात চতুর্থ পুত্র সাহরিয়ারের সহিত ভাহার বিবাহ দিয়াছিলেন। সুতরাং সাহরিয়ারের প্রতি সম্পূর্ণ স্নেহ জন্মিয়াছিল। বিশেষতঃ সাহজাহান বীর্যাবান্ ও সক্ষম পুরুষ,
তিনি রাজা হইলে তাঁহার আধিপত্য থাকিবে না, এই
জন্য তিনি মনেহ স্থির করিয়াছিলেন সাহরিয়ারকে রাজা
করিবেন, সাহজাহানকে রাজা হইতে দিবেন না। সুরজাহানকে এই প্রতিজ্ঞা হইতে কান্ত করায় তৎকালে
এমত কোন লোক ছিল না। তাঁহার পিতা কর্ত্তমান
থাকিতে তিনি নিতান্ত গহিত কর্ম করিতে পারিতেন না,
করিতে উদ্যত হইলে তাঁহাকে কান্ত করিয়া রাখিতেন।
তাঁহার মৃত্যুর পর সুরজাহানের সহোদর রাজমন্ত্রী হইয়া
তাঁহার আজ্ঞানুসারে কর্মা করিতেন, তাঁহার ইচ্ছার বিপরীত কোন কথা বলিতে পারিতেন না, এই জন্য তিনি
আরো প্রবলা হইয়াছিলেন।

নুরজাহানের মনোভিলাব এই ছিল, সাহজাহান পিতার নিকটে থাকিতে না পারেন, তাহা হইলে জাহা-লীরের অবর্ত্তমানে সাহরিয়ারের রাজা প্রাপ্তির কোন প্রতিবন্ধক থাকে না। দৈববোগে এ সময়ে ইরানাধিপতি কালার রাজ্য অধিকার করিলেন। তাহাতে রাজরাণী এই প্রভাব করিলেন সাহজাহান অতি বীর পুরুষ, তভিল লাল কাল বাজি লারা এই রাজ্য পুনরুক্ত হওয়া নত্তৰ নালে অভাব তিনি এ মুদ্ধে গমন করন। সাহ-জাহান বিয়াভার সনোগত অভিপ্রায় না বুকিরা তখন বাংশ্রামসন্ধা করিক্ল যাত্রা করিলেন। পরে তাঁহার মন্ত্রণা বুরিয়া মাঞ্ হইতে লিখিয়া পাঠাইলেন, ভবিষতেও আমার রাজ্যপ্রাপ্তির বিল্প না ঘটে, তাহার বোধ পাইলে আমার রাজ্যপ্রাপ্তির বিল্প না ঘটে, তাহার বোধ পাইলে আমি এই যুদ্ধে গমন করিতে পারি, নজুবা পারি না এ সুরজাহান আজা দিলেন যদি ভূমি বৃদ্ধে গমনে অসম্মত হও তবে সাহরিয়ার মেনাপতি হইয়া যাইবেন, ভূমি সৈমাগেণকে ক্লেপানী পাঠাইবে। কিন্তু এই আজা দিয়া মুদ্ধির হইয়া থাকিতে পারিলেন না, মনে ২ ভয় হইল যদি সাহজাহান বিপক্ষতাচরণ করেন, তাহা হইলে অন-থোৎপত্তি হইবে। অতএব মহাবীর মহন্তেও আনাইলেন, যেহেতু ভতুলা বিচক্ষণ সেনাপতি তংকালে আর ছিল না।

প্রতি পোলবোগের সময়ে জাহাগ্রীর কাশীরে বাদ করিতেছিলেন। বথন বড় বাড়াবাড়ি হইরা উচিল, তথন হিং ১০৩১ কাশীর হইতে আসিয়া লাহোরে অব-পৃ ১৯২২ হিতি করিলেন। তথা হইতে পুত্রের সজে পত্রাদি লেখালেখি হইতে লাগিল, কিন্তু সিভাপুত্রে মনোমালিনা ছুচিল না। অধিকন্ত সাহজাহানের কুমন্ত্রণান কে লিখু বোধ করিয়া, জাহাগ্রীর তাঁহার কয়েক জন লোক কে বিভার বজা। সভ্রব আগ্রা অধিকার ক্রিন্তু মান্-লোকা করিয়া, দিলীয় বিংশতি জোশ দক্ষিত্র লাসপুর

হইতে তাঁহার পশ্চাৎ২ আসিতে লাগিলেন। বাহলাহান বৈরাশ হইয়া বিলাসপুর হইতে মিবার পর্বতে গমন করিলেন। তথায় রাজদেনাদিলের সহিত তাঁহার দৈনোর একটা যুক্ত হইল। সাহজাহান পরাস্ত হইয়া মালব अरमर्टम भवाएन कतिर्द्धन । जाशकीत पाकशीत भर्याद ষ্যুৎ ভাঁছার পশ্চাৎ২ গেলেন। পরে রাজপুত্র প্রবেজ ও মহক क थाँदिक छैडिटिक धतिरांत काना शांके हिल्लम । बी मगरम माहकाशास्त्रं अपनेक स्मना अवाहिएक वाकिन। हिर > > > । छाहारछ जिनि नर्मना शांत इहेशा देखल स्म, ४ ३०२६ उथा इहेटल मजनिलावेदन शमन कहि-লেন, তৎপত্রে বস্তদেশে আসিয়া বাঙ্গলা ও বেহার অণি-काँद्र कदिरमन । अवर अभाशावारमत पूर्व अधिकांत सना উদয়পুরের রাজ্যে ভাতা ভীমসিংহকে সেনাপতি করিয়া পাঠাইলেন। রাজপুত পরবেজ ও মহকত খাঁ मकि। वार्टका बहिया वथन अनित्तान, माहकाशान वस-দেশ অধিকার করিয়া আলাহাবাদ লইতে গিয়াছেন, তথন ভাঁছারা ঐ ভান রক্ষার্থ দ্রতগমন করিলেন। সাহ-জাহান ভাহাদিগের ষহিত বুজার্থ গলাপার হইয়া অগ্র-भंद इहेरलन । किन्छ जे मिन्द लास्क्ता छीहारक स्नोका बाबामा खरामि किछूहे मिन ना, खर रक्रमण रहेएछ जिनि देन जरून रेमना मरश्रह करिया जानियाहिएनन, ভাহারাও ভাহাবে ভ্যাগ করিয়া প্রান্থান করিল। সাহজা-" क्षेत्र विधियर के विभाग अन्त वहें स्थार, मुख्यार पुनर्कात मिक्क রাজ্যে পালামন ভিন্ন অন্য উপায় রহিল না। অভএব তিনি ঐ রাজ্যে যাইয়া মলকাম্বরের সহিত মিলিয়া বর্ষ্টানিপুর আফ্রনণে নিযুক্ত হইলেন। রাজপুর পরবেজ ও মহর্মত যাঁ ভাঁহার পলায়নের সংবাদ পাইয়া পুনর্মার ভাঁহার পশ্চাৎ২ ঐ দেশে গমন করিলেন। অনশুর যথন ভাঁহারা নর্মদা পার হইলেন, তথন সাহজাহানের সেনাগণের হৃৎকল্প জন্মিল, ভাহারা পালে২ পলায়ন করিতে লাগিল। ইহা দেখিয়া সাহজাহানের মনে অভাশ্ত জন্মিল জন্মিল। তিনি বিনতি পুর্বক পিতাকে পত্র লিখিলন, আমি আপনার আজ্ঞাল্জ্যন করিয়া অতি কুক্মা করিয়াছি আমার অপরাধ মার্ম্জনা করিবেন।

কিন্তু এবিময়ে কর্ত্তবাকর্ত্ত থার্যা না হইতেই জাহানীর আপনি খোর বিপদে পাড়িলেন, ভাহার বিবরণ এই—সাহজাহান দক্ষিণ রাজ্যে পলায়ন করিলে জাহান্তীর বায়ু পরিবর্তন জন্য ছই বার কাশ্মীরে গমন করেন। তৃতীয় বংসরে কারুলের রসনিয়া জাতীয়েরা উপদ্রব আরম্ভ করিল। ভাহাতে ভিনি সে বংসর কাশ্মীরে না যাইয়া কারুলে মাত্রা করিলেন। এই সময়ে মহক্ষত শাঁ অভ্যম্ভ প্রবল হইয়া উঠিয়াভিলেন। বিশেষ, রাজমন্ত্রির সহিত ভাহার চিরশক্রতা ছিল, কি জানি রাজার অনুপস্থিতিকালে তংকর্ত্তক রাজ্যের কোন অনিক্ট ঘটে, এই আশ্বাদ্ধার রাজরাণী ভাহাকে সর্বাদা প্রভাক্ষাধীন রাখা আব-শাক বির্দ্ধানা করিয়া জাজ্যা দিলেম, ভুমি বলদেশে

অনেক অর্থ অপ্তয় করিয়াছ, প্রভাগর রাজসভাতে আসিয়া তাহার নিকাশ দিবে। মহমত খাঁ এখন নানা-প্রকার আগতি করিলেন, রাজী তাহা ভনিলেন না। মহরত কি করেন রাজান্ত। শিরোধার্য্য করিয়া পঞ্চ সহত্র বিশ্বস্ত রজঃপুত দেনা সমভিব্যাহারে সিক্ষুতটে রাজার কটকে উপন্থিত হইলেন। কিন্তু রাজা ভাহাব সহিত সাক্ষাৎ করিলেন না, ইহাতে মহন্ত অভ্যন্ত কুল হইলেন। মহমত খাঁ ইতিপুর্বে বরুখোরদার নামে এক সম্ভাত ৰাজির সহিত আপনার কন্যার বিবাহ দিয়াছিলেন। এ विशहर दोकांस्मिण नदान नारे, धक्रना दांका शोधदक বিৰস্প করিয়া প্রাহার করান, এবং যৌতুকের তাবং ধন কাভিয়া লয়েন। ইহাতেও মহলত অপনানিত হইয়াচি-लाता ताहे अवधि डीहांत मन्दर खाटकाम हिन। অধুনা সেই আকোশ আরও রুদ্ধি হইল। অতএব সময় পাইলে ইহার প্রতিকার করিবেন এই প্রতিকায় थिक्टनन । 🤲 💮

ভাহাদীর ঐ সমতে নিকুর বাম তটে শিবির করিয়া হিলেন। পরে কাবুল গমনার্থ নৌকার সেতু প্রস্তুত করা-ইয়া প্রথমে কেন। সকলকে পার হইতে আজা বিলেন। বেনালণ দিবলে পার হইয়া দকিণ পারে থাকিল। জাহা-কীর জাতুরবে পারপারত নাইবেন এই প্রকার কণানা ছিল। বাজানাকার বেনিলেন, সেনালকর দক্ষিণ পারে খিয়াছে

তথ্ন তাঁহার পাঁচ দহত্র অশ্বারোহী রক্ত্রগুত দেনার মধ্যে ছই সহজ্ঞ সেনাকে আজ্ঞা দিলেন তাহারা সেতু আটক করিয়া থাকে, বামভট হইতে কেহ বাইতে চাহিলে ষাইতে দেয়, কিন্তু দক্ষিণ ভট হইতে কাহাকেও আসিতে নাদেয়। পরে তিনি স্বয়ং অবশিষ্ট ৩০০০ সেনা লইয়া রাজার শিবির বেষ্টন করিয়া একেবারে তাঁহার ভাষুর হি ১০০৫ । মপ্যে প্রবেশ করিলেন। জাহাঙ্গীর প্রহেম হার্লি মদ্যপানাদি করিয়া তথন-পर्गास निजा याहेटक फिटलन। रेमरनात कोनाहरल নিদ্রা ভঙ্গ হইয়া ছবিত গাতোগান কবিয়া মহকতেকে সম্মুখে দেখিয়া অসিধারণ পূর্বক অতি ক্রোধে কহিলেন, আরে কতন্ন ভোর কি এই কর্মা? মহরতে অফাঙ্গে প্রাণি-পাত করিয়া কহিলেন মহারাজ আমি আপনার সহিত माकाद कतिवात सना अत्नक अताम शाहेग्राहिलाम, কোন প্রকারে তাহা ঘটে নাই, অতএব মহারাজের **চরণ দর্শনের জনা এই উপায় করিয়াছি। এই কথায়** আহাজীর ক্রোধ সম্বরণ করিলেন। মহক্ষত বলিলেন মহা-রাজ এইক্ণণে ভাষুহইতে বাহিরে আমুন, নহারাজকে ্দেখিয়া সকলের তুর্তাবনা দূর হউক। জালানীর বজাদি পরিধানছলে রাজরাণীর ভাষতে যাইবার চেটা করিলেন, किन्नु महत्र छ घाँरेट पिलिम ना। छाहाट छाहानीत সেই খানে বস্ত্রাদি পরিধান পূর্বক ভাষুর ছারে আসিয়া व्यवादबार्ग क्रिटनन्। मरुक्छ दनिस्नन् गरकत् श्रुटके

সকলে মহারাজকে দেখিতে পাইবেন, অন্তএর হন্তী আরোহণ করুন, ইহা বলিয়া আপনার মাত্ত আরোহণ করাইলেন। পরে রজঃপুত সেনা বেইন করিয়া আপনার শিবিরে লইয়া গেলেন।

कारामीत এই श्रकात वन्ती रहेटन नुतकारान छाराटक উদ্ধার করিবার কোন উপায় না দেখিয়া, ছল্বেশে অভি সামান্য একথান শিবিকা করিয়া দক্ষিণ পারে গমন করিলেন, কেহ আটক করিল না। রাণী তথায় উপ-দ্বিত হইয়া ছাতা ও আর্থ প্রধানদিগকে নানামতে ভিরুম্বার করিতে লাগিলেন, বলিলেন ভোমাদিগের চক্ষের সমক্ষে রাজা বন্দী হইলেন, ভোমরা ইহা দেখিয়াও ভাঁহার উদ্ধারের কোন চেটা করিলে না, তোমরা অতি নরাধম। এই প্রকার অনেক ভৎ সনা করিয়া তিনি বৈনাগণকে প্রস্তুত হইতে আজ্ঞাদিলেন। পর্দিন প্রতাবে चार्शन এक द्रहर रखी चारदाहर कदिया ममद्रुदरम ৰাছির হইলেন। ইসন্যগণ ভাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল। नमील्टि वामिया पिथित्वन तक्ष्यपुरल्या म्यु मक्ष क्रिया ফেলিয়াছে। অতএব পার হইতে না পারিয়া নদীর কিয়-भारत अक्षे ठड़ा निया गरेमरना शमजरक शमन कतिरङ কাঞ্জিলন। ডাঁহার জাতা ও আর্থ প্রধানের। পাখেৎ हिल्लिम । किन्छ हज़ाई खारनु र शकीत कन, मरधार চোরা বালী, কোন হ ছানে অভান্ধ লোভঃ, ইহাতে পার इंड्रा प्रिक कठिन इहेत । निरमत, मम्मूर्स निशमरमना

রাণীকে লক্ষ্য করিয়া চতুর্দ্দিগ হইতে তীর ও গোলা বর্ষণ क्रिंटि नाशिन। तांगीत मिहिकी छाँहात क्वाटफ हिन, ভাহার রকার জন্য অভান্ত যত্ন করিতে লাগিলেন, তথাপি তাহার শরীরে একটা শর প্রবিষ্ট হইল। ভদ-নস্তর তাঁহার মাছত আহত হইয়া জলে পডিল। মাছত अভाবে হন্তী চালায় এমত লোক রহিল না। বিশেষ, হন্তীর শুণ্ড গুলিতে বিদ্ধ হইল, হন্তী সেই আনে শুণ্ড উভোলন না করিয়া মুগু ডুবাইয়া চলিতে লাগিল। রাজ্বাণী অতি বিপদগ্রস্ত হইলেন। তাঁহার সেনাগণ ৰৎপরোনান্তি ছুরবস্থা প্রাপ্ত হইল। একে পোশাক ঘাঁটা ও হত্তে অন্ত্র, সাঁতার দিতে না পারিয়া অনেকে ভরজে ভাসিয়া গেল, কতক থাবি খাইতে লাগিল, কতক হল-मध इहेन। इस्ती, अभ, मनूरमा, नभी आफ्न इहेगा পড়িল। य गकल रेमटमाता পার হইল, তাহাদের পোশাক ভিজিয়া মুটিয়ার বোঝা হইল। বারুদে জল লাগিয়া কোন পদার্থ রহিলনা। এই ছুর্বস্থার পরে ভটে পদার্পণ মাত্র শক্রদেনা উপর হইতে শরও অগ্নিরুষ্টি করিতে লাগিল। ভাহাতে অনেকে হত ও আহত এবং अप्रतरक नमीजहरक याँ श मिर्फ माशिन। तांगी शत পারে উঠিলে ভাঁহার বন্দিনীগণ নিকটে উপস্থিত হইল। রাণী প্রথমতঃ দৌহিত্রীর অঙ্গ হইতে শর বহির্গত করিয়া षाद्क चान वस्त क्रिट्यन, भटत देमनागटनत छ्त्रका व्यक्त सामीत श्रीतकात्मत्र छेशाय ना मिथिया जार्शनात्क মহন্ততের হত্তে সমর্পণ করিলেন। মনে করিলেন রাজার যে দশা হইয়াছে আনারও তাহাই হউক, ইহার পর যদি পরমেশ্বর প্রসাম হন তবে তাহার উপায় করা মাইবে।

মহব্বত, রাজা ও রাণীকে ইস্তগত করিয়া রাজ্যত্তী আসক ও আর যে যে প্রধান লোক প্রায়ন করিয়াছিলেন छाशामिशक्छ धतिलान, अमर्छ मकरल है वन्ती हहरलन। মহম্বত তাহাদিগকে সভ্তে করিয়া কাবুলে যাতা করি-লেন। ভাঁহার দৈন্যগণ অহোরাত্র জাহাঙ্গীরকে বেইন कदिश श्रीकिन। दाजा ও दांगी जिना के रेमनाम धनीत বাহিরে যাইতে পারিতেন না। কিন্তু ইহাতেও মহরুতের মনে একটা ছুর্ভাবনা রহিল, ভাঁহার নিজ সেনা অপেকা রাজ্যেনা অধিক, ভাহারা বিপক্ষ হইলে রাজাকে আটক করিয়া রাধা কঠিন ছইবে। সুরজাহান তথন কোন বিপক্ষতাচরণ না করিয়া চতুরতা পূর্বেক জাহাজীরকে মহক্ষতের সহিত<sup>্</sup>সৌহ্ন্য করিতে পরামূর্শ দিলেন। কাহানীর তাঁহার মন্ত্রণাক্রমে তাঁহার সাক্ষাতে মন্ত্রী ও वानीत नानाश्वकात शानि कवित्छ नागितनन, धक्था शरीख दिनालम । जागरकत एक रहेट जागारक उद्यात করিয়া মহোপকার করিয়াছ, কিন্তু রাণী ঐ চক্রের মহা-हकी, दुनि दौरात हरक कथन शामरकश कतिवना। मर-মত চাতুমী বুৰিতে না পারিয়া রাজাকে নিভাত সুহুদ वित्रकता कतिहरून ।

এই ভাবে সকলে কাবুলে উপস্থিত হইলেন, তথায় পাঠান দিগের ভয়ে রাজার দেহরক্ষা সেনা রুদ্ধি করিতে ছইল। ঐ সময়ে রাণীর অনুগত বাবতীয় লোক আসিয়া তৎকর্মে নিযুক্ত হইল। রাজার প্রতি তথন মহক্তের কিছুমাত্র অবিশাস ছিলন।। তিনি তাঁহাকে যথা তথা ষাইতে দিতেন। রাজা মধ্যে মধ্যে গজারোহণে শীকার কবিতে যাইতেন, কেবল মেনার। ভাঁহার সজে যাইত। একদিন রাজরক্ষক সেনাদিণের সহিত রজঃপৃতদিণের বিবাদ উপস্থিত হইয়া রক্ষঃপুতেরা অনেক রাজদেনা বধ कविल। भइणारकत निकृष्ठे इहात अजिएगांश हहेल, किन्छ তিনি তাহার বিচার করিলেন না। ইহাতে রাজরক-কেরা অপমান বোধ করিয়া রজঃপুতদিগকে আক্র-মণ পূর্বক তাহাদিগের অনেককে নই করিল, কতক-খ্যা বজঃপত পর্বতে পলাইল, দেখানে পর্বতবাসী त्मारकरा जारामिश्रक शतिया मांग कविया वाथिन। धरे অব্দি মহদ্ভের প্রাক্রমের থক্তা ত্ইতে লাগিল, তিনি আৰু প্রবলভাবে চলিতে পারিলেন না।

্রাণী মনে মনে যে কম্পনা করিয়াছিলেন ভাহার সময় ক্রমে নিকটবর্তী হইল। রাণী স্থানান্তরে কতক-श्रुणि देमना मर्श्वह कतिया वाचित्वन । श्रुत कारा-দীরকে দিয়া মহস্বতের স্থানে এই প্রস্তাব করাই-्रबन, श्रधारनदा धारमध्य जायगीत रहाश करतन किन्छ देवहरे रेमनामाहाया करत्रम मा। धक्था छेशहिज

10

क्रहेटल गरकंड आखां कतित्वन, तांक्रतांनी नकन व्यटनका অধিক জায়গীর ভোগ করেন, তাঁহার সেনা অগ্রে গণিত इक्क, शदब व्यावर जायशीवनादवव रेमना श्रेमना कवायाह-বেক। বুরজাহান এই আদেশে অপমান বোধ করিয়া ক্রোধ করিয়া উচিলেন, কিন্তু সকলের বাছা কর্ত্তব্য তাঁহা-কেও ভাহা করিতে হয় এই বলিয়া তিনি যে সকল লোক সংগ্ৰহ কৰিয়া বাধিয়াছিলেন ভাহাদিগকে দ্বায়মান कराष्ट्रितन । जारामीय अहे रिमना गर्मना क्रिट्ड श्राटनन, মহব্রত তাঁহার সঙ্গে যাইতে চাহিলেন, কিন্তু রাজা ভাঁহা-কে ষাইতে নিষেপ করিলেন। মহকতের তথন ভাচুপ প্রক্রিম ছিল না, মুত্রাং রাজার নিষেধ শুনিতে হটল। জাহাজীর সৈন্য সন্দর্শনে উপস্থিত হইলে রাণীর সৈন্য-

গণ চক্রাকারে উহ্যেক বেষ্টন করিল। এবং রাজসম্ভি-ব্যাহারী বুজঃপত অপাবোহী সেনাগণকে কাট্যা লঞ ভণ্ড করিল। মহরতে এই কাও দেখিয়া দৈনা সামস্ত बाहेशी अविवास श्रवाहित्वत । तानी छाहात श्रवि खडाा-চার করিতে পারিতেন, কিন্তু রাজমন্ত্রী আসক ধাঁ তখন পর্যান্ত তাঁহার হত্তে ছিলেন, এজনা ভাহা না করিয়া, উচিত্র সলে এই পার্যা করিলেন তিনি সাহজাহানের मंद्रक कतित्वन, छाटा दरेष छैदात्र खेछि कान প্রকার অভ্যাচার হইবে না।

त्रीहर्काहान वे नगरत्र वासभीद्र वानिताहितन, हैं।-द्वि मटन करन धक महत्व रेमना हिन। जिनि मटन করিয়াছিলেন ক্রমে আরো সৈন্য সংগ্রহ করিবেন। কিন্তু ক্রফাসিংহ নামে এক রজঃপুত রাজা ভাঁহার সহকারীছিলেন, ভাঁহার হঠাং মৃত্যু হওয়াতে ঐ সৈন্য অর্জেক হইয়া পিড়িল। সাহজাহান বলহীন হইয়া ভয়ে বালুকারণ্য দিয়া সিন্ধু রাজ্যে পলায়ন করিলেন। তথা হইতে বিমাতার ভয়ে পারসন্থানে যাইবার মনত্র করিলেন, কেবল শারীরিক অসুস্থতাপ্রযুক্ত যাইতে পারিলেন না। কিয়ুদ্দিবস পরে শুনিলেন ভাঁহার দ্বিতীয় সহোদর পর-বেজ লোকান্তর গমন করিয়াছেন, এবং মহক্ষত রাজার সঙ্গে বিরোধ করিয়া রাজসৈন্যের ভয়ে দক্ষিণ রাজ্যে পলায়ন করিয়াছেন। এই সংবাদ পাইয়া ভাঁহার আশা প্রকারে বলবতা হইল, তিনি মহক্ষতের সহিত মিলিলেন।

জাহালীর বৎসর বৎসর কাশ্মীরে যাইবার নিয়ম করি
মাছিলেন, লাহোর হইতে প্রত্যাগত হইরা ঐ নিয়ম
রক্ষার্থ তথায় গমন করিলেন। কাশ্মীর ঘাইয়া তাঁছার
কাসরোগ অতান্ত রুদ্ধি হইল, তাহাতে তথায় থাকা

হিং ১০৩৭ সফর ২৮
খ ১৯২৭ অন্তরর ২৮
খ ১৯২৭ অন্তরর ২৮
তিনি লাহোরে যাতা করিলেন।
কৈন্ত অর্থেক পথ না আসিতেহ পঞ্চত্ব প্রাপ্ত হইলেন।

জাহালীরের রাজত্বকালে সর তামস রো নামে ইংল-

তীয় রাজার এক দুত তাঁহার সভাতে আসিয়াছিলেন। তিনি ছই বংসর পর্যান্ত ঐ সভাতে বাস করিয়াছিলেন, এবং জাহালীরের সঙ্গে একত্র মদ্যপানাদি করিতেন। তিনি রাজসভার অভ্যন্ত প্রশংসা করিয়াছেন।

জাহালীরের রাজ্যকালে আমেরিকা হইতে তমাক আনীত হইয়া তাহার ব্যবহার আরম্ভ হয়। ঐ মহাদীপে ইহাকে তবাক বলিয়া থাকে। জাহালীর তদ্বাবহার নিবিশ্ব করিয়াছিলেন, কিন্তু সেই তমাক এইকলে সম্ভল ব্যবহারীয় জবোর মধ্যে অতি প্রসিদ্ধ হইয়াছে, তমাক না খায় এয়ত অত্যম্প লোক দেখা যায়।

জাহালীরের রাজত্ব কালে পারসী ভাষাতে কর্মকার্য্য চলিত, কিন্তু হিন্দুস্থানী ভাষাতে কথোপকথন হইত।

## একবিংশ অগ্যায়

## সাহজাহান।

স্বাহালীরের স্বীবনাবধিই সুরজাহানের আধিপত্য ছিল, তাঁহার জীবনাত্তে তাঁহার আর কোন ক্ষমতা রহিল না। ক্ষাহালীরের মৃত্যুর পর সুরজাহান স্বীয় জামাতা সাহরিয়ারকে রাজ্য প্রদান করিবার হত্ব করিয়াছিলেন, কিন্তু তাহা পারেন নাই। রাজমন্ত্রী তাঁহাকে বন্দীবেশে রাধিয়া সাহজাহানকে দক্ষিণ রাজা হইতে আনয়ন পূর্বাক শিংহাসন অর্পণ করিবেন।

সাহজাহান রাজ্যেশ্বর হইয়া সুরজাহানের ভরণ পোষথের জনা বার্ষিক পঁচিশ লক্ষ মুদ্রা নিযোজিত করিয়া
দিলেন। সুরজাহান ঐ রতিভোগিনী হইয়া বিংশতিবংসর পর্যান্ত জীবিতা ছিলেন। ইহার মধ্যে রাজসম্পকীয় কোন কথার মধ্যে থাকিতেন না, কেবল পতিচিছায় কাল বাপন করিতেন। কথিত আছে জাহালীরের
মৃত্যুর পর তিনি রিলন বন্ধ ও অলক্ষারাদি পরিত্যাগ
করিয়া শুক্তবন্ধ পরিধান করিতেন, মাংসাদি ভক্ষণ

নাহজাহান রাজা হইলেপর সাহরিয়ার লাহোরের রাজভাগ্রার অধিকার করিয়া আপনি রাজপদ প্রহণ করেন। এই সংবাদ পাইয়া আসফ খাঁ লাহোরে গমন করেন। তিনি উপন্থিত হইলে সাহরিয়ার ভাঁহার সহিত সংগ্রাম করিলেন, কিন্তু জয়ী হইতে পারিলেন না। মুদ্দে পরাভূত হইয়া তিনি প্রগন্ধার রুদ্ধ করিয়া থাকিলেন। কিন্তু ইহাতে নিস্তার পাইলেন না। মুর্ণরুদ্ধকরা তাঁহাকে মন্ত্রীর হস্তে সমর্পণ করিল। অতঃপর মন্ত্রী তাঁহাকে অইয়া রাজধানীতে উপন্থিত হইলে, সাহজাহান ভাঁহার প্রাণ নতের আজা দিলেন। দানিয়ালের সুই পুত্র সাহনীরয়ারের সঙ্গে মিলিয়াছিলেন এজনা ভাঁহাদিগেরও প্রোণ মগু হইল।

এই ব্যাপারের পর সাহজাহানের আর কোন শক্ত রহিল
না, তিনি নিশ্চিন্ত হট্যা রাজ্য করিতে লাগিলেন, এবং
আসফর্থা ও সহক্ত থা প্রভৃতি যে সকল বীরবর বন্ধুর
কার্য করিয়াছিলেন তাঁহাদিগের বিধিমতে সন্মান ও পদ
রক্তি করিলেন। তদনস্তর ভোজ মহোৎসব ও আটালিকা নির্মাণে অপরিসীম ধন বায় করিতে লাগিলেন।
রাজ্যাভিষেকের প্রথম সাহৎসরিক সভাতে কাশ্মীর নগরে
মে প্রকার মটা হইয়াছিল ভজ্জপ ঘটা আর কথন কোল
কভাতে হয় নাই। ক্থিত আছে এ সভার জন্য এক ভাছ,
প্রভৃত হইয়াছিল ভাহা ভুলিয়া খাটাইতে ছইমাস লাগে।
ভাছুর ভিতর কত সাল মধ্মল ও কিছাপে মুগ্রিত

ও ভাষা বর্ণ ও বছমূল্য প্রস্তারে কিপ্রকার মুশোভিত হইয়াছিল ভাহা বর্ণনে বর্ণ পরিহার মানে। পুরের রাজ্ঞা-ভিষেক দিবলে রাজাদিগের তুলা হইবার প্রথা ছিল। बै जुलांक्ड करल बक्रक काश्वन ও वक्रमूका श्रास्त्रामि প্রদন্ত হইত, তাহা দীন ছঃখী ও অপরাপর মনুবাদিগকে দান করা ধাইত। সাহজাহানের সময়ে তুলাভিন্ন মণি युक्ता ও আর २ मृनावान अवाहि वर्गशास्त्र नाकाहेश। ভাঁহার মন্তক প্রদক্ষিণ করণানম্ভর ভুত্তোরা সারী সারী दाथिया मिछ। मारकारान धे मकन रङ्ग्ना जवा छेल-স্থিত লোকদিপকে বিভরণ করিতেন। ইহা ব্যতীত হয়, হন্তী, অর্থ, মণিমুক্তা ও উক্তম উক্তম পরিচ্ছদ কত বিতরণ হইত তাহার সংখ্যা নাই। একজন মুসলমান ইতিহাল-বেন্ডা লিখিয়াছেন কাশ্মীরে প্রথমবার যে সামুৎসরিক রাজাভিষেক হয় ভাহাতে অস্থান বোল কোর মুদ্রা রায় इहेग्राहिल।

সাহজাহানের রাজত্বকালে দক্ষিণ রাজ্যে প্রথম সং-প্রামের স্তরপাত হয়। খাঁজাহান নামে লোদিগোঠীয় এক পাঠান দিল্লীর সভাটের কর্মে নিযুক্ত থাকিয়া ক্রমশঃ উক্পদৰ হইয়া অবশেষে দক্ষিণ রাজ্যের কৈন্যাধাক হই-शोছिলেন। । জাহালীরের মৃত্যুর পর তাঁহার কেমন কুৰুন্ধি হইল, দিলীর রাজার জয়কত তাবৎ প্রদেশ আহ-মান লগতের ব্রাজানে অর্পণ করিয়া তাঁহার সহিত প্রথম क्षित्रम्, मार्ग्न कविटलन देशांट छाशांत आलाव युगांत

概

ছইবে, কিন্তু ভাহা হইল না। ভাহাতে তিনি পুনর্মার সাহজাহানের প্রকৃষ খীকার করিয়া রাজধানীতে আসি-विभग्रत्य वक्षी अन्तर्व উठिन, ताका छीरात প্রাণদ্ধ করিবেন । এই কথা তদম্ভ না করিয়া তিনি আপ-নার ছই সহজ্র পাঠান দৈন্য লইয়া একেবারে আগ্রা-হইতে প্রস্থান করিলেন। সাহজাহান তাহাকে রাজজেহী বিহর্তনা করিয়া স্বলৈনা ভাছার পশ্চাৎ ধার্মান ছইলেন। উহাতে খাঁজাহান প্রথমতঃ গন্দোআনাতে, তাহার পর चाक्याम नगर्द शनायन कदिल्लन। चाक्याम नगर्द्रद्र ব্রাক্সা ভাঁহার সাহায্য।র্থ অন্তথারণ করিলেন। সাহজাহান यग्रद के युद्ध ना यादेशा क्रक्रम समाशिक शाठावेदन। সেনাপতি আহম্মদ নগরের রাজার সহিত সংগ্রাম করিয়া তাঁহাকে পরাস্ত করিলেন। তাহাতে থাঁকাহান দক্ষিণ রাজ্য হইতে বৃদ্দলখণ্ডে পলায়ন করিলেন। এস্থানে ব্যক্ষেনাগণ তাঁহাকে যুদ্ধে পরাস্ত এবং তাঁহার শিরশ্ছে-मन कर्त्रय क्रिय मलक बाकाद मभीदर्भ आनित।

किन बांकाशास्त्र पृत्र श्रेटन व मिन शाका जेनावन मूना श्रेन ना। खेळारमार्ग क्रमणः प्रश्ने बरमत जनाइकि श्रेम, जाशास्त्र वृद्धिक व मशामात्री जेनाबुक श्रेमा महळा महळ लाक श्र बात जाना कित्रा नाशरूक नानिन। नार्थ जाशाताजास्त्र क्षक क्षाणीय वैदिन ना। जाशास्त्र क्षिकी क्षित्र करत क्षमन लाक मान दिन ना। भन সঞ্চার হইতে লাগিল। যাহারা ছর্তিকে না মরিল তাহারা পীড়াতে মরিতে লাগিল। এই প্রকারে প্রায় তাবং রাজ্য মনুষ্যশ্ন্য হইল। রাজ্য একেবারে উচ্ছিল হইল। তাহার পর আহম্মদ নগর ও বিজয় পুরের রাজাদের সঙ্গে মোগলদিগের মহাযুদ্ধ আরম্ভ হইল। এই যুদ্ধে ছল, চাতুরী, বিশাসঘাতকতা, কত হইতে লাগিল তাহার সংখ্যা নাই। অতঃপর সাহজাহান স্বয়ং শী রাজ্যে গমন করিয়া প্রায় ছই বংসর যুদ্ধ করিলেন। হিং ১০৪৭ তদনস্তর তিনি গোলকদা ও বিজয়পুরের শ্ ১৬৬৭ রাজাদিগকে বদীভূত, এবং আহম্মদ নগর

যথন সাহজাহান দক্ষিণের যুদ্ধে প্রব্রুড, তথন রাজ্যের আর আর হানে করেক ঘটনা হইয়াছিল, তাহার বিবরণ এই। পর্তুণি জাতীয়েরা কলিকাতার সারিধ্যে ছগলিতে এক তুর্গ নির্মাণ করিয়াছিল। বঙ্গদেশের সুবাদার ঐ তুর্গ অধিকার করিয়া লইলেন। বুন্দিনারা কয়েকবার রাজ-বিশ্লেফ করিল। প্রথম বিজ্ঞাহে বুসিংহদেবের পুত্র হত হইলেন। পূর্বাঞ্গলে রাজসেনগিণ ক্ষুদ্র তিবাং দেশের বালাবস্তু সমাপনু করিল। আর কতকগুলিন সেনা শ্রীনগর আরমণ করিতে ঘাইয়া প্রায় তাবতে নিহত হইল। তারিম ক্রেক্তার করিল, ক্রিড তথাকার জল বায়ু সহ্য করিছে না

এই সকল ঘটনার পর সাহজাহান ১৬ বৎসর কারুলে उ में अक्षनीय युष्क नियुक्त थाकिरनन। ১०৪৭ अस्म व्यालिमर्फन थाँ नारम शादमञ्चादनद द्वालाद शक व ব্যক্তি কান্ধারের কর্মাধ্যক ছিলেন, তিনি আপুন রাজার দৌরাজ্যে সাহজাহানকে ঐ রাজ্য সমর্পণ করিয়া ভাঁহার শরণাগত হইলেন। আলীমর্দ্দন অতিশয় বৃদ্ধিলীবী ও বিশ্বান ছিলেন ৷ গুহাদি নিন্মাণে তিনি বিশ্বকর্মা ছিলেন। তিনি যে সকল অউালিকা নির্মাণ করান তুংহা অতি অপুর্বা। সর্বাপেকা দিল্লীর খাল অতি উত্তম। ঐ থাল অদ্যাপি ভাঁহার নামে খ্যাত আছে, এবং ইহাতে তাঁহার গুণের পরিচয় প্রদান করিভেছে। এই গুণের জনা সাহজাহান তাঁহাকে যথেট সন্মান করিতেন, এবং একবার তাঁহাকে কাশ্মীরে ও আর একবার কারুলের কর্মা-প্যক্ষপদে নিযুক্ত করিয়াছিলেন। ইহা ভিন্ন ভাঁহাকে অনেক যুদ্ধে প্রেরণ করিয়াছিলেন । শান্তিসময়েও ভাঁহাকে অনেক উত্তম ২ কর্মা দিয়াছিলেন।

কালার রাজ্য আয়ত হইলে বজিয়া রাজ্য অধিকারের হি ১০৫৪ সত্পায় ইইল। অতএন সাহজাহান শু ১৯৪৪ আলীমর্দনকে সৈন্যাধাক্ষ করিয়া উজনক-দিপের সহিত যুদ্ধার্থ প্রেরণ করিলেন। আলিমর্দন হিন্দুকুশ পার হইয়া বজিয়াতে গমন করিলেন। কিন্দু শীক্ষ সমাগ্রেম, অভ্যন্ত শীতের আশ্বায়, ফিরিয়া আসি-কোন। পর বৎসর জগৎসিৎহ নামে এক রজঃপৃত রাজা ১৪ • • রক্তাপুত দেনা লইয়া তথায় যাত্রা করিলেন। রজ্ঞঃপুত্ত দেনাগণ গ্রীষাপ্রধান দেশে বাস করিয়া বড় হিম সহু করিতে পারিত না, তথাপি শীত শঙ্কা না ৰব্নিয়া শীভ নিবারণেরজন্য বড় ২ বাহাছ্রী কাঠ ফাডিয়া कार्छमग्र गृहापि निर्माण कतिग्रा शांकिल। दाखां अ श्रव्टख ভাষাদের সঙ্গে কাঠ ফাডিতে লাগিলেন। এই প্রকার कछ खीकाद कतिया छे जनकानिगटक श्वनःश्वनः शहास्त করিলেন। কিন্তু ইহাতেও জয়ের কার্যা সম্পূর্ণ হইল ন।। পরবংসত সাহজাহান স্বয়ং কার্তেল গমন করিয়া তথা হুইতে সীয় কনিষ্ঠ পুত্র মুরাদকে সালীনর্দ্ধনের সম্ভিব্যা-হারে বিজিয়াতে পাঠাইলেন্৷ আলীন্দন এযাতায় সম্পূর্ণ রূপে জন্নী হইলেন। কিন্তু পত্নবংসর রাজা দিল্লীতে প্রভাগিমন করিলে, মুরাদ ভাঁহার পশ্চাৎপশ্চাৎ দিলীতে व्यामित्वन। युवारम्ब भगत्नत् श्रेत উक्षत्रकत्। व्यवक-নন্দা পর্যান্ত ভাবৎ দেশ উৎখাত করিল। মুরাদ বিনা আক্ষাতে চলিয়া আসিলেন তাহাতে এই ফল হইল, এই বিবৈচনায় সাহজাহান তাঁহার অসমান করিয়া, তৃতীয় वृक्त व्या अतः क्षितर के यूटकत व्यथाक कतिया शांठा है जन। শাপনিও উঁহোর সঙ্গে ২ কার্ল পর্যান্ত গমন করিলেন। चाउद्गरंद्यव युद्ध करा कदित्वन, किन्छ छाहात शत छवद-ক্রো তাঁহাকে এমত ভাবে অবরুদ্ধ করিল, তিনি ছুর্গদার क्षेत्र क्रिया बाक्टिन, वाहित हरेए शाहितन ना। नरिक्षेत्रीन मिथिएकन ७७ अधिक पूरत से त्रांका सम

করিয়া কোন ফল হইল না, ভাছা রক্ষা করা কঠিন। অভএব উলবৰজাতীয় এক রাজপুত্র বক্তিয়া হইতে পদাইয়া ভাঁহার সভাতে বাস করিতেছিলেন, ভাঁহাকে এ রাজ্য অর্প করিলেন। তাহাতে আওরংজের স্থেন প্রত্যা-গমন করিলেন। সাইজাহান বক্তিয়া রাজ্য পরিত্যাগ করিলে, ১০৫৮ অন্দে, পারসস্থানের রাজা কান্ধার রাজ্য আক্রমণ করিলেন। সাহস্কাহান ঐ রাক্স রক্ষার্থে আভরণজেবকে প্রেরণ করিলেন। কিন্তু যে "সময় পাবসন্থানের রাজা এ দেশ আক্রমণ করিলেন তথন অত্যন্ত শীত। তৎকালে এইদেশ হইতে উত্তরাঞ্চলে লো-কের গমনাগমন এক প্রকার রুদ্ধ হইত। শীতপ্রযুক্ত আও-বংকের দীঘ্র পৌছিতে পারিলেন না, সুতরাং পারসরাজ ঐ ব্রাজ্য অধিকার করিয়া লইলেন। তদনস্তর আওরংজেব তথায় উপস্থিত হইয়া রাজ্য উদ্ধারের চেষ্টা করিলেন, কিন্তু পারিলেন না। পর বৎসরেও তিনি পুনর্কার তথায় গমন করিলেন, ভাহাও বিফল হইল । অনম্ভব্ন সাহজাহানের कार्छ श्रुव माता मारको औ युष्क **छ**ग्न कतिन देलिया आफ्ना-লন করিলেন। তাহাতে রাজা তাঁহাকে অতান্ত সমারোহ পুর্বক তথায় পাঠাইলেন। কিন্তু ভাঁহার প্রমনই সার इहेन, পातमी रमनाता छाहादक धे दान न्याम कतिएंड मिन ना। माता निवास अ र उसान रहेवी सिविशा जानि-त्मन। छनवित्र काम्नात ताका त्मानकमिटनेत व्यवसादत क्छ होड़ा रहेगा

ইহার পর ছই বৎসর কোন যুদ্ধাদি হয় নাই। औ मभरत पिक्त बाटकात करील कर्म ममालन ४ ३७०० रिटेल। এই छात्रील २० वटमत व्यविध হইতেছিল, এ পর্যান্ত শেষ হয় নাই। জরীপ নমাপন হইলে সাহজাহান ভোডলালের ধারাক্রমে কর ধার্যা कताहरलन, ভাহাতে রাজস্ব অনেক রুদ্ধি হইল, এবং कत मध्यार विवटत भूटकांत नात्र कान लालव्याल वृहि-ल मा।

এই সময়ে সাছল। নামে রাজমল্লীর মৃত্যু হইল। माइला थांक विष्का ও कर्मानक हित्तन, उज्ला धर्मनिष्ठे ও রাজাহিতৈধী দল্লী ভারতবর্ষে আর কথন দেখা যায় নাই।

অনস্তর আওর্থজেবের যশোলাভের আর এক উপায় হইল। মিরজ্মল নামে এক রত্ত্বদিক গোলকদার রাজার মন্ত্রীছিলেন। রাজার সহিত তাঁহার মনোবিচ্ছেদ হও-য়াতে তিনি সাহজাহানের সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। আওরংকের এই বিষয়ে পিতাকে অনুরোগ জানাইলেন। সাহজাহান সেই অনুরোধে গোলকদার রাজার উপর ধুমধাম করিয়া পত্র লিখিলেন। গোলকলার রাজা তীহা ন। শুনিয়া তাঁহার আক্রা অবহেলন করিলেন। এই কোপে আওরংজের যুদ্ধসজা করিয়া তথায় গমন করি-लन। आक्षत्ररक्षत इस शहित तत्मत्र कर्मा अव्छ रहेराजन ना, अछ वर अधिकार म त्मना भगाद दाथिया

কউন্ধান নেনা সমতিব্যাহারে আওরন্ধান্দে উপস্থিত ছইয়া, এই কথা প্রকাশ করিবেন, তাঁহার দ্বিতীয় জাতা সুজা বন্ধদেশের সুবাদার, তাঁহার কন্যার সহিত তৎপুত্র মহম্মদের বিবাহ দিতে ঘাইতেছেন। আওরন্ধান্দ হইতে মাসুলিপাঠাম দিয়া বন্ধদেশের পথ। গোলকদার রাজ্যানী হায়জাবাদ তাহার অধিক দুর নহে।

কেল্লকন্দার রাজা আওরংজেবের প্রকৃত অভিপ্রায়
কিছুই জানিতেন না, রাজপুত্র আসিতেছেন এই সংবাদ
শুনিয়া তাঁহার সম্মানার্থ মহা ভোজের আয়োজন করিতে
লাগিলেন, যুদ্ধ বা আত্মরক্ষার কোন আয়োজন করিলেন
না। আওরংজেব ঐ অবকাশে হায়দ্রাবাদ আক্রমণ
করিলেন। গোলকন্দার রাজা যুদ্ধে অসমর্থ হইয়া প্রাণরক্ষার জনা এক পর্বভীয় ছর্গে পলায়ন করিলেন। আওরংজেব হায়দ্রাবাদে পড়িয়া ঐ দেশ লুঠন ও দম্ধ করিলেম। অনস্তর যথন তাঁহার পশ্চাতের সৈন্যগণ আসিয়া
যুদ্ধিন, তথন তাঁহার প্রবল দল হইল। গোলকন্দার
রাজা যুদ্ধসক্ষা করিয়াও উহার সক্ষে যুদ্ধ অক্ষম হইক্রেন, আওরংজেব যাহা বলিলেন তাহা শিরোধার্য্য

এই প্রকারে গোলকদা জর করিলে বিজয়পুর আক্রম-শুরু এক পদ্ধা হইল। আওরংকের ঐ রাজ্য জনায়ানে জর করিতে পারিজেন, কিন্তু তাহার পর স্থানাত্তরগম-বের প্রয়োজন হইল, ভাহাতে ঐ দেশ জয় করিতে পারি- লেন না। যে প্রয়োজনে, স্থানান্তর গমন করিতে হইল ভাহার বিবরণ পশ্চাৎ লেখা যাইভেছে।

সাহজাহানের ঢারি পুত ছিলেন, জ্যেষ্ঠ দারা সেকো, দ্বিতীয় সুজা, তৃতীয় আওরংজেব, চতুর্থ মুরাদ। দারার অনেক সন্ত্র ছিল, তিনি সাহসী সরল এবং সৌজন্য-শীল ছিলেন, দোষের মধ্যে অত্যস্ত প্রচণ্ড স্বভাব, কাহার প্রাম্প শুনিতেন না, আপ্নি যাহা ভাল ব্রিতেন ভাহাই করিতেন। উাহার বিদ্যাও ভাল ছিল। তিনি আকবরের মতাবলম্বন পূর্বাক হিন্দুও মুসলমান্দিগের ধর্মবিরোধ ভঞ্জন করিয়া একথানি পুস্তক লিখিয়াছিলেন। सूजा विवान हिटलन, किछ भक्षण मना ও ইন্দ্রিय-सूर्यत वनीष्ठ्र थाकिएकन । आंखद्रश्रक्तव् सून्मद्र, माहमी, मन्।-লাপী ও ধীরবুদ্ধি ছিলেন, কিন্তু ভাঁচার স্বভাব অভ্যন্ত খল, চিত্ত সর্বাদা অনিশাল, এবং বৃদ্ধি নিভান্ত কুটিল ছিল, তাঁহার মনের ভাব কেহ বুঝিতে পারিত না। তাঁহার মুখে এমন মধুবৰ্ষণ হইত যে শক্ৰপৰ্যান্ত ভাষাতে ভূলিয়া ৰাইত। তিকি মুসলমান-ধর্মের অত্যন্ত গোঁড়া ছিলেন। লোকের সাক্ষাতে প্রকাশ করিতেন সংসার আশ্রম পরিভ্যাগ করিয়া হৈরাগ্য আশ্রম করিবেন। কিন্তু সইর্বাব विथा, मद्मत ভाव छादा हिन मा। सूत्राम वीर्यावान, व्यथित जेमात्रवित्र हिल्मन, किन्छ नर्यमा टेलिय त्यवाय নিযুক্ত থাকিতেন।

শাহজাহান স্থাপেকা ৰাবাকে ভাগ ধাসিতেন, এবং

इक्षावचार डाँहारक निकटि दाविया दाखकरमात अटनक-ভার অর্পণ করিয়াছিলেন। দারা পিতার আজানুবর্তী হইয়া সকল কর্ম করিতেন, এবং পিতার অবর্তমানে রাজা ছইবেন ইহাও নির্দ্ধার্যা হইল। অনস্তর রাজার একটা পীড়া ক্সন্মিয়া হঠাৎ প্রস্রাব বস্তা হইল, রক্ষার কোন আশা বহিল না, তিনি শ্যাগত হইয়া থাকিলেন। দার। এই পীড়ার কথা প্রকাশ নাকরিয়া আপনি রাজকর্ম্ম সম্পাদন করিতে লাগিলেন। কিন্দু রাজার পীডার কথা অপ্রকাশ রহিল না। সুজা ভাষা জানিতে পারিয়া জঁবি-লয়ে বল্পে হইতে সমৈন্যে আগ্রাতে যাতা করিলেন। मुत्राम एक द्वारित अवामात किलान, जिनि अधारि-अम গ্রহণ করিয়া আগ্রা গমনের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। ধুর্ত্ত আওরংজের বিরুদ্ধ ভার প্রকাশ না করিয়া বীর্যাবান অথচ উদারচরিত্র মুরাদকে আপনার উচ্চ আশার সো-পান করিয়া পতা লিখিলেন, আমি মক্লা গমন করিব, রাজত্বের আশা করি না, কিন্তু দারা অতি অধার্দ্মিক, " তিনি পিতাকে বন্ধিবেশে রাখিয়া আপনি আজত্ব করি-বীর মনস্থ করিয়াছেন। একর্ম অতি গঠিত, ইহা দেখিয়া আমি কোন প্রকারে নিরন্ত থাকিতে পারি না, অতএব তোশাকে লিখিতেছি যদি কুমি আমার সহায়তা কর ভবে৽

ৰুৱাৰ আক্ৰিবের মতামলখী ছিলেন এই জন্য তাঁহাকে অধ্-মিত্ৰ ব্যান্তন ।

আমি পিডাকে তাঁহার হস্ত হইতে উদ্ধার করি। তাঁহার-পর পিডাকে বুঝাইয়া যাহাতে তিনি দারাকে ক্ষমা করেন ভাহার চেন্টা হইতে পারে। আওরংজেব ঐ পত্রে শপথ করিয়া লিখিলেন ভাঁহার বাখা হইয়া চলিবেন, কখন ভাঁহার অনিষ্ট চেন্টা করিবেন না। মুরাদ আওরংজেন বের প্রভারণা বুঝিতে না পারিয়া ভাঁহার সঙ্গে মিলিয়া আগ্রাতে যাত্রা করিলেন।

ইতিমধ্যে সাহজাহান আরোগ্য প্রাপ্ত হইয়া আপনি রাজকার্য্য চালাইতে লাগিলেন, এবং সুজাকে পত্র লিখিয়া পাঠাইলেন তুমি কেন সংগ্রাম সজ্জা করিয়া আসিতেছ, বঙ্গদেশে প্রতিগমন কর। সুজা বিবেচনা করিলেন এই পত্র দারা লিখিয়া থাকিবেন, পিতা লেখেন নাই। অত্রব সেই আক্রা উল্লেখন পূর্বক ক্রমশঃ অগ্রসর হইতে লাগিলেন। তাঁহার সাপমন নিবারণার্থ দারার পুত্র সলীমান রাজ-সেনাধ্যক্ষ হইয়া যাতা করিলেন। বারাণসের সাদিশে সুজার সহিত যুদ্ধ হইল। সুজা এই যুদ্ধে পরাস্ত হইয়া বল্লিন।

এদিকে আওরংজেব মুরাদের সহিত মিলিয়। আঞালিজা গমন করিতে লাগিলেন। সাহজাহান এ সংবাদ পাইয়া জাহাদিগের গমন রোধ জন্য রাজা ঘশবস্ত নিংহকে প্রেরণ করিলেন। রাজা ঘশবস্তাদিগকে আটক করিলেন। আটক করিতে মহা মুদ্ধ হইল। রজঃপুত দেনাগণ জতি লাইকে

যুদ্ধ করিল, কিন্তু আর ২ রাজসেনা তাহাদের পৃঠপুরক হইল না, ভাহাতে যশবন্ত জয়ী হইতে পারিলেন না। এই যুদ্ধে মুরাদ অতান্ত বীরত্ব প্রকাশ করিকেন ৷ যুদ্ধ জয়ের পর ছই ভাত। আগ্রাতে যাতা করিলেন। °ইতি-মধ্যে সাহজাহান আগ্রা হইতে দিল্লী যাতা করিয়াছিলেন। युरखत मरवाम शाहेश ताज्यानीटङ फितिटनन, धवर আপনি বৃদ্ধে গ্রন করিবেন এই প্রতিজ্ঞা করিয়া রণসজ্জা করিতে আজা দিলেন। কিন্তু রূজ বয়সে পুত্রদের সহিত্ত সংগ্রাম করা সংপ্রামর্ণ হইল না। তাহাতে দারা রণসকল ক্রিয়া আগ্রা হইতে ঘাতা ক্রিলেন। সাহজাহান ভাঁহাকে অগ্রসর হইতে নিষেধ করিলেন, তিনি তাহা শুনিলেন না। তৎপুত্র সলীমান বারাণস হইতে আসিয়া ভাঁহার সঙ্গে একত হইয়া ঘাইবেন ভাছারও অপেক্ষা করিলেন না। আগ্রা হইতে একদিবসের পথ গমন করিলে জ্রাভাদিগের সহিত তীহার লাকাং হইল। ছই বৈনো ঘোরতর যুদ্ধ আরম্ভ হইল। দার। বিপর্যায় সাহসে যুদ্ধ করিতে লাগি-লেন, এবং ভাঁহার সমভিন্যাহারী রক্ষঃপুত ও উজবক হৈন-त्मादां अनान अकाद वीद्र य अकाम कदिए वाशिव। सूत्राम रुखी आद्राहरण के जकन रजनात नमारथ भमन कतिरनन । ভাছার হস্তী শত্রশবে কত বিকত হইয়া পলাইবার চেটা बहिल। মুরাদ লৌহখুঝলে তাহার পদ বন্ধন করিয়া ब्रासिट्सन। कडी लेबाइटङ लाहिल ना, मुहान गळ्ला छ बाकिया वृक्ष कतिट्ड माणिटमन । छारात छेलत छाति पित्र হইতে শরবর্ষণ হইতে লাগিল, তাঁহার হাওদাথানি শরে শরে সজার পিছার শরীরের ন্যায় হইল। আওরংজের অভারতঃ বীর্যারান্; অশ্বারোহণ করিয়া সৈন্যগণকে নানা-প্রকার উৎসাহ দান করিতে লাগিলেন। সেনাগণ অতি সাহসে যুদ্ধ করিতে লাগিল। এই প্রকার ঘোরতর যুদ্ধ হইতে লাগিল। কোন পক্ষে জয়াজয় নিশ্চয় হইল না। অনন্তর দারা যে মাতঙ্গ আরোহণ করিয়াছিলেন তাহার গাত্রে একটা বোমা প্রেবেশ করিল। বোমাঘাতে হস্তী অন্থির হইল। দারা তাহা দেখিয়া এক তুরঙ্গ আরোহণ করিলেন। তাহার সেনাগণ তাঁহাকে হস্তিগৃতে না দেখিয়া অনুমান করিল তিনি হত হইয়া থাকিবেন। ইহাতে সক্রে সেনার মহা আতঙ্গ হইল, সকলে রণে ভঙ্গ দিয়া প্লায়ন করিতে লাগিল। দারা পরাজিত হইয়া লক্ষায়

এবস্পুকারে সংগ্রাম জয় ইইলে আওরংজের নতজারু ইইয়া পরমেশ্বরের ধন্যবাদ করিলেন। তৎপরে মুরাদের সহিত সাকিৎ করিয়া ভাঁহাকে সম্রাট বলিয়া সম্ভাষণ করিলেন। তদনস্তর উভয়ে আগ্রার সম্পুথে সইসন্যে উপস্থিত ইইলেন। ভাঁহাদিগের আগমনে কেই প্রতি-

<sup>।</sup> আতি আশুর্য্য বিবেচনা করিয়া এই হাওদা খানি অনেক কাল পর্যান্ত রাজভাতারে রুক্তিত হইয়াছিল।

প্রকার অনুনয় বিনয় জানাইয়া আপনাদের দোষ পরিহারের প্রার্থনা করিলেন। কিন্তু সাহজাহান ভাহাতে
কর্ণপাত করিলেন না, তিনি জানাইলেন ভাহাদিগের
মুখাবলোকন করিবেন না, দারাকে রাজ্যের উত্তর্গাপিকারী
করিবেন। আওরংজেব দেখিলেন, পিতাকে হস্তগত
না করিলে কার্য্য সিদ্ধ হয় না। অতথ্য তৎপুত্র মহম্মদকে
আজ্ঞা দিলেন সাহজাহানের দুর্গ অবরোপ করেন, এবং
ভদ্মধ্যে কাহাকেও প্রবেশ করিতে না দেন। সমুম্মদ
ভাহাই করিলেন। সাহজাহান দুর্গের মধ্যে বন্দিবেশে
থাকিলেন।

আওরংজেবের মনে মনে যে অভিলাষ ছিল তাহা পূর্ণ হইল। মুরাদই ইহার মূলাধার, তিনি সাহায্য না করিলে এ আশাপুর্ব হইবার সম্ভাবনা ছিল না। কিন্দু যথন কর্মন্যাধন হইল তথন তাঁহাকে আপনার আশাপথের কন্টক জান করিয়া, ছই সহোদরে দারার পশ্চাৎ গমন করিতেং এক দিবস রাত্রে তাঁহাকে ভোজনের নিমন্ত্রণ করিলেন। মুরাদ ভোজন করিতে আসিলে আওরংজেম ভাহাকে অত্যন্ত মদ্যপান করাইলেন। আপনিও তাঁহার সক্ষেপান করিছে লাগিলেন। মুরাদ মদ্যপানে অজ্ঞান হইলে আওরংজেম তাঁহাকে নিয়ন্ত্র ও শৃত্যালম্ভ্র করিয়া একটা হত্তির পূতে আরোহণ করাইয়া দিল্লীনগরে প্রেরণ করিন্দ্রের প্রতে আরোহণ করাইয়া দিল্লীনগরে প্রেরণ করিন্দ্রের প্রতে আরোহণ করাইয়া দিল্লীনগরে প্রেরণ করিন্দ্রের প্রতি আরোহণ করিয়া হত্তির পূতে আরোহণ করিয়া ছিল্লীনগরে প্রেরণ করিন্দ্রের প্রতি আরোহণ হত্তি হত্তি বেই ভাবে আর তিন দিলে পাঠাইলেন। ইহাতে তাঁহার বন্ধুবান্ধ কেই তাঁহার

উদেশ পাইল না। অনস্তর আওরংজের তাঁহাকে গোয়ালিয়রে \* বলীবেশে রাখিয়া, আপনি দিল্লীনগরে রাজ্য

হিং ১০৬৮
খু ১৯৫৮ আগর্য ২০
কং ১৭৬০ ভাজ।
আহণ করিলেন। কিন্তু তথন
আপন নামে মুদ্রান্ধন করাইলেন না। তৎপরে সায়ৎসরিক রাজাভিষেকের দিবসে
রাজ্যুকুট গ্রহণ করিয়া প্রক্তরূপে রাজ্যারস্ত করিলেন।
সাহজাহান রাজ্যুপুথে বঞ্চিত হইয়া বন্দীবেশে থাকিক্রেন। ভিনি এই অবস্থায় সাত বৎসর জীবিত ছিলেন।
ভাছার পর, ৭৪ বৎসর বয়সে ভিনি পরলোক গমন
করেন। ভিনি ৩০ বৎসর রাজত্ব করিয়া, ৬৭ বৎসর বয়সে
রাজ্যুত্ত হয়েন।

সহজাহানের সময়ে ভারতবর্ষের যে প্রকার লক্ষ্মীর প্রীছিল, আর কোন রাজ্ঞার রাজহুকালে সেরপ হয় নাই। সাহজাহান অন্যান্য অনেক ২ রাজ্ঞার সজে সংগ্রাস করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু তাঁহার নিজরাজ্যে কোন যুদ্ধবিগ্রহ
ছিল না। তিনি আপনি বিলাসপ্রিয় ভিলেন, শারীরিক
মুখ্যের জন্য সভত কাশ্মীরে বাস করিতেন, ভদ্রিয় শোভন
অটালিকাদি নির্মাণে ও নগরের শোভাবর্জনে নিয়ত
মনোযোগী থাকিতেন। কিন্তু এই সকল করিয়াও প্রজার
মুখ্যছন্তা বিষয়ে কখন অবহেলা করেন নাই। প্রজা

<sup>•</sup> অতঃপর গোয়ালিয়র রাজ্য কারাগারের ন্যায় চইয়াছিল। বাহারা রাজার অঞ্চিয় হইতেন বা রাজবিজোরী হইতেন তাহা-দিয়ারে এই স্থানে বন্ধ করিয়া রাখা যাইত।

কিপ্রকারে সুথে থাকিবে নিয়ত এই চিন্তা করিতেন।
বিচার কর্মে বিজ্ঞ প্রধানিষ্ঠ মনুষ্য নিযুক্ত করিয়া বিচাণরের প্রণালী এমত উত্তম করিয়াছিলেন, যে তক্তপ বিচার ভারতবর্ষের ভাগো আর কখন ঘটে নাই। অধিকস্ত প্রজার হিতকর অনেক কর্ম করিয়াছিলেন। থাকি থা নামে এক মুসলমান-ইতিহাসলেথক লিখিয়াছিলেন, আকবর জনেক দেশ জয়, এবং অনেক সুন্দর ২ বাবস্থা করিয়া গিয়াছেন বটে, কিন্তু সাহজাহান যে প্রকারে রাজক্র্মে নির্মাহ, রাজস্ব সংগ্রহ, ও বিচারকর্মের সুনিয়ম করেন, অন্য কোন রাজা তক্রপ করিতে পারেন নাই।

অন্য রাজাদের রাজশাসনের সহ তুলনা করিয়া যদিও
সাহজাহানের রাজশাসন উত্তম বলা যায়, কিন্তু একন্ট্রিঞ্চ
রাজতক্রে বেসকল দোষ সম্ভব তাহা সাহজাহানের রাজত্ব
কালে না ছিল এমত বলা যায় না। তিনি যে সকল করসংগ্রহকারক নিযুক্ত করিয়াছিলেন তাহারা অবশ্যই কথন
না কথন অন্যায় কর লইত। বিচার কর্মে যেসকল লোক
নিয়োজিত ছিল তাহারা কেহ না কেহ অবশ্যই উৎজোচ
গ্রহণ করিত। যাহারা শুলক সংগ্রহে নিযুক্ত ছিল তাহারাজ সাধুদিপকে নির্যাতন করিত। কিন্তু এ সকল বিবেচনা
করিয়াও ইহা বীকার করিতে হইবে সাহজাহানের রাজত্ব
ভালে দেশ বেমন লক্ষীবন্ধ ও প্রজারা যেমন সক্তন্দে ছিল
করা কোন রাজার সময়ে রেজপ্র ছিল না।

कार्यक मारम अक मारहर अकल्पन नात्रपात चानिया

ছিলেন, তিনি লিখিয়াছেন প্রজার প্রতি রাজার যেঞ্জার ব্যবহার কর্ত্ব্য, সাহজাহানের সে প্রকার ব্যবহার ছিল না। তিনি সকল প্রজাকে সন্তানের ন্যায় দেখিতেন, কাহার প্রতি কাহাকে অন্যায় করিতে দিতেন না, প্রজার। ভাঁহার রাজ্যে নির্ভয়ে ও আনন্দে থাকিতেন।

यथन मिलीनशदत ताक्यानी, उथन ताका अका मकरनत প্রতি লক্ষ্মীর রূপীদৃষ্টি ছিল, ইহার কিছুদাত সন্দেহ হইতে পারে না। এ সময়ে পার্ম রাজ্য অতি প্রতাপ-শালী, তত্তলা ভারি রাজ্য আর ছিল না। কিন্তু মন্দিসোল নামে এক সাহেব লিখিয়াছেন পারস্থানের রাজধানী ইম্পাহান অপেকা আগ্রানগর অনেক বড ছিল, এবং ভাষ্টার পথী, ঘাট, পণ্যালয় পথিকপাস্থ অতি মুন্দর ২ ছিল। এই সকল লক্ষ্যীর চিত্র তাহার সন্দেহ কি। ধন ও মরুযোর মনে মুখ না থাকিলে নগরের শোভা বর্জনে কাছার যত হয় না। কিন্তু কেবল রাজগানীতেই উত্তম উত্তম অটালিকাদি ছিল অন্য অন্য স্থানে ছিল না এমড नरह, मंक्न नगदत ও ताकथानी श्टेटल एतवर्जी अंत्मरण অনেক অনেক অটাকাদি ছিল, ভাহা অতি রুমা ও উত্তম। वंगा मिंग इहेटि य मकल लिएकेदा अम्मिन खर्मन করিতে আদিয়াছিলেন ভাহারা মুক্তকঠে ভাহার প্রশৎসা क्रियाट्डन ।

থাহারা ভারতবর্ষের বর্তমান অবস্থা অবলোকন করিতে-ছেন ভাঁহারা এমত অনুমান করিতে পারেন পূর্ব লেখ- কেরা ইহার অত্যধিক প্রশংসা করিয়াছেন। এমত অনুমান অমূলক। অনেক অনেক প্রাচীননগর এইক্লেন্থে হইয়াছে, অনেক হাজালয় কালবলো ভূমিসাং হইয়া গিয়াছে, অনেক অনেক প্রশালী অবকর্দ্ধ হইয়া রহিয়াছে, অনেক অনেক জললের মধ্যে রমাহ হর্দ্যা সরোবর ও পাষাণময় ঘাট দেখা যাইতেছে। ইহাতিগ কত কূপ প্রকিপান্থ ও রাজপ্র ভগ্নীবন্ধায় দেখা যায় তাহার সংখ্যা করা অসাধ্য। এইসকল দেখিয়া অকশ্য বোধ করিতে হইবে পুর্বে এই দেশে লক্ষ্মী বিরাজমানা লেন, লোক সকল অতি ধনবান ছিলেন, রাজা প্রজার

তবে একথা স্বীকার করিতে হয়, ভারতবর্ষের তবিৎ
স্থান সমান ছিল না। অনেক স্থান জনলে পূর্ণ ছিল, এবং
পর্বতাঞ্চলে অসভা লোক বাস করিত, ভাহারা লুঠপাঠ
করিয়া সংসার্থানা নির্বাহ করিত। বুন্দলগও প্রভৃতি
যে স্থানে জনল পরিষ্কৃত হইয়া লোক বাস করিয়াছিল
তথাকার অধীন রাজারা নধ্যে মধ্যে বিজ্ঞাতি প্রভৃত ইইতেন। সাহজাহানের রাজস্কালেও এবস্তৃত বিজ্ঞোহাদি হইমছিল, কিন্তু ভাহাও কদাচিৎ। আর আর প্রান্ত করিয়াছিল, বিজ্ঞাহাদির কথা প্রায় গুনা বাম নাই।
ভারতবর্ষে সকল মুসলমান রাজারা রাজস্ক করিয়া
ভিত্তিবর্ষি সকল মুসলমান রাজারা রাজস্ক করিয়া

स्विक हिन । जिनि पूर्व २ द्वाकानिरगद करनका द्वनाना,

লোক লক্ষর, সভার শোভা, অনেক রন্ধি করিয়াছিলেন। ইহাতে ব্যয় বাহুলা হইয়াছিল, কিন্তু তিনি কর রন্ধি করেন নাই, তথাপি খরচপতের টানটোনি ছিল না। অতি অপ্রিমিত বায়ের মধ্যে তিনি একখান সিংহাসন প্রস্তুত করিয়া ছিলেন, তাহা ন্যুরাক্তি। ন্যুর, পুচ্ছ विस्ताद कविशा शांकित्व यमन प्रथाश निश्शामन शानि প্রকৃত সেই প্রকার হইয়া ছিল, এবং ষেখানে যে প্রকার রঙ সেই খানে দেই রঙের রায়াদি মণ্ডিত হুইয়া ছিল, এ সকল রড় ও মণির প্রেখর জ্যোতিতে চক্ষের মণি প্রথারিত হইত। তাবর্ণর নালে যে রল্পরীক্ষক সাহে**র**ু ভারতবর্ষে আসিয়াছিলেন, তিনি লিখিয়াছেন ঐ সিংহ সক্রে বেশ্বত ও মণি খচিত হইয়াছিল, ভাহার মূলা অম্বান সাত কোটী মুদ্রা হটবে।

গুলাদি নির্মাণেও সাহজাহানের অতিশয় অনুরাগ ছিল, এবং তাহাতে স্বধিক ব্যয় ভ্ষণ হইয়াছিল। দিলী-তে তিনি এক স্থাতন নগর নির্দাণ করেন, তাহার গঠন ও শোভা প্রথ নগর অপেকা অনেক মনোহর। এক आखरतत मधा खुल यसूनात छेलात धाखतमम आंहीतत ৰেষ্টিত এক রাজপ্রাসাদ নির্মাণ হইয়াছিল। এ প্রাসাদে পাসিবার তিনটা অতি প্রশস্ত পথ ছিল। এক পথের মধ্য দিয়া একথাল বাহির হইয়াছিল, তাহার ছইধার বুক ও উত্তম উত্তম গুহে মুশ্যেভিত, গুহের নিম্ন ভাগে পर्वालय। ताकवातित मद्धा वक वक त्य मकल मकाञ्चान সংমান্ত্রের দাসান ও স্বর্ণময় শুম্বেজ করিয়াছিল তাহার শোভা ও পারিপাটোর কথা কি লিখিব, যে সকল লোকেরা তাহা দর্শন করিয়াছেন তাঁহারা তাহার প্রশং-দার চূড়ান্ত করিয়া গিয়াছেন। তদ্বিদ্য দিলী নগরে এক মসজীদ আছে তাহা অতি অপুর্ম, সেপ্রকার মসজীদ আর কোথাও দেখা যায় না। ঐ মসজীদের শিপ্সকর্মা যেমন মনোহর তাহার সৌন্দর্যাও তভুলা। যে ব্যক্তি ঐ মসজীদ নির্মাণ করেন তাহার বুদ্ধিকে সহত্র সূহত্র ধন্যবাদ করিতে হয়।

কিন্তু সাহজাহান যে সকল অটালিকাদি নির্মাণ করান ত্রাধ্যে আগ্রাতে তাজগহলই প্রধান, তাহার সহিত আর কোন গৃহের তুলনা করা যাইতে পারেনী ব্যান্তাজমহাল নামে সাহজাহানের এক মহিনী ছিলেন, তিনি লোকান্তর গমন করিলে সাহজাহান তাহার ন্যরণার্থ মনতাজমহাল নামে এই অপুর্ব্ব সমাধিমন্দির নির্মাণ করেন। মমতাজমহাল নামের অপজংশে একণে তাহাকে তাজমহাল নামের অপজংশ একণে তাহাকে তাজাক বলা যায়। এই সমাধিস্থান শ্বেত উল্লেখ্য কোনা হিত্য বাল বাছাল তাহার সোম্বাণ ও শিপ্প নৈপুণা দেখিলে অভ্যান্ত ও মূল্যকান অটালিকা আসিয়া বা ইউরোপ যথেও অপর্যান্ত আরু প্রায় ভূটিগোচর হয় নাই। এই তাজনাক্র নার্মাণ কত বাল হইয়াছিল তাহা কেই সন্ধ্যান

ক্রিয়া বলিতে পারেন না। এই সকল ব্যাবাছল্য-कर्मा माहळाहान जात्नक थन वास कतिसाहित्वन। वित्मय, কান্ধারের যুদ্ধযাতাতে ও বক্তিয়ার সংগ্রামে অসম্বা অর্থ বায় হইয়াছিল। তদিলে নিয়ত চুই লক্ষ্ অখারোহী সেনা রাজকর্দ্মে নিযুক্ত পাকিত। এবং আর আয়ে অনেক বায় ছিল। এই সকল নির্বাহ করিয়া সাহস্কাহানের রাজ্য অব-শান কালে নগদ ২৪০০০০০০ টাকা রাজভা গ্রারে স্থিত ছিল। এত্তিম সোণা রূপার্ড ও আর আর বহুমলা দ্রব্যাদি কত ছিল তাহার সন্ত্যা নাই। ইহাতে অনুমান করা যাইতে পারে তিনি অতি বিবেচনা পূর্বক অর্থ ব্যয় করিতেন। বছবায়ী হইয়াও কিছুমাত্র অপবায় করিতেন ন‡। অতি সচ্ছলরূপে খরচপত্র করিয়াও তিনি এত সঞ্চয় করিয়া গিয়াছেন, ইহাতে তাঁহাকে অতান্ত পন্যবাদ করিতে হয়।

ষৌবনাবস্থাতে সাহজাহানের চরিত্র ভাদুক প্রশংসনীয় ছিল না, কিন্তু রাজত্বের ভার গ্রহণ করিয়া তাঁহার চরিত্রে কোদ দোষ দেখা যায় নাই। তিনি প্রজাদিগকে প্রতের ন্যায় দেখিতেন। প্রজাদিগের তঃখের কথা শুনিলে সহত্র কর্ম ত্যাগ করিয়া অগ্রে তাহার প্রতিকার করিতেন, এমত প্রজাবৎসল বাজা আর দেখা যায় নাই।

## ছাবিংশ অধ্যায়

## वा ७ दश्ट कर ।

আওরংকের সিংহাসনার্চ হইয়া আলম্গীর অর্থাৎ জগজ্জয়ী নাম ধারণ করিলেন। তৎপরে তিনি দারাকৈ হিং ১৯৬৮ বিরু করিবার চেটা করিতে লাগিলেন। শু ১৯৫৮ দারা দিলীতে প্রস্থান করিয় ছিলেন, আওরংজেবের আগমনে তথা হইতে লাহোরে পলায়ন করিলেন। সলীমান তাঁহার সাহায্যে গমন করিতে ছিলেন। আভরংজেবের কৌশলে তাঁহার সেনাগণ তাঁহাকে পরি-ত্যাগ করিল। তাছাতে তিনি নিরাশ্রায় হইয়া শ্রীনগরের রাজার শরণ লইলেন। শ্রীনগরের রাজা তাঁহাকে আশ্রয় না দিয়া কারারুদ্ধ করিয়া রাখিলেন। অনস্তর আওরংজের मोतात शन्ठाकावमान रहेटलन । थे नमद्यं सूका मिलीताका অধিকার জন্য বলদেশ হইতে পুনর্কার যুদ্ধযক্তাতে যাতা ्रक्तिरंगन। व्याउत्रराज्य वाहे मरनाम शाहेगा मातारक ুপরিত্যাগ পূর্বক ভাঁহার নলে যুদ্ধার্থ কিরিলেন। মুলা नामा शांत्र रहेटल बलारावाम ७ हेट्डोसात मधायटल कान-

য়াতে ছাউনি করিলেন। আওরংজের তথায় উপস্থিত হইয়া তিন দিন অবস্থিতি করিলেন। উভয় সেনা সম্থা-সন্মৃথি হইয়া থাকিল, কিন্তু সংগ্রাম করিল না। ইতিমধ্যে মুক্তা ভাতার পক্ষ রাজা যশবস্ত সিংহের সহিত মস্ত্রণা कतित्वन प्रदेखरम अरक्षाद्य प्रदेषिण श्रेट्ट पाउँदर्र अ-বকে আক্রমণ করিবেন। আওরৎজেব এই মন্ত্রণার কিছুই জানিতে পারিলেন না। চতুর্থ দিবস প্রভাবে আওরং-জ্বেব দৈন্য সজ্জা করিয়া যুদ্ধারম্ভের উদ্যোগ করিতে-ছেন, ঐ সময়ে যশবস্ত সিংছ পূর্বে পরামর্শানুসারে আও-রংজেবের পশ্চাতের সেনাদিগকে আক্রমণ করিলেন। কিন্তু মুক্তা ফুর্যোদয়ের পুর্বেষ অগ্রসর হইতে পারিলেন মা, এজন্য রাজা যশবস্ত একাকী কিছু করিছে না পারিয়া যুদ্ধক্ষেত্র হউতে সইসন্য অন্তরে গিলা থাকিলেন। পরে ছুই ভাতার সংগ্রাম আরম্ভ হইল। সুজা পরাজিত হইয়া यरमर्भ अञ्चान कतिरमन । ब्राजिश्व गरमाम अ गित्रक्रमण তাঁহাকে ভাডাইয়া চলিলেন।

শারা এই অবকাশে গুজরাটে গমন করিলেন, এবং তজ্ঞ শাসনকর্তা তাঁহার পক্ষ হওয়াতে তিনি এ দেশের কর্তা হইয়া রাজা বশবস্ত সহিত সম্পুতি করিবার চেটা করিলেন। রাজা বশবস্ত সিংহ অসীকার করিলেন তাঁ-হার পক্ষ হইয়া মুদ্ধ করিবেন। এই আখানে দারা তাঁহার নিকটে যাতা করিলেন। কিন্তু মুর্ত আওরংজেব তাঁহার বুরিরা তাঁহাকে আপনার বদীভূত করিয়া রাখিলেন, জাতার পক্ষে যাইতে দিলেন না। সুতরাথ যথন দারা তাঁহার অতি নিকটবর্তী হটলেন, তখন তিনি তাঁহাকে বলিয়া পাঠাইলেন তাঁহার সহিত নিলিতে পারিবেন না। দারা তাঁহার আম্বাদে নিরাশ ইইয়া আথান্তরে পড়িলেন। অগ্রপশ্চাৎ কোন দিগে যাইতে না পারিয়া আজমীরের পর্বতে উঠিয়া চতুর্দিপ গড়বন্ধন পুর্বক থাকিলেন। আওরইজেব আগ্রা হইতে তথায় যাইয়া ক্রমাগত তিন দিন পর্বতে তোপ করিলেন। তৎপারে যুদ্ধের আজ্ঞা দিলেন, এই যুদ্ধে গুজরাটের শাসনকর্তা হত হইলেন, এবং দারা একেবারে তগ্নোদান হইয়া পলায়ন করিলেন। তাঁহার সেনাগ্র ছিল ভিল হইয়া পড়িল।

এই বিজাটের পর দারা আট দিন আট রাত্রি অশেষ ক্লেশ পাইয়া, এবং মধ্যে ২ অসভ্য লোককর্ত্ক আক্রান্ত ইয়া নিভান্ত অনুগত কতকগুলিন লোক সমভিব্যাহারে আইম্মদাবাদে উপস্থিত হইলেন, কিন্তু ডক্রন্থ রাজা ভাঁহাকে নগর প্রবেশ করিতে দিলেন না। দারা নির্ক্ত-পায় হইয়া কচে যাত্রা করিলেন। কচাধিপভির সহিত প্রবেশ ভাঁহার যথেক প্রথম হইয়াছিল। কিন্তু তিনি ভখন ভাঁহাকে হতাদর করিলেন। ভাহাতে তিনি কান্ধারে বাত্রা করিয়া সিন্ধুর প্রকামাবর্তী জুইন রাজ্যে উপনীত হই-লেন। পাঠানজাতীয় এক ব্যক্তি ঐ হানের অধ্যক্ষ

অতএব উাহাকে অভান্ত মত্নপূর্বক রাখিলেন, কিন্তু পরে বিশাস্থাতকতা পূর্বক তাঁহাকে লইয়া আওর্ংজেবের रुख मध्रभी क्रिलन । पाता पिली उ चाग छ हरेल, আওবংজেৰ তাঁহাকে শৃদ্ধলবন্ধ ক্রিয়া এক সামান্য হন্তী-তে আরোহণ করাইয়া সকল নগর ভাষণ করাইলেন। তীহার এই ফুর্দশা দেখিয়া নগরন্ত লোকের। নানাপ্রকার थम अकाम कतिएक नाशित्सन। श्रतिम कृष्टेनः प्रिश्वि নগঁতে বাহির হইয়াছিলেন, তাঁহাকে দেখিয়ী নগুরুস্থ লোকেরা চারিদিশ হইতে তাঁহার উপর প্রস্তর ও ডেলা वर्षन कविटल लानिल। हेशटल फाँशिव खान यहिनाव লক্ষণ হইয়াছিল কেবল প্রহরীরা তাঁহাকে রক্ষা করিল। ° কিয়দিবস পরে আওরংজের এক সভা করিয়। আপন মতত্ত কতকণ্ডলিন মৌলবীকে আজা দিলেন, ভাঁহাল मात्रात व्यभताध्यत विठात करत्र । त्योनवीता शुक्त छेल-দেশারুসারে বিচার করিয়া বলিলেন, দারা মুসলমান পর্ম বন্ধিত, অতএৰ তাঁহার প্রাণদণ্ড করা উচিত। এই ব্যবস্থা करम खां छत्र १ कर मात्रीत छा। भर छत्र खांका भिरत्यन । খাতক পুরুষেরা তাঁহাকে কারাগার হইতে আনয়ন ক-.রিতে গিয়া দেখিল, পাছে কেহ বিষাক্ত দ্রব্য ভক্ষণ করাইয়া ভাঁহার প্রাণ বধ করে, এজন্য ভিনি ও তাঁহার পুত্র উভয়ে विनिया अवस्था मञ्जू कनार तक्कन क्षिएउट्टन। मार्ज चाछक शुक्रविमादक मिश्री अञ्जलानि इहेवा माँजाहरणन । याजन चुसरवहा छाहारक आक्रमण क्रांतरन, जिनि वीरवव

ন্যায় তাহাদিগের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। কিন্তু অবশেষে তাহারা তাঁহার মন্তক ছেদন করিয়া আওরং-জেবের নিকটে লইয়া গেল, এবং উাহার মৃতদেহ হস্তি-পৃষ্ঠে তুলিয়া তাবং নগর প্রদক্ষিণ করিতে লাগিল। দারার ছিল মন্তক আনীত হইলে, আওরংজেব ভাহা ধৌত করিতে আজ্ঞা দিলেন। মন্তক গৌত হইলে মখন তিনি দেখিলেন এ ছিল মন্তক তাঁহার ভাতার, তখন কপটভাবে বিলাপ করিতে লাগিলেন। তংপরে ভাহা হুমায়ুর্নের গোরস্থানে কিশাত করিতে আজ্ঞা দিয়া, তাঁহার পুত্রক গোয়ালিয়রের হুর্গে চিরবন্দী করিয়া রাখিলেন।

রাজপুত্র মহম্মদ ও মিরজুমলা সুজার পশ্চাদ্ধারমান
হইয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহাদের ঐকবাকা ছিল না, মির্নজুমলা যাহা ইচ্ছা করিতেন, রাজপুত্র প্রতিমৃত্তির নাায়
ধাকিতেন। ইহাতে তাঁহার অন্তঃকরণে ঘৃণা জন্মিয়া তিনি
জ্যেষ্ঠ ভাতের সহিত প্রণয় করিলেন। মুজা ঐ প্রণয় দৃঢ়
করণার্থ ভাহার সহিত আপন কন্যার বিবাহ দিলেন।
আওরংজের ইহা শুনিয়া অভিশয় বিরক্ত হইলেন।
কিয়দিরস পরে রাজকুমার মিরজুমলার সহিত সাকাৎ
করিতে গিয়াছিলেন, শুখন মিরজুমলার সহিত সাকাৎ
ভাহাকে বলী করিয়া পোয়ালিয়রে পাঠাইয়া দিলেন,
ভ্রায় ভিনি চিরলনী হইয়া থাকিলেন। তৎপরে মিরজালা সুজার সহিত মুজারত করিলেন। মুজা প্রথমভঃ
ভাকাতে, তদলভার মন্তর্গের, পলায়ন করিলেন। ঐপসভঃ

তাঁহার এবং ভাঁহার পরিজনগণের কি গতি হইল ভাহা প্রকাশ নাই ৷ মগরাজ ভাঁহাকে বিনাশ করিয়াছিলেন এই জনশ্রুতি প্রবল।

ইতিমধ্যে জ্রীনগরের রাজা দারার পুদ্র সলীমানকে কোন কারণ বশতঃ আওরংজেবের হল্তে সমর্পণ করি-লেন। আওরংজের তাঁহাকে দিল্লীতে আনাইয়া তং-পিতার ন্যায় ভাঁহাকে একটা সামান্য হস্তিপুঠে আরোহণ প্রকার নগর ভ্রমণ করাইলেন। সলীমান অতি মুপুরুষ ছिলেন, তাঁহার বীরবৎ আঞ্জতি অবলোকন করিয়া অনে-কের অঞ্পতন হইল। অনস্তর যথন রাজভুত্যেরা ভাঁহা-কে নগর প্রদক্ষিণ করাইয়া রাজ্যভাতে উপস্থিত করিল, •আওরংজের উাহার মনোহর রূপ দেখিয়া মনে মনে ্ব্যাকুলিত হইলেন। সলীমান বলিলেন মহারাজ আযার প্রাণ দণ্ডের ইচ্ছা করিয়া থাকেন করুন, তাহাতে আমার थिम नारे, किन्तु आंगांदक यनुना मान कहित्तन नाः আওরংকের বলিলেন, সলীমান ভোমার প্রাণদ্ভ করি ইছা আমার বাসনা নহে, কিন্তু তুমি রাজ্যলোভে আমার অনিই চেটা না কর এজনা আমার সাবধান र अम् । छेहि छ । ইहा विनम्म छाहादकः भामानियद्वत छूटर्भ পাঠাইয়া দিলেন, তথায় তিনি চিরবন্দী ছইয়া থাকি-

কিছুকাল পারে মুরাদ কারাগার হইতে পলায়নের कियो क्रिक्ति। आश्वर अव छारा अनिया विद्यहम। করিলেন যদি তিনি পলায়ন করেন তবে পুনর্কার উৎপাত ঘটনার সম্ভাবনা। অতএব মনে মনে তাঁহার প্রাণদগু কপানা করিলা অনুসন্ধান দারা জানিলেন তিনি গুজরাট-দেশহ কোন ব্যক্তিকে হত্যা করিল।ভিলেন, অতএব তাঁহার পুত্রকে ডাকাইয়া উপদেশ দিলেন যে পিভৃহন্তা বলিয়া সে মুরাদের নামে অভিযোগ করে। রাজার উপদেশ মতে এ ব্যক্তি তাঁহার নামে অভিযোগ করিল। আওরংজেব এ স্থাত্ত তাঁহার প্রাণদণ্ডের আজ্ঞা দিলেন।

এই রূপ রাজকুল নির্দাল, অর্থাৎ ভাতা ও ভাতুম্পুত গণকে সংহার ও কারারজ্ঞ করিয়া আওরংজের সচ্ছলে রাজত্ব করিতে লাগিলেন, তাঁহার শহ্মাত রহিল না। किन्छ गित्रज्ञमला उৎकारल यज्ञरमरभंत सूरामात श्रेग्नाञ्च-• লেন। তিনি অত্যন্ত সংহসী ও বীর্যাবান। পাছে রাজ্য লোভ করেন এই ভয়ে তাঁহাকে ব্রহ্মপুত্রের সামিধো আসাম দেশে পাঠাইয়া ঐ দেশ জয় করিতে আজ্ঞা দিলেন ! মির-জুমলা তরিহোগে আসানে গমন করিয়া ঐ দেশ জয় করি-লেন, এবং তথা হইতে অহন্ধার পূর্মক রাজাকে পত निभित्नन आगि धथान इटेट हीन प्रत्य यादा कतिव, खे দেশ অধিকার না করিয়া ফিরিব না। ইহা বলিয়া তিনি हीन्द्रात्भं शमन क्रिटनन । किन्न वर्षात्रह्य छाँशात्र देशना-भद्भंत आहातीय जनामि পाउमा हुर्घछ रहेन, उर्पाद চীক্ষেশীয় লোকের চারি দিগ হইতে ওাঁহাকে আক্রমণ कहिला। अधिकन्त, डीबात देशदगात मट्या महामाही खेल-

স্থিত হইল। এই সকল কারণে তিনি তথায় তিষ্ঠিতে না পারিয়া ঢাকাতে ফিরিয়া আসিলেন। তথায় শ্রম ও পীড়াতে অভ্যন্ত কাতর হইয়া পড়িলেন। ঐ পীড়া কোন প্রকারে উপশ্য হইল না। ভাহাতে তিনি সেইখানে কলেবর ভাগে করিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর আগুরং-জেব, তাঁহার পুত্র আমীনকে তৎপদাভিবিক্ত করিয়া বলিলেন ভোমার পিতা আমার পর্য বন্ধু, কিন্তু তিনি অতি বীরপুরুষ ছিলেন, সুতরং আমাকে ভাঁহাকে ভয় করিয়া চলিতে হইত, তাঁহার প্রলোক গমনে আনার দে শব্ধা দুর হইয়াছে।

এবস্পারে আওরংজেবের সকল শতে নিপাত হইলে তিনি নিশিচত হইয়। সজ্জ মনে রাজ্য করিতে লাগি-লেন। কিয়দিবস পরে তাঁহার অতাম্ভ গীড়া জনিল, তথন ব্রিতে পারিলেন জীবন ও ঐয়র্ঘ্য সকলি মিথ্য।। তথাপি লোভশুনা হইতে পারিলেন না। কিয়দিবস পরে রাজ্যের মধ্যে নানা প্রকার কুমন্ত্রণা আরম্ভ হইল, ক্ষেত্র কেহ পরামর্শ করিলেন ভাঁহাকে পদচ্যত করিয়া। শাহজাহানকে পুনকার সিৎহাসনারোহণ করাইবেন। **क्ट व्हर्वश**र्था कतित्वन, आश्वतश्रकतित विछीय पूज মোউজমকে রাজ্যাপণ করিবেন। কেহ বা তাঁহার তৃতীয় विक काक्दब्रक ब्राजा कतियात मनन्छ कतिरलम। किन्छ <u>क्टिं किंद्रे किंद्र के किंद्र भारित ना। आंध्रश्टक वर्ष देखि-</u> ৰৌশলে সকল মস্ত্ৰণা বিফল হইল।

তদনন্তর আওরংজের বায়ু পরিবর্তন জন্য কাশীরে গমন করিলেন। এই সময়ে মোগলদিগের সহিত মহারাষ্ট্রীয়দিগের প্রথম যুদ্ধ হয়। ইতিপুর্বে মহারাষ্ট্রীয়েরা নামলন্ধ মনুষ্য ছিল না। কিন্তু ক্রমে তাঁহারা অত্যক্ত প্রবল ও পরাক্ষান্ত হইয়াছিল। অত্যব এক্ষে তাহাদিগের পুর্বে বিবরণ কিঞ্চিৎ লেখা যাইতেছে।

नर्मानां प्रकारण रेमानवली अवधि य एम्स आंद्रश्च इहे-याद्य टाहारे महाताक (मन) हेहात श्रुक्तीमा वतुमा नमी, পশ্চিম भीमा ममूख, এবং পোয়ার রেখা পর্যান্ত ইহার দক্ষিণ সীমা। ঘাটনানক পর্বতেশ্রেণী এই দেশের মধ্যদিয়া গিয়াছে। এ পর্বতের পশ্চিমে সমুদ্র পর্যান্ত যে ভৃথগু আছে ভাহাকে কনকান বলা যায়। ইহার প্রাচীন নাম পরশুরামক্ষেত্র। অতি প্রাচীন কালে নহারাই দেশে গুণি নামে এক বন্য জাতি বাস করিত। পুরাণে ইহার কোন নিদর্শন পাওয়া যায় না, কিন্তু ভাহাতে लाय शोमावती अ कारवतीत मधास्त्रिक मधकात्रेग ताव-ণের অধিকার ছিল, এবং তিনি রামন্ত্রী নামে এক বট্ট্যা-কর জাতিকে ঐ ভূমি দান করেন। বছকাল পরে ডুগরা নামে এক নগর ঐ দেখে অতি প্রসিদ্ধ ছিল। জন্ঞতি জাতে নিসর এবং ধবন দেশ হইতে বণিকেরা এই স্থানে বালিকাৰি জানিতেন ৷ মহারাজ বিক্রমাদিতোর সময় প্রবিশ্বন নামে কুছুকার জাতি এক বাজি অভান্ত প্রভা-शीविष्ट हरेशा कहे नमस रम्भ अधिकात करवन, बर्द

ভুগরা হইতে রাজধানী উঠাইয়া প্রভৃত্বান নামক এক नगरत ताजधानी करतन। भानिताहरनत शृर्क काभन व्यर्था व्यवस्थातिक विष्यु क्रिकेट क्षेत्र किल्हा स्थानक वक রাজা এই দেশে রাজত্ব ক্রিভেন। শালিবাহন ভাঁহাকে সবংশে বিনাশ করেন, কেবল একটা জীলোক ভাঁহার শিশু সন্ধানকে লইয়া বিদ্যাগিরি মধ্যে প্রবেশ করিয়া প্রাণ রক্ষা করেন। চিতের এবং উদযপুরের রাজার। भड़े बर्ट्साइट । महाताचे ट्रीट्यता ७ महे वर्सीय।

উপর হিম্মুস্থান বা দকিশ অঞ্চল আর আর হিম্মু-দিগের যেমন আচার ও বারহার, মহারাইটুদিগের সে-প্রকার নহে। ইহারা থকা ও মর্কটাকার, অভ্যন্ত পরি-শ্রম-পারণ, অত্যন্ত চতুর, কাহার কথার আপন যার্থ विश्वृष्ठ इस ना, अवर रेग करमा अब्रुख इस छाइरेन अक প্রকার শেষ না করিয়া ছাড়ে না! পুর্বের ইহাদিগের রাজা বা রাজপাঠ ছিল না। তাহাদিগের প্রধানেরা পুত পৌরাদিক্রমে গ্রাম বা জিলার প্রধানত্ব করিতেন। ইং-बोकी शक्तम भाजाकीत शृद्ध सूमलगानित्वत हेजिहाटम रेशांक्टिशत नात्मादस्थ भगास हिल ना, त्याक्रभ भाजांकीत প্রাক্ত অবধি বিজয়পুরের রাজারা পারন্য ভাষা রহিত किया बाजनका कींग करमा महाताची व जावा वाबहात, वर्षा स्थानार्क महात्राचे दहनीय दलाकनियदक नियुक्त करवेका अस्त अविशेषक अकारवाहरम केन शुना स्मित्रा मात्र वेश्वनेत्रा कावानिनाक त्यांत्राक कर्ण निवृत्त

করিতে লাগিলেন, কিন্তু তথনও তাহাদিগের নাম বড় প্রকাশ ছিল না। মালকাষর যে সময়ে সংগ্রাম আরম্ভ করিলেন সেই সময় অবধি ভাহাদিগের নাম ব্যক্ত হইতে লাগিল।

नालकाश्वदतत मगद्य याष्ट्रताञ्जादम महाताचे राजितत এক প্রধান ছিলেন, তিনি আপনাকে রক্তঃপূত বংশীয বলিয়া পরিচয় দিতেন, এবং দশ সহস্র অশ্বারোহী সেনা लहेश मालकाश्वरतत्र कर्ण्यानियुक्त इहेशाहित्सन। मठाकी ভৌসলা নামে এক ব্যক্তি উক্ত ৰাছ্রাওয়ের অধীনে কর্ম তিনি দোল্যাতার দিবসে সাহজী নামে উহার এক পঞ্চনবর্ষীয় পুত্র সমভিব্যাহারে যাত্রাওয়ের आंगरा शमन कविग्राहित्वन। जिजिनातम याष्ट्रताउदम्ब कता उंदकाता जिन वदमत्रवयका हित्तन। याष्ट्रवाञ ভাছাকে সাহজীর সহিত ক্রীড়াসক্ত দেখিয়া হাস্য করিয়া केहिटलस, ट्रामन जिला! जुमि धेरे वालकर्जीटक विवाह করিবে। তদনস্তর সভাস্থদিগের প্রতি দৃষ্টি করিয়াসহান্য-बनदन कहिटलन, दाच दाथि अहे इहे बैटि कमन भाकि-शांद्रा, अरे शांज कनात्र छेशयुक्त वट्टे। अरे कथा विनया-माज मनाकी नकनटक मध्यापन कविया विनित्तन रखाँका। সাকী, যাছরাও আমার পুতের সহিত কলার বিবাহ **्ष छ। चित्र क**तिरमन । किन्छ बाह्यता ७ मनाकी करमूल। क्नीन हित्तस, चडवर धरे क्या कृति है हैरेग ATTEN SETELATOREN 1 AZTER 2 ANDERTS FERVE

যে, বাছরাওয়ের সহিত সমান ভাবে চলেন। কিন্তু ক্রমে তাঁহার ভাল্যোদয় হইতে লাগিল। তিনি আহম্মপুরের রাজাদের কর্মে নিযুক্ত হইয়া পুনাতে এক জায়গীর পাই-লেন, এবং ক্রমে ধনবান্ ও পরাক্রমশালী হইলেন, তথন ভবিতব্যতাক্রমে বাছরাও তাঁহার পুরের সহিত ক্রারে বিবাহ দিলেন।

এই বিবাহের পরে সাহজী বিজয়পুরের রাজার কর্মে नियुक्त रहेशा काठास यभवी रहेतनम, এवर बे बांका তাঁহাকে মহীশুরে এক জায়গীর প্রদান করিলেন। পংগ্র জিজির গর্ত্তে শঙ্কী ও শিবকী নামে তাঁহার হুই গ্লুত্র হয়। শহুজীকে তিনি সাপনার নিকটে মহী ভরে রাথিয়া-ছিলেন, শিৰজী পুনাতে প:কিতেন। দাদাজী কামদেব नारम এक खाञ्चा भूनांत कामगीरतत कमा निस्तार कतिरान, তিনি তাঁহার রক্ষক শ্বরূপ হইলেন। শিবজী অত্যস্ত চতুর ও সাহসিক ছিলেন, তিনি মুস্লমান্দিগকে ধৎপরো-নাজি সুণা করিতেন, এবং বয়সাগণের সাক্ষাতে সর্বাদা रिकारकन् आमि मुगलमानिमिश्यक श्रीका क्रिया वाधीन माञा इहेर । मामाबी उाहाटक मठल निराहन कब्रिएलन, বিদ্ধাতিনি তাঁহার বাক্যে কর্ণণাত করিতেন না। অনস্তর ভিনি নাদাজীর অধীনত্ব পরিত্যাগ করিয়া পিতার অখা-কোহী সেনা এবং পর্বতবাসী দল্লাদিগের সহিত মিলিয়া व्यवदिशाष्ट्रम श्रमक भागा खमन कतिया विकारितकन, करे-कर्ती किनि शर्बा छत्र नवन दान, উद्धमहार्श धनगर हरे-

জেন। ইহাও অসুমান করা গিয়াছে কনকান প্রদেশে যে লকল দমুরেডি হইত তিনিই তাহা করিতেন। এই সকল কর্মো তাঁহার সাহস জনম আরো রভি পাইল। তিনি লুঠ ও বিষাদ লইয়া সর্মদা কালকোপ করিতেন।

কিছুকাল পরে দাদাজী পরলোক গমন করিলেন, ভাহাতে পুনার জাগ্দীরের কর্ত্ব প্রাপ্ত হইয়া তিনি আলানই ভাহার উপস্বত্ব ভোগ করিতে লাগিলেন, পিভাবে কিছুই পাঠাইতেন না। তৎপরে বিজয়পুরের রাজার সহিত ভাহার ভাবান্তর হইল, ভাহাতে তিনি একবারে কনকান অধিকার করিয়া বসিলেন। বিজয়পুরের রাজা শিবজীর দৌরাক্স দেখিয়া ভাঁহার পিভাকে কারাক্স করিয়া বলিলেন, ভোমার পুত্রকে বলিয়া পাঠাও এরপ দৌরাক্স আর না করে, যদি করে ভবে কারাজারের দার গাঁথিয়া ভোমাকে ভাহার মধ্যে পচাইয়া লারিব। এই আজা শুনিয়া শিবজী সাহজাহানের শরণ লাইকেন। সাহজাহানের জাদেশে বিজয়পুরের রাজা জীহার পিভাকে কারামুক্ত করিয়া দিলেন।

े जनहत, ३७६८ भृष्टोत्म, काश्वद्रश्यात मनिन द्वांत्मा बहिया रनावकमात प्राकात गर्शित पुकारत कदिरमन। श्रे नस्तर मिश्रेडी काँठ क्षताथा श्रेषा स्थानन द्वांका गृष्टेन बहिर्द्ध मानिरान । देशाँठ क्षांश्वद्रश्यात निर्णाय गाँठ-बार्थ क्षेत्रसम् किन्न क्षत्र होश्वर क्षत्रमारक मन्न श्रेष्ट्र क्षत्र मिश्रेडी होत्र महम्बद्ध व्यक्त क्षत्र क्षांस्मा क्षांस्मा कहि ভিনিও দকিও ইইতে প্রভাগমন করিয়াছেন, শিবলী
বিজয়পুরের রাজার প্রতিকৃদে অন্ত্রধারণ করিয়াছেন, শিবলী
বিজয়পুরের রাজার প্রতিকৃদে অন্তর্ধারণ করিলেন। বিজয়ন
প্ররের রাজা অপার্যামানে ভাঁছার সহিত সন্ধি করিলেন।
ইং ১০০০
প্রতিক সমুদ্র ভীরে গোয়া অবিধি কল্যাণ-পর্যান্ত-কনকানের ১২৫ জোল ভূমি এবং ঘাট পর্যতের উপুরিভাগে পুনার উত্তর অবধি ক্ষানদীর দক্ষিনে মরিচ পর্যান্ত ৭৫ জোল ভূমি পাইলেন। এই রাজ্য প্রয়েছ ৫০ জোলের স্থান নহে। ইহা পাইয়া শিবজীর আরো পরালক্ষার স্থান নহে। ইহা পাইয়া শিবজীর আরো পরালক্ষার স্থান সহত্য পান্তিক প্রতিক্ষাত্র সহত্য অধারোহী সেনা হইয়াছিল।

करत्रम, कारुधव अक पिवम नगद्त धक्छी महाचछात विवाद छिशिष्टि इहेटन, पथन वत्रमाजी लाटकता ताजित्यादश नगत अदवभ करत, भिरकी मिरे मगत्र भैं हिम कन वर्ण-বান সেন। সমভিব্যাহারে বর্ষাঞ্জিরপ ভাহাদের সঙ্কে চলিলেন। ভাষার লোকেরা স্থানে হানে গুপুড়াবে রহিল। শিবজী নগর প্রবেশ করিয়া একেবারে আপে-ब्यात यांग्रेत थिएकी यात मित्रा मादरेखा थेंदिक वध করিতে গেলেন। সায়েন্তা থাঁ তৎফালে সোভালার উপর এক ঘরে বসিয়া ছিলেন। রক্ষার কোন উপায ना प्रिका भवतालयाव शवादक व्यक्त कविशा एक्रवायन शुर्वक भनारेटनन। भनारन काटन निवकी উটোর উপর থড়নাঘাত করিলেন। . ধনি এ খড়ন ভাঁহাব অকে লাগিত তাহা হইলে তিনি একেবারে ছই খণ্ড হুইয়া পড়িতেন, কিন্তু ভাহা অঙ্গে না লাগিয়া তাঁহার হতে লাগিল, ভাহাতে দুইটা অনুনী একেবারে উড়িয়া গেল। मारमुखा थी भनायन कविटन भव छाहात युव ७ जात २ ৰাহারা গুহে ছিল শিবজী ভালাদিগৰে কাটিয়া খণ্ড খণ্ড ক্রিলেন্। ডৎপরে তিনি নির্মিল্লে পর্যভারোহণ করি-क्षित्र । श्रेष्ठारहार्थ काटन मगारनत बारनारक छाउद श्रमं उथतील न्द्रेश उदिन ।

এই জুংখাছদিক কৰ্মের পর বিবজী আহে। রাছদিক ইউনাটারি সহজ দক্ষাহাটী সঞ্জনগভাৱে সমুস্তীনের ক্রান্তী দক্ষ আফ্রন্স করিবেদ। ভ্রমানে জীনগংস রক্ষাদি কেছ ছিলনা, তাহাতে তিনি ছয় দিবস পর্যান্ত ঐ
নগর লুঠন করেন। আর ঐ সময়ে ইউরোপবাদী কতভলিন লোক তথায় কুঠা করিয়াছিলেন, শিবকীর সমতিব্যাহারী লোকেরা ভাহাও লইবার বাঞ্ছা করিল কিন্তু পারিলু
না, তথাপি নগর লুঠন করিয়া অনেক অর্থ পাইল।
তাহাতে শিবজী রণভরী প্রস্তুত করিয়া সৌরান্ট্রে নোগলদিগের বাণিজ্য-ভরী লুঠ করিলেন। তৎপরে চারি কইজ
ভ্রোক সমতিব্যাহারে বিজয় পুরের রাজার অধিকার
স্থা্য কানাড়ার এক বন্দর লুঠন করিলেন।

সৌরাই মন্ত্রাগননের পথ, এজনা তাহা তীর্থসানের মধ্যে গণ্য। শিবজী ঐ স্থান আক্রমণ এবং যাত্রিদিণের নৌকানি লুঠন করিলে, আওরংজেব অত্যন্ত রাগপ্রাপ্ত ইইলেন। বিশেষ, পিডার মৃত্যুর পর শিবজী রাজা উপাধি গ্রহণ পূর্বাক স্থনানে মৃত্যু মুদ্রিত করিতে আর্ম্ত করিয়া ছিলেন। আওরংজেব এই সকল অত্যাচার দেখিয়া তাহার দমন জনা সৈনা প্রেরণকরিলেন, ভাষারা শিবজীর ভাবং মুর্গ অবরোধ করিল। শিবজী মোগলার হিল না, অত্থব, আওরংজেবের সেনাপ্তির সহিত সন্ধি করিলের কথা উপাপন করিয়া আপন সৈনাগণ দূরে রাখিয়া জীবের কথা উপাপন করিয়া আপন সৈনাগণ দূরে রাখিয়া জীবের কথা উপাশ্বিত ইইলেন। সেনাপ্তি জীহাকে করিয়া করিবের ক্রিলির করিবেন মান্ত্রিক স্থিতির সহিত করিছ করিয়া আপন সৈনাগণ দূরে রাখিয়া লীবের করিয়া আপন সৈনাগণ দূরে রাখিয়া জীবের করিবের ক্রিলির স্থিতিত ইইলেন। সেনাপ্তি জীহাকে করিয়া আপন স্থানির সাক্ষিত স্থানির স্থিতির সাক্ষিত স্থানির স্থানির সাক্ষিতির সাক্ষিতির স্থানির স্থানির স্থানির সাক্ষিতির সাক্ষিতির স্থানির সাক্ষিতির স্থানির সাক্ষিতির সাক্ষিতির স্থানির শিবলীর ও২ স্থানির সাক্ষিতির স্থানির স্থানির স্থানির সাক্ষিতির স্থানির স্থানির স্থানির সাক্ষিতির স্থানির স্থান

বিংশতি তুগ ও তৎসম্পর্কীয় তাবৎ ভূমি তিনি পরিত্যাগ করিবেন, তাহা হইলে অবশিক্ট ছাদশ হুর্গ জায়গীর স্বরূপ তাঁহাকে দেওয়া ঘাইবে, এবং দিলীশ্বর তাঁহার মর্যাদার জন্য শস্তুজী নামে তাঁহার পুরুকে রাজসরকারে পঞ্চসহস্ত্রী সেনাপতির পদ প্রদান করিবেন। এই সন্ধি-পত্র সাক্ষরিত হইয়া দিলীতে প্রেরিত হইলে সম্রাট সকল বিষয় গ্রাহ্ করিলেন, কিন্তু চৌধগ্রহণের বিষয়ে কোন আজ্ঞা দিলেন না।

সন্তর শিবজী সম্ভাটের আজাবন্তী ক্ট্যা বিজয়পুরের রাজার নহিত যুদ্ধে প্রকৃত হইলেন। তৎ-পরে অভিরৎজের তাঁহাকে রাজ্যানীতে ডাকাইয়া পাঠা-होतम । चिवली छाँदात चाळालूगादत मिलीएक गंगन कति-. লেন। কিন্তু ৰখন তথায় উপস্থিত হট্লেন, তখন বাজা ভাঁৰার উচিত মর্যাদা না করিয়া ডাঁহার অভার্থনা জন্য स्तिन धक्कान गामाना कर्माकात cश्रत्य कतिरलम । उपन्छत ষ্থৰ ভিনি রাজসভাতে উপনীত হইয়া সন্তাটের সম্মুখে নকর পরিবেন, তথন কুশবাদি কিছু জিজাসানা করিয়া জারাকে ভূতীয় লেণীর মসুষানিগের সহিত বসিতে कांका किटनमा कांध्वर एक मान कविद्यान मारनद श्रेक्ट। क्ष्रेंग भिवकी चालित नहा हरूरवन, किन्न धरे गंकन खल-बौदन छ।दाद अवश्यकत्रदर्भ भागासिक त्वमन्। रहेन । जिनि अभागारन रणवेंचारन सम्बंशिक हरेरणन । मुक्ताकरणव अब कान विनामन महाक गाकित शहर हानि इहेरम पुछा জাপেকাও অধিক যাতনা বোধ হয়, আমার নান হানিতে বে ননোবেদনা হইয়াছে মৃত্যু হইলেও সেরপ বেদনা হইত না। ইহা বলিয়া তিনি সভা হইতে উটিয়া গেলেন। রাজ্ঞপরিচ্ছদ গ্রহণের অপেকা করিলেন না। রাজা ভাঁহার আচরণে কুপিত হইয়া অ'জ্ঞা দিলেন ভাঁহাকে নজরবদী করিয়া রাখা যায়, তিনি পলাইতে না পারেন।

শিবজী দেখিলেন তাঁহার বিধিমতে অপমান হইতে ৰাগিল, অতএব নিশ্চিত্তভাবে পলায়ন করিবেন এই मानम कतियां, फिलीत क्रम नांशूटक मनीटनाटकत श्रीफा कारम अहे इतन रेमनाभगरक करम करम विषाय करिएछ লাগিলেন। তাঁহার সহিত যত অপ্প লোক পাকে ভতই ন্টাল এই বিবেচনা করিয়া আওরংক্তেব তাহাতে আগত্তি করিলেন না। ক্রমে ক্রমে তাঁহার সকল সঞ্জীরা প্রস্থান সদীদিগের প্রস্থানের পর শিবজী পীড়াছলে শয্যাবাদী হইয়া থাকিলেন। ভাঁহার সঞ্চীগণের মধ্যে কএক জন দিল্লীনগরে গুপ্তভাবে থাকিল, হিন্দু কবিরাজ দিগের ষারা ভাষাদিগের সঙ্গে শিবজীর কথোপকথন চলিতে লাগিল। শিষত্রী দিল্লীতে যাইয়া অব্ধি প্রতাহ সন্ধার পর गति भाँ के विकास वामाज्या अভिशानदम् भाषास्म किटल-ন। প্রহরীরা জানিত খাদ্যদ্রর বাইতেছে, অতএর চালারি भाष्ट्रेक कड़िक ना । এक मिरम ब्रोटक भिराजी आर्थनि अरु চালারিতে এবং পুরুদ্ধীকে আর এক চালারিতে বসাইয়া अनागांदन विस्थान श्रेटक वाश्ति श्रेटलन, भगादक अक

শ্রিক কিন্তর শায়ন করিয়া রহিল। প্রহরীরা কিছুই জানিতে পাল্লিল না। পরে তাঁহার লোকেরা যে এক ক্রতগামী অস্ব প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছিল, শিবজী পুত্রসমভিব্যাহারে মেই অস্থে আরোহণ করিয়া মধুরাতে পলায়ন করিলেন। তথার পুত্রটীকে কোন বন্ধুর আলয়ে রাখিয়া আগনি মন্তুক ও গোঁপদাড়ি যুগুন করিয়া দণ্ডিবেশে জ্রমণ করিতে করিতে ন্য মাসের পর স্বদেশে প্রত্যাগমন করিলেন।

ভাঁহার পলায়নে সাওরংকের অত্যন্ত সশক্ষিত হইলেন, বিশেষ তথন পর্যান্ত বিজয়পুরের যুদ্ধ শেষ হয়
নাই, কি জানি ঐ রাজার সহিত গোগ করিয়া আর
কোন উৎপাত করেন এই ভয়ে তাঁহার অপরাধ মাক্ষনা
পূর্বাক ভাঁহাকে আর এক জায়গীর প্রদান করিলেন, এবং,
ভাঁহার রাজা-থ্যাতি দৃঢ রাবিয়া ভাঁহাকে ঐ যুদ্ধে নিযুদ্ধ করিলেন। শিবজী রাজার আজাক্রনে বিজয়পুর ও গোলক্লার রাজাদিগের শহিত সংগ্রামারম্ভ করিয়া পরিশেষে
ভাঁহাদের স্থানে কর গ্রহণ করিতে লাগিলেন।

এই যুদ্ধের বিরতির পর শিবজী নিজ রাজ্যের যুদ্ধণ্ড রাজশাসন সম্পর্কীয় কতকগুলিন নিয়ম করিলেন। রাজ্য সংগ্রহ ও রাজ্য সম্পর্কীয় সকল কর্মের ভার ব্রাহ্মণ্দিগের জাতি দিলেন। ক্রিলোকের প্রতি দৌরাগ্যা না হয় অর্থচ ক্রেছ রাজাকে রাজ্য বঞ্চনা করিছে না পারে ভাহার যে বে নিরম কর্ত্বা ভাহা করিলেন। সৈন্যগণের ভূরি বেতন নিয়োজিত করিয়া ভারা রাজভাগার হইতে দিবার নিয়ম করিয়া দিলেন। লুঠিত জব্য প্রদানের নিয়ম রহিত করি-লেন। লুঠিত জব্য সরকারে জনা হইতে লাগিল। সৈন্দ্র দিগের প্রপানেরা দশ অবধি পঞ্চ সহস্র সেনার অধ্যক্ষ-ভায় নিযুক্ত হইয়া রাজভাগুর হইতে বেতন প্রাপ্ত হইতে লাগিলেন, জায়গীর বা বৃত্তির বন্ধান রহিল না। এই সকল সুনিয়মে রাজ্য সমুদ্ধ হইতে লাগিল।

আওরংজের ভাঁহার প্রতি ইদানীং যে অনুগ্রহ করিয়া-ছিলেন তাহার কারণ এই, তিনি আনেদে বিহাল বা, অসতক হইলে তিনি পুনর্কার ভাহাকে হল্পাণীন করিবেন, কিন্ত ধূর্ত শিবজী তাঁহার অভিপ্রায় বুঝিয়া ভাঁহার চক্রে পাদক্ষেপ করিলেন না। অতএব আওরংজেব সে আশায় উনরাশ হইয়া ভাঁহার সহিত মুদ্ধার স্ত ক্রিলেন, ইহাতে छै। हात्र नजन इहेन ना, युकांद्र अध्या भिवा-दित मिनित बाकम्म, त्मोताके धूनः लुकेन, अवर धटकम धारमण এकतारत उँ देशां कतिया किनिटलन ; अधिकन्तु তিনি নর্মতে চৌথ গ্রহণ করিতে লাগিলেন। আরি যথা-उँथा बारेश ताकामिश्टक वनिद्या (कामता जामीटक ताकत्वत म्पूर्णाः तमात वकारम माञ, छारा इरेटम दर्शमान मंत्र क्षिण त्वान अलाहात कतिन नी, विनि ना मितन छोहात बाकान्यम ও धाका विनाम कदिव। अहे छएत मन्त्रकामात्रा फेल्टास्क कोथ फिरक नामिस्मन, खाराट उरे मीन अस्टाब बीकि स्हेल। (सावत्रश्रामय निवयीत गरिष्ठ युक्तार्थ त्य देगना त्थात्र।

ক্রিলেন ভাহার। যুদ্ধ জয় ক্রিডে পারিল না, ভাহাতে তিনি পুনরায় অধিক সেনা পাঠাইলেন। শিবজী এপ-गांख (मांशन मिटलब मेटल मन्यूथ-पूटल आहुछ इत्यम माहे, त्यादल त्यांदल बाकिया त्यांताह यात मातिद्ञम, अदर मूठ-পাট করিয়া বেড়াইতেন। এ ধাতায় সম্পুর্য করিয়া स्मार्थन रमसामिशदेक हिन्न छिन्न कतिदेशन। ইহাতে ভাঁহার অভ্যন্ত দশ হইল, এবং মোগল সেনাগণের অষশ হইল। আওরংজেব তৎকালে পূর্ব্ব উত্তর বাসী পাঠানদিপের সহিত যুদ্ধে প্রমুক্ত ছিলেন, এ জন্য দক্ষিণের युक्त कें किन मा, धीद्र धीद्र हिनटक नाभिन।

আওরংংজন জ্মাগত ছুই বংসর পাঠানদিগের সহিত যুদ্ধ করিলেন, কিন্তু ভাহাতে কোন ফল দৰ্শিল না, তিনি भौठीनिमिश्रदेक बदक्रवादत बनीस्ट्रक क्रिंत्रदक भौतिदनम ना। ভদনকার সাধুসম্প্রালের সহিত উহোর ঘোর সংগ্রাম आंत्र हरेल । बर् मकल मापू अटक्षत्रांनी, मछालतारन, अपर बिट्डिसिंग, मेमापि शान क्रिटिंग मा। डिका उ स्मिक्स क्रिया कान करण मिन लाक क्रिएकन। अह अल्लेम्बाह्य अक गांधु मिलीत कि किंद बावधादन यात्र अति-रहन, डाहाद कंडन जुमि इन, छाहाद हान जानाम कदिया किनि केनदात कविटलन । कम्मदनद नगरम वाक्रमक नेवा-विद्वा अस्तिक कार्क निमुख्य नाकिए, प्रायम्य ना निमा त्वर क्रमचन्द्रश्रीवारत्व नाविक ना। त्वान क्याव नायुक्त अधिक अवडीव विकाम दश्या अवसी वायनक चाह चाह

অনেক লোক আনিয়া সাধুকে অপমান করিল। সাধু সকল ভাহা দেখিয়া দলবদ্ধ হইয়া রাজপক্ষ লোকদিগকে প্রহার कतिन । करमहे निवाम त्रिक्त करेटल लाशिल, त्रमेख जावर লোকপাধুদিগের পক হইল। সম্রাট ভাহাদের দমনার্থ সেনা সামন্ত পাঠাইলেন। সেনাগণ যুদ্ধসভা করিয়া আদিল, কিন্তু পরাজিত হইয়া প্রস্থান করিল। একটা कन्दर छे हिल, माथ मकल दाख्याल युक्त करत, अरथ कान দেবী তাহাদের যুদ্ধ কর্মের অধ্যক্ষতা করে, তাহাতেই কেছ ভাছাদিগকে পরাজয় করিছে পারে না। ভারেদ রজঃ-পুত সেনাগণ ভাহাদিগের সজে নিলিয়া যুদ্ধ করিতে লাগিল। সূত্রাং আভরংকের অনেক সৈন্য প্রেরণ कर्तितम्म, अवर याच्च नात्मात् कता मकल तमनात् शांदक अरू अरू करक रहान कतिया मिलाम । अहे अर्काद्ध भीव সংগ্রাম ছইতে লাগিল, অবশেষে যোগলের জ্য়ী এবং সাধুগণ প্রাক্তিত হইলেন।

## करत्राविश्म अधाय

## আওরংজেবের চরিত।

যে সকল পাঠকেরা এই ইতিহাস মনোযোগ পুর্কৃক পাঠ করিয়াছেন ভাহারা অবশা বুঝিয়া থাকিবেন পাঠান রাজারা এমন হিচ্ছুপর্মান্তেমী ছিলেন, তৈমুর বংশীয় রাজারা নে প্রকার ছিলেন না। আকবর হিচ্ছু রাজাদিগের কন্যাদি গ্রহণ করিয়া ভাঁহাদিগের সহিত কুটুমিতা পর্যান্ত করিয়া ছিলেন, এবং ভাঁহার রাজত্বালে হিচ্ছু রাজারা রাজ্যের অতি উচ্চ উচ্চ কর্মো নিযুক্ত হইয়াছিলেন। আকবরের কয়েক জন উত্তরাধিকারীও নেই খারায়ত চলিয়াছিলেন, ভাঁহারা হিচ্ছু ধর্মের প্রতি বিশেষ
দৌরায়া ক্রিতেন না।

ক্লিন্ত আওরংজের সে ধারার মনুবা চিলেন না, তিনি অত্যন্ত শঠ এবং মুদলমান ধর্মের গোঁড়া ভক্ত চিলেন। ধর্মের প্রতি অত্যন্ত ভক্তি প্রযুক্ত তাহার বোরানোর কিছুই বিরেচনা ক্রিতেন না। অভ্যান রাজ্যারভের কিছু দিন পরে সৌর বংগর রহিত করিয়া চালে বংগর পুনংস্থাপন করিলেন। ইহা করিবার বিশেষ

ভारभंधा वाहे भोजनिकता त्रोत रदमत मृष्टि करत তাহাদিগের মতাতুসারে মুসল্মান শাস্ত্রের গণনা রহিত করা যাইতে পারে না। অনেক মুদলমান পণ্ডিত ইহাতে आर्था कतियां विभावत त्य हास्य वरमत काल-मस्वसिक নহে। কিন্তু তিনি কাহার কথা গ্রাফ্ করিলেন না । ইহা ভিন্ন তিনি হিন্তুদিগকে ধুমধান পূৰ্বক প্ৰতিমা পূজাদি করিতে দিতেন না। এক ব্যক্তি মলা নিযুক্ত হইয়াভিলেন জিনি কতকগুলি অশ্বারোহি মলুব্য দক্ষে করিয়া পথে পথে জমণ করিতেন, পথখাটে কাহাকে দেবার্চনা করিতে দিতেন না । পরে তিনি হিচ্চুপর্কাদি একবারে উঠাইয়া त्मन, अवर वफ़ वफ़ रमनाटक हिन्छुमिटशब प्रवामि क्या করিতে নিষেধ করেন। ইহা ভিন্ন তিনি অনেক অপ্পা বুদ্দির কর্মা করেন। রাজসভাতে এক এক জন গণক পাকিতেন, এবং অনেক পণ্ডিভ ও কবি হুত্তি ভোগ করিতেন, ভিনি তাহা রহিত করেন। এবং ইতিহাসলেথকের কর্মা উঠাইয়া দেন, ভাহাতে ইতিহাস লেখার প্রথা রহিত হয়। কিছুকাল পরে তিনি আজ্ঞানেন মুসলমানেরা দ্রবা-पित अर्फाक माञ्चल पिटन, हिन्दुप्तिशटक मगुपाय पिटाल रहेर्द थदर हिन्छुता ताकमण्यकींग्र कान उक्क कर्य भाइत्व ना।

জাজিয়া নামে পৌডলিকদিগের উপর এক কর ছিল, আক্রম তাহা রহিত করিয়া দিয়া ছিলেন, আওরং-জেব সেই কর পুনঃস্থাপন করিলেন এবং তাহা সংগ্রহের खिश्के निश्म क्रिलिन। এই कर्रे जनर्थंत मृत इर्हेन। ज्ञान्त कर्म क्रिलिन। अर्थे कर्रे जिन कारात वार्का कर्मण क्रिलिन कारात वार्का कर्मण क्रिलिन कारात वार्का कर्मण क्रिलिन कारात वार्का कर्मण क्रिलिन मां। अर्थे कर्मण प्राचित क्रिश्माण श्रेष्ठ क्रिलिन मां। अर्थे क्रिलिन वार्का ताका श्रेष्ठ क्रिलिन मां, अर्थे क्रिलिन वार्का ताका श्रेष्ठा मक्रिले क्रिलेन वार्का वाका श्रेष्ठ क्रिलेन वार्का वाका वार्का क्रिलेन वार्का वाका वार्का क्रिलेन वार्का वाका वार्का क्रिलेन वार्का वार्का क्रिलेन वार्का वार्का वार्का वार्का क्रिलेन वार्का व

এই বিজোহিতার জার এক ওরতের কারণ এই, জাজিয়া পুনঃস্থাপনের কিছুদিন পরে সিন্ধুপারে রাজা ৰশবন্ত সিংহের মৃত্যু হইল। তাহাতে তাঁহার ভার্যা ष्ट्रेंगे चिन्न महान बहेबा यामान अल्यागमन कवित्वन। কিন্তু অধানে প্রত্যাগমনের জন্য রাজার অনুমতি লওয়া इस नारे, वित्यव बाजञ्दाता नित्यम कविद्याल बानी छोश्रापत कथा ना छनिशा मिन्नुभात श्रेटलन। जाउत्-ब्बर बहे मरवान পाইगा बांनी ও डीहात हरेंने नखान क অবক্ত করাইলেন, পরে আর ২ সকল লোক ও ব্রীলোক-দিগতে গদন করিতে অনুযতি দিয়া কেবল রাণী ও তাঁহার हर भूजरक आहेक केंद्रिएं आखा मिर्टिन। धरे आखा अबद्दलन कतिहा तागीत शक जिनाधाक ह्यांमान, तागी ও तालकुमात्रिक्तिक छ्णाटवटम श्रीठोडेश जिटलन। अकलन शक्ति। जानीत त्वन जात छहेकी वालक तालकुमात-बर्बा तम धार्व कारण रहिन। कावतररका देश आविट्ड भोतिया ताना ७ उर्भूजिनगर मूनवानकन করিতে আজা দিলেন। সেমাপতি হঠাৎ সে আজা পালন করিতে বিলয় করিতে লাগিলেন, এই অবসরে রাণী भूजव्य ममिंख्याहारव व्यानभूदव ल्लीहिरलन्। आखुद्र-জেৰ জুদ্ৰ হইখা গৈন্য প্ৰেরণ করিলেন। ভাহাদের সহিত রজঃপুতদিগের খোরতর যুদ্ধ হইব, কিন্তু তাহার৷ জয়ী হইতে গারিশ না, মোগলদিগের হত্তে সকলে নিহ্ত इडेश ।

কিন্তু রাজা হশবন্ত সিৎহ কম সমুমের মরুষা ভিলেন না। ভাঁহার সধর্মিণীর প্রতি এই প্রকার অত্যাচার ও ভীর্থ যাত্রার কর পুনংস্থাপন করাতে সকল রজঃপুত রাজারা একেবারে কিপ্তবং হইয়া সংগ্রান-সজ্জা করিতে বালিলেন। উদয় পুরের রাজা এই যুদ্ধের অধ্যক্ষ হই-লেন। আওরৎজেন ভাঁহার সহিত মুদ্ধার্থ ব্যাৎ যাত্র। ক্রিয়া ভাঁহাকে পরাস্ত ক্রিলেন। তথ্ন রাজা কি করেন, ভাঁছাকে স্বহত্তে লিখিয়াদিলেন ভাঁহার অবাধ্য হইবেন না। কিন্তু আওরংজেব রাজপানী গমন করিবামাত্র ভিনি পুনুর্মার অস্ত্রধারী হইলেন। সুতরাং আওরং-জেব চতুর্দ্দিগ হইতে সৈন্য সংগ্রহ করিয়া উদয়পুর আক্র-गर्भ कविटलन । উদয়-পুराब ताका मर्आटम जक्षम दृष्ट्या আরাষলী পর্বতে প্রায়ন করিলেন, তাঁহার রাজ্য পড়িয়া तिहल। त्मार्गल देशरमाता छारा लुठ कतिया लक्ष छक्ष क्रिन । अन्तर्भ आवत्रद्भाव तुमः पुरुषित्रत शृह्दात मक् कतिया छाष्ट्राप्तिश्वत्क निकास निर्याजन कतिराज सानि-

त्मन। किछ ब्रक्षा शृहख्या निखास वीर्याकीन नटक, व्यक् ভাষাদিপকে আখাত করিলো ভাষারা ভাষাকে এক খা না মারিয়া কান্ত হয় না। সম্রাট ভাহাদিগকে মেমন নির্যাতন क्रिटिक बालिएनन, कार्शतां मनरक रहेशा है। हार দ্রবাদি বাহৰ পথাদিও দেনাগণকে রাত্তে ও সকালে আজ-मा बाइस कहिल, धरू माधार खरायुक रहेटक मालिल। व्यक्तित मात्म व्यक्तिराक्तरत अरू शूज हिन, इर्गामान ভাছাকে সিংস্থাসন দেওয়াইব বলিয়া আপনাদের দলভুক্ত कदिरसम्। व्यक्तित् १००० ब्राह्मरमना सहित्र। आक्रमीरत পিতার সহিত যুদ্ধার্থ উপস্থিত হইলেন। তৎকালে षाक्षित्र रक्षरयत त्करल क्षेत्र महत्य (मन) हिल। जिनि ৰুঝিলেন তাঁহার পুতের গহিত যে দকল দৈন্য মুছার্থ আসিয়াছে তাহারা সকলে আপন ইচ্ছাতে রাজ বিপক্ষ इम्र नारे, दास्युक छारामिश्रक क्ल श्रृद्धक चानियाष्ट्रम, জ্ঞাত্তরত অনায়াদে তাহাদিগকে বন্ধীপূত করিলেন। সুভরাৎ রজঃপুডেরা মোগলদিগের দহিত যুদ্ধ করিডে সক্ষানা হইয়া প্রস্থান করিল ৷ আকবর রাজারুগ্রহে ৰঞ্জি ছইয়া মহারাজীয়দিলের শরণাগত হইলেন।

এই মুজে রজাপ্ত ও মোগল উভয় জাতির অনেক শানিউ হইতে লাগিল। ভাষা দেখিয়া আওরংজের উন্নয়ন্ত্রের রাজার সহিত সন্ধি বন্ধন করিলেন। সন্ধিপজে শালিমা নামক করের কোন উল্লেখ থাকিল না। এই সন্ধি উন্নয়ন্ত্রের রাজার পক্ষে গুড়কর হুইল বটে, কিন্তু ভাষার পূর্বাবিধি রাজার সহিত তাঁহার যে মনোভঙ্গ ইইয়াছিল তাহা দূর হইল না। আওরংজের যত কাল রাজত করি-লেন তারংকাল মধ্যে মধ্যে যুদ্ধ দ্বত হইতে লাগিল।

अनिदर्श स्थितकी क्रमभंद क्षत्रक इटेट्ड श्वीकटनन । विक्रयं পুরের রাজার মৃত্যুর পর ঐ রাজ্যে নানা-প্রকার গোলযোগ উপত্তিত হইল। এই গোল্যোগ শিব-জীর রুদ্ধির আর এক হেতু হইল। বেহেতু তিনি 🏖 ্থোলের সময় ভলাজ্য, এবং ভাছার তুই বংসর পরে কনকানের অংশিক্টাংশ এবং ঘাটপর্যতের অধিকাংশ হিং ১৯৮৪ সাধিকার করিলেন। তৎপরে তিনি হিন্দুব্ ১৯৭৪ বিধানামুদারে রাজমূরুট গ্রহণ ক্রিয়া আপনার রাজ্যাভিয়েক সম্পন্ন করিলেন। ঐ রাজ্যা-ভিষেকে ভারি সমারোহ ছইন। ভদনন্তর ভিনি আপ-নার কর্মকারকদিলের পার্সী নাম ঘ্চাইয়া সংস্কৃত নাম দিলেন, এবং মুসলমান ধর্মে আওরংক্তেবের ধেমন অভি ভক্তি ছিল, তিনিও হিন্দু-ধর্মের প্রতি সেই প্রকার অচল ভিজে প্রকাশ করিতে লাগিলেন-সর্বতে হিচ্ছুশাস্তামু-याशी (महार्कमा ७ सम्रा कर्मामि इट्ट काशिन।

জামে শিবজীর এমন পরাজম হইল, তিনি নর্ম্মা
হিং ২০৮৫ বিজ্ঞান পূর্মক মোগল অধিকার আজমণ
শু ২৯৭৫ বির্যা অনেক রাজ্য লুঠন করিলেন।
তথপরে মহীশুরে ভাঁহার পিভার জামগীর উদ্ধারের
বাসনাতে গোলকদার রাজার সহিত নিজতা করিয়া

मांखारजत मामिर्धा ममुख उठ निता जिक्कि नायक शर्क ठीत्र ছুর্গের সন্মুখে উপস্থিত হইলেন। উপস্থিতমাত ছুর্গস্থ সেনগিণ নির্ব্ত হইল। তৎপরে তিনি ভিলোরের ও अना अना पूर्व क्या कतिराम । अहे श्रकारत स्वाद काय-গীর অধিকার হইলে, মোগলরাজ এবং বিজয়পুরের রাজা গোলকন্দার রাজার বিরুদ্ধে অস্ত্র পারণ করিলেন। ভালতে তিনি সহীশুর হইতে গোলকদাতে যাতা করি-লেন। মহীশুর বেক্ষাজীর হস্তে রহিল, তিনি অঙ্গীকার क्रिट्रंगन उँ। हाटक अर्जिक वाक्य मिर्ट्रन । भीवजी मही-শুরে আসিয়া দেখিলেন গোলকদার রাজার সহিত মোগ নরাজের সকল বিষয় মিটমাট হইয়া গিয়াছে। অভএর অফীদশ নাসের পর তিনি রাজধানীতে প্রত্যা-शममं कतिएलन ।

পর বংশর মোগলেরা বিজয়পুর আক্রমণ করিলে, বিজয়পুরের রাজা শিবজীকে আজ্ঞান করিলেন। শিবজী শাহার্য থীকার করিলেন। কিন্তু জনেক মোগল সেনা বিজয়পুর আক্রমণ করিয়াছিল, ভাহাদের সলে মুন্তার্থ জাশনাকে জসমর্থ জ্ঞান করিয়া, তিনি মোগল অধিকার জাজ্মণ ও লুঠ করিছে আরম্ভ করিলেন। এই জাজমণে একরার ভাহার প্রাণ সংখ্য হইয়াছিল, তিনি মারা গাড়িতে ২ রক্ষা পাইলেন। ভদনন্তর মোগলেরা নগর বেশ্বন করিলে, তিনি তাহানের আহার দ্রব্য আনয়নের পথ অবরোধ করিলেন, তাহাতে যোগল সেনাপতি নগর বেশ্বন করিয়া থাকিতে পারিলেন না, উটিয়া গেলেন। এই কর্মের প্রস্কার স্বরূপ বিজয়পুরের রাজা শিবজীকে অনেক ভূমি দিলেন, এবং সহীশুরে তাঁহার আয়গীরের উপর আপনার যে স্থাধিকার ছিল তাহা রহিত হইল।

• পর বংশর শিবজী পরলোক গমন করিলেন। তিনি
অত্যন্ত নুদ্ধিজীবী চতুর এবং ক্ষমতাবান পুরুষ হিলেন।
প্রথমে দুয়ুদলাধিপতি থাকিয়া ক্রমে আগন বুদ্ধিবলে
তিনি অত্যন্ত পরাক্রমশালী হইয়াছিলেন, ততুলা পরাক্রম
আর কোন হিম্মু রাজার ছিল না। তিনি আর কিছুকাল
জীবিত থাকিলে কি করিতেন বলা যায় না। আওবংজেবের ধর্মাভল্ডিও জ্ঞান্তিই শিবজীর হৃদ্ধির মূল। শিবজী
অতিবাদ নিপুর ছিলেন না, সংগ্রামে জনপদের যে ছঃখ
হইত তাহা তাঁহার সুনিয়মে দুর হইয়া যাইত।

• শিবজীর মৃত্যুকালে তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র শারুজী বন্দী-বেশে ছিলেন। কথিত আছে শারুজীর প্রচণ্ড অভাব-প্রযুক্ত শিবজী রাজারাম নামে দশ বংসর বয়ক আর এক পুত্রকে রাজ্যের উত্তরাধিকারী করেন। বাহাইউক শারুজী সৈন্যুগণকে বন্দীভূতে করিয়া রাইগড়ে উপস্থিত ইজেন, এবং রাজারামের মাতাকে বধ ও রাজারাম ও তম্মজিগণকে কারাক্ষ এবং প্রাহ্মণ ভিন আর অনেক্রের মুওফেদন করিয়া আপনি রাজা হইলেন। তদনশুর তিনি ইজিয় সুখের নিতান্ত বনীভূত হইলেন। তাহাতে কলুদ নামে এক হিম্মুখানী আন্ধা রাজ্যের কর্মকর্তা এবং তাঁহার লাম্পটা কার্মার আচার্যা হইলেন। শামুজী বেশ্যা ও মদ্যে পিতার উপাজ্জিত অভুল অর্থ নাশ করিতে লাগিলেন। ক্রমে সকল অর্থ নই হইলে তিনি প্রা-ভাবে নানা প্রকার জন্যায় কর ছাপন করিলেন। ঐ করে প্রজারা নিতান্ত কুপিত হইয়া উচিল, সৈন্যগণের বেজন দেওয়া কঠিন হইল। তাহারা বেডনাভাবে চতুর্নিপে লুঠ আরম্ভ করিল। মহারাই দিগের জন্য ২ রাজ্য লুঠন করিবার এই শুত্র হইল।

বখন শধুজী ইন্দ্রিয় দেবাতে নিতান্ত বিহাল, তখন
আওবং জৈব, উদয়পুনের রাজার সহিত সন্ধিবন্ধনের পর
দক্ষিণ রাজা একেবারে আপন কর্ত্বাধীন করণ মানসে
ব ১৯৮০ তদেশে উপস্থিত হইলেন। পরে বরহানপরে কিছুকাল অবস্থিতি করিয়া রাজস্ব এবং জাজিয়া
কর সংগ্রহের নিয়ম নির্দ্ধারিত করিলেন, তৎপরে আওব ১৯৮৪ রক্ষাবাদে গমন করিয়া তথা হইতে বায় পুর মোজাইনকে কণকানে পাঠাইলেন, বলিয়া দিলেন ঐ
আক্ষেশ লুঠ করিয়া ক্ষেব্যারে জনশুনা করিবে। রাজপুর শিক্ষ আক্ষাব্যারে ভাহাই করিছে লাগিলেন, ভাহাতে
ক্ষান বাজি প্রতিবন্ধন হইল না। কিন্ত ভাহার সক্ষে বেসকল অশ্ব ও ব্রুষ গিয়াছিল তাবৎ মারা পড়িল, এবং আহারাভাবে তাঁহার দৈনাগণের যৎপরোলাক্তি ক্লেখ হইল। তৎপরে যথন রাজপুত্র ঐ দেশ পরিত্যাগ করিয়া ঘাটপর্মতে শিবির সঙ্গিবেশ করিবোন, ভগন মহামারী উপস্থিত হইয়া তাঁহার অনেক দেনা প্রুদ্ধ পাইল। রাজকুমার বিপন্ন হইয়া কিরিয়া আসিলেন।

তৎপরে আওরংজের বিজয়পুর ধ্বংসের প্রতিজ্ঞা ক্রিয়া মোজাইমকে পশ্চিন্দিগ এবং আজীন নামক আর এক পুত্রকে পূর্মদিগ আক্রমণ করিতে আজ্ঞাদিলেম, আপনি आहमान नगरत गंगन कतिरलन। किन्नु स्माज्ञ जिसक रेमना हिल ना, सिक्ना जिनि आंक्रमण प्रणक क्ट्रेलन, মুতরাৎ আজীম অতাসর হইজে পারিলেন না । এই মুখোগে শদ্ভী রাজার পশ্চাম্বর্তি সকল হাম লুওন আরম্ভ করিলেন, এবং বরহানপুর দক্ষাকরিয়া ভক্ষদাৎ कवियां एक नित्नम।

অতির্থজের বিজয়পুর আক্রমণ করিতে না পারিয়া •गोनकना ताः जात उभेत सुकित्नन । शोनकनात त्रोका, মদন পাছ নামে এক ব্ৰাহ্মণকে মন্ত্ৰীর পদ প্রদান করিয়া-ছিলেন, ইহাতে ধর্মতক্ত মুসলসানেরা অত্যন্ত কুপিও इरेमाहिल। अञ्चर यथन निलीभदत्र रमनागन चे त्रांदका উणाञ्च इहेन, उथन ध्याट्स नात्म लानकमा-हाजाह প্রধান সেনাগতি রাজার নহায়তা না করিয়া অন্তরে রহিলেন। পরে একটা গুহবিরোগ উপস্থিত হইয়া মধন

পদ্ হত হইলেন। এই ঘটনার পর রাজা পর্বতশিষ্ধরে পলায়ন করিলেন। নিলীশ্ব হারদ্রাবাদ লইয়া লও ভণ্ড করিলেন। তদনন্তর গোলকদার রাজা অনেক অর্থ দিয়া টোহার সহিত সন্ধি করিলেন। সন্ধির পর রাজসেনগণ বিজয়পুরে যাতা করিয়া ঐ নগর বেন্টন করিয়া থাকিল। রাজা অপার্যমানে পরাভব স্বীকার করিলেন। তদব্ধি ঐ রাজ্য একেবারে লোপ হইল।

তদনন্তর আওরংজের গোলকদার রাজার মন্ত্রী ও চদনাগণের সহিত মন্ত্রণা করিয়া বিশ্বাস্থাতকতা-পূর্কক ভাহার সঙ্গে যুদ্ধারন্ত করিলেন। রাজা সাত মাদ পর্যান্তর মধ্যে কছা হইয়া থাকিলেন, তৎপরে ভিনি পরাভব মানিলেন, তদর্থি ঐ রাজ্য ধাৎস হইল। অন-ন্তর আওরংজের মহীশুরে সাহজীর জায়গীর হরণ করিয়া মযুদ্র পর্যান্ত আপানার অধিকার বিস্তার করিলেন। কিন্তু ইহাতে ভাঁহার পরাক্রম রুদ্ধি হইল না, বরং এই অবধি ভাঁহার বলক্রাস হইতে লাগিল, ভাহা ক্রমে প্রকাশ হইবে।

এতাবৎ কাল শহুজী কেবল ইন্দ্রিয় সেবাতে নিবুজছিলেন। জনস্তর এক সময়ে তিনি কয়েক জন বন্ধু সহবালে কণকানে এক উলাসালয়ে উলাস করিতে ছিলেন,
ছিলেখো এক মোগল সেনাপত্তি কতকণ্ডলি সেনা সমভিনাহাত্রে উহার গৃহ বৈটন করিলেন। শহুজী মন্ত্রপানে
উক্তান্ত ছিলেন, পলাইছে পারিলেন না। কলুল ভাহাকে

मुका कहियात करें। कहिटनन, किन्छ शहिटनन नां মোগল সেমাপতি উভয়কে নদীবেশে সমাটের সমীপ্রে (श्रेत्र) क्रिटलन्। जां अत्रर्ज्य में सकीटक गुननमान धर्मा अर्भ क्षिर् वित्तन। नशुकी छोटा ध्रानश्म मा क्रिया करे छेड्द क्रिलन। आउद्दर्श्व त्मरे व्हार्ष ভাঁহার প্রাণদণ্ড করিলেন। মন্ত্রীও ঐ দণ্ডের ভাগী इहेटलन ।

• শস্তুজীর মৃত্যুর পর মহারাফীয়া প্রধানের: গাছ নামে তাঁহার এক শিশু মন্তানকে সিংহাসনে ব্যাইয়া তাঁহার পিত্রা রাজাগামকে তাঁহার কর্মাকভা করিলেন। কিয়ৎ-काल পরে মোগল-মেনাগণ রাইগভ আক্রমন করিয়া বিশ্বাস-ঘাতকতা পূৰ্মক তাহা অধিকার করিয়া লইল, ভাহাতে শিশুরাজ ভাহাদের হত্তে গড়িলেন। মহারাইীয় প্রধানেরা ভাঁহাকে উদ্ধার করিছে না পারিয়া এই ধার্ম্য করিলেন রাজারাম কর্ণাট অন্তঃপাতি জিঞ্জির ছুর্গে গমন করিবেন। এই পরামর্শালুসারে রাজারাম ছলবেশে बै छूर्न भमन कहिरलम, এवर उलाकांत होजा देलांधि আছণ পূর্বাক হাজ্য করিতে লাগিলেন। আওরৎজের এই मध्याम भाहेग्रा क्रविकत् नात्म এक मिनाशिक्त बह-देमना मम्बियादाद्व बे हुई आक्रमनार्थ त्थावन कदितनर । জলফিকর তথায় উপস্থিত হইয়া দেখিলেন, তাঁহার সজে व देनना आमियादक छात्राता वे हर्न बाग्र करा कठिन, अऊ-व्यव किनि कारको देनमा हाहिया भाठाइरनन । व्यवर হৈদ্যাপ্দনের অংশকায় তিনি তানজোর ও অন্যান্য দেশে আগন হৈদ্যা পাঠাইলেন। তাহারা তথায় বল-পুর্বাক প্রজাগণের ধন হরণ করিতে লাগিল।

এই অবধি মহারাকীয়দিগের সহিত মুকারয়' বলা বাইতে পারে। রাজারাম নোগল সেনানিগের অত্যাচার দেখিয়া শস্তাজী ও দানাজী দামে তুই প্রধানকে আজ্ঞা
দিলেন, তাহারা মহারাক্-দেশ প্রদক্ষণ করিবেন।
ভাহাদিগের প্রতি আরো অনুষতি হইল ভাহারা সর্বজ্ঞা
চৌথ গ্রহণ করেন, এবং যে স্থান ইক্ছা সকল স্থান লুই
করেন। বিজয়পুর ও গোলকন্দার রাজাদিগের পুরাতন
সেনাগণ ঐ সময়ে মহারাকীয়দিগের সহিত মিলিড
হইল। পারে সকলে একত হইয়া এক এক সম্পুদাম এক
এক দিগে বাইয়া সকল স্থানে লুই নরহত্যা ও নগর দাহ
করিতে লাগিল। দক্ষিণ রাজ্যের মধ্যে এমন স্থান রহিল
না বেথানে দৌরাঝা না হইল। লোকের তুর্গতির সীমা
পরিসীমা থাকিল না।

মোগল সেনাগণের সাধা হইল না এই সকল জতাচীর এক্লবারে নিবারণ করিয়া উঠে। আকবরের সময়ে ইল্নাগণের সুন্দররূপ শিক্ষা হইত, ভাহারা উড়ম-রূপে বুজ্ করিতে পারিত। সেনাধ্যক্ষ সকলও অভি দক্ষ ভাহানী ছিলেন। এক্ষণকার সেনাপতিদিগের সেপ্রকার সাহত বা প্রাক্রম ছিল না, বেশক ভাহাদের বাবুগিরি অভিক হইসাহিল। আর এক দোব এই, মোগল সেনার। বড় বড় ঘোড়াতে আরোহণ করিত, এই নকল ঘোড়ার ভারি ভারি দাল ছিল। সেনাগণের পোলাকও অতাস্ক ভারি ছিল, তাহাদের কোর্ভা সকল পলাত বা পলাতের আলে আছাদিত, ও হত্তে ও পুঠে সনেক প্রকার অস্ত্র থাকিত। ভদ্তির জিন পোষের ভিতরে অনেক দ্রবাদি রাখিত। অস্ব সকল আপনাদের ভারে ভারী, তাহাতে এই সকল ভার পুঠে করিয়া অধিক দ্র গদন করিতে পারিত লা। বিশেষ, ভারু প্রস্তুতি দেসকল নটবহর সঙ্গে মাইত ভাহা এক স্থান হইতে ভার এক স্থানে লইয়া ঘাইতে হইলে মহা বিপদ হইত। ইহা ভিন্ন সেনাগতি ও অনেক সেনাগণের পরিবারানি সঙ্গে থাকিত, এবং ভারুব সঙ্গে দোকানী পশারি ও বণিক অনেক গমন করিত।

মহারাষ্ট্রীয়দিশের এই সকল কিছুই ছিল না, ভাহাদের সঙ্গে গুদ্ধ এক একটা খোড়া পাকিত। এই সকল ঘোড়া অভি মুশিকিজ, মাঠে ছাড়িয়া দিলে আপনি চরিয়া থাইত, এবং তাহাদের পুঠে আরোহণ করিলে তাহারা পরনাত্রে দৌড়িত। সেনাগণের পোশাক অভি হালকা ছিল, অত্তের মধ্যে একখান তলওয়ার ও একটা বন্দুক বা নয় দল হক্ত লয় এক বর্ষা থাকিত। খোড়ার পুঠে বত্তে আনম দিতে হইত না, পরিখেয় ক্ষেক খান বন্ধ বিছাইয়া ভাহার উপর এক খান ক্ষল ভোকরিয়া দিলে দিবা আনন হইত, ভাহাতে উড়ন পাড়ন সকল কর্ম চলিত। আন্তারের জন্য বন্ধ চিতা ছিল না, অন্য ত্রুবা না পাইলে

देश होता है की कर्म करियां करेत खाला निकां करिए। विकास है की हहें कि कृषिभया करियां निका याहे छ, अक हें खाला सक्क धरा, जना हुछ मृखिकाट दिख वर्षाट मंदल बाद कार्य क्रियां कार्य म्हिल क्रियां क्रियां

ক হানে দণ্ডায়মান হইয়া যুদ্ধ না করিয়া পলায়ন করিত।

মোগল সেনা প্রান্ত হইয়া ফিরিলে তাহাদের পশ্চাক্ত প্রিয়া তাহাদিগকে সংহার লগুভণ্ড ও নানাপ্রকারে বিরক্ত করিত। যদি দেখিত শক্তসেনা কোন প্রবাদি লইয়া বাইতেছে তাহা হইলে রক্ষকদিগকে বপ করিয়া তাহা লঠন করিত। বদি জানিতে পারিত তাহাদের সঙ্গে প্রবাদি আছে, তাহা হইলে আরো বত্বনান্ হইয়া অর্থশন্ধ রক্ষকদিগকে একেবারে বেইন করিত, কোন নিগে পলায়ন করিতে দিত না—পরে ভাহাদের অর্থ অর্থ ও আর আর প্রবাদি লইয়া ভাহাদিগকৈ হাডিয়া দিত।

महावाद्यीर हता विका दारका अलाहात आहर करिएक आखार एका कवाकित नामक लगामिकिक आको मिरणन, शिक्षि के अकेन अलाहात मिनाइन करतम। कविकत ब्रोक्ष द्वारका कानमान करिएम, मकाबी कमानाकी छाराइ देनरमात श्रीक कारका करिया हिस्सान करेंट के लाहारमत बाक्ष वारका कर्म करिया हिस्सान, काहार के काहारमत कारोबीय क्यांकि क्यांकित क्यांक दक्षण करेंट क्यांनिम।

बरे मक्त क्रम निवांत्र रामनाम आउत्र क्रिक আঞ্জনণ জন্য কম্বক্স নালে ভাঁহার আর এক পুরক্ত सुमिष्किल कतिया प्रिकटन तथातन कतित्वन । आखा प्रिकार क्रमक्तिक जोशांत महिक धेका कारत कर्मा करतन । अहे खाळाटळ अवकिक्दब्र किभिन्द मनः भीषा इहेल. कमना बाक्र प्राप्त करीन हरेया कर्या करवन रेश डाँशत रेष्ट्र। नरश, অতএর মহারাষ্ট্রীয় রাজার সহিত মিলের চেষ্টায় থাকি-ুলন। রাজপুত্রেরও মনে মনে ঘুণা হইল, উাহাকে জল-ফিকরের পরামশানুসারে কর্ম করিছে ছইবে, ভিনি আপনি কিছু করিতে পারিবেন না । অতএব দানাজী বিংশতি সহজ্ৰ অশ্বারোহী সেত্রা সম্ভিবাহারে কর্ণাটে উপস্থিত হইলে, তিনি তাঁহার সহিত শক্ষির কথা বার্ডা আরম্ভ করিজেন। এই প্রকার উভয়ের ননোবাদ উপস্থিত হইয়া ভাঁহারা বন্দোয়ানে ঘাইয়া রাজাকে পত্র লিখি-লেন, নুগর বেউন করিয়া থাকিলেন না। আওরংজেব বিস্তারিত অবগত হইয়া জলফিকরকে পাজা দিলেন काराक किछित पूर्व कर कतिएक हरेरेन, कारा ना हरेरन डीहाउ क्य बाक्टिर ना। अरे बाक्रा शाहेश क्रक्किन ाह अक्टो मटनाटबाशी हहेग्रा हुई **कर काँग्रटलन, किन्छ** ্রাছারামকে ধরিতে পারিখেন না, তিনি ষেত্রিতিত প্রায়ন করিলেন।

व्यवहरू मानाजी ७ भंडाजीत शतन्त्रत विवाद जात्रह इडेक । अडे विकारम बाजातांच भंडाजीत शक्त शहरता, क्लि শিক্তাজীয় সেনাগণ ভাঁহার প্রতি বিরক্ত হইয়া জাঁহাকে বিনাশ করিল। তথন রাজারাম সমৎ গৈন্যাঘাক হইয়া যুদ্ধার্থ গমন করিলেন, ভাঁহার গলে অনেক সেনা চলিল, এত সহারাজীয় সেনা ইহার পূর্বে কথন একত গমন করে নাই। এই সকল সেনা লইয়া রাজারাম দক্ষিণ রাজ্যের উত্তরাংশ লুঠ করিয়া ঐ দেশ একেবারে উচ্ছিন্ন করিলেন। আওরংকেব এপর্যান্ত ক্রমপুরীতে ছিলেন। আপনি যুদ্ধ করেল নাই, সেনাপতিদিগকে পাঠাইতেন, ভাহারা হাইয়া যুদ্ধ করিজেন। রাজারাম সংগ্রাম-সক্ষান্ত বাহির হাইলে, তিনি সমুদান্ত গৈন্য ছাই ভাগে বিভক্ত করিয়া এই প্রতিজ্ঞা করিলেন আপনি এক ভাগ লইয়া মহারাজীয় ছাই সকল আক্রমণ করিবেন, জলফিকর অপর সেনা লইয়া প্রস্তুত্ত থাকিবেন। মহারাজীয়েরা মখন যেখানে আসিবে তিনি বেই স্থানে ভাহাদের সঙ্গে মুদ্ধ করিবেন।

এই প্রতিজ্ঞা করণানম্বর আওরংজের প্রশ্নপরী হইতে

বাজা করিয়া সেতারা আজমণ করিলেন। আজমণের কয়েক

কৃ ১৬০০ বিলাল পরলোক গমন করিলেন। কিন্তু ইহাতে

সমরের বিরতি হইল না। তারাবাই নামী তাঁহার ভার্যা।

কিন্তু বিরতি হইল না। তারাবাই নামী তাঁহার ভার্যা।

কিন্তু বালিলেন। আওরংজ্জেক একে একে অনেক

কুর জয় করিলেন। এক একটা যুদ্ধ অভ্যন্ত বোরতর

ক্ষিক্র বেশকল দেনা লইয়া গিয়াছিলেন ভাষারা কভক যুদ্ধে মরিল, কতক ক্রমেং আতুর হইল, সুভরাং যুদ্ধকর সেনা অতি অপুর রহিল। মহারাট্রীয় দেনাগণ র<del>ভা</del>ণ वीटबाब नाग्न मिन मिन इस्ति श्हेटल लाभिन, अदर पिक्क রাজ্য একেবারে ছার-থার করিয়া কেলিল, কাহার কিছু वाचिम ना। তावर वाका श्राप्त मनुषा हीन रहेन। वर्षे কর্দের পর ভাহার। মালব ও গুল্পরাট বাইয়া গেই প্রকার: न्धे खात्र कतिन, धवर खालनातम्त्र पूर्व नकन करम करम উদ্ধার করিল। পরে সম্রাটকে নানা প্রকারে বিঃস্ত করিতে লাগিল। ভাহারা নিয়ত ভাঁহার ছাউনীর নিকট-বর্তী থাকিত। রাজ-সেনাগণ ছাউনীর বাচির হইতে পারিত না, হইলেই ভাহাদিগকে কাট্যা লওভঞ করিত, এবং ভাহাদিগকে আহারীয় এব্যাদি আহরণ করিভে দিত না। রাজ-দেনাগণ তাহাদিশের সহিত যুজার্থ গমন করিলে ভাহারা যুদ্ধ না করিয়া পলায়ন করিভ, এবং ফে न्हान निया याहेल रंगसान नक वा नुठे कदिया धकाकात ্করিত। রাজ্যের রাজ্যত ক্রে ক্য স্ইতে লাগিল, ভাছাতে আওরংজেব চিক্ সময়ে ইসনাগণের বেতন मार्न असम इहेटबन, रेगरनाता विजन ना शाहिया সক্ষা খিচ্মিচ আরম্ভ করিল। ইহা ভিম রজঃপুত দিলের সহিত যুদ্ধ চলিতে ছিল, এবং জাঠ নামে আপ্রার नाबित्सा मात्र এक क्वांकि हिंग, छाशिमिश्तत्र विकृष्क जन्न-याहर का सावनाक इहेन। अहे तकन कांत्रण आउत्र-

दक्त महातिइङ हहेगा महाता श्रीप्रमिदगत महिङ मित्र आर्थना कतित्वम । किन्छ डाशात्रा डाँशात घरतत मकन मन्त्राम রম্বিত, ভাহাতে ভারি পণ করিয়া বদিল। আওরংজের ভাহাতে সমত হইতে না পারিয়া, সৈন্যগণকে লইয়া आह्याम नभटत भगन कतिलान । भगनकाटलंड महाताकी-ষের। তাঁছাকে ব্যতিবাস্ত করিতে লাগিল। আওরংজের কোন প্রকারে ভাহা নিবারণ করিতে পারিলেন না। এই শকল চিম্বা ও শারীরিক রোগে তিনি ক্রমে অতান্ত হর্মল ক্ ১৬০ । ১ ফিব্রুয়ারি বংসর রাজত্বের পর,৮৯বংসর বয়সে তিনি পরলোক গমন করিলেন।

व्याखन्दरक्षत विमन दुक्तिमान श्क्रेन, किन्छ ध कथा व्यवभा सीकात कतित्व हरेत्व छारात तामक कारन तारकात পরাক্ষরে হ্রাস দশা আরম্ভ হয়। ভদর্ঘি এ পরা-ক্রম ক্রমে আরো ব্রিয়মাণ হইয়া আসিয়াছে। যাহা হই-बात छाटा हरेगाएछ, अकवा गबार्थ, किन्छ हिन्छ्यटमात्र आछि **काछहर करते व कास व्यव किन, अवर हिम्कृ** निशदक जिति निकास क्रिम मिटलन, देशहे व्यमक्रत्मत रहकु। विटमन के नमदम महाबाकीम बाजीदमता अवन हरेमा छेटिए ছিলঃ ইহা দেখিয়া ভাহাদিগকে নিভান্ত হেয়জান ও হিচ্ছ-শংক্র বেব করা উচিত হিন্দু না। ভাষা করাতে হিন্দু-দিশের বিভুমান অভুতকি রহিল না, ভাহারা ব্রকলেই টাছার বিপক্ষ হইয়া উচিল। লোলকদা 🖫 বিজয়

भूटबर ब्रांका अप कर्बाट कान फटनाम्य हरेन में। পরস্ত তাঁহার অন্তঃকরণ এনন অশুদ্ধ ও সন্দিশ্ধ ছিল রেঁ তাঁহার কথায় কোন বাজি বিশ্বাস করিতে পারিত ন। তাঁহরি পুতেরাও তাঁহার বাজে বিশাস করিতেন না, ইহা অমললের আর এক কারণ। বিশেষ, ঐ সময়ে মহা-রাষ্ট্রীয়েরা অত্যন্ত প্রবল হইয়াছিল, এবং কাবুল ও পার্স-স্থানে বে সকল ব্যাপার হইতেছিল ভাহাতে রাজারকা कर्ता वर्फ महत्व कर्म्य हिला मा।

याश रुष्ठक । अरे रमरमंत्र यूत्रस्त्रारमङ्ग व्याक्तिश्रकरवत्र **अङास अभरमा क**तिया थोटकम, बावत वा आक्वरतत তাদুশ প্রশংসা করেন না। তাঁহারা বলেন আওরং-জেব অভান্ত সাহনী কমভাবান্ও জানবান ছিলেন। কিন্তু তাঁহার ধূর্তপনাই তাঁহার জ্ঞান। এই ধূর্তপনাই তাঁহার অঘশের মূল। তাঁহার প্রধান দোষ এই তিনি জন্মদাতা পিতাকে যাৰজীবন কারারুদ্ধ করিয়া রাখিয়া ष्टिलन, এই कर्ल्युह जाना धकवाहछ त्थेम करहन नाहै। তীহার মনে মনে সর্ক্ষা এই আশস্কা ছিল তিনি পিতার বে ছদিশা করিরাছিলেন তাঁহার পুতেরা পাছে তাঁহার দেই थकात इक्मा करतम अहे छता छिनि निक्छ थाकिएड भारतम नाहे। जिनि जानक इत्रह कर्या कत्रिशाहित्सन, किन्न আপন সম্ভানুদিনের উপকারার্থ ভাহা করিয়াছিলেন এই विका कर्वा अदबाध मिटलन ।

# ठञ्जिः भ जशाम ।

#### বাহাছুর সাহ।

অভিনংকের আজা করিয়াছিলেন উাহার মৃত্যুর পর উহোর তিন পুরু ভুল্যাৎশে রাজ্য বিভাগ করিয়। লইম্প একজন দিলী ও তাহার উত্তর পশ্চিম প্রদেশের রাজা श्रदेश मिलीनगरत द्राक्षधानी कतिरकन, आंत धक्यन আগ্রা ও তাহার দক্ষিণ পূর্ব প্রদেশের রাজা হইয়া जाशांदक ताजवानी कतिरवन, कुछीय प्रक विकाध्य छ পোলককার একা হইবেন। কিন্তু তাঁহার বিভীয় পুত আলীম দে আজা অবহেলন করিয়া আপনি রাজপদ अइन क्तिरलन । त्याकारम उदकारल कावूरल हिल्लन, लिन बामाइ त्यारे पूज, बाउवन, बाए। दामा श्रेटन, जिनिक जाननात ताकाजित्वक कहारेटकन । प्रजति উভয় জাতার বিবাদ উপস্থিত হুইল, তাহাতে আমার क्रिक्ट अकड़ा त्यांत्र छत्र मर आंग इहेन । अहे युटक कालीम के कीहात सह पुत्र एक एहरणम, अवर डीहात जुकीय पुत्र ब्रम्भाटम क्ली इहेटलम्। स्माकारम उन्वती एरेश वारशिक्ष नार नाम थात्र श्रवंक निर्दागनी आएतारन केंद्रियम । "

আওরংকেবের তৃতীয় পুত্র কমবকস পিতার আজার্ত্ব-সারে আপনাকে রাজ্যের তৃতীয়াংশের অপিকারী বিবেদ্ চনা করিয়া মধ্যমের প্রভৃত অধীকার পূর্বক দক্ষিণ রা-জ্যের রাজত গ্রহণ করিয়াছিলেন। বাহাছর সাহ রাজ্যেদ শ্র হইয়া ভবিকতে গনন করেন, ভাহাতে হায়দ্রাহাদের নিকটে উভয়ে মহাযুদ্ধ হয়। ঐ যুদ্ধে কমবকস পরাজিত ও হত হন।

• তথন পর্যান্ত মহানীয়াদিণের উপদ্রের বিরতি হয় নাই। তাহারা প্রবলভাবে চলিতেছিল। অতএব ভাহাদের মধ্যে আপ্ত কলহ উপদ্বিত হয়, এই অভিপ্রায়ে বাহাছর তাহাদিখের প্রক্রন্ত রাজা সাহকে মুক্তি দান পূর্বক বলিশানার বাজা উদ্ধার করিতে পার ভাহাহালে আমি ভোমার সহিত সন্ধি বন্ধন করিব। সাহ কারা মুক্ত কইলা রাজ্যোদ্ধারের চেকটা করিছে লাগিলেন, মুতরাৎ মহারানীয়দের মধ্যে ছই দল হইল। এই ছই দলের মধ্যে সাহর দল প্রবল হওয়াতে দাওদ খাঁ পালি নামে জলফিকরের পক্ষ যে এক প্রধান দক্ষিণের ক্য়োশ্যাক্ষ ইয়াছিলেন ভিনি সাহর কহিত সন্ধি করিলেন, ভাহাতে এই নির্বারিত হইল সাহ চৌধ পাইবেন, মহানারীয়েরা ভাহা লইতে পারিবে না।

এই সময়ে ব্লাহপুতদিপের সহিত যুদ্ধ চলিতেছিল, পরে পঞ্জাববারীবিধের সহিত মোগলদিনের সংগ্রাম উপস্থিত ছইল। প্রাক্তিন বিবেচনা করিয়া বাহাছের সাহ রজঃপুতদিপের সহিত সন্ধি করি-লেন, তাহাতে তাহার। যুক্তে কান্ত দিল। কিন্তু শিখ-দিগের সহিত যুক্ত চলিতে লাগিল। এহলে শিখ জাতি-দের বিবরণ কিঞ্চিৎ লেখা বাইতেচে, তৎপরে তাহাদের যুক্তের কথা বর্ণনা করা বাইবে।

খিখ প্রস্থক বিষয় বিষয় করে বালাকালা বিশিষ্ট নান-কের ধর্মে মতি ও কথার বালাকাল প্রকৃতি ছিল, এবং তিনি ক্রমেক প্রকার কঠোর তপ্রকৃত্য করিয়া চরিতার্থ হইয়া-ছিলেন। ইহাতে বৈরাকা ভাষ উপাক্ত হওয়াতে ভিনি পিডার অভান্ত অপ্রিক্ত ইইয়াছিলেন। ঐ গ্রহ-কুর্তারা ইহাত কিবিয়াছেন তাহার পিতা টাহাকে ধর্ম ভিনার বিষয়ত বিষয় ব্যাপারে রক্ত করিয়ার নিমিত জ্পনেক ষত্ত করিয়াছিলেন, কিন্তু কোন প্রকারে উহিছিক ধর্মপথ হইতে বির্ভ করিছে পারেন নাই।

নানক সমুদায় ভারতবর্ষ ভ্রমণ করিয়া মকা মদিনা পর্যান্ত গগন করিয়াছিলেন, এবং নানা দেশে নানা স্থানে একী পাজি প্রকাশ পূর্বক জনেক প্রকার ফলৌকিক জিলা সম্পন্ন করিয়াছিলেন। পারে পঞ্জাবদেশে অবজিতি করিয়া বদেশীয় লোকদিগকৈ ধন্যোপদেশ প্রদান করেন, এবং অনেককে আপান মতে নিবিট্ট করিয়া শিষ্য করেন। শিষ্য প্রকার অপান্তংশ শিখা তদ্দুলারে উছোর শিহোরা শিষ্য শব্দের অপান্তংশ শিখা তদ্দুলারে উছোর শিহোরা

নানকের মতে পর্নেশ্ব একনাত, অতি তীয়, নির্নিপ্ত, নির্মিকার, নির্ম্পন, নিজা, সভা, শ্বাহ্ম, পরাৎপর ও বাকা মনের অংগাছর। এবং ভিনি প্রমেশ্ববে অন্তি শাদিশ সভা বলিয়া উল্লেখ ক্রিয়াছেন ।

তিনি শাস্ত্রানুষ্ণারে জীব আর বোনি জনণ ও শুভা-শুভ কর্মানুরপ উত্তমাধন জন্ম গ্রহণ অস্কীকার করিতেন। এবং ক্রন্তা বিফ মহেশকাদির অস্তিত্ব ও দেবত্ব বীকার

<sup>•</sup> केंग्रांत करिया शांत कतिहरण त्याप क्य किनि विक्र देनमां कि । क सुणकारण पृष्टि अष्ट केश्वरिक मध्य संख्यान कति। की मण क्या कि कित्रप्रक्रिक्त । लिथ-अष्टकारहरू। क्रम्म किनि अक सुमनमान क्रियाक विक्र के सुनुष्टमान भाषा निष्यां कहिसाहिएलन।

করিতেন, কিন্তু প্রনেশ্ব ডিগ অনা বস্তর আরিখন। করিতে বারশ্বার নিষেপ করিয়া গিয়াছেন।

উহিত্ত মতে হিচ্ছু ও মুসলমানে কোন তেদাতেদ ছিল না। মোলা ও পণ্ডিত, দরবেশ ও সম্পাদী সকলেরই পরমেশ্বরের উপাসনায় অধিকার এবং সকলেই তাঁহার অসাদ ভাজন। আভ্রুব উভয় জাতিকে এক পর্যানিবিট করেন ইছাই মানস করিয়া তিনি এক ভূতন গর্ণের অমু-চান করেন। তাহাতে জাতির বিচ্ছুমাত্র ভেনাতেন পাকে না, এবং হিন্দু মুসলমান উভয় জাতিতে পর-স্পার ঐক; করিবার নিমিত্ত গোমাংস এবং ব্রাহ্মাংস ভক্ষণ নিষ্টেগ করিয়াছিলেন। আপনিও মাংস-চক্ষণ ও জীবহিংসা গরিভাগে করিয়াছিলেন।

নানকের মতে সান দান ও পর্মেশ্রের নামোপাসন, এই তিনটী প্রধান কর্ম। ধদিও তিনি প্রকৃত প্রস্তাবে জাতিভেদের প্রথা উৎসেদ করিছে পারেন নাই, কিন্তু উক্ত প্রথার বিস্তর নিশ্য করিয়া গিয়াছেন।

এই সকল বিষয়ে হিন্তুদিগের কিছু মাত্র আপতি চিল না, এবং হিন্তু ও মুসলমান অনেকৈ তাঁহার শিষ্য হইয়া-ছিল। কিন্তু ধর্ণোক্তর মুসলমানেয়া তাঁহার মত আহ

<sup>े</sup> जिनि निर्मितार्टम करिया केत्र केत्रिक मा, गरनत मनीरण मक करें केमा, क्षांकिमा पूका, जीर्थमाका, क्षांक्र-मरन विकरन-नाम क मञ्चलार देशहाँ। के मकल क्षेम्काम करितन, कृति गृहीक इंदैरक भारित मा। यनि निक कि छोड़ कर्य मरकात केशामिना कर १

করে নাই, তাহারা তাঁহার প্রতি নানা প্রকার অত্যাচার করিত। নানক তাহাদের অনেক অত্যাচার সঞ্ করিয়াছিলেন, অবশেষে তাহাদের কোঁপানলে পড়িয়া ৭০বৎসর বয়নে, ১৬০৬ খুফাকে, মুলতাদা অন্যংপাতি কীর্তিপুরে প্রাণভাগ করেন। তথায় ইরাবতী নদীর ভীরে তাঁহার শরীর সমাহিত হয়।

নানকের মতাবলয়ী লোকেরা পুরের অতি শান্তমভার 🏟ল, কাহার হিংসা করিত ন।। মুদলমানের। নানককে বিনাশ করিলে তাহারা হয়ব্যাবিদ্দ নামে নানকের পুরুকে ञालनारमंत्र व्यथाक कविन । किन्नु उदकीरल शुमलमान রান্ধার রান্ধা, রান্ধা ভাহাদের বিপক্ষ হটলেন। ভাহ রং রাজাদৈনাগণের সহিত যুদ্ধ করিতে জাক্ষম হইল। ঐ **मिनायन ভাষাদিগকে লাংগার হইছে দুরীভ্ত ক**রিল, সুত্রাৎ তাহারা পঞ্চার পরিত্যাগ করিয়া উত্তর অঞ্চলের **अक्टर्ड अगामन कतिन। अधारमञ्जूमनमामनिर्धित** শহিত ভাষাদিগের শত্রুভা চলিতে লাগিল। পরে গুরু-र्शाविन नारम श्रुरणावित्नत ल्लोब, छाश्मिशदक अकवे করিয়া ভাহাদিপের শিখ নাম দিলেন । ভাছাদিলের মধ্যে জাভি বা ধর্মভেদ রহিল না, কি মুসল-मान कि हिन्दु मुक्टल है बहे मनखुक इहेटल नाजिन। धनर ভাহাদিগকে দেখিলেই শিথ বোধ হয় এজন্য ভাহারা সকলেই নীলামর প্রিধান করিল ও দাড়ি গোপ ও মস্ত-কের কেশ রাখিক। আরো এই বিধি হইল এই দলে ছুক্ত হইয়া সকলে যুদ্ধ ও সর্বাদা অন্ত্র ধারণ কারিবে। আর পূর্বে যে সকল ধর্ম কর্ম ও ক্রিয়াকলাপ দ্বিল ভাষা রহিছে হইয়া স্থতন ক্রিয়ার বিধি হইল। ইছাতে হিন্তুপর্ম এক-বাবে উঠিয়া গেল না, ব্রাক্ষণদিপের পূর্বক্রপ স্থ্যাদা রহিল, গোমাৎস ভক্ষণ একেবাবে নিষ্কিছ হইল।

ु किन्छ এই সকল করিয়াও তখন শিপদিপের এগন বল र्ग्न नाहे त्य जाव्यात महिल युद्ध करत्। ताकरेमर्नाता ভাহাদিগকে মুষিকের ন্যায় ভাড়াইয়া বেডাইড, শিশ रमिथ**रमहे वध क**तिल, जातान ब्रह्म काहारक छास्त्रिश मिल না। কথিত আছে এই সকল দৌরাজ্যের নিমিত ওর-श्रीदिक ध्वरमंद्र युगलसान ब्रोक्नोत्मत होक्दि शर्या छ चीकात कतियाहित्वन, उथानि मुनलमान तासाता जाहा-দিগের প্রতি অভ্যাচার করিতে বিরক্ত হন নাই। এই সকল অত্যাচার জন্য ভাহারা খাধীন ছইবার ৰাঞ্চা করিল। धक्रशातिक बद्ध एडक्क्की शुक्रम ছिल्मन ना, किन्छ वस्तु नारम ভাঁহার পর যিনি শিখাধাক হইয়া ক্লিনেন ভিনি অভান্ত এছ ও স্বভাব ছিলেন, ভাঁহার শরীরে দরা মাত্র ছিল না তাঁহার সময়ে শিখেরা পর্মত হইতে অবরোহণ করিয়া পঞ্জাবের পূর্ব অংশের ভাবজেশ একেবারে ভিন্ন ভিন্ন করে। कारात्वर मोद्रांत्वा व अस्मनं वक्रगांत काक्नांना करेगां-किल । छारांत्रा मनुषा ७ जीवज्ञक्किक्ट्रे डाटके नाहे । छम-सक्य छोडांबा बयुवाछीत्व मादाबासिश्व भगास आनिया-্ছিলা, এবং ভাষার ভাষার। শতক্ষ পার পর্মতে বার করিয়। खबा इटेटडें करम मिल्लीत निक्रि भगाख नुर्ध कतिहाँ किया है। ছয়। মোগলদিগের সহিত ভাহাদের যুক্তের এই স্থ্য।

াশিখেরা দিল্লীলক্ষ্যে গমন করিলে, বাহাছুর মাহ ভাহা-निटकत प्रमार्थ एकुत्रक स्मना त्थाबन कतिर्वत । धे स्मना-भर्गत भगतम भिरमदा देशन भिश्रदा शनाइन कतिन। ভবায় এক দুর্ব ছিল, বন্ধু তাহা আত্রায় করিয়া তমধ্যে পাকিলেন। ভাছাকে ধরিতে পারিলে মুক্ত শেষ ছইবে 峰 মনে করিয়া বাহাছর ছুর্গ বেইটন কবিলেন, কিন্তু বন্ধু এমন ভাবে পলায়ন করিলেন, বাহাত্র ভাহাজানিতেও পারিলেন ন।। ভারনভার ভিনি লাছে।তের প্রভাগেমন জি ১৯২৪ করিয়া কিছুকাল পরে মানবলীনা- পছ-পু ১৭১২ কং ৪৮১৪ রণ করিলেন। বাহাছর সাহ অপিক बग्राम दोका आंखे इन, अक्रमा भी ह नश्मदत्त अधिक दोकाद ক্ৰিতে পাবেন নাই।

### अशिकारत मार

্ৰাছাছর সাহের মৃত্যুর পর সিংহাসন অপিকার জনা তাঁহার ছই পুতে মহা বিবাদ উপস্থিত হইল। জোঠ काहानात्र माह कम्फावान शुक्रम हिलान गा, धलाना रेमना ও मखामधर्ग छिंदादक हाजा ना पिया उपन्न व्याकीमदका द्राष्ट्रा कतिवातं कण्णन्यं कतिरत्यन । किन्तु जारशमत ताका হইলে উাছাতে লাকা গোপাল করিয়া আপনি কর্তৃত্ব করি- বেন এই অভিলাবে জলকিবর তাঁহার পক্ষ হইয়। আজীমের সছিত সংগ্রাম করিলেন। এই সংগ্রামে আজীর্ম পরাজিত ও হত হইলেন। তাহাতে জাহান্দর সিংহাসনারোহণ করিলেন। অলফিকর তাঁহার মন্ত্রী কইয়া
একাপিপতা করিতে লাগিলেন। জাহান্দরের এক উপাপদ্মী ছিল, সে সামানা নর্ভনী। জাহান্দরে রাজা হইয়া
তাঁহার আলীয়গণকে রাজোর প্রধান কর্মা দিতে লাগিলেন। ইহাতে তিনি সকলের অভান্ত অপ্রিয় হইলেন।
মন্ত্রীও তাঁহাকে ভুচ্ছ তাচ্ছীলা করিতে লাগিলেন।

সে হাহাহউক, জাহান্দর রাজ্যপ্রাপ্ত হইয়া নিক্ষণীক রাজ্য ভোগ করিবার মানলে, রাজ্যপরিবারের হাহারা তীহার রাজ্যতা বিশ্বদান বা রাজ্য আফাজ্যা করিতে পারে একে একে ভাহাদিগাকে সংহার করিলেন। কিন্তু হাত্রাথসাহ নামে আজীমের এক পুত্র বজ্ঞানাশ চিলেন, তাঁবাকে
বিনাশ করিতে না পাবিষা, ভিদ্নিদ্দে সৈনা প্রেরণ করিলেন। ফরোর সাহ পিড়বোর অভ্যাচার দেখিয়া
আবস্তুরা ও হুসন আলী নামে সৈয়দ গোষ্ঠীয় ভুই
জাভার শরণ লইলেন। ইহারা অভ্যন্ত পরাক্রমশালী,
একজন এলাহাবাদের আর এক জন বেহারের সুবাদার
ছিলেন। ইহাদের সালাখ্যে করোধসাহ রাজ্যপ্রেরভ
দৈনাগণকে দুরীভূত করিয়া আরা থাতা করিলেন।
আহানের এই সন্থান পাইয়া ৭০০০ সৈনা দেইয়া ভাহার
ক্রিতে মুবাধে গ্রমন করিলেন।

সেনাপতি হট্যা যুক্তে চলিলেন। সংগ্রাম অভি খোর-छत हरेन । अन्दर्भाष कद्वाधनाय असी इहेटनन, उचन জাহাদার ভ্রাবেশে দিল্লীতে প্রায়ন করিলেন। প্রা-शन कारल कल किकदत्त् शिका आप्रम या है। छारक बनी করিয়া রাখিলেন। ভদনস্কর করোখসাই আগ্রাতে উপ-ভিত হইলে, তিনি ও তৎপুত জলফিকর মনে মনে বড় ভিং ১১২৪ আশা করিয়া স্কাহান্তরকে তাঁহার হ**তে** বু<sup>১৭১৩</sup> সম্পূর্ণ করিলেন। কিন্দু স্বেৰ্খিসাহ ভার্তেদর মনেবাঞ্জা পুর্না ক্রিয়া জাহান্দর ও জন্ম-किन्द्र छिन्द्रपद्दे लाग म्टल्ड प्राप्त हिस्सन । क्रामस श्रामक वैद्वित्सन ।

# ফরেশ্বদাহ।

वि । ३२२ । करताधमार कि जामना ताहण कविशा जान-य १४५० । इहाटक ताक मही ७ ज्ञन जानीटक जामी-রল মলহ, অর্থাৎ প্রধান শেরাপত্তি করিলেন। ইত্রত মতন কৰিলেন ব্লাক্ত। রাজ্যতোগে সভ বাকিবেন, সামত ভূমাকর্ড। চ্কুর রাজকর্ত্ত করিব। কিন্ত **করোৰলাহ উহিম্নি**ার ঐক্যতিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া ব্যুসাকে মিবুজুমুলা উপাধি দিয়া তাহাদি-श्रित हुई खाँचित्र विनाम कतिवात श्रीख्या कतित्मन, का का जारक हुई सारन त्रामियात्र

ৰাক্তা করিয়া, হুখন আলীকে মাড্ওয়ারের রাজা অব্বিড সিংহের সহিত যুদ্ধার্থ পাঠাইলেন, এবং অবিত সিং-इटक शालन छाटा बलिया भाषाउँ लाम. युक्त बाहाइ छ শীত শেষ না হয় ভাগু করিবে। কিন্তু অঞ্জিত মিংহ ভাহা না করিয়া, আপন মঙ্গল চিস্তায় সেনাপভির স্হিত সন্ধিনদ্ধন করিয়া এই লিখিয়া দিলেন, স্মাটের শহিত আপনার কন্যার বিবাহ দিবেন ৷ এই নক্ষিব পর इमन जानी दास्थातीएक श्रक्ताधरन कहिएतन, साम রা**জাব সহি**ত মনোবাদ হইয়া, বরাও গুল হটবার একণ হুইল কিন্তু রাজা নম্রতা ঘীলার করিলেন, ভাচাতে और युक्त चरिन सा। जानस्त्र अने धारा श्रेन निवस्त्रमन। विश्वाद्यत सुधानात हरेगा पारेटवन, ताजधानीट आकित है, পারিবেন নাঃ ছলন আপনার দৈন্য স্মিক লইয়া **দক্ষিণে যাতা** করি**রেন । আরি**হনা মন্ত্রিপ্রেদ গাকিবেন। ইতি মধ্যে অজিত দিংহে ক্ৰিন্য। রাজ্য নীতে আদিয়া উপস্থিত হইলেন। ছগন আনি তাহাকে আপন আলংগ রাখিয়া অত্যন্ত ধুম্ধুরুষ 🖥 জার সহিত বিবাহ \* দিলেন 🕻 তৎপরে ভিনি দক্ষিণে ষা করিলেন, গমন কারে शिक्षन व्यामि वर्षान र है । हिल्लाम । 🚛 यपि एकि स्वामात कारकत वाक्री वर्षान कित्यादक उत्स्

देशांद्र शद्र शिक्ष द्राकांता सुगलमान द्राविक्षांत्र आहे कना शान करहन मारे। अरे शानरे (लाह)

তিন সপ্তাহের মাধ্য আমি এই থানে আদিয়া ভাছার लेकिन मस खनान करित।

হুসন দক্ষিণে গমন করিলে, রাজা, দাওদ থাঁ নামে এক পাঠানকে ভাঁহার বিনালার্থ নিযুক্ত করিয়া ভারাকে উপ-<দশ দিলেন তিনি মহারাফীয়দিধকে ভাঁহার হহিছ মুদ্ধ করিতে পর্মেশ দিবেন, পরে আপনি ভাঁচার প্রক্ পাকিলা কোন ভৌশলে তাহাকে সংহার কবিবেন। লাওদ বঁ। ৭ত গোলমালের মধো না ঘাইয়া আপনি ভাঁছার সহিত গুদ্ধ করিতে পেলেন। ভাছার গৈনাপ্য এমন रम्पन के शिक्षा का का का विकास के किया है से महाराज के महाराज के का निवास के किया है से महाराज के किया है से म বেশ গারণ করিছে না পারিয়া ছিল ভিন্ন হইবা চতুর্দিশে প্রায়ান করিল। ঐ সম্য়ে দাওদ থা ভিন শভ পাঠান হৈনতা সইয়া আপুনি ভাহাকে আদলত করিলেন <sup>ভ</sup>িকিছ ইদনের নিক্ষা ক্রমে, একটা গুলি কা্সিয়া ভাঁহার মন্ত্রক ভেদ করিল, ভাহাতে ভিনি হত হ*ালন*, যুদ্ধ জয় হঠল नाः उपनक्षत इभनकाली प्रश्ताकी ग्रहति। । আরম্ভ করিবলন। মহারাষ্ট্রিফেরা আলেনাদেরু নিয়মান্ত-সাত্রে যুদ্ধ করিল, তিনি ভাচাদিগকে পরভেব করিতে পারিলেন না। অনস্তর দিলী হটতে আজা হইল উহিতে ভথায় ঘাইতে হইবে, ভাহাতে মুদ্দ শেষ করিতে না পারিয়া তিনি সাহর সহিত সন্ধি করিলেন ৷ সন্ধিপতে, आंद्र १ एक था (लक्षा धोरूक, धकरें। कथा बहे थाकिक नाष्ट्र मिली सुद्रदर्शन से लक मुला कह अवान, भर्धाम कारन

श्रम्भगरेख रेगना गाराया, धर प्रक्रिंग द्रारका याराटक युक्तामि ना रय छारा कतिरवन । देश कतिरक छिनि मिक्किन तारकात गकन अरमर्ट्भ होचे औरन कतिरक शांतिरवन, बर तांकरयत मम्मार्ट्भत धक अर्थ शांरिवन । महार्हे किर ১৯৫० । धर गिक्त धांश् कतिरम ना, छाराटक यू ১৯৯० । तांकांत गरिक रेमग्रममिर्गत श्रनकांत युर्द्धत सक्का रहेगा छैटिन।

**এই সময়ে निर्धित। शूनवीत मिर्श न्छन आंत्रष्ट क**तिल, ভাহাতে সম্রাটের পক্ষ এক দক্ষ সেনাধাক্ষ ভাহাদিগের সহিত যুদ্ধার্থ গমন করিয়া তাহাদিগের অনেক প্রধান ২ स्नाकतक त्रवन्ती कतिरामन। वक्त मारम छारानिरगत प्रवाधाक वह विभाग धरा পिएटवन । " त्यागव-त्यनाशिक चरमुक् निथ-खंधानत्व म्हिथात्न वध कतित्वन, ७९शद ৰন্ধুকে সাতৃশত শিশ সমভিব্যাহারে, দিলীতে পাঠাইয়া मिट्नन । देशंत्रा मिलीटक आमिटन गखाँ आका मिटनन क्षीद्याता मकरल सूमलसाम धर्मा श्रद्ध कतिरव । निर्धिता छोहा वी क कतिन ना, जाहाद्व नश्रत ध्वमिण नेताहेता" व्यक्तिम छोहामिरगत्र अक अक मेलु करनत मू अ-क्षमन हरेट जानिन । वसूरक शक्त वस शहिशान, कहारेया मक्टरक अरु जाँच गामणी पिया अरु ब्लोश-शिक्टरत त्राचा-विश्वाहिन। डाँदात धन्द्री मुख्याम हिन्, त्म निভास निच, রাজপুরুবেরা ভাহাকে ভাহার সমূতে আনাইরা ভাহার राज बक्बान जीक जात मित्रा चाका केत्रहा छनि धरे

আত্র বারা সন্তানকে বণ কর। বন্ধু পুত্রকে বিনাশ করিছে পারিলেন না, তাহাতে তাহার। ঐ পুত্রতীকে বধ করিয়া তাহার অন্ধি ও লোণিত তাঁহার গাত্রে প্রক্রিপ্ত করিয়া। পরে গোইশলাকা অগ্নিতে সিন্দুরবর্ণ করিয়া চতুর্দিগ হইছে তাঁহাকে বিন্ধিতে লাগিল। বন্ধু পরমেশ্বরের ধনাবাদ করিতেই প্রোণভাগে করিলেন। বস্ত্রণা ভরে ধর্ম ত্যাগ করিলেন না। মুসলমানেরা আর আর শিখদিগকে বন্য, পশুর ন্যায় তাড়াইয়া মারিতে লাগিলেন। গনেক শিথ ধনালয় গমন করিল, কিন্তু ভাহারা যে দল ব্রাধিয়া ছিল ভাহা ভঙ্গ হইল না, ক্রমে রুদ্ধি হইতে লাগিল।

রাজমন্ত্রী আরম্ভ্রা অতি সলগ ও সুখাতিলারী ছিলেন,
অতএব তাঁহার ক্ষাপ্ত দুলিণ রাজ্যে গমন করিলে,
তিনি এক হিন্দু প্রতিনিধির প্রতি সকল কর্মের ভারাপণ
করিয়া আপনি মুখ রুদ্ধোগে নিযুক্ত হইলেন। বে হিন্দু
তাঁহার কর্মা করিতেন তিনি অতি ধর্মনিই ছিলেন, কোন
প্রকারে প্রভুর অন্যায় হইতে দিতেন না, ইহাতে অনেকে
অস্ত্রত হইলেন, সুভরাৎ প্র্যাবধি তাঁহার প্রতিশ্বাদ্ধার বে বেষ ছিল তাহা রুদ্ধি হইতে লাগিল। বিশেব মিরজুমলা
ন সময়ে দিলীতে আসিয়া ছিলেন, তিনি উপস্থিত
বাবিয়া মন্ত্রীর প্রাণ বগের সন্ত্রণ করিলেন। মন্ত্রী কি
করেন, রাজার অভিপ্রায় ব্রিয়া স্বীয় বন্ধু বার্বব গণ্ডে
লইয়া আয়া রক্ষার্থ প্রস্তুত হইলেন। মিরজুমলা আহাকে
কর্মা আয়া রক্ষার্থ প্রস্তুত হইলেন। মিরজুমলা আহাকে
কর্মা আয়া রক্ষার্থ প্রস্তুত হইলেন। মিরজুমলা আহাকে अधानत्व आंका विश्वति । अधिक व्यक्त वन अधानत्व आंका वित्वत केंग्राह्म मकीत्व वध करहन। उपाना मजीत्व विनाम कहिताह वध कहितान, किल इन्डम्बा इहेटल नाहित्वत न। हेल्जिएना इनन मन कि १९९० नहन्त्र महाताचे है। तमा नविक्ताप्राटह में १९९० किला अखानमा पूर्वक नवहाधि-का कहिता मक्षाप्रत्व वध कहितान। यदहासमाह नर्स एक नाह दरमह होस्य करहन।

# क्रमान गोर ।

करतायमारहत गुजात शत रेमग्ररमत्र। अन्नविष्य प्रहे बामकरक निर्हामरम जेन्नारमम्म कन्नामः। हें हात्रा अन्न-काल मरपार कालकारम পতिত हम। जाहार जेहिरात्रा स्नान अक बामकरक निर्हामन मिरणमः। अहे बासक सहस्त्रम नाह नाम अहन श्रुसंक निर्हामन खारता-

बहुषारमंत्र सालय कारण देशत्रमंत्रिरमंत्र मण्डून श्राकृत श्राक

व्याप, धरे क्देश बनाएक तालक काटन निकटनेत सुवानात्र हिर्मन र स्ना के आरम्द्र प्रतामात द्वेत्राटक विक क्षीरा इंदेशीक्टनन । उंचा जिन देनग्रेमिटमू बढिक निक्रक क्या कटतन माहे । नक्षमा छाशामदभत में छा कुमादत विविद्धिम, किन्तु अवद्भदय देनग्रदम्त्रा डिशिटक मानदेवत सुवागाती कर्ण्य नियुक्त कतित्वन। बहे कर्ण कार्न मटें की रहित के भेर के हिन ना, अलब दें कि में महम है क्विरिमाम्य इहेन्। जिनि देमना नर्थक क्रियक लोगिएनले, उद्भारत मिन द्वारको यशिया छत्राय आलन अखुक स्थिन हिं >>> कित्रत्वेम । देशतरमंत्रा कित्रत्यक त्मना तथात्र পু ১৭২০ করিলেন, কিড ভাহারা ছিল ভিল হইয়া কিরিয়া আদিল। ইহাতে উগ্রদ্দিগের মনে অভান্ত আদ विभाग मद्बारमत गर्डवाहिनी अंडि वृक्तिमंडी हिटलन, मर्ट-শ্রী উহিত্রি পর্মেশ ভান্যা কর্ম কার্য্য করিতেন। ইসমূদ निर्देश औकि डीहोड अमदावराड किन ना, किन्छ यसन आर्थको अपी रहेलने, उपन महन महन आस्लानि है कि क्ये के के किपीटनत गहिए छोटा पिटनैत कमण द्वारेंग्य मखनीय निर्क रहेरलने। हमन बहे मखनात कथा जानिर्देश প্রিয়া বলে মনে বির করিলেন রাজা ও তাঁহার মর্বাতে निक्क मजीविश्वदक अहँगा जामि मिन्न म्हिन पुछाटमें श्रीमा के बिन मानिका श्रीमा एक मिलीट के किटन । इहा रहेर पांत क्षेत्र कि केंद्रिए शाहित्य ना ।

बहै ने बहु कि नि देने ने का करिया आओ हरें कि बांकी

क्रिट्रेंबन, किन्तु द्वयन जिनि शिविका चारद्राव्य अदिकारकन अपूर्ति कार्यक काठीय थक क्यांत्रक श्रुव्ह श्रेष्ट डिस्स्क विताल क्षित्र । इत्राटनद मृङ्गाटक देवनामधनी कल्ला-बिक्ट इटेला। देमवर्ग मक्न वाकविक्रदक अलाधाहर कडिन १० क्रिकाचलकीय अधारनहा डाहानिशस्य भतात क्रियंत्र । क्तरत्त्व मुख्य मन्त्राम् मिलीएक अकाम इहेरल कांवहता बात अब काञ्चित्क बालिमिश्होमन श्रामा कतित्वत, विहर व्यत्नक देशना अकळ कतिश्रा व्याशनि महत्त्रापद गहिछ युक्षार्थे व्यक्षमत्र क्रेटवन । किन्छ मक्त्रम गोरक्त त्मनांशन উাহাত্তৰ পরাস্ত ও রধবন্দী করিল। মহম্মদ ভাঁহায় প্রাণদণ্ড করিতে উদাত ছইয়াছিলেন, কিন্তু পীর বংশীয় বলিয়া ভাষা করিলেন না

का महत्वान देशक्रमिद्रशत इस इहेटल প्रतिकांश भाईसा আহত্তকাকে মঞ্জি-পদ প্রদান করিলেন। জাসকজা ज्युकारत प्रक्रिम होटकात करमा निश्च किरामम, करे के बे आरम्भ इरिक्रा जातिरङ शाहिरणन मा। अस्त्र हाजपा-नीटड व्यामित्रो अमिश्रद्धन ब्रांका हेट्टिय-स्मतहरू निकार বিষয়ন, ট্রাহার উপপত্নী ও প্রিমপালের। একাপিপভা कडिटाइट । यह तका काक्षिरधन महिल छैं।बाक महाव बाबान ता । তाराता आत्रकाह शासित स्वाधित ट्टिका विक्रं किंद्रिक नागिन, क्षेत्र अन्तिक क्रांबाहक चारमात्र महिर्देश मात्रियम । नेरियमा विश्वक रहेका कर्त श्रातिकार्य श्रमेत श्रेत स्टन्स महिला इरिका, प्रस्ती- গমন করিলের। গমন কালে মহন্মন তাঁহার সহিত্ত কনেক সামীয়তা করিলেন, কিন্তু তাহার পরে গোপনৈ গোপনে মবারজ থাঁ নামে হায়জাবাদের নবাবনে লাজা কিলেন তাঁহাকে বব করিলা তাঁহার নাজা হরণ করেন। মবারজ থাঁ এই আজা পাইলা সৈনা সংগ্রহ করিলা আদিক-কার সহিত যুক্ত করিলেন, কিন্তু এই যুগ্রে তিনি আপনি পরাজিত ও হত হইলেন। আসফ্রা তাশার হিন্ত নথাক রাজস্বিধানে জ্বের্ন করিলেন। তন্তন্তর তিনি হায়জা-বাদে রাজধানী করিলা তথার রাজশাসন করিতে লাগি-লেন। তিনি মধ্যে হ সন্ধাইকে উপটোকন প্রেরণ করি-তেন, কিন্তু তাঁহার রাজপ্রজ্ব বীকার করিতেন না, প্রায় যাধীন রাজার নাগ্র চলিতেন।

তই সমনে মহারাকীত রাজ্য পূর্বালেক। আরো মুণাসিত্ত পূথালাক হইরাছিল। বালাকী নিলনাথ নামে
সাহ রাজার এক মন্ত্রী ছিলেন। চৌধ ও স্থিমুখী করকে
মহারাকীলনের ভবিষাৎ রাজির মূল বিবেচনা করিয়া
ভিনি ভাষা আগালের প্রতি অত্যন্ত মনোযোগ করিভেন্। চৌধের বিষয়ে ভাষার এমন আজা ছিল প্রকৃত
রাজ্যের চতুর্ধাংশ গ্রহণনা করিয়া ভোজনমন ও মনকার্ম যে কর ধার্যা করিয়াভিলেন ভাষাই চতুর্ধাংলার
কার্ম করিয়াভিলেন ভাষাই চতুর্ধাংলার
কার্ম করিয়ে ভার করি স্থাল দিভেন না, কিছ
ভবালি ভাষা ছাড়িতেন না। তিম ভিন ভানে ভিন
কার্ম করি করি কর আনালের ভার ছিল। ভাষারা

বিনিষ্ঠ কর আদায় করিবেন ভাষা নিশানিক করিয়া विशे किरलत्। दर्शन राज्ञित्व अञ्चल समित कर आहार कुर्तिक निरुद्धन नी किन मा अधिक अर्थ अद्वर्धात हरस वानिद्वहे अवश्रुका त्वाकामक हरेगात महात्वा । ्विनानी विश्वनात्यत त्राभवमा भाष्टि इहेमाहिन। बे ক্যাতি ভাষার পুর পৌজেরা ভোগ্র করিয়া আরিতেছের. বুরাজী বিশ্রাধের মৃত্যুর পর তংপুর বাজীরাও মন্ত্রী क्रेश हिल्लुन । राजीश अया अमानाद्र कमे । हिला প্রিবলীর পর ততুলা নত্তা মহারাক্ত্র প্রদেশে আর ছুই इब नाहे। फिलिके प्रश्ताची प्रमित्रक स्थानन मिरशत **प्रश्नेत पाक्सभू कृदिएक श्रामर्ग (मन्। , किन् न निया** हित्वन मिल्ली दम्भाना इत्यद जुना, वे क्षमपूर्ण अत्वराद्य भी दाछ कर, छोटा हुई त्य भाषा शहर व्याशनि हातिया প্ৰভিন্নে। বাল্য ভাহার প্রামশান্ত্রনারে মোগ্লদিপকে লাক্ষৰ পৰিবাদ সক্ষতি দেন। ভাষ্টাত বাজীৱাও क्षेत्रे, अक्षित्रसम् सुकृत कविया अन्द्रार्केत प्रशामाद्वत स्वाप्त BY STATE OF THE PROPERTY OF TH

স্থাসকল। মুদ্রে করিয়া ছিলের তিনি বিনা বিষে বাজৰ করিবেন, মহারাজীয়ের জাতার স্থানে কর প্রবণ করিছে পারিবেন না। কিছু হায়লাবাদের চ্ছুদ্বিকে বৈ

<sup>ं</sup> रहे कि पर राज्यक्रियरः

সকল স্থাম ছিল ভিনি ভাষার চৌধ গ্রহণ করিতে পারিক त्समें मां। अक्रिक्ट महाप्राके रियत। **डाँश्वात स्टारन कारने**क দাৰি করিলো, ভিনি ভাষার উত্তর নিলেন এই ক্র माक्राक्षाकेटनम् कि (महाजारके व निकाश करें।) मंद्र लाहरवम बल्लकास छारात भीमारता एव नाहे, अर्ब এই বিষয় ভিত্তীকৃত হাইক, ভাষার পর বাহাকে নিতে হয় स्क्रिया बाहिट्य । जानक्का कहे क्रममात्र कह मान कहित्सन ক্ষা। দাজীয়াও ভাহাজে অভান্ধ কুপিত হইযা বহরান প্লক্ষ व्यक्तिम् कवित्तम् । कानकका ७ लहु वे कान उकार्य উপস্থিত হইলে, তিনি ভাষা পরিত্যাপ করিয়া ওজরাটে क्रे जावर कवित्वन । समहाते नृत्येत शह निगरन यहिंगा आवक्तांत महत्र पूरंस अव्य स्टेश कांश्व विवस्तामालक आहोतीय सर्गापि कामश्रम्य श्रेश क्रम क्रिया मिर्कन । ভাষাতে আলক্ষাতক শমুর পক পরিত্যাগ করিতে হইল ওীহার সহিত বিজ্ঞতা রাখিতে পারিবেন না। ছই 🗯 তিম হইলে, তিনি শবুর সাহত যুক্তারত কচিলা উল্লেক্ প्राक्ष्ठ अक्रिक्स, अञ्चलकारभाव माहत अञ्चल वीकांत्र क्रिट्सन । अद्देशालाट्यम शत वालीवां अ आवस्त्रा त्मक्तिक त्व क्षेत्रांटमत शतकात विदारम आह स्कांत करा मार्के अञ्चन श्रामश्राम सुम मा कतिया छ। श्रामा भक्तादाक माह्यमा क्षिए छ हा नियम ।

्रकाश्चास विक्रीपत्र महाताचे व विद्यात्र अस्ताव्यक्ष व्यक्तिया चार्का क सम्बद्धाते कोच्या क्रमाश्च तामाणिकाम

राख गमर्थन कतिवाहिएलाम । न्यान्निवाध में हहे हामा পুনর্বাদ আঞ্চনগ করিলেন এবং নবংজে জীহার জন-প্রাকা উজ্ঞীরমান হইল, ভাষাতে ডিনি অহ রার পূর্মক দিলীখনকৈ দৃতভাৱা ৰশিয়া লাঠাইলেন মালবরাজন ও মধুৱা ও এলাছাবাদ ও বারাধস আত্ত্যতি চছল নদীব দক্ষিণে ৰে সকল দেশ আছে ভাষা জামাকে ছাণ্ডীৰ হৰুপ দান কর, ভাছাকটলে আমি যুদ্ধে কাল্ত কইব, নতুন। তাথা বল-श्चर्यक व्यक्तिकाव कतित । पिक्षी श्वत छथ । अध्यम वनशी म समः माहे, त्य शकीतास्त्यत करे क्या सम्मा साराज के রাজা ছাড়িবা দেন। অত্রব তিনি মহারাফী দিগের সহিত যুদ্ধারত করিলেন। আসক্ষতা ভার্ছানিলের মহ' खाक्ति (मचित्रो क्टन क कप लाहेडा खाक्य गाण्टिश तहन, क्तिएनम । किन्हु 'कमि मा अभेडिएक्ट वाकोद्राट चाधार বিংশতি জোশ ব্যবধানে হাইয়া উপস্থিক হইকেন यमस्त्रां क्रमलाक्ष में मचदम मधुन। लाज स्केरा ७ व-প্ৰেম উৎখাত কয়িতে নাথিলেন। ইছা দেখিল অবো-शाह भौतमक्षी मान्छ की अवस्था दहेल्छ उन्दिन बहुता हारे जनत्व के तम क्रेटल लाख कवित्तन : देशास करणे समरव देशिय, जिल् बहात्रोके विश्वत পরাতৃত করিয়াটেন। বাজীয়াও এই কথার কনে হ হাস। कहिरनमे, विषय वीय उद्भाषा । रमकादेवाई कुमा उद्भाष्ट-भागान प्राफोताकि भागगांधा मित्रीह निष्कृत्य वारेग केश-विक करेंद्रमा १० मिलीनामाहरू त्यारकेता , उस्तेष्टक कृते।

## अविकार्य है जिल्ला

তথার দৈছিল। ঘটা শবিতে হইল। কিছ বালীরাও লাকি করেন এমন থাসনা করেন নাই। কেবল ভয় প্রদর্শন জনিক ভবার প্রথম করিবোন, রাজ-ভবার প্রথম করিবোন, রাজ-ভবার প্রথম করিবোন, রাজ-ভবার মানত পার সহিতে গিলিল। উল্লেখ্য বিলম্ব আর্থান স্থায় ইইতে একেবারে দক্ষিণে ঘাইয়া উল্লেখ্য হইলেন। ত্রি ১৯৪৯ কিছুকাল দের আলফলা দিলীতে উল্লেখ্য ভাগা ইলেন। তালা ইলেনে প্রথম করের ভারাপণি করিবেলন, এবং উল্লেখ্য করিবেন। উল্লেখ্য করেনেন।

ক্ষিৎকাল পানে বাজীয়াও নলীতিসহত অপানোধী সেনা সন্বিল্যাহানে পুনর্কার নর্মান, নদী পান হইয়া, উদ্ভৱে যাত্র। করিলেন। এই গংবাদ পাইষা জানক্ষা-ভাঁহার সহিত মুদ্ধার্থ অপ্রসর স্থানেন। কিন্তু মহারাদীয় দিগের কাও কার্ম্বানা ও কৌশল সকল জানিতেন, অত্রব একেবারে মুদ্ধে প্রস্তুত্ত ন। হছিল গোলন্দাজের প্রতি নির্জ্য করিয়া ভূপালের নিকট এক উচ্চ স্থানে থাকিলেন। ভাষিলেন ভাহারা আক্রমণ করিলে, ভাহার গোলন্দাজের। ভাষাদিলের উপর গোলার্টি করিলে। কিন্তু মহারাজীয়েরা ভাষাদা করিয়া ভাহার চতুর্ফিকের দেশ উৎখাত করিতে লালিল। অনুসকলা কোন স্থান হউতে আহারীয় দিবা বাট বন্ধ করিল। বিজ্ঞা আলক্ষকা এই ভাবে এক দান
থাকিলেন। ভাহার শহু তথায় ভিত্তিতে নাপারিয়া পলাথন আরম্ভ করিলেন। সহারাতীকেরা ভাহার পশ্চাৎ
পশ্চাৎ পদ্মন করিল, এবং নানামতে ভাহাকে কট দিতে
লাগিল। আসফজা নিরুপায় হইয়া বাজীরাওকে লিখিয়া
দিলেন চম্বল নদীর দক্ষিণে ভাবদেশ ভোমাকে দেওয়া
গেল। আরো অলীকার করিলেন এই দান বাজা
বাহাতে গ্রাহ্ম করেন ভাহার বিশিষ্ট চেউ৷ করিব।
ভিত্তিস নহারাজীয়দিগকে পঞ্চাশ লক্ষ্ম টাকা দেওয়া
বাইবে।

কিন্তু এই বিষয় গ্রাহ্ম না হইতে হইতে আর এক থোর উৎপাত উপস্থিত হইল, ডাহাতে রাজা প্রকা সকলে মহ। বিপদগ্রস্ত হইলেন। তদ্বিরণ পশ্চাৎ দেখা মাইতেছে।

## ं अध्यक्तिरमं व्यक्तांत्र ।

मुख्याकी बध्नीय कालांका शांतम स्टान्य ब्राक्टिश्मन । প্রাপ্ত হইয়া ভিন প্রত রৎসরের অধিক রাজস্ব করের: ्राह्म अस्थर है । काहाज शत करण डीहारम्ब श्रकाकण काहा ए १९३३ है कहेरक शास्त्रा विकाली नामधाडी रह शांधी-्स्या काकारम्य निक्षेत्राय क्षिण, स्थल थीत्र बाज क्लारल ভাহারা কান্ধার এখন অধিকার করিয়াছিল এবং পারস-মে**শ্রিক ভারতারিপের সহিত**্যসভিত মুক্ত-বিগ্রহাদি করিত। इत्त्र हो कामान प्राप्त कराय के भागात्मत्र। भवत्र सारमञ ত্তিনাৰ বাঞ্জা করিয়া সহস্মদ নামে এক অভি সাহবিক वाक्किएक क्यांश्वसादम्ब क्यांक कविन । महत्यम श्रकविर्शक्ति गर्म बनहोत् व्याचा सहेगा सामाप्रहरेए शाहर स्राटनह कामधानी हेल्लाहारत याका कतिरत्त । किनि में नगरतह विक्केंबको इकेरन, शांत्रनीता चात्रक देवना प्रतिकृष्ठ कहिन या क ब्राह्म कामान क्ष्म नहेगा दौरात मनिक युक् क्षिएक शुस्त करिका । किन्द्र शर्व दशमी शामिन विदेश द निक शासिक हो, लांकेरनका कडी रहेश हे न्याहान बाक-अधी अवस्थान अविसा अवस्थि । जनारत्त्र अस्पा व्यस्ति इहे मक रनांक वाम कहिए, छाहांहा घरण क्षांकानित भराकत्र मोक्रमन केंद्रिए मानिन। किन छाहांनितरक भराकत्र केंद्रिए भातिन ना। भाकिन रमना केंद्रिक हिन ना, छनांनि छोहांद्रा हेल्लाहोत रानीपिशरक हिनकिन केंद्रिन। धर्नैर छाहारमंत्र खाहांनीय खरांनि नहेता पहिरांत भन क्रक केंद्रिण नानाक्षकात रक्षम पिट्छ जानिन। हेल्लाहोरमंत्रा इस मान भर्षात धहे रक्षमें मह केंद्रिया चाकिन। भरत काम छा। श केंद्रिया भीजानित्रात भरत केहेल, धरूर छाहारमत जाड़ा महीनप्रभव राध्यिक हहेता खामिना खाननात मित्र हहेर्छ इस्म्बर्क बेनिया महत्रारमत भिरंत्र कर्भन कहिरसन।

कर्तिका कवि विकास हरे का किर्ता का अपूर्व के पेक्टम जाभनाइ मोलाना निक कहितन वह काकाकांक वानसारक आंगाका कृति ( वर्षाः आगारकात माम) विश्वीक किया, विमाली पिकांब महिल गृष्ठांत्र कतिरमस । चित्रशीक्षा छ। होइ इनमञ्चलाय भवा कर मानिया भावमञ्जान हहेर अनासन निवन । जायांका भादम भान भूनः असि वहरसम्। क्षमसुद्र माद्रमञ्ज्ञात् अदनक युक्तां व कतिदलम् । সৈমে ভাঁহার অভ্যন্ত ক্ষতা হইল। তথ্ন পূর্ব অধীকার বিশ্বত হইয়া তিনি ভাষাপকে রাজাচ্যত করিয়া আপনি, क् १०२२ **हासमूके धा**त्रण कदित्यन । छोत्रात तास्त्रा-१ जानगाति कित्यत्क खडास धूमधाम हरेन, अन्द ত ছিতে বে হে ক্লিয়াৰ আইশাক সকলি করিলেন।

विकामी शांकादमया भाजमञ्चापनत निकास सत्वका कतिवाधिक । नारम्ह दोका इरेग्रा अञ्चलका अकतिरहासः ভাষা দিগতে প্রভিক্ত দিবেল লন্ত ভাষার রাজ্য ভাষা-पिट्या इक इटेएक महेका शास्त्रकाटन श्रून द्वांश अतिन বেন্ত ক্রেই ক্রডিজা ক্রিক্ত তিনি ক্রান্তার বেক্টন ক্রিট त्वन्। अविक्रकीया प्रश्-निवमार्थि अक्रकार्व द्वक्रिक पालिका । अनुस्मारक शतात्वन नी वात कवित्र । जानाटक नादनकालाक कामाक जानक काल व्यवन । लाकान AMANAGE PROPERTY OF THE PARTY O वाक निकार होता है का का कार्य नवीय उपायन-विकास अभिनेत किया विकास में समाप कार कार कर के

**ं इन** जिल्ला करेंचा क्रिक मा, जटम मेंचरीन देरेन আসিতেছিল। অভএব তিনি দিলীয়রকে বলিয়া পাঠা-रेटमन जूनि जीवीत अधूष बीचीत करे, नजूरी कामि ट्यामात्र ताका वस प्रमान करेंचे। पिशीयत डीटात अजूद वीराव कविराम मा, जाहरिक मारमत मार्च कान विदेश-श्रुटक कार्यून अधिकाई कतिशा निस्तारिक वाका करि-त्मन । अमनकाटम त्कर डीरात अधीवत्त्राध कतिम ना जीहीर डिनि वर्मना नरक निर्विदेश खानिएड ना शिएन न পরে বর্ষন ভিনি দিলীর একশত কোল উভতে উপস্থিত इहेटेबन, उध्यम मिलीचेट इद रमनावन क्रिंत्र अर्थे किंद्र अर्थे बर्दा विकास करिन । किंद्र नारमहत्त्र त्में त्र शकोत संस्वत्र द हु इर्दि दिन कात उत्भीत तमा-গৰ সৈত্ৰণ ছিল নাৰ অভএৰ ভাহাদেৰ এনও সাধ্য ইইলি না পার্মী দেনাদের সহিত যুদ্ধ করে। অধিকত बे ममेटर जानकड़ी 'अ मानक बोटर मम्मी कि हिन ना, প্রতীয় কেই কাছার মলন বাঞ্ছা করিছেন ম।। অত-वर डीहाबिट्यंत टमनायेश्टक मार्ट्यंत खनावारम लडाकव कतिएका, विकित्त कि। दशका त्रमाश गूर्क लहाकि छ इहेटल बहु सम्भार नाटम्बनाइटच गटक कर्या निवीर्ड ब्रांजित्वत् । भावनस्थितं त्मनात्रम् ब्रांज् स्मिक्जिः অভিত মিরীটেড অগিয়া ভাতমায় কর্ত্ব অভিন অতা।-हात प्रदेश का शिर्म असे असे असम के हिन नाटमें र THE REPORTED TO BEILD CHANGE OF CHANGE

कुर्तिगा १०० नांत्रमी त्मना स्थ कविक। सारवंत्र मास् भीने नियुचित्र निर्मिष्ठ घाटमक यथु कहिटलन, कियु टलान मध्क नियादन कविटक भाविद्यान ना । विदर्भरक वयम जिमि एकियांब्रामें अभारताक्त कवियां नगरक গমন করেল, তথন থারিলিপছইতে উচ্চার উপর পার-वर्षण महेटल माणिकः वहे चारकार्यः लिनि आवान द्रस ৰনিজা সক্ষ্যক সংহায় করিছে আজা দিলেন 🕆 এই জীঞা পাইয়া ভাঁহাৰ অধুরবৎ দেনাগপ প্রাভঃভাল অবস্থি स्वायाक भेग्रेस प्रदेशक का बाद्या के विश्व स्वाया स्व कदिन, नामक औरलाक या दश्व काश्टर जाना कदिन मा। মুভের সন্মা আনেক কোবাকে অনেকরল লিখিছাছেন, কেছ स्थान कार्यामक, रकड वर्षान सकः (कर् अ)वान (प्राप्ताम ) কিন্তু ক্ৰিমা চল্লিমা সহজ্ঞ লোক কটো প্ৰথমিক ভাষাত্ৰ काम मध्यम नाहै।

किया रक्षण क्षिट्रिय स्थान मात्रव मात् कांवलकर्ष আগমন করেন নাই, তিনি অর্থ লোকে আলিণাচিলেন, अड्यत ब्राक्कालद्य गुजाबान् ए मकन स्वामि विचिट्नन मक्न अर्थ कड़िसान, अर्थ भनराम ७ प्रयु त्याकिंस्सरक भार लिके क नानाक्षकांत्र बच्चना मिया काशामिटनात नर्जक বরণ করিছে: লালিলেন্। সুবাদার্থিলের উপার ভারি **ेषि वरेण और क्षिप्त प्रधानक्षेत्र मिल्ले युक्ति अद्य करिरणमा वरे करन**े बादमङ मन्द्र छाङ्ग्छदाई ३৮ मिरम राम करिया मक्कतः क्रिक्तं क्षेत्रके स्वतं वहेशः शाहनदादन श्रनर्गमन করিলেন। গমন কালে মহন্দি সাহের কহিত সন্ধি বন্ধন করিলেন, তদারা এই ছির হইল সিম্পুণার সকল দেখ পারসম্বানের হইবে। মুজ্য়াং এই অবধি আক্সান্দানে ইতমূর বংশীয় রাজানের কোন আধিপতা বাকিল'ন।

এই সমরে রাজধানীতে কোকের কে তুর্গতি ও চঃথ ও
রাজ্যের যে সূরবন্থা হইল তাহা পাঠকেরাজনায়ানে অন্তভব করিতে পারেল, বর্ণন বাছলা। মহারাজীয়েরা
হিচ্ছ্রানে পড়িয়া সকলস্থানে আপনালের পরাক্রম মুক্তি
করিবে এমন সন্তাবনা ছিল, কিন্তু ভাষা না কর্মা বাজীরাও ঐ সময়ে মৃক্তিশ রাজ্যের যুক্তে পুনঃ প্রবৃত্ত হইয়া
আসফলার পুত্র নাসরক্তরের ক্তিত সংগ্রাম করিবেন।
নাসরক্তর ভাষার সহিও খোর যুক্ত করিবেন। বাজীরাও
এমন মনে করেন নাই নাসরক্তর এমন যুক্ত করিবেন। বাজীরাও
এমন মনে করেন নাই নাসরক্তর এমন যুক্ত করিবেত পারিবেন, অতএব তিনি ভাষার ক্তিত মিল করিয়া হিচ্ছুখানে
বাজা করিবেন। কিন্তু নর্ম্যা পার ছইছেনা হইতে ভিনি
কালপ্রোমে পতিত হইলেন।

রাজীরাওয়ের মৃত্যুর পর তথপুত্র বালাজীরাও তৎপদারত হইলেন। নালাজী অতি কমতাবান্ পুরুব ছিলেন,
কিন্তু ডাঁহার শত্রুগণও অতি বীর দিলেন, ভাহাদিগের,
পাক্তক হইতে উত্তীপ হওয়া নালানা ব্যাপার নহে
ভাহার প্রকলের মধ্যে মুকুলী ভোললা মেতি ভয়কর,
ভিনি বেরার ও তথপুর জন্ত রাজ্যে চৌথ সংগ্রহ করিতেম, ভাহাতে জি অঞ্চল ভাহার এক প্রকার রাজার

ন্যায় আধিপত্য হইয়াছিল। তিনি বলপুর্বাক ন্মাদার , উত্তরেও চৌথ গ্রহণের চেন্টা করিলেন। তাসতে বালাকী यार में बाटका गमम कवित्रा जामक्कीत क्रज मिक शाल-भारत अना भूगणाम कडिएक नाशिशन । औ समरह द्रश्यकी **्छामना नद्रसम्म आक्रम्म क** वेदनन। मुखाउँ छीछ हहेग्। বালাকীকে বলিলেন ভোগানে মালৰ বাজ্য ছাডিয়া দেওয়া বাইবে, তুমি রযুজীকে আমার রাজো উৎপাত कतिराज मिछना। बाबाकी अहे कलाय प्रांत आंखारमारम विश्वास्त्राम्यान्त्रं साक्ष्मानी सुत्रामानात्राम् भवन कहि-লেন, এবং রছুলীকে পরাভব করিয়া হস্তদশ হইতে দ্রী-**कुछ कतिरमन। उच्ची रक्ष्रमध्येत आभाग रेन्द्राम हरेगा** • म्हिलि **नाका गमन क**विरमम । ठालाकी है। होत शंकाबर তিং ১৯৫৭ তথায় চলিলেন। কিন্তু ক্রমে অবেকে বু ১৭৪০ উহিব বিপক্ষ হইল, ভারতে তিনি ব্যুক্তীকে বাঞ্লা ও বেহারে চৌথ প্রত্তের ক্ত্ ছাডিয়া मिटलम । व्यक्तिशत बल्दियटमोत करवत शतिवर्द्ध बामभ जक সুদ্রা ও করেক প্রেদেশ দিগা উছে।র সহিত সন্ধি করিলেন। এই সময়ে আসফজাও রাজাসাত্র মৃত্যু হয় ৷ নাসীর ক্তর নামে আগফজার এক পুত্র স্বাধীনভার কপেনা করিয়। निक्ति बाजविद्यारी रहेग्राहिटलन, आमक्का वे विद्रहार ममन अन्तर शमन क्रियांकित्सम, उथाय वाध्या जिनि, > १८ **प्रकार**क, श्रद्धकांक श्रमम करतम । উष्टात मृजुात পর ভত্তরাধিকারিছের বিষয়ে অনেক দ্বন্য উপস্থিত हर्षतिहा, जराज्य संविधा त्रान्ति त्रान्ति अकाराम नामक क्ष राज्यिक कीरात निरक्षण वर्षण करितना, काराज्य के जरून त्यान निर्म सर्वेक, क्षित्र क्षण्यात क्षणानी चन्नः साकार्याण्यत सहित्र पूर्ण कह्न क्रेट्लम । क्षेत्र पृष्ण क्राचि जालीत्यता बाक्यवात्यत्र नश्त्रका करियाहिन, रूषांत्र विवस्त काराज्य त्यापा वाहेट्य ।

बहे मनदम द्वाहिका काखीत्त्रम यह वास्त्रिम ह द्राष्ट्रिका-राजी चारेनक भाष्ट्रीन सामानद्रकारत्र कर्या कदिल है इंश्रोमित्त्रत्र मृत्या जानीभरणात्र जादम बन वाक्ति हित्तन, ভিমি হিচ্ছ বংল্পাস্ক্র, কিন্ত এক রোহিলা সেনা কর্তৃক প্রতিপানিত ইইয়া প্রথমে এক বিপাহির কর্মে গ্রেড হৰ, ভাছার পর ক্লমে ক্লমে আপন বিদ্যা ও বৃদ্ধি কলে অভি উচ্চ পদ প্রাপ্ত হর্তমা করেকথান জায়গীর মহালের क्षराक्रका करवन । अहे कर्ल्य बाक्रिया खिनि करनक केंचरा करवम, अदर जारमक शांडीबरक चार्शन कर्ष्य नियुक्त कहि-সাহিলেন। বিস্তীবন্ধ উচ্চার আন্দর্যনা দৈখিয়া তথিককে रेमदा ब्लाइय करहन, जिल्ह फिनि है रमनावर्षक नहांकर क मार्क कल कड़ियां श्रमा करिय जल्लामा गर्वाच छाउ० कारमञ्ज्ञ आरक्षेत्र इस । देशोएकरे के काएनत माम ह्यादि-वर्षक रेत्र। कामबन्न दीरांत्र कंदाब इब्बि शाविता विसीधत विर्मातक । व्याप के विष्यंत्र के विष्यं के प्राप्त के विषयं के वि कीको पूर्वक कार्याक देवनम सहस्त श्रीका झारिया. भात्र (यमक्य द्वाया हिल, विश्लीपद्रक गम्छडे मधर्मक कादम ।

क्लि देशांच्य ভात्रक्षवर्ष अटकशंदत्र मध्यम शहेन मा। নাছের সাছ এই রাজ্য হইতে পার্স বাজ্যে প্রভ্যাপমন >> कतिया अटाख धाळाशीयन चादश्व वित-माहिट्सम । ध्यकावा डीहात कोताचा मध क्षिएक मा भौतिया भेतीयमें शुक्रक केंक्सिक वध कतिन । विश्वाप्त मानिर्दा भावमानी नात्य त्व कालित्क उन्ने करन सत्रामी शाक्षीम बनावाय, आहम्यम था मार्ग छाहारमव अधान बारमङ मारमङ करमा निमुक द्वितन। आदृरक হত্যা করিলে ভিনি হত্যাকারীদিগের দংগুর চেকা করি-লেন। किছ পার্দী জাতীয়েরা দকলে এক জোট হইল, ভাহাতে ভিনি ক্লডকার্য হইতে পারিলেন না চনাপারিয়া ভিনি সংসদো আপন রাজ্যে প্রভাগমন করিলেন। **তথার তাঁহার অভান্ত প্রতা**প ছিল, সুতরাং তিনি জম্প कांटकत मरशा काषारदाह ताला स्टेटलम, अव॰ मिश्व व्यवसि পারন ছাবের দীমা পর্যাক তাঁহার আধিপতা চলিল।

परे जारेगा थे। नात्मत मार्ट्स महिन जात्वर्ध जानिका धरे द्रारकात धेवर्धाकि त्राधिया शिवाहित्सन, क्रम्य रेटात जात्वा धन-त्रेगोत्रत्वत कथा अन्तित्व व्यक्तित्वम, जारात्कः, वरम मर्गेन त्यांच कथितः जात्रज्यत्वर्धः मञ्जूषिः रेटेरवेन जान्यक्ति त्यांच कथिता जात्रज्यत्वर्धः मञ्जूषाव रेटेरवेन जात्वात जिल्लाह क्रियाहार जिल्लि मिक्स्पाव वाजा कतिरमा। विज्ञीचंद्र छाचांद्र व्याप्तमात मध्यांप्रभावेता । वाजी अवीत्र भूज व्याप्तमात छित्रम् द्वा द्वा व्याप्तमा व्याप्तमा छित्रम् द्वा व्याप्तमा । व्याप्तमा व्याप्तमा छात्र । व्याप्तमा छात्र । व्याप्तमा छात्र व्याप्तमा व्याप्तमा छात्र व्याप्तमा व्याप्तमा छात्र व्याप्तमा व्याप्तम

## আহমদ দাই।

সরহক্ষের বুজের পর একমাস অতীত না হইতে ২

হিং ১১৯১ মহম্মদ সাহ পরলোক পমন করিবু ১৭৪৮ লেন। ভাহাতে তৎপুত্র আহুমুদ্দ সাহ
সঞ্চীট ইইলেন।

महरायम मृत्य अधान मही इक रहेमाहित्यन, जारा-तक बाह्यम गार मधान रहेमा ये कर्म बामकबाटक मिटक हाहित्यम । बामकबा काहा अहन कहित्यन ना, काहाटक किम बार्याचात्र मुसानात्र मानक चाँत भूक महरायम्बर कर कर्म मिनुका कहित्यन ।

ं बरे नमरम चारमाम प्रशानी बीम बारकाद शास्त्रम क्षेरम्रामंत्र युर्वे नियुक्त क्रियन, अवर आंगीमरुक्तम পরলোক গমন করিয়া ছিলেন। তাহাতে ভুতন মন্ত্রী विद्युष्ठमा कतिया स्थितिम अहे मगद्य द्यारिनामियरक নিপাত করিলে ভাল হয়। এই অভিপ্রায়ে ভিনি করখা-বাদের পাঠান সেনাপতিকে তৎকর্মের ভারার্পণ করিলেন. ৰিন্তু এ দেনাপতি যুদ্ধে হত হইলেন। দেনাপতির মৃত্যুর পর মন্ত্রী ভাষার ভাষ্যাকে ভাষার ঐথব্যাদিতে বঞ্চিত করিয়া আপুনি ভাহার অধিকারের চেটা করিলেন। ইহাতে তদেশীয়েয়া তদিক্তে অন্ত ধারণ পূর্মক বোহিলা-मिशंदक बाक्षान कदिन। मखी छोशांमित्शत नार्रेख रुखार्थ গমন করিলেন, কিন্তু ভাঁহার সেনাগণ সুশিক্ষিত ছিলনা, ছিং ১১৯৬ তাহাতে রোহিলারা গুদ্ধ জয় করিয়া শৃং ১৭৫০ একে-বারে লক্ষ্ণে ও এলাহাবাদের সম্পুৰে আদিয়া পড়িল।

এই বিপদ কালে মহারাজীয় দিখের সহায়ত। তিঃ অব্রির অন্য উপায় রহিলনা, অভএব হুলকার ও সিন্ধিয়া নামে শ্রাভীয় যে ছই দেনাপতি পেদওয়ার স্থানে নালবদেশ বন্দোবস্ত করিয়া লইয়া ছিলেন, ভাহা-দিগকে পত্র লিখিলেন ভোমরা আমার পক্ষ হইয়া যুদ্ধ কর বে দেশ-জয় করিবে, তাহাতে যে ধন পাওয়া बाहरत छोहा छामाप्तिशतक संबद्धा बाहरत । बहे लाएछ মহারাকীয় প্রধানের। ভাঁহার দলে মুক্তে গদল করি- रणता, श्रवः सामे निरम्भव त्रास्मान छोहात शक घरेरमम। अरे गर्दशास्त्रिक रमना गरेगा क्रिम द्राविमाधियर शक्कास कृतिरमम। खोहाता श्रेटकाद्ध हिमानरगत निम्न छोटम भगासून कृतिम। स्टूडिंगा खात्रक द्राविस्थम विशेष ख्रीन रहेन। क्रिक सर्वरमाची घराताची रशता थरतत स् ११४० विर १९०० स्टूडिंगा वर्टनगरत क्रि

बरे युटकृत शत मञ्जी निहीटक अलावन सरेता শ্ৰনিকোৰ আহম্মদ ছবাৰী পঞ্জাৰ প্ৰদেশ আক্ৰমণ করিয়াছেন। ডিনি আরো দেখিলেন বে ভাঁহার অনুপ-স্থিতি কালে এক নপুথ্যক ব্যৱসাতা ও ব্যক্তার স্থান্ত **ब्रिश इरेग्र ब्राट्यात मर्जनस्। हरेग्राट्ट । ভाराट्ड छिनि** এক দিবস একটা মহা জোজে নপুৎসককে নিমন্ত্রণ করিয়। वध क्तिरवान । देवारफ खाँदात अक भक्त नाम बरेन वर्षे, কিন্তু সাহৰউদ্দীন নামে আসফজার পৌত্র, যাহাকে জিনি भाकी खेबीन जेशाबि विश्व क्रांबीतम उमहा शत अखिविक बुद्धिशिक्तन, जिनि छीड्। अदब लक स्टेश केहिलन । এই ব্যক্তি অভাত বীৰ্যাশালী ও কমতাপন ভিলেক, তিনি ब्राह्मिक रहेश छारात गरिक दिशम बादक कदिरनन । बहुँ विक्रांस इस मान शरीब प्रक्रिक, अरथ के इसनान कान विद्योत शर्व पान नवस् त्यानिक्सम् त्रस्म । वसम्बद्ध बङ्गाम अवाद्वाचीक त्वला दाकाद भरक याता सहिल, त्वहे সংবাদ অবিষ্ঠানতী কৰি বছৰ প্ৰথম অবোধ্যাৰ প্ৰকাৰ. বিরুক্তে ক্ষমাণারণ করিবেল। এই মুখ্যে রাজ্যান্ত ভাষার ক্ষ্মান্ত করিবেল। এই মুখ্যে রাজ্যান্ত ভাষার ক্ষ্মান্ত করিবেল। এই মুখ্যে রাজ্যান্ত ভাষার ক্ষ্মান্ত করিবেল। ক্ষিত্র ক্ষান্ত করিবেল। ক্ষান্ত করিবেল। ক্ষান্ত করিবেল। ক্ষান্ত করিবেল। ক্ষান্ত করিবালার করিবেল। ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত ভাষার ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত ভাষার ক্ষান্ত করিবালার ক্ষান্ত ভাষার ক্ষান্ত ভাষান্ত ভাষার ক্ষান্ত ভাষার ক্ষান্ত ভাষার ক্ষান্ত ভাষার ক্ষান্ত ভাষান্ত ভাষার ক্ষান্ত ভাষান্ত ভাষান্

## আলমধীয়, দিডীয়।

আজিনদীয় নিংহাসনারোহণ করিলে, গাজীউনীন পঞ্জাব উদ্ধানের ২০টা করিলেন। কিন্তু মুখ্যারা চাহা সম্পন্ন করিছে না পারিয়া প্রদায়া করিলেন। তরি-বর্গ এই-প্রাঞ্জার বিনি শাসন-কর্তা হিলেন তাঁহার মৃত্যার পর তাঁহারখনিতা আপন এক পিশু সভানকে রাজা ক্রিয়া আপনি রাজকর্ম চালাইছে হিলেন। এ বিশ্বার 'এক কন্যা ছিল<sup>্</sup>ভাহাকে বিবাহ করিবার ছলে ডিনি भक्कोरन यका कब्रिस्सन, किन्दु 'छाटा ना कब्रिया । अटकवादन नशंद जाकमन, धरूर दांगीटक दली कदिया जानित्वन। আছম্মদ লাই এই বিশাস্থাত্ত আচরণের সংবাদ শুনিয়া ज्यात अन्दर्भ नाम अद्यवाद्य प्रदेशका मिलीयूर्थ यात्रा করিলেন। তিনি দিলীর বিংশতি ফোশ অন্তরে পৌচিলে मक्की डीहात चारम कमा आर्थना कतित्वन। शक्काद्यत तानीक छाँचांत्र कानात्र काना करायाताच कानाहेटसन. ভাছাতে আহ্মদ্যাহ মন্ত্রীকে ক্যাদান করিলেন। কিন্ত ওজ মন্ত্রীর শান্তিজনা তিনি আইসেন নাই, ভারত্তবর্ষে शिक्त व्यानक व्यर्थ शाहेब कहे ब्लाटक व्यामिश्राहित्यन, अन्द्रिय नारम्य मारम्य जान्यम् कारम मिलीर्ड व्यमन महे ও नत्र रूखा रहेशाहिन त्मरे अकात रहेन। व्यारमान नार স্থাৎ বড় নিঠুর ছিলেন না, কিছ তিনি দেনাগণকৈ শাশন করিয়া রাখিতে পারিতেন না, সুতরাং ভাছারা মথুবা न्ठे कहिन, धर॰ ख्याय य त्रकन खीर्यवानी हिन खाह:-দিগকে সংহার করিলা অনস্তর তীয়া ঋতুর আগমনে ভীহার দেনাগণের মধ্যে মহামারী উপছিত হইলা ক্ষিক্ত ভাষ্টাদের প্রীব্যু সহু হইল না, ভাষ্টভে আহম্মদ দাহ काव्यवर्ध कविक काम किछिएक मा भाविता बरमस्भ প্রাথান করিলেন। প্রভাগেনন কালে তিনি তৈমুর বংশীয় अक ब्रोक्समहोटन विशेष्ट कवित्रा नहेग्रा लालन, अर९ ब्राक्स-बद्धी ब्राव्यात व्यक्ति व्यक्षाधात क्षिट्छ मा भारतन बचना

নশীরুদ্ধৌশা নামে এক রোহিলাগুধানকে উঁছের দেন্তুর হি° ১১৭১ পুত করিয়া রাজকর্মা সম্পাদনের ধর্ম পুত ১৭৫৭ কং ১৮৫১ নির্দ্ধারিত করিয়া মিলেন ।

शांकी डेबीन बहे मक्न नियम अमाना कविया श्रवाबड রাঙ্গবিহুছে চলিতে লাগিলেন, এবং আপনাকে নিতাৰ नचल विट्यम्या ना कतिया, महात्राक्षीम्निष्टलत नाहाया প্রার্থনা করিলেন ৷ মহারাফীয়েরা এতাত্বক কর্ম্মে সভত অপ্রসর, অভএব গাজীউদীন তাহাদিগকে আহ্বান করা-তে পেসওযার সহোদর রাখবজী উপযুক্ত সেনা সইয়া উঁহোর সহিত নিশিয়া দিল্লী-নগর অধিকার করিয়া দুর্গ-बंध द्वांक्षांनत व्यक्ति कृतिन। द्वांक-देशनानन धक माग धी আলয় রকাকরিল। তদনশ্বর নজীবদৌলা তথা হইতে लेलाग्रन कतिरल, हाका छूर्यचात मुख्य कतिया मिया शाकी-উদ্দীনকে পুনর্কার দান্ত্রিপদে নিযুক্ত করিলেন ৷ তদনস্তর ताथवसी शक्षांव करशह क्रिकाटक गांका क्रिकान । इता-নীরা ভাঁহার আগমনে পঞ্চার পরিভ্যাগ করিয়। সি**রু** ब्याद इटेंग । द्वाधन विना नाभाग बे तम्म स्वय कतियां হিল ১৯৭২ ভিপায় এক জন, মহাব্রামীয় লালন-থ ২৭৫৮ কর্ত্তা ব্রাধিয়া আপনি দক্ষিণে প্রকাশ-त्रमन कदिएलन ।

महाताकी दान्ना क्रमणः श्राटन इहेटन, अद्योधाद नय-नेत्र करणत्र भूक सूका हिल्लोना ७ आंत्रर सूननमान ताल-स्टूलियम् विद्युक्ता क्षत्रिलन द्यु, कार्हाहन्त्रक नमन ना

कड़ित छरियार स्वयंत्रण, अठवर अकान वर्ष देरेग वृक्षणका करिएमन । भएका के रियम छोरा जावा दारि-नथना चाक्रमम पृथाक के त्मन कारमाध्य छेन्दिय कतिन। मुकालेटकोमा के सारम रक्षेत्र जाशक्तिनरक काकक्त कविशा গলা অৰ্থি ভাডাইয়া চলিলেন । বিশেষ আহম্মদ সাহ সংস্থাে যালা করিয়াছেল ভাহা শুনিয়া মহায়াউীয়-দিগের মনে ২ মহা ভর হইক, তাহাতে তাহারা সন্ধির প্রার্থনা করাতে মুসলমান সংযোগিত রাজপুরুবের। काशामितभन्न गरिक मिक्त कवित्यान । आश्याम गाष्ट्र छर-কালে স্বীয়া রাজ্যের দক্ষিণাংখের বিলোচ জ্বাতিদিগতে ममनार्च अञ्चल रहेग्राहित्तनः लाहामिन्नरक ममन करा হইকে ডিনি সিন্ধু নদের জীর দিয়া পেশওয়ারে গমন করিবেন। পেশওয়ারের নিকট সিক্সু পার হইয়া বর্ধাঞ্জু পর্কতের ধাতর ২ বমুনা প্রান্ত গমন করিলেন। তথাস বিভিয়ার অধীন এক দল মহারাট্রীয় মেনার উপর প্রক্রিয়া তাহাদিগকে কাটিয়া খণ্ড২ করিলেন। সিছিয়া बे जात्म रूक एरेंट्रजन । इक्षकांत्र के मगरप्र आंत्र कर प्रमा अर्थक अविके महातुक्तीय-दमना मर्माक्याहादर्व मिकन ৰুখে পালায়ন করিতে চলেন, ছরাণী সেনাগণ তাহার हिर >> १० े शकार धारमान बहेग्रा छारद महा-्र । १९६३ विस्ति । अस्ति । अस्

बर्वे मनदर्भ शाबी केवीर नह मदन मदन वाग कृत्रिक वहिः बारायम् गाव रूप्य सजी राम जाया स्वेत्य विकीत है छात्राहः প্রতি অত্যাচার করিবেন। অতএব তাহা না হইবার পূর্কেই তাঁহাকে বিনাশ করিয়া তৎপরিবর্তে রাজপরিবারক আর এক রাজপুত্রকে সিংহাসনে উপরেশন করাইলেন। কিন্তু প্রজাগণ ভাঁহাকে রাজা বলিয়া মান্য করিল না। রাজার উত্তরাপিকারী লাহ আলম্ভ তৎকালে ,বলদেশে চিলেন, ভাঁহার বিবরণ উপযুক্ত ভলে বিবরিত হইবে।

**এই नगरंच महाताकी** प्रभिर्णय अन्ताख द्राक्ति, दिनालस অবণি কন্যাকুমারীয় অন্তরীপ পর্যান্ত প্রায় ভারৎ ভারত-वर्ष ভाष्टामिटश्रव क्यानिन, अन्य क्यानिक स्थाप स्थापित क्यानिक কর প্রদান করিভেন। পেশওয়া মহবেপ্ট্রীয় দিশেও গ্রহান্ত कड़ी हिटलन। छैंक्शित काईटल छोटामिटलत शर्वाक्रम অভান্ত ব্লন্ধি ছইয়াছিল, তাহাদিগের অনেক অধারোহী ংশৰা ছিল, ভাগারা অভান্ত মুছ-পার্থ, ভান্তির অভান मण जरूख भगांखिक किन, हेरावा खासरक करवांचललवाती ইউরোগীয় লোকের নিকট যুদ্ধ শিকা করিয়াভিত। এই সকল সেনা, ভারিন তাহাদিগের ভোগ কামান অনৈক ছিল, ভাহাতে ভাহাদের মনে২ বড় অহস্কার **জারি**য়া ছিল, পৃথিবীতে আর কে**নি** জাতি আমাদের ভুল্য নহে। অভএৰ যখন ভাষারা সিন্ধিয়া ও ছলকারের মৃত্যুর সংবাদ পাইল তখন একেবারে প্রতিজ্ঞা করিল ভারভবর্ষকে জার মোগলালিগের হত্তে রাখিব না, জ রাজ্য আমহা অধিকার করিব।

🗪 এতিজা কর্মানস্তর পেশওয়া নদাশিব লাগে তাঁহার

এক পিতৃৰাপুত্ৰকে সেৰাপতি কার্মা বুলে প্রেরণ করি-लिन। छोहाँत शूक विश्वानत्रां खंड बटनक खांका उ महा-রাই। ম প্রধান সেনাপতির সহিত যাত। করিলেন। সদা-भिवसे अमिली एक शमन कतिया कि शिलन मिली तकार्थ তুর্বে কেবল কতক গুলিন ছুরাণী লেনা মাত্র আছে। বুরুজের একদিলে উপযুক্ত বৃক্তক ছিলনা, ভাহাতে তিনি সেইদিগ विद्या पूर्व अदिवर्ग कतित्वन । पूर्वत्रक्षक त्मनांशन गराः রাষ্ট্রীয়দিগের ভোগের অত্যে হির থাকিতে পারিল না। ছুর্গ প্রবেশ কর্ণান্তর মহারাট্রীয় সেনাপতি বাজার ও আর আর স্থানে যে সকল মুল্যবান দ্রব্য ছিল ভাহা লুঠ ১১৭৪ করিলেন, এবং রাজার অপুর্য সিংহা-১৭৬০ ৮৮৬২ সন ও রাজসভার কড়িকাট আছাদিত রমতাদি ভালিয়া লইলেন। তদনত্তর তিনি বিশাস রাঞ্জকে রাজা করিবার মানস করিলেন। কিন্তু তথন পর্যান্ত ছুরাণী সেনারা দিলী নগরে ছিল, এজনা ভাহা করিতে ন পারিয়া মনে ২ স্থির করিলেন তাছারা নগার পরি-ভাগি করিয়া গেলে ভাঁহাকে সিংছাসনে বসাইবেন।

জাঠদিগের রাজা মহারান্ট্রীয়দিগকে পরামর্শ দিয়া ছিলেন তাঁহার তোপ কামানাদি ও পদাতিক সেনা-গুণকে তাঁহার দেশে রাখিয়া কেবল অখারোহী সেনা লইয়া যুদ্ধার্থে গমন করেন। তাহা হইলে গ্রীম কতুর সমাগমে ছুরাণীরা এ দেশ হইতে প্রস্থান করিলে ভাহারা সম্প্রের রাজ্য অধিকার করিতে পারিবে। ক্রি মহা-

রাষ্ট্রীয় সেনাপত্তি সে পরামর্শ না গুনিয়া সকল বৈন্য লইয়া যুদ্ধ করিতে গেলেন। আহম্মদ্রাহ তৎকালে चारमाणात निक्र कांचिम कविया मुझांचेंटबोवा ও चात र বৃদ্ধ রাজাদিলের সহিতে রাজ্য বৃদ্ধার উপায় চিত্তা क्रिंटि कित्न । वर्षात्स देशना मधासान्य समग्र हहे। स তিনি সইসনো দিল্লী নগরে যাতা করিলেন। উছি।র আগননে মহারাফীয় দেনাপতি দিল্লী পরিত্যাগ করিয়া পাণিপতে পলায়ন क्रिकान, এবং थे श्राद्यात हार्बिनिका कामान शाकाहेश देगनाशगदक उन्नद्धा वाधित्वन । अहे ममत्य मनाभित तालराह १०००० व्यश्वादांशी धरू ১৫০০০ পদাতিক দেনা, ইহারা অতি সুশিক্ষিত, ভদ্ধিন ২০০ কামান ও প্রাচীর ভাকিবার যন্ত্র ও গোলাগুলি धमधा, पुछत्र रेमना, शालनाज ও कुछोमित्छ ভাঁহার সঙ্গে প্রায় তুই লক মরুষ্য ভিল। আইজ্লেদ मारहत मरक ४००० भारतीय अ भारती समा ১७००० এতদেশীর ঘোডসওয়ার, এবং ৩৮০০০ ভারতবর্ষীয় পদাতিক, ত্মাপ্যে রোহিলা জাতিই অধিক। ইহা ভিন্ন ৩•টী কায়ান ও কতক গুলি প্রাচীরভালা যন্ত্র ছিল। ্আহম্মদ সাহ এই সেনা লইয়া মহারাষ্টীয়দিগের ছাউনির নিকট শিবির স্থাপন করিয়া থাকিলেন, কিন্তু ভাহাদিগকে আফ্রমণ করিতে সাহস করিলেন না। ইভিমধ্যে এক मन, क्यर्था ५२०००, महाताची म तमा वसूनात थात निमा खाँहां अन्हाहार्य बाहेग्रा थामापि जानगरनदे अर्थ



আটক করিল ৷ জাতার অফার্ডীকে তাতার নেনাগণের बरभवानानि क्रमं बहैटल लाभिका। धरे क्रमं मस করিতে না পারিয়া ভাঁহার কতক গুলিন সেনা মহা-ক্লাকীয় বেদনাদিপের সহিত্ যুদ্দ করিয়া তাহাদিগকে একে-बाद्ध मञ्चरम बिलाम कविन, बक खानित्क ताथिन ना । क्षमञ्जूत कोहाता कावर विद्यालन व्यथिकात कतिन, जाहाटक महाताकीयमिटशंत जाहातीय सवा जानयदनत ব্যাঘাও জন্মিল। মধ্যে নধ্যে ছুই সেনার্ডে মল্লযুক্ত क्टेंटक नाजिन। महाबाकी दब्दा हतानी रननात (धानी छानियांत छको कतिन, किस शांतिन मा। आहमान সাহের ষত্মগণ প্রামশ দিলেন শীত্র সংগ্রাম করুন, ভাচা हहेटल योहाट्य अकृष्टे। हहेश वाग्र, विश्वच क्रिया कल नाहे। আহম্মদ সাহ উত্তর করিলেন তোমবা যুদ্ধের বিষয় বুঝনা, चाना विषया राष्ट्राभारमूत या हेन्हां दश कत्, किन्छ अविषया আৰি ট্ৰাল্ডাল বুৰিৰ ভাহা করিব। তিনি ভাহাৰিগকে ইহাও বলিলেন ভোমরা সক্ষণে নিত্রা বাত, আমি উপ-স্থিত থাকিতে তোমাদিদের কোন চিন্তা নাই। বস্তুতঃ खिनि व्यानक शतिखाम कतिए नाशितनन, देशना दक्तात कना आंत्र मध्य निवम अवश्रुत्थे थाक्टिजन।

সদাশির রাও মনে করিয়াছিলেন তিনি আহম্মদ সাজের কহিউ ক্ষি করিবেন, এবং সুজাউদ্দৌলঃ ছারা ভাহার ক্ষিটা পাইয়াছিলেন, কিন্ত নৈ ছেউ৷ বিফল হইল। আহ-শ্রম দাক করি করিলেন না। ক্ষির আশায় কৈরাশ হইয়া

তিনি প্রতিজ্ঞা করিকেন যুদ্ধ করিব, ইহাতে জনী হইছে 🦠 পারি ভাল, নভুবা প্রাণ দিব, কিন্তু দৈনাপণ অনাহারে मतिरव छार। प्रथिएक भातिय ना । धरे व्यक्तिका कतिया ১१७১ माल ७ हे **जानू**वाति अनुस्य किनि देमनामक क्रिया প্रथम कामान मकल मादि मासि दाधाहेलन, অভিক্রায়, তদারা শক্ত-ভোগী ভল করিবেন। আহমদ শাহ ডাঁহার মনস্ত জানিতে পারিয়া আপন শিবিরের मन्पूर्य देनना ११ एक प्रशासान कराहितान । अनस्त . মহারাষ্ট্রীয়েরা সংগ্রাম জারম্ভ করিয়া গোলাব্লটি করিছে 🕆 लांशिल, किन्दु थे मकल त्थांना मूनामिया हिनन, पारस्म সাহের বৈদ্যাপণের অঙ্গ স্পর্শ করিল না! ভাহাতে মহা-রাষ্ট্রীয় পদাভিক দেনাগণ ৰক্ষুকে সন্ধীন চড়াইয়া দক্ষিণ ভাগে রোহিলাদিগকে কাটিয়া একাকার করিল ৷ তৎপরে শক্রমেনার পাশ্বভালে দলবন্ধ হইয়া ভাষাদের মধ্য দেশ আক্রমণ করিল। মহারাকীয় দেনাপতি ও বিশ্বাসর্গত व्यथादताही तमना नहेगा के मगरम প्राहत दर्भ छोहा-দিগের উপর পড়িল। আহম্মদ সাহ মহাবিপদ দেখিয়া পশ্চাতের দলবদ্ধ দেনাগণকে আনাইলেন, ভাহাতেও যুদ্ধ সারিল না, মহারাষ্ট্রীয়েরা প্রবল ভাবে রহিল। অতএব তিনি সকল সেমা একত করিয়া ভোগীপূর্বক অগ্রে ষাইতে আজা দিলেন। এই আজা পাইয়া কতক দেনা ठकाकारत बाइमा महानामीमानिद्यात शास रमा द्वतिन, ইহাতে তাবৎ মহারাফীয় সেনা ছিম ভিম হইয়া প্রায়ন

করিতে লাগিল, রণকেত্র শবে পরিপূর্ণ হইল। ছুরাণী নেনারা পলাতক সেনাগণকে ১০ ক্রোশ পর্যান্ত কাটিতেহ চলিল, সেনাগণ বাহাদিগকে কাটিতে না পারিল গ্রামন্থ ক্রমিণ ভাহাদিগকে সংহার করিল। এই প্রকার প্রায় ছই লক্ষ সনুষ্য নই হইল। মহারাইটীয় সেনাপতি ও বিশ্বনাথ রাও ঐ সঙ্গে হত হইলেন, আর ২ প্রধানেরা কেহ হত কেহ আহত হইলেন।

্থই হুৰ্ঘটনা-সংবাদে পেশওয়া অত্যন্ত চিন্তিত হইলেন, থ চিন্তায় কালরোগ উপস্থিত হইল, তাহাতে তিনি অপপ কালের মধ্যে কালগ্রাসে পড়িলেন। তদনস্তর মহা-রাষ্ট্রীয় প্রধানদিগের মধ্যে আপ্রবিচ্ছেদ জন্মিল, মুত্রাং ভাহাদের বল ক্রাস হইতে লাগিল, তাহাতে অনেক দিবস পর্যান্ত তাহাদিগের পূর্বের ন্যায় ধুম ধাম রহিল না।

আহমদ সাহ জয়প্রাপ্ত হইয়া একেবারে দিল্লী নগরে বাজা করিলেন। তথায় কিয়ৎ কাল অবস্থিতি করিয়া তিনি আনেশে পমন করিলেন। তাহার পর তিনি ভারতবর্ষে আর আইসেন নাই। কিন্তু এই রাজ্যে আর এক ফুতন কাপ্ত উপস্থিত হইল। যে ইংরাজেরা এই ক্ষণে এই রাজ্যের অধিপতি হইয়াছেন তাঁহারা ইউরোপ হইতে আসিয়া ক্রমে ২ বলদেশে চুটীভূত হইয়াছিলেন। তাঁহারা দিলীশরকে হীন দেখিয়া এই রাজ্য অধিকার করিয়া-ছেন। ইহার বিররণ ভবিষাৎ প্রস্থৈ লেখা বাইবে।